Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समकालीन भारतीय साहित्य

साहित्य अकादेमी की द्वैमासिक पत्रिका

अंक 175, सितंबर-अक्टूबर 2014

मूल्य 25 रुपये

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समकालीन भारतीय साहित्य

पूर्व प्रकाशित अंक

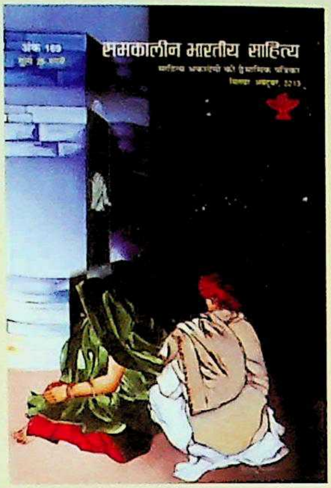

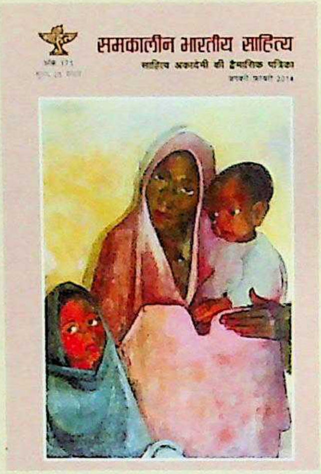

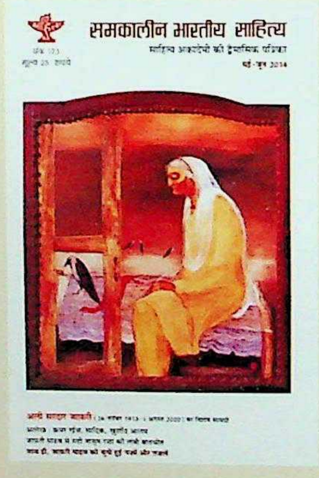

पत्रिका हेतु संपर्क करें :

विक्रय विभाग, साहित्य अकादेमी, 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110 001, फोन : 011-23364207, 23745297

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वर्ष 35 अंक 175 (सितंबर-अक्टूबर 2014)

समकालीन भारतीय साहित्य

साहित्य अकादेमी की द्वैमासिक पत्रिका

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc No. 9980
Dated 28.12.2023

संपादक मंडल
विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
चंद्रशेखर कंबार
के. श्रीनिवासराव

अतिथि संपादक
रणजीत साहा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उप-संपादक : **मधुमालती जैन**
आवरण के मूर्तिकार : **प्रबीर बेपारी,** दिल्ली
आवरण संयोजन : राजीव शर्मा

संपादकीय कार्यालय :
साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001
फ़ोन : 2307 3312 (सीधा नंबर)
23386626, 23386627
(पी.बी. एक्स) विस्तार 208/219
फ़ैक्स : 091-11-23382428

E-mail : sbseditor@gmail.com
Visit our Website at : http://www.sahitya-akademi.gov.in

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, अनुवादक एवं साहित्य अकादेमी की स्वीकृति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से साहित्य अकादेमी, संपादक मंडल या संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

मूल्य : 25 रुपये
शुल्क-दर : एक वर्ष (6अंक) 125 रुपये
तीन वर्ष (18अंक) 350 रुपये

विदेश में :
हवाई डाक : एक प्रति 10 अमेरिकी डॉलर/6ब्रिटिश पाउंड,
एक वर्ष 50 डॉलर/30 पाउंड,
तीन वर्ष 135 डॉलर/85 पाउंड

समुद्री डाक : एक प्रति 5 डॉलर/3 पाउंड,
एक वर्ष 25 डॉलर/15 पाउंड
तीन वर्ष 70 डॉलर/44 पाउंड

शुल्क 'सचिव, साहित्य अकादेमी' के नाम पर भेजें।

वितरण : विक्रय विभाग,
साहित्य अकादेमी,
स्वाति, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110 001
फ़ोन : 011-23364207, 23745297

Samakālin Bhāratiya Sāhitya :
A Bi-monthly journal of Indian literature from 24 languages, in Hindi, published by Sahitya Akademi, Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110001, INDIA

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समकालीन भारतीय साहित्य

वर्ष 35 : अंक 175 (सितंबर-अक्टूबर 2014)

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

5 *संपादकीय*

रचना भूमि

7 **केशुभाई देसाई :** उत्तराधिकार (गुजराती)

कहानी

25 **सुकांत गंगोपाध्याय :** राक्षस (बाङ्ला)

39 **सीतेश आलोक :** किसका प्यार (हिंदी)

43 **हरदर्शन सहगल :** हारमोनियम और ग्रामोफ़ोन (हिंदी)

48 **अमिताभ शंकर राय चौधरी :** साकेत की एक शाम (हिंदी)

54 **ई. संतोष कुमार :** दूरियाँ (मलयाळम)

64 **सी. राधाकृष्णन :** मृतसंजीवनी (मलयाळम)

72 **उज्ज्वला केळकर :** लीडर (मराठी)

83 **आनंद टहलरामानी :** बदनाम बस्ती (सिंधी)

88 **दीपक रावल :** बंद गले का ब्लाउज़ (गुजराती)

कविता

95 **केकी एन. दारूवाला :** गाँधी (1-3)/ तीस जनवरी की प्रार्थना (अंग्रेज़ी)

98 **कैलाश वाजपेयी :** फ़कीरचंद / लोई (हिंदी)

101 **सुरजीत पातर :** कविताएँ (1-5) (पंजाबी)

105 **मिताली भराली :** रात का सागर : बढ़ता जल स्तर (असमिया)

105 **निदा नवाज़ :** बर्फ़ और आग / कंकाल आदमी / एक बड़ा शोषण (हिंदी)

109 **विजय शंकर :** छल / दुःख / जिजीविषा (हिंदी)

110 **वंदना मिश्र :** कवि चाहता है / बेरोज़गार लड़के (हिंदी)

112 **सोमदत्त शर्मा :** आहट / बाँध एक दृष्टि (हिंदी)

114 **सपन सारन :** शब्द / दरवाज़ा (हिंदी)

116 **कुलजीत सिंह :** भटकन / कितने क़दम और / प्यार का साथ (हिंदी)

118 **राजेंद्र उपाध्याय :** पिता (1-2) / जामुन / पालना (हिंदी)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नाटक

121 **अशोक गुजराती :** बीर-बहूटी (हिंदी)

निबंध

151 **इंद्रनाथ चौधुरी :** भारत का स्वर : *रामायण*

162 **सरोज कौशल :** कल्पना और लालित्य का चारु मिश्रण

174 **कृष्णदत्त पालीवाल :** देशभक्ति का सिद्धगायक : सुब्रह्मण्य भारती

समीक्षा

182 **प्रीति प्रकाश प्रजापति :** गुरु राग का तन्मय आख्यान

185 **प्रियदर्शन :** एक उजली मनुष्यता की कविता

189 **जितेंद्र श्रीवास्तव :** विवेक उद्वेलन की पक्षधरता

194 **उमेश प्रसाद :** हिंदी साहित्य के इतिहास का पहला बुनियादी ढाँचा

197 **सुरेश धींगड़ा :** रचना समय का यथार्थ

201 **स्वाती ठाकुर :** अब तक लड़े क्यों नहीं

206 **मेनका श्रीवास्तव :** बंद सीपियों में उलझी गुत्थियाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यू. आर. अनंतमूर्ति

जन्म : 21 दिसंबर 1932 निधन : 22 अगस्त 2014

भारतीय भाषाओं की गरिमा और अधिकार की रक्षा के लिए सदैव तत्पर सुप्रसिद्ध साहित्यकार, समर्पित समाजचेता एवं चिंतक और साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष **यू. आर. अनंतमूर्ति** (पूरा नाम : उडुपी राजगोपाला आचार्य अनंतमूर्ति) का निधन भारतीय साहित्य के लिए एक अपूरणीय क्षति है। उन्होंने अपने उपन्यासों, कहानियों, कविताओं और समालोचनात्मक लेखन से न केवल कन्नड साहित्य को बल्कि भारतीय साहित्य को एक नई आधुनिकता, रचनात्मक अर्थवत्ता और सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रतिबद्धता प्रदान की।

साहित्य अकादेमी परिवार और उनके असंख्य पाठकों एवं प्रशंसकों की ओर से
दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संपादकीय

रचना में संवेदना की जगह

आए दिन हमारे इर्द-गिर्द घटनेवाली अमानवीय एवं बर्बर घटनाओं से इस बात की पुष्टि ही होती है कि सृष्टि में सबसे सभ्य और समुन्नत माना जानेवाला मनुष्य अभी भी कितना क्रूर, बर्बर और असंस्कृत है। इसका सामाजिक आचार-व्यवहार और सांस्कृतिक औदार्य बाह्यत: चाहे जितना प्रभावी रूप और प्रांजल जान पड़े—ज़रा-सा अवकाश मिला नहीं कि इसका आदिम रूप अपनी तमाम विकृतियों के साथ, सार्वजनिक तौर पर उजागर हो जाता है। प्राकृतिक त्रासदी ही नहीं, कई अमानुषिक विकृतियों और अप्राकृतिक घटनाओं के साथ हम अपने अभिशप्त वर्तमान को ढो रहे हैं। आमतौर पर जो असामान्य घटनाएँ या विषम परिस्थितियाँ हमें जीवन और साहित्य में पहले वर्षों उद्विग्न एवं विचलित किए रखती थीं, और जिन्हें याद कर हमारे रोंगटे खड़े हो जाया करते थे, अब हमें सामान्य और स्वाभाविक जान पड़ती हैं।

क्या संवेदना के स्तर पर हम लगातार भोथरे होते जा रहे हैं?

मसलन, साहित्यिक पन्ने और इलेक्ट्रोनिक पर्दे पर पंचायत के सामने किशोरी लड़कियों के साथ सरेआम बलात्कार, विरोध करने पर यौनांगों या गुप्तांगों में तेज़ाब डाल देना; थूककर चटवाना, गू खिलवाना; घर से उठवाकर जीते जी पेड़ पर लटका देना, जीभ काट लेना, आँख फोड़ देना; ट्रेन की पटरी पर फेंक देना वग़ैरह देखने और सुनने को हम अभिशप्त हैं। स्टोव और नई बहू का नदी-नाव संयोग तो आम बात रही है। कोल्ड-ड्रिंक में नशीली गोली डालकर औरत की अस्मत से खेलना और फिर लोहे की नली में असली गोली डालकर उसे हमेशा के लिए सुला देना; मृतक की लाश नाले में फिंकवाने या फिर उसके टुकड़े-टुकड़े कर मछलियों को खिलाने का देसी अंदाज़ अब हमें हैरान नहीं करता। प्रश्न है, क्या यह सब हमारी आदिम और पाशविक वृत्ति को तसल्ली देता है? हम यह मान लें कि आख़िर यह सब तो सृष्टि के आरंभ से ही होता रहा 'मत्स्य न्याय' है। रोमन साम्राज्य के सम्राट अपने ग़ुलामों और विरोधियों को भूखे शेर के सामने छोड़ देते थे और दरबारियों के साथ उन भयातुर और निहत्थों के मारे जाने का आनंद लेते थे। ज़िन्दा अपराधी को किसी मृतक के शव के साथ लपेटकर बहा देने, हाथ-पाँव बाँधकर देह में शहद चुपोड़कर, झाड़-झंखाड़ में फेंक देनेवाली 'वज्रलेपी' विधि अभी भी पुरानी नहीं पड़ी है! कोड़े मारना, हाथ-पाँव काट देना, सिर कलम कर देना-जैसी मध्ययुगीन सज़ा तो सदियों से जारी-तारी है...अब इसमें इतना ही जुड़ गया है कि इसका वीडियो बनाकर दुश्मनों या विरोधियों को आतंकित किया जाता है। हॉलीवुड की फ़िल्मों में गैस-चेम्बर में डालकर या फिर शीशे के विशाल टब में तैरते ह्वेल के सामने, किसी नाज़ुक बदन 'इन्फ़ॉर्मर', 'श्रूड' जासूस या मुख़बिर को फिंकवा देना अवश्य ही रोचक फ्रेम हैं—वरना बार-बार ये दृश्य हमारी फ़िल्मों में भी परोसे नहीं जाते। ऐसे कथित अपराधियों के लिए आत्महत्या की गुंजाइश तो हमेशा रहती है। हमारे देश के भोले-भाले किसान सदियों से इसके आदी हैं। जिस दिन यह रुक जाएगा—उस दिन यह ख़बर बनेगी, पल्स पोलियो अभियान की सफलता की तरह।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आगज़नी, राहज़नी, फिरौती के लिए बच्चों का अपहरण, दंगे-फ़साद और पुलिसिया हिरासत में मौत तो हमारे यहाँ के कुटीर उद्योग हैं। तभी सत्यजित राय ने आहत होकर यह कहा था कि हमारे बाल साहित्य में बेडरूम-सीन छोड़कर बाक़ी सब कुछ वयस्क साहित्य-जैसा ही लिखा जा रहा है। लेकिन विश्वयुद्ध, बमबारी, ड्रोन हमले, शीतयुद्ध, अणुयुद्ध के सामने ये सब क्या हैं? थोड़ी कमी बीमारियों से और बड़ी कमी महामारियों से पूरी होती रहती है। कैंसर, डायबिटीज़ आदि व्याधियाँ वैसे ही लोगों को धीरे-धीरे चबा डालती हैं।

...अब ऐसे में, अपने को बचा हुआ और सुरक्षित पाकर हम बाहर से चाहे जितने ख़ुश दीखें, अंदर से दरअसल बेहद आतंकित और सहमे हुए हैं। जिनसे, हम अब भी दूसरों की मुसीबतें समझकर किनारा कर लिया करते हैं, थोड़ा-बहुत रो-बिसूर लेते हैं—वे हमारे सामने, पड़ोस में...और क्या पता हमारे ही घरों में घटित हो रही हैं, जिन्हें हम जानना या बताना नहीं चाहते या फिर उनसे आँखें मूँद लेना चाहते हैं।

लेकिन सच्ची रचनाएँ हमें तमाम पाशविक घटनाओं, अमानवीय कृत्यों, अभावनीय षड्यंत्रों, पत्थर युग की याद दिलानेवाली नृशंस यातनाओं के बारे में बता देती हैं। ऐसी क्रूरताओं के बरक्स हमें सन्नद्ध एवं सतर्क करती हैं ताकि हम न केवल हिंस्र समाजों एवं समुदायों के चेहरों को पहचानें बल्कि उनका सामना भी करें। यह भी तय है कि अगर ऐसे किसी आततायी निज़ाम को हम बर्दाश्त करते रहे तो कोई और बाद में होगा, उसके पहले शिकार हम ही होंगे।

दूसरी ओर, रचनाओं में कभी-कभी प्रायोजित ढंग से या जान-बूझकर त्रासद, विकृत एवं हिंस्र स्थितियाँ पैदा की जाती हैं और उन पाठकों में अपनी पैठ बनाई जाती है, जो ऐसी युक्तियों से अनभिज्ञ होते हैं। पिछले कुछ वर्षों में ऐसी कृत्रिम या अस्वाभाविक युक्तियाँ न केवल मुद्रित रचनाओं में, बल्कि दृश्य माध्यमों—फ़िल्मों एवं नाटकों में भी—धड़ल्ले से पिरोयी जा रही हैं। हमारे दैनिक अख़बार इन्हीं घटनाओं की बैसाखी पर हमारी गलियों और कॉलोनियों में हर सुबह लगभग मेहमान की तरह आ टपकते हैं। इन संकटापन्न स्थितियों में यह देखना, जानना और समझना ज़रूरी है कि ऐसी रचना या कृतियों के पीछे रचनाकार की मंशा क्या है! अगर हम इसकी समुचित परख न कर पाएँगे तो चाहे जो भी निर्मिति हो, उसकी संगत से हमारा मस्तिष्क जहाँ विकृत होगा, वहाँ हमारा सामाजिक और सामुदायिक जीवन भी दूषित होगा।

प्रतिबद्ध रचनाकारों की सतेज लेखनी और प्रतिश्रुत कृतिकारों की निर्भय निर्मितियाँ विभिन्न माध्यमों द्वारा, हर दौर में ऐसी ख़ूँख़ार और दुर्दम्य शक्तियों के विरुद्ध सिर उठाकर अपने पाठकों और प्रशंसकों को सचेत करती रही हैं।...कभी-कभी उन्हीं की भाषा और भंगिमा में—स्पेनी गृहयुद्ध की भयंकर त्रासदी की पृष्ठभूमि में निर्मित 'गुएर्निका' के चितेरे पिकासो से जब नृशंस सैनिकों ने पूछा कि यह तुमने बनाया है तो पिकासो का उत्तर था—'नहीं, तुमने।'

क्या 'दर्द का हद से गुज़रना है दवा हो जाना' ही हमारे समय का अंतिम सच है—जैसा कि चचा ग़ालिब फ़रमा गए हैं।

—रणजीत साहा

9811262257

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रचना भूमि

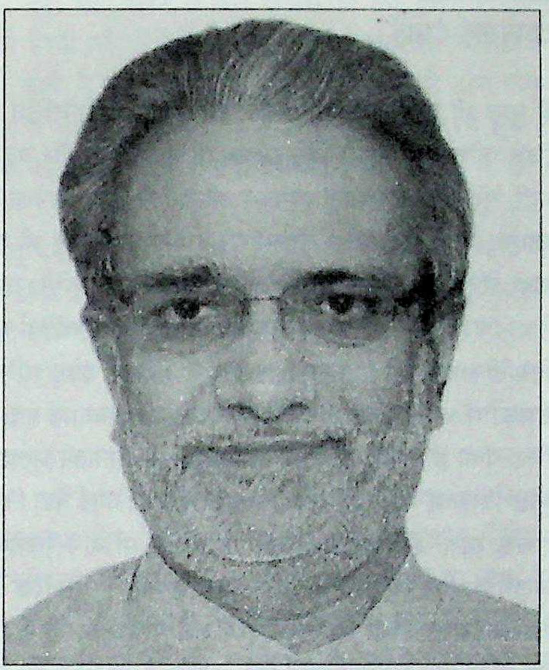

केशुभाई देसाई का जन्म 3 मई, 1949 को उत्तर गुजरात के खेरालु क़सबे में साधारण किसान परिवार में हुआ। महाराजा सयाजी राव विश्वविद्यालय वडोदरा से एम.बी.बी.एस. की उपाधि प्राप्त की, लेकिन निजी रुचि के अनुसार आपने दूरवर्ती ग्रामांचल में मेडिकल प्रैक्टिस की। आपकी मूल प्रवृत्ति शब्द से जुड़ी थी। चित्रकला एवं वक्तृत्व कला भी आपकी रुचि के विषय रहे। चिकित्सीय व्यवसाय के साथ स्वतंत्र लेखन कार्य करते हुए अंततः आप पूर्णकालिक लेखक ही बन गए। आपके 22 उपन्यास, 12 कहानी -संग्रह, 3 नाटक, 9 निबंध-संग्रह, 5 रेखाचित्र-संग्रह, दो चरित्र ग्रंथ, एक जीवनी के उपरांत एक यात्रावृत्त 'दीकरी संगे देशाटन-बिटिया संग' एवं हिंदी-अंग्रेज़ी से अनुवाद के 7 ग्रंथ बहुचर्चित। हिंदी में आपकी रचनाएँ हैं : *दीमक, हरा भरा, अकाल, दाह, धर्मयुद्ध, लेडीज़ हॉस्टल, सूरज बुझाने का पाप, मजबूरी श्री मैडम* और *केशुभाई देसाई की यादगार कहानियाँ, फूल जोगनी*। आपकी रचनाओं पर कई शोध कार्य भी हुए हैं। सांप्रदायिक सौहार्द पर लिखी गई रचना *ऊधई* (हिंदी में *दीमक*) विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है।

गुजराती साहित्य परिषद् एवं गुजरात साहित्य अकादमी के कई पुरस्कार एवं संयुक्त राष्ट्र संघ से प्रेरित रवींद्रनाथ ठाकुर सम्मान, मारवाड़ी सम्मेलन (मुंबई) का साहित्य सम्मान—घनश्याम दास सराफ पारितोषिक, राष्ट्रीय कला केंद्र, सूरत का श्रेष्ठ कहानी-संग्रह *झरमरता चेहरा* के लिए 'सरोज पाठक पारितोषिक', नर्मद साहित्य सभा, सूरत द्वारा श्रेष्ठ उपन्यास के तौर पर *फूल जोगणी* के लिए 'नंद-शंकर चन्द्रक' पुरस्कार। संपर्क : 13-ऐश्वर्य-1, प्लॉट 132, सेक्टर 19, गाँधीनगर-382 021 (गुजरात); मो. 09879543132

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्राक्कथन

केशुभाई देसाई

मैं कुछ भी होने से पहले अपने भोले-भाले अल्पशिक्षित देहाती किसान क़ुनबे का बेटा था, जिसे परिवार के सबसे छोटे सदस्य के नाते पढ़ने और बढ़ने का मौक़ा मिला। परिवार को ही नहीं, पूरे गाँव को अपनी होनहार औलाद से ऊँची अपेक्षाएँ रहती हैं। 'भैया बड़ा आदमी बन जाएगा, शहर में शानदार बँगला बनाएगा तो हम लोग भी गर्व से कह सकेंगे—हमारा एक घर शहर में भी है। जब जी चाहे जाकर उसके घर ठहरेंगे, वह थोड़े ही मना करेगा।'

ऐसे सपने बड़े मधुर लगते हैं। वास्तविक स्थितियाँ कुछ अलग ही होती हैं। मेरे साथ भी नियति ने ऐसा ही नाटक खेला और मैं डॉक्टरी छोड़ मसिजीवी बन गया! पिछले चार-पाँच दशकों में भारतीय जीवन शैली में कितना बदलाव आ गया है! संयुक्त परिवार का नामोनिशान मिट चुका है। गाँव को शहर निगल रहा है। सनातन मूल्य केवल कहने भर को बचे हैं। सब कुछ दिखावा भर है, निरा आडंबर और दंभ। कोई बेटा दिल से नहीं चाहता कि बूढ़े माँ-बाप उसके साथ रहें। वृद्धाश्रम पनप रहे हैं, पर माँ बाप-विशेष तौर पर कृषि से जुड़े परिवारों के बुजुर्ग ग्रामीण संस्कारों के पुराने मानदंड और पारिवारिक इज़्ज़त के ख़यालों से ग्रस्त होने के कारण इस व्यवस्था को अपनाने में शर्म महसूस करते हैं। गाँव की ज़मीन की क़ीमतें पिछले दशक के दौरान बढ़ती चली गईं, यहाँ तक कि कुछ वर्ष पूर्व जो बीघे का मूल्य था, वह अब स्क्वॉयर फ़ुट का हो गया है। दो नंबर की कमाई ज़मीन में दबोचने का कुचक्र चल पड़ा है। भौतिक समृद्धि की चूहा दौड़ में गाँव से आकर शहर में बसा हुआ किसान का बेटा भी शामिल हो गया है। उसका अब गाँव से कोई जुड़ाव नहीं रह गया। वह पुश्तैनी ज़मीन बेचकर उस रक़म को शहर की प्रोपर्टी में तब्दील करने को उतावला हो रहा है। कुछ वर्ष पूर्व गुजरात सरकार ने खेती की ज़मीन बेचने पर लगी आठ किलोमीटर वाली शर्त हटा दी तो ज़मीन के भाव आसमान पर जा पहुँचे। पहले आठ कि.मी. की सीमा में रहनेवाला किसान ही दूसरे किसान की ज़मीन ख़रीद सकता था, अब वह पाबंदी नहीं रह गई। लोगों में बुजुर्गों की भावनाओं की कोई क़द्र नहीं। उन्हें भविष्य की नहीं, अपितु कठोर वर्तमान की चिंता है। वह रातोंरात अरबपति बन जाना चाहता है, चाहे उसके लिए परंपरागत मूल्यों की, भावनाओं की बलि चढ़ानी पड़े।

यह कहानी ऐसी ही एक करुण पारिवारिक घटना के चलते लिखी गई थी। उत्तर गुजरात के हमारे कृषक परिवारों को भी यह बाज़ारवाद का कालिया नाग डस चुका है। मेरे अपने ही घर में उसका कालकूट विष परिवार के बुजुर्ग को हमेशा-हमेशा के लिए गृहत्याग करने को मजबूर कर चुका है। पिताजी या मेरे ज्येष्ठ भ्राता सपने में भी नहीं सोच सकते थे कि पीढ़ियों से उत्तराधिकारियों में बँटती रही ज़मीन कभी बेची भी जा सकती है। माँ को कभी थोड़े ही बेचा जा सकता है! ज़मीन चाहे वह बंजर ही क्यों न हो, माँ ही तो है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज़मीन का सौदा करके गाँव से अलग-थलग पड़ जाना तथाकथित पुरानी-दक़ियानूसी पीढ़ी के बुज़ुर्गों को हर्गिज़ मंज़ूर नहीं था। शहर में बसे वारिस ने जब उस पर अपना उत्तराधिकार जताकर उसे बेचने की पैरवी की तो ऐसे ही एक बुज़ुर्ग ने संन्यास ले लिया।

कोई भी कहानी तब लिखी जाती है जब लेखक किसी तीव्र संवेदना से ग्रस्त होकर घुटन महसूस करने लगता है। अंदर से धक्का आता है और पीड़ा का साधारणीकरण शुरू हो जाता है। वस्तुत: लेखक निजी पीड़ा को प्रसाद की पुड़िया में परिवर्तित कर पाठकों में बाँटना चाहता है।

प्रस्तुत कहानी की विषयवस्तु की नींव में दबा पड़ा है एक कठोर यथार्थ—यानी मेरे अग्रज का गृहत्याग। चूँकि मैं कभी डॉक्टरी भी करता था, मेरे लिए लावारिस लाश की कल्पना कोई मुश्किल बात नहीं थी। रातोंरात ज़मीन यानी 'रियल एस्टेट' के सौदों से गुलज़ार होनेवाले गाँव के पटवारी से लेकर कलेक्टर (डी.एम.) और सचिव तक पूरी साँठ-गाँठ चलती रहती है। क़ानून तो किताबों में दबे रहते हैं। ऐसी कोई समस्या नहीं हो सकती जिसका भ्रष्ट तंत्र के पास हल न हो। पटवारी कथानायक के कान में फुसफुसाकर जो हल सुझाता है, वह शायद पाठकों को भले हज़म न हो, लेकिन यह क़तई नामुमकिन भी नहीं। यह लेखक के मस्तिष्क की रुग्ण कल्पना ही क्यों न हो, कल वह वास्तविकता बन सकती है। बाज़ारवाद, पूँजीवाद और भौतिक समृद्धि की कभी नहीं बुझनेवाली प्यास शतमुख विनिपात के कगार पर खड़ी है। ज़मीन अपने नाम चढ़ाने की सनक में किसान का बेटा किसी अनजान भिखारी की लावारिस लाश को अपने गुमशुदा पिता की लाश क़रार देने को लालायित है। सुधी पाठकगण इस विडंबना को वर्तमान समय के यथार्थ के रूप में समझने की चेष्टा करेंगे। लालची कथानायक के सामने वही भिखारी का पात्र है जो अपने पड़ोसी भिखारी की मौत पर आँसू बहा रहा है, उसका अंतिम-संस्कार करना चाहता है। वह उसका बाप नहीं, लेकिन भिखारी उसे पितातुल्य समझता है। अब कथानायक को और भिखारी को एक-दूसरे के बरक्स देखिए। कहाँ वह पतित शहरी बाबू और कहाँ फ़ुटपाथ पर ज़िंदगी बसर कर रहा वह ग़रीब भिखमंगा! संवेदना के स्तर पर वह भिखारी कितना समृद्ध लगता है!

गुजरात में आज से पचास साल पूर्व कृषि-पशुपालन से जुड़े ग्रामीण दूध बेचना भी पाप समझते थे। समय बदलता गया तो जीवन मूल्य भी बदलते रहे। प्रगति इस क़दर हुई कि उत्तर गुजरात के पशुपालक दूध बेचकर खेती से भी अधिक कमा रहे हैं। उनका दूध मुंबई, दिल्ली, कोलकाता में बिकता है और उनके अपने बच्चों को दूध के लाले पड़ रहे हैं! खेती की ज़मीन को बाज़ारवाद ने 'रियल एस्टेट' में तब्दील कर दिया है। जहाँ फ़सलें लहलहाती थीं, वहाँ अब सिमेंट के जंगल उगे हुए हैं। क्या एक ऐसा भी समय आएगा, जब अनाज के लाले पड़ जाएँगे!

यह कहानी इन्हीं अप्रिय संभावनाओं के तीखे व्यंग्य के रूप से शोकांतिका के साँचे में ढलकर प्रस्तुत है। इस लेखक के लिए भी यह एक यादगार कहानी है। गुजरात साहित्य अकादमी की पत्रिका 'शब्द सृष्टि' में यह कहानी 'सीधी लीटीनो वारस' शीर्षक से प्रकाशित और गुजराती साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित '2012 वार्ता संचय' में संकलित है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुजराती

केशुभाई देसाई

उत्तराधिकार

सब कुछ ठीकठाक कर दिया है सा'ब!

आपकी दया है—सर्टीफ़िकेट भी मिल जाएगा।

इस समय अख़बार के कार्यालय जा रहा हूँ, 'बेसना' का विज्ञापन देने।

कृपया आवश्यक प्रोसेस शुरू करवा दें। **—महेश बारोट**

बार-बार नंबर मिलाने पर भी जवाब नहीं मिला तो उसने एसएमएस कर ही दिया। उसे पक्का विश्वास था, जैसे ही पंडया जी मैसेज पढ़ लेंगे, वे ख़ुद फ़ोन कर देंगे। ज़मीन का सौदा उन्हीं के मार्फ़त तो होना था! दोनों ओर से एक-एक प्रतिशत कमीशन भी लेंगे, तब भी औसतन दस लाख बिना मेहनत के बटोर लेंगे। सयाना पटवारी तो एक कलेक्टर से भी अधिक कमा सकता है।

महेश सोचने लगा—एम.एस-सी., एम.एड्.-जैसी उच्च शिक्षा प्राप्त करके मास्टरी करने के बजाय सिर्फ़ मैट्रिक पास करके पटवारी बन गया होता तो आज ख़ुद करोड़पति होता। खटारा बन चुकी मारुति के बजाय होंडा सिटी में घूमता। आदमी का भाग्य ही बोदा हो तो बेचारा क्या करेगा!

बल्लू भिखारी को पाँच सौ रुपये तो श्मशान में ही दे चुका था। दो सौ रुपये और थमाकर उसको पथिकाश्रम बस स्टैंड पर उतार दिया। बड़े संकोच के साथ पैसे लेकर बिना कुछ बोले ही अपना गुमसुम चेहरा लिए वह लाल दरवाज़े वाले स्टॉपेज की ओर बढ़ गया।

अब जाकर महेश ने चैन की साँस ली। उसके सामने अगली कार्यवाही की रूपरेखा स्पष्ट थी। वह सेक्टर बाईस में जाकर तीनों प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों में अपने पिता मणिलाल मोहनलाल बारोट के दुःखद निधन और 'बेसना' (शोक सभा) का विज्ञापन दे देगा। सेक्टर सत्ताईस में रहनेवाले किशोर भाई पुरोहित को गरुड़ पुराण बाँचने के लिए न्योता देने चला जाएगा। कचहरी खुलते ही मृत्यु पंजीकरण का प्रमाणपत्र लेने पहुँच जाएगा। दोपहर दो बजे तक सब काम निपटा लेगा। फिर रात तक अपने पुश्तैनी गाँव का रुख़ कर लेगा...

महेश मन-ही-मन बड़ा तीसमार ख़ाँ बन रहा था। मानो बड़ी दिग्विजय कर ली हो। सुनीता को भी लगेगा, जिसे आज तक भीगी बिल्ली समझती और किसी-न-किसी बहाने नीचा दिखाती रही, वह तो छुपा रुस्तम निकला! पिछले छह महीनों से उसका बेहद गोपनीय कार्यक्रम चलता रहा है—रात को जब पूरा घर गहरी नींद में सो जाता, वह देर-सवेर चुप्पी

अनु. **शिवचरण मंत्री**। जन्म : 1935 ई.। गुजराती-हिंदी में परस्पर अनुवाद। संपर्क : ग्राम एवं पो. श्रीनगर, ज़िला, अजमेर 305025 (राज.); मो. 09414981944

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साधे चोर की तरह बाहर निकल पड़ता था और माँ-बेटी की नींद उचटने से पहले तो पूरे शहर के फ़ुटपाथों को तलाशकर वापस बेड रूम में बंद हो जाता था। उसके लिए यह रोज़मर्रा का कर्मकांड बन चुका था, फिर भी घर में या आस-पड़ोस में किसी को भनक तक नहीं पड़ी थी। बार-बार गिरती-उठती मकड़ी की तरह वह अपने मिशन पर दृढ़ता से लगा रहा, तब जाकर सफलता हासिल हुई थी। उसके लिए यह सफलता अभिमन्यु द्वारा चक्रव्यूह का सातवाँ कोठा जीतने-जैसी थी। अपूर्व सिद्धि प्राप्त कर चुका था वह।

समस्या के अंतिम उपाय के बारे में पटवारी ने कान में यही तो सुझाव फूँका था। और कोई रास्ता ही कहाँ बचा था! ''मास्टर, अब यही एक उपाय बचा है। किसी तरह मणिलाल मोहनलाल बारोट का डेथ सर्टिफ़िकेट निकलवा दो, काम चुटकी बजाते हो जाएगा! दिवंगत के एकमात्र उत्तराधिकारी के नाते सरकारी अभिलेख में तुम्हारा नाम चढ़ जाएगा।''

''लेकिन बापू का डेथ सर्टिफ़िकेट...भला यह कैसे मिलेगा!'' वह असमंजस में पड़ गया था।

''कैसी बात कर रहे हो! इस इक्कीसवीं सदी में तो ईश्वर का डेथ सर्टिफ़िकेट भी लाया जा सकता है। मनुष्य एक बार ठान ले तो उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है। फिर तुम्हें तो अपने फ़रार हुए बाप का ही डेथ सर्टिफ़िकेट लाना है। ज़रा कोशिश तो करो, आगे जो होगा देखा जाएगा।''

पटवारी के हाथ बँधे हुए थे। आख़िर उसे रेवेन्यू के क़ानून के मुताबिक़ जो चलना था। 'सात-बारह' और 'आठ-अ' के खाते में ज़मीन जोतनेवाले किसान के तौर पर सिर्फ़ मणिलाल मोहनलाल बारोट का ही नाम था। महेश उनका एकमात्र पुत्र के नाते वंशानुगत उत्तराधिकारी ज़रूर था, पर बेजान दस्तावेज़ में उसके हस्ताक्षर नहीं चल सकते थे। फ़रार बाप को अधिकृत रूप से मृत घोषित करने के लिए कम-से-कम छह-सात वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी, तब कहीं जाकर उसका नाम सरकारी अभिलेख में आ पाएगा। एकमात्र 'शॉर्टकट' जो हो सकता था, वह पटवारी ने इशारे-इशारे में बता दिया था!

''यह काम थोड़ा कठिन लग सकता है, पर असंभव नहीं है।'' उसने मुस्कुराकर कहा था, ''सीता जी को खोजने का काम हनुमान को भी शुरू-शुरू में तो बड़ा कठिन ही लगा था। भाई मेरे, ऐसे समय पर तो आँखें मूँदकर कूद जाना पड़ता है!'' इतना कहकर उसने महेश के कान में जो मंतर पढ़ा, उससे महेश के रोंगटे खड़े हो गए थे। लेकिन और कोई उपाय भी तो नहीं बचा था। रूठकर चला गया बाप बड़ा अड़ियल क़िस्म का आदमी था। संभव है, बाबा (साधु) बन गया हो या आवेश में आकर उसने गंगा में डुबकी लगा ली हो! देखते-ही-देखते छह महीने निकल चुके थे। कोई अच्छा-बुरा समाचार नहीं मिला, मानो उसे धरती ही निगल गई हो!

अब वह उसकी प्रतीक्षा भी कब तक करता रहे। उसे झुँझलाहट हो रही थी।

अंबाजी स्टेट हाईवे पर अंबा घांटा के सिवान में सड़क से सटी हुई एक चक पच्चीस बीघा ज़मीन थी, जो विगत पाँच-सात साल में सोने की ईंट बन गई थी। सात पीढ़ी पूर्व यह बंजर पथरीली ज़मीन दांता रियासत के ठाकुर ने अपनी वंशावली की बही बाँचनेवाले भाट—बारोट के नाम 'यावच्चंद्र दिवाकरौ' बख़्शीश कर दी थी। इन दिनों उसकी क़ीमत सातवाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आसमान छू रही थी। शहरी बिल्डर आठ किलोमीटर की सीमा वाला पुराना क़ानून रद्द होते ही भूखी टिड्डियों की तरह दूर-दराज के इलाक़ों पर झपट पड़े थे। पहले किसान की ज़मीन सिर्फ़ किसान ही ख़रीद सकता था, वह भी आठ किलोमीटर की लक्ष्मण रेखा में। नई सरकार ने पूँजीपतियों के दबाव पर वह क़ानून रद्द कर दिया था। काले धन को सफ़ेद करने के लिए ज़मीन सबसे सरल माध्यम बन गई थी।

''तेज़ी का लाभ उठा लेने में ही फ़ायदा है जीजा जी...'' सुनीता का भाई राहुल हर तीसरे दिन बिना माँगे मशवरा देता रहता था। ख़ुद उसने वडनगर से सटे अपने गाँव वाली काफ़ी ज़मीन बेचकर उस भारी-भरकम रक़म का सरखेज-गाँधी नगर राजमार्ग पर रियल एस्टेट में निवेश किया था। सुनीता हफ़्ते में एक बार तो झगड़ा कर ही देती, ''उस बंजर जंगली टीले में अब क्या गड़ा हुआ है ? बापू को समझा-बुझाकर उसे बेच क्यों नहीं देते ? राहुल जो कुछ कहता है, आपके भले के लिए ही तो कहता होगा! आजकल तेज़ी चल रही है। किसे पता है कल मंदी का दौर नहीं आएगा! आज के दिन वह बंजर टीला सोने की पहाड़ी है। मंदी आते ही वह राख की ढेरी बनकर रह जाएगा!''

महेश ने अकुलाकर अपने बूढ़े बाप से यह बात की तो वह शेर की तरह गुर्राया, ''ज़रा यह भी बताओ, तुम्हारी माँ ज़िंदा होती तो क्या उसको भी बेचने निकलते ?''

महेश भौंचक्का रह गया, ''मगर आजकल ज़मीन में तेज़ी चल रही है। आप तो जानते हैं, हमारी पच्चीस बीघा ज़मीन से सालाना पच्चीस हज़ार भी नहीं मिलते। कल गिरदावरी में किसी काश्तकार का नाम चढ़ गया तो समझ लो कि गए काम से! इन दिनों तो ज़मीन का क़ानून ही बदल चुका है। जो जोतेगा, ज़मीन उसी के नाम हो जाएगी।''

फिर भी बूढ़ा मानने को तैयार नहीं हुआ और बोला, ''जब तक तन में प्राण रहेंगे, एक चप्पा नहीं बेचने दूँगा! ज़्यादा तंग किया तो पूरा-का-पूरा मंदिर के नाम दान कर दूँगा। यह मेरे पुरखों की जागीर है, मैंने नहीं ख़रीदी जो बेचता फिरूँ! ख़बरदार, आईंदा ऐसी बात कभी मत करना!''

वयोवृद्ध राव जी (बारोट जी) का रोम-रोम अंगारे की तरह दहक उठा था। उन्हें शहर में बस गए इकलौते लाडले का अर्थशास्त्र रास नहीं आया था। मुँह लटकाकर लौटे महेश को आंबाघाटी स्थित मंदिर में अडिंगा जमाए बैठे त्रिकालदर्शी बाबा की भविष्यवाणी याद आ गई। मुश्किल से दस साल का होगा जब अपने पिता की उँगली पकड़कर मंदिर गया था। गाँजे की चिलम फूँक रहे बाबा की नज़र अचानक ही उसकी हथेली में रम गई थी।

''कुछ दिख रहा है क्या ? लाडेसर अपने पुरखों के नाम पर कालिख तो नही पोतेंगे ?''

पिता ने बिना किसी लाग-लपेट के सही-सही भविष्य बता देने की प्रार्थना की, तब उन सुर्ख़ आँखों में अट्टहास थम गया था।

''राव जी, लाडेसर दिन-दहाड़े सगे बाप की नीलामी करने से भी नहीं डरनेवाला! चुपचाप देवी माँ के नाम की माला फेरते रहो! आनेवाला हर दिन आज के दिन से कुछ घटिया ही रहेगा, यही क़ुदरत का क़ानून है। ख़ैर इसी में है कि आदमी अपना आज सँवार ले, कल की चिंता में ख़ून जलाना निरी बेवक़ूफ़ी होगी।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब घर पहुँचा तो उसका लटका मुँह देखते ही सुनीता भाँप गई थी—महाशय बैरंग लौट आए हैं। बिना किसी पूछताछ के महेश ने सच बता दिया था, ''बूढ़ा सोने के ढेर पर साँप बनकर बैठ गया है! मरते दम तक हाथ नहीं रखने देगा, यह तय है।''

''बड़े बदनसीब जो ठहरे!'' पैर पटकते हुए उसने दरवाज़ा बंद कर दिया और भड़ास निकालने लगी, ''बिलकुल चवन्नी छाप आदमी हो तुम...घर में शेर बने रहते हो, पर अपने बाप को देखते ही भीगी बिल्ली बन जाते हो! चले थे बड़े जोश से बाप का ख़ज़ाना लूटने! कितना माल ले आए, यह तो बताओ?''

वह देर तक बस ज़हर ही उगलती रही थी। महेश का जी उचट गया था। थोड़ी देर के लिए सब छोड़-छाड़कर साधु बन जाने की इच्छा कौंध गई थी लेकिन फूल-सी रिंकू बिटिया बीच में दीवार बनकर खड़ी थी। अगर वह वहाँ नहीं होती तो महेश बारोट ने उसी दिन चोला पहन लिया होता! उसका मन गेरुए रंग में रँग चुका होता!

पूरा सप्ताह झुँझलाते हुए इधर-उधर भटकता रहा। स्कूल में भी बिलकुल मन नहीं लग रहा था। शनीचर को ठीक बारह बजे स्कूल बंद होते ही उसने अपनी मारुति फ्रंटी सँभाल ली। घर में किसी से बात तक नहीं की और यूँ ही चल पड़ा। सुबह सिर्फ़ चाय पी थी। उस दिन वह आर-पार के मूड में था। सोच रहा था, जाकर बूढ़े का गला पकड़ लूँ, दबोचकर पूछ लूँ—बोल बूढ़े, दस्तावेज़ पक्का करवाना है कि नहीं? तेरी इस बंजर पथरीली बेजान बिसूकी गौआ-जैसी ज़मीन के पाँच करोड़ रुपए मिल रहे हैं। चाहेगा तो बीस-पच्चीस हज़ार तुम बूढ़ा-बुढ़िया के नाम मंदिर में धर्मादा कर दूँगा।

आंबा घाटी के मोड़ पर ही भेंट हो गई थी। यकायक गले में चिपके बलगम ही तरह सवाल फूट पड़ा, ''बापू, इस ज़मीन को छाती पर बाँधकर ले जाने का इरादा है क्या?''

इससे आगे कोई शब्द नहीं कहा जा सकता था। बूढ़े बाप ने भी चुप्पी साध ली थी। आख़िर बहस करने से कोई लाभ भी तो नहीं होनेवाला था। बिना कुछ कहे, उसे अनसुना कर वह ढलान उतरकर चुपचाप आगे बढ़ गया। तब लड़का आगबबूला होकर चिल्ला उठा था, ''सुन लो बुढ़ऊ, आज से मेरा-तुम्हारा रिश्ता ख़त्म! मैं तो कभी का तुम्हारे नाम पर नहा चुका हूँ! तुम मेरे नाम पर भी नहा लेना! मैं तुम्हारे लिए मर चुका। मरने के बाद भी साँप बनकर बैठे रहना अपनी ज़मीन पर ताकि कोई उसे छू ना पाए!''

उसे चिल्लाते सुनकर मंदिरवाले बाबा भी अपनी कुटिया से बाहर आ गए थे, ''काहे को शोर मचा रक्खा है रे भगत! यह कौन चिल्ला रहा है?''

बाबा ने जब महेश को देखा तो बात समझ गए। उसे कुछ मीठे शब्द कहकर शांत करने का प्रयास किया। पर बाप से ज़मीन हथियाने पर तुला महेश मास्टर ऐसे थोड़ा ही शांत होनेवाला था! फिर उस संन्यासी बाबा को भी क्या गरज थी। उन्हें तो राव जी से काम—उनकी आहट सुनते ही चिलम तैयार कर देते और उसकी एवज़ में अफ़ीम की किरची माँग लेते। दोनों की साझेदारी चलती रहती। दुनिया भर की बातें करते और वक़्त गुज़र जाता। ज़मीन के बारे में दोनों वही पुरानी सोच रखते थे—यह कोई बिकाऊ माल थोड़े ही है? माँ है माँ! भला माँ का भी कहीं व्यापार हो सकता है?—दोनों एक से बढ़कर एक दलील देते रहेंगे। कोई उनकी बात थोड़े ही सुननेवाला था! महेश जल्दी ही मारुति स्टार्ट कर वापस लौट गया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ठीक एक सप्ताह बाद उसे डाक से एक रजिस्टर्ड पत्र मिला था। लिखा था—

''भाई महेश कुमार, पहले तो मुझे सही समय पर मोह निद्रा से जगाने के लिए तुम्हारा आभार! चाहे तुम मेरे पुत्र न रहे, किंतु अनजाने में भी गुरु तो बन ही चुके! तुम्हें प्रणाम कर निवेदन करना चाहूँगा कि आज ही पुरखों की इस ज़मीन पर से अपना अधिकार छोड़कर हमेशा के लिए जा रहा हूँ! मुझे ढूँढ़ने की कोशिश मत करना! ढूँढ़ने पर मैं किसी को मिलूँगा भी नहीं। और लिख लो, चाहे भीख माँग लूँगा, पर जीते जी तुम्हारे दरवाज़े पर क़दम नहीं रखूँगा! चलो जी इतना बहुत हो गया, अब मेरा राम-राम स्वीकार कर लो गुरु महाराज...''

चिट्ठी पर किसी के दस्तख़त नहीं थे, पर लिखावट बेशक मणिलाल मोहनलाल बारोट की ही थी। पटवारी को बताने से पहले वह पत्र महेश ने दिवानी मामलों के निष्णात माने जाते दो-तीन वकीलों को दिखाकर उनकी सलाह प्राप्त कर ली थी। सभी की राय एक-सी थी, ''लिखावट भले ही तुम्हारे पिता की हो, पर दस्तख़त कहाँ हैं? यह पत्र साक्ष्य के रूप में नहीं टिक सकता। उल्टे फँस जाओगे, फ़ज़ीहत होगी। जज या कलक्टर के सामने इंसाफ़ की गुहार लगाने चले गए तो पूरी दुनिया की उपस्थिति में इज़्ज़त की धज्जियाँ उड़ेंगी, यक़ीन मानो। तुम्हारे पिताजी ने राजी-ख़ुशी से तुम्हारे नाम वसीयत कर दी होती तो बात अलग थी। इस पत्र से तुम्हारे त्रास से दुःखी होकर उन्हें घर-बार छोड़ना पड़ा है, इतना ही साबित होगा, समझे? इसलिए कोई दूसरी जुगत भिड़ानी पड़ेगी। छोटा-मोटा षड्यंत्र ही समझो। अगर ऐसा कुछ नहीं कर सकते तो पूरे सात साल हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहो, जब तक बूढ़ा वापस नहीं आता। उसके बाद राजस्व रेकॉर्ड में अपने आप ही तुम्हारा नाम चढ़ जाएगा—मृतक किसान का इकलौता वारिस होने के नाते।''

''सात साल! क्या पता तब तक मैं ख़ुद भी रहूँगा या नहीं! कल किसने देखा है?'' हारकर उसने गाँव के पटवारी की शरण ली।

''जी साहब, मैं ठहरा स्कूल मास्टर! मैं इस झंझट से कैसे निपट पाऊँगा भला? आप ही कोई रास्ता निकालो साहब! नियमानुसार जो भी कहोगे दलाली दे दूँगा—शाह जोग! उतनी रक़म सीधे पार्टी से ही वसूल लेना, पेमेंट आप ही तो करवाओगे! आप ही मेरे कुल मुख़्तियार, आप जो तय करेंगे, मैं आँख मूँदकर उस पर दस्तख़त कर दूँगा।''

तब जाकर पटवारी ने उसे वह 'शॉर्टकट' सुझाया था।

इसके बाद उसने दर-दर भटकना शुरू कर दिया था, इस आशा से कि कहीं-न-कहीं तो कोई लावारिस लाश मिल ही जाएगी। उसे पता था, ऐसी लाश या तो सरकारी अस्पताल के मुर्दाघर में मिल सकती है या फिर शहर की फ़ुटपाथ पर या रेलवे स्टेशन के इर्द-गिर्द। उसने ईश्वर का नाम लेकर इन स्थानों पर चक्कर लगाने शुरू कर दिए। घर से उल्टा-सीधा बहाना बनाकर निकल पड़ता। कभी देर रात तक नहीं लौट पाता, तब पत्नी की उनींदी आँखों में आँसू उमड़ पड़ते। घर पहुँचते ही वह पूछने लगती, ''तुम्हें कहीं सन्निपात तो नहीं हो गया! रिंकू देर तक पापा के नाम की रट लगाती रही, कितने सारे झूठे वादे किए, तब जाकर अभी-अभी सोयी है! आख़िर इतनी रात तक करते क्या हो, कभी बताया भी तो करो?''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब वह बहुत ज़्यादा ज़िद करने लगती, स्वभाववश अपनी ज़िद पर अड़ जाती तो वह ख़ामोश भी कैसे रहता! लेकिन सच तो बता नहीं सकता, आख़िर इतना ही कहकर पूर्णविराम कर देता, ''तुम तो समझदार हो सुनीता! मैं ख़्वामख़्वाह थोड़े ही भटकनेवाला हूँ? अपनी रिंकू बिटिया की क़सम, मैं जो कुछ भी कर रहा हूँ, वह सिर्फ़ उसके उज्ज्वल भविष्य के लिए—बेकार में पूछताछ करके मुझे टेंशन में मत डाला करो!''

सुनीता चुप हो जाती। कभी-कभार बाथरूम में छिपकर चुपचाप रो लेती। मन-ही-मन बुदबुदाती रहती, ''मैं जानती हूँ, बापू को ढूँढ़ने में तुम आसमान-ज़मीन एक कर रहे हो! क्या पता, उस ग़ुस्सैल और सनकी बुढ़ऊ ने कोई ग़लत क़दम नहीं उठाया होगा? अब उनके पीछे पेट्रोल फूँकना बेकार है! वे जहाँ भी हों, ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे। ग़लती से हमारे मुँह से कभी कड़वी बात भी निकल गई होगी तो भी वे हमारे पिता थे। फ़ौरी तौर पर ग़ुस्सा कर सकते हैं लेकिन अपनी औलाद को बद्दुआ कभी नहीं देंगे। उदारता बरतकर हमें माफ़ कर देंगे। जैसे भी हों, वे तुम्हारे पिता थे और उन्हें कभी दो कड़वे बोल कह भी दिए होंगे तो क्या! तुम तो उनकी इकलौती औलाद हो! उन्हें खरी-खोटी सुना लोगे, पर कोई ग़ैर ऐसी हरकत करेगा तो उसकी जीभ नोच लोगे, है न? ख़ून तो बोलेगा ही! बोलेगा और समय आने पर खौलेगा भी!''

वह मन-ही-मन पश्चात्ताप करती रहती, 'कमबख़्त मैंने ही इस भोले-भाले आदमी को सगे बाप के ख़िलाफ़ उकसाने का पाप किया था! ज़मीन-जायदाद का मोह व्यक्ति को भले-बुरे का विवेक भुला देता है। मैं अभागिन, मैंने ख़ुद यह विपदा मोल ली, जान-बूझकर!' जायदाद तो मिली नहीं। हाँ, चैन की नींद ज़रूर गँवाई। पागल की तरह दिन-रात जूझते पति को शुरू-शुरू में टोका भी, जब कोई फ़र्क़ नहीं दिखा, ख़ुद भी नए रंग-ढंग में ढल गई। सोचती—कोई भी संतान अपने खोए माँ-बाप को ढूँढ़ने की कोशिश तो करेगी ही! फिर यह तो राव जी का ख़ून जो ठहरा! भला कैसे चैन पड़ता!

लंबी भाग-दौड़ के बाद आख़िर जाकर सावन की एक मेघाच्छादित रात्रि में उसे अपनी समस्या का अप्रत्याशित समाधान मिल गया। दिल्ली दरवाज़े के बाहर हड़काई माता का मंदिर बागड़ी देवीपूजक जाति के लोगों का पुराना श्रद्धा स्थान है। उसी के इर्द-गिर्द इस जाति की गँवारू औरतें पुराने-सेकेंड हैंड कपड़ों की मंडी लगाती हैं। पूरी सड़क पर वे रोब जमाती रहती हैं। पुलिस भी उन्हें हटा नहीं पाती।

बरसात में भीगता हुआ महेश मंदिर के पास से गुज़र रहा था कि उसे स्ट्रीट लाइट के खंभे के नीचे किसी के रोने की धीमी आवाज़ सुनाई दी। मारुति खड़ी करके वह उस दिशा में आगे बढ़ा। छाते की ओट में रात गुज़ार रहे बल्लू भिखारी ने आहट सुनकर सोचा, पुलिस शायद नाइट ग़श्ती में निकली है। धीरे-से उसने छतरी से बाहर झाँककर देखा तो पाया कि यह तो कोई भोला-भाला ऊँचे घराने का नौजवान लगता है। तेज़ हो चुकी धड़कनें कम हुईं। गोद में सुलाए ठंडे हो चुके मुर्दे पर वह युवक अपनी फटी-पुरानी चादर लपेट रहा था।

महेश ने बनावटी सहानुभूति दिखाते हुए पूछा, ''भैया, रो क्यों रहे हो?'' इससे पहले कि वह कोई उत्तर देता उसने फिर पूछा, ''यह लाश किसकी है तुम्हारे पास?''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''बबाभा देव हो गए सा'ब! मेरे बाप तो ख़ैर नहीं थे, पर बाप से कुछ ज़्यादा ही थे...रोना वैसे ही तो आता नहीं न! बड़े अच्छे आदमी थे बेचारे!'' हिचकियाँ लेते हुए उसने कहा, ''अभी घंटे भर पहले आख़िरी साँस ली थी बूढ़े ने...यूँ तो इस बदनसीब जीव का ज़िंदगी के फंदे से छुटकारा ही हो गया है। बड़े लंबे अर्से से बीमार थे। आगे-पीछे उनका अपना तो कोई था भी नहीं...''

मौक़ा देखकर महेश ने सीधा कहा, ''बोल, यह मुर्दा बेचना है ? नकद पाँच सौ गिन ले, इसी वक़्त!''

बल्लू को जैसे बिजली का करंट-सा लगा। वह तिलमिला उठा। कैसी गंदी बात कर रहा है यह साहूकार का छोकरा! वह चीख़ पड़ा, चाहता तो था कि उसके मुँह पर थूककर पूछे—शर्म नहीं आती ऐसा सवाल करते हुए? ठेठ होठों तक आ चुके लफ़्ज़ गंदे बलग़म की तरह बड़ी मुश्किल से निगल पाया।

महेश सोच रहा था, 'सौदा पट जाए तो गंगा नहाए! रात-दिन छह महीनों तक भटकता रहा, अब जाकर यह गोल्डन चांस मिल रहा था।' आसपास निरा एकांत था। सावन की रात ख़त्म होकर नए दिन की सुबह शुरू हो, उससे पहले ही समस्या का समाधान मिल जाने की संभावना थी। उसने बल्लू को समझाने की कोशिश तेज़ कर दी, ''मेरी बात सुन तो सही! ...भोर होते ही लोगों की चहल-पहल शुरू हो जाएगी। लाश कहीं पुलिस ने देख ली तो उल्टे दो-चार डंडे खाएगा! लावारिस लाश को उठवाकर पुलिस सिविल अस्पताल में जमा करवा देगी। फूटी कौड़ी भी मिलेगी नहीं, ख़्वामख़्वाह डंडे पड़ेंगे। तेरी और लाश की दुर्गति होगी! चीर-फाड़ के लिए यह मेडिकल छात्रों को सौंप दी जाएगी।''

उसने बल्लू के सामने भयावह चित्र प्रस्तुत किया। बल्लू से रहा नहीं गया। ''ऐसे थोड़े ही चीर-फाड़ होने दूँगा, अपने बुजुर्ग की! मरने से ठीक पहले बुढ़ऊ को वचन दे चुका हूँ। उनकी ख़्वाहिश थी कि मैं उनकी अस्थियाँ गंगा जी में प्रवाहित करवाऊँ। अपनी सारी माया मुझे सौंपकर गए हैं। उन्हें मैं अपने ही हाथों अग्नि दूँगा। उनके पीछे पाँच-पच्चीस बाबा-फ़क़ीरों को भोजन भी करवाऊँगा। और फिर...'' उसका कंठ रुँध गया। वह जो कहना चाहता था और कह नहीं पाया, वह मृतक के अस्थिफूल गंगा जी तक पहुँचानेवाली बात थी। कभी अहमदाबाद के बाहर नहीं गया था, अब उसे हरिद्वार जाने का जुगाड़ करना पड़ेगा।

महेश को लगा, काम उतना आसान नहीं, जितना वह समझ रहा था। फिर भी वह ऐसा सुनहरा मौक़ा गँवाना नहीं चाहेगा। आख़िर कितना पेट्रोल फूँकने के बाद यह अवसर मिला था। वह उकड़ूँ बैठकर बल्लू को समझाने लगा, ''बाबा अब वापस लौटनेवाले तो हैं नहीं! वहाँ पहुँचकर कभी कोई लौटा है क्या ? सच तो यह है कि हंसा उड़ गया, यह जो हमारे सामने पड़ा है, वह तो उसका पीछे छूटा पिंजर है। उसका मोह रखना ठीक नहीं। तुम जो करना चाहते हो, उससे सवाया क्रियाकर्म और पुण्यदान मैं करूँगा, सगे बाप की सौगंध खाकर वचन देता हूँ! मृतदेह मुझे सौंप दो, बस फिर तुम हर ज़िम्मेदारी से मुक्त! भगवान के घर तक सारी जवाबदेही मेरे सिर पर।''

उसने धीरे-से बटुआ खोला और पाँच सौ का नोट निकाला। बल्लू आँखें फाड़कर देखता रहा। जीवन में पहली बार इतनी मोटी रक़म बिना माँगे उसका घर ढूँढ़ती आ रही थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिलकुल सहज रूप में, मानो छप्पर फाड़कर। ऐसा लग रहा था, मानो कुलदेवी हड़काई माँ स्वयं लक्ष्मी का रूप लेकर उसके ग़रीबख़ाने में पधारी हों। एकाध मिनट तक वह उस नोट को अपलक देखता ही रहा। फिर यकायक जैसे माता की सवारी आ गई हो, झुँझलाते हुए सिर हिलाकर बोल उठा, ''नहीं, बाबू जी! मेहरबानी करके मुझ ग़रीब को झूठे लालच में मत फँसाओ! भाड़ में गया ऐसा रुपया...मैं कोई मुर्दों का व्यापार करनेवाला नहीं हूँ...''

बहस चलती रही। महेश बारोट किसी भी क़ीमत पर सहज प्राप्त हुआ अवसर हाथ से जाने देना नहीं चाहता था। बटुआ खोलकर उसने दूसरा नोट निकाला, ''अब तो संतुष्ट हो न?'' कहते हुए वह निर्लज्जता से हँस पड़ा।

इससे पहले कि बल्लू कुछ उत्तर दे पाता, हड़काई माता के मंदिर के पीछे से किसी की कठोर आवाज़ आई, ''किस चीज़ का सौदा हो रहा है रे! ''बल्लू को यह समझते देर नहीं लगी कि आवाज़ किसी पुलिसवाले की थी। महेश सिर से पाँव तक काँप उठा। पुलिसवाले ने उसके चेहरे पर टॉर्च फेंककर उसे नाप लिया। फिर बल्लू की ओर मुड़ते हुए बोला, ''अबे, तुझसे पूछ रहा हूँ—सुन रहा है?'' उसको डंडे का ठोंसा मारकर रोब जमाते हुए पूछने लगा, ''लुक-छिपकर क्या धंधा कर रहा है, बताता है कि नहीं?''

परिस्थिति भाँपकर महेश चौकन्ना हो गया। कॉन्स्टेबल को 'जमादार साहब' का सम्मानसूचक संबोधन कर हिचकिचाते हुए बोला, ''मेरी एक रिक्वेस्ट है सा'ब! ज़रा एक निवेदन करना है आपसे।'' उसने दूर जाने का संकेत किया कि जमादार साहब बिगड़ बैठे, ''जो भी कहना है, यहीं पर कह दो न! मुझे गुपचुप बातें करना पसंद नहीं है, समझे? बताओ इस मवाली के साथ किस चीज़ का सौदा कर रहे थे? नशे का पाउडर ख़रीदने आए थे? ये लोग तो ख़ून का सौदा भी करते रहते हैं—ज़िंदा गोश्त! मुझे तुम्हारी गाड़ी की तलाशी लेनी पड़ेगी! हो सकता है मामला किसी रात की रानी का हो... आख़िर यह तो बादशाह की बसाई हुई नगरी है!''

बल्लू का पसीना छूट गया। उसने सच बात बता दी, ''माई-बाप, मैं तो एक भिखमंगा हूँ! यह शव मेरे बुज़ुर्ग बबाभा का है। मुश्किल से एक घंटा हुआ होगा जब बूढ़े ने आख़िरी साँस ली थी। पिछले एक-दो सप्ताह से देह तवे की तरह तप रही थी; ऊपरवाला बड़ा दयालु है—आख़िर उनकी पुकार सुन ही ली...'' कहते-कहते बल्लू की आवाज़ लड़खड़ा गई।

सड़क पर डंडा पछाड़ते हुए जमादार बोला, ''हरामज़ादे, सच बताएगा भी या नौटंकी ही करता रहेगा? हमें दूध पीता बच्चा समझ रक्खा है क्या? सीधी-सी बात है, बूढ़ा मर चुका है और तू उसकी क़ीमत बढ़ाए जा रहा है। ग्राहक के साथ इस लाश की सौदेबाज़ी कर रहा है!''

उसने महेश के हाथ से पाँच सौ के दो नोट झटक लिए और कहने लगा, ''दोनों चुपचाप मेरे साथ चले आओ! पुलिस थाने की मेहमान नवाज़ी भी देख लो ज़रा! तुम-जैसे मौत के सौदागरों के लिए तो हमारे यहाँ विशेष इंतज़ाम रहता है...दोनों को मुद्दा माल समेत कल कोर्ट खुलते ही पेश करना पड़ेगा।''

जमादार समझ नहीं पाया कि अख़बारों में बार-बार इस्तेमाल होनेवाली शब्दावली उसकी ज़बान पर कैसे आ गई! जब से पुलिस की वर्दी पहनी, वह ऐसे विवादित शब्दों से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इतराता रहता है। बड़े-बुजुर्गों की यह सीख कि जहाँ तक संभव हो, व्यर्थ वाद-विवाद से बचते रहना और राजनीति से जुड़े नेता लोगों से सुरक्षित दूरी बनाए रखना—इन दोनों बातों का वह चुस्ती से पालन करता रहा है। उसे लगा, ऐसे लफ़्ज़ों की अपेक्षा पुलिस में प्रचलित परंपरागत गाली-गलौज़ का इस्तेमाल ही मुनासिब रहता।

''तुम कुछ कहना चाहते थे...'' उसने महेश की ओर देखा। महेश गिड़गिड़ाने लगा, ''जी साहेब, मुझे आपसे कुछ गोपनीय, बिलकुल अंदर की बात कहनी है। बाई गॉड, आप विश्वास नहीं करेंगे पर यह शव छह महीने से फ़रार मेरे पूज्य पिताजी का है। जिस दिन से घर छोड़कर निकल गए, मैं उसी दिन से उनकी तलाश में मारा-मारा फिर रहा हूँ! न दिन देखा, न रात! मैंने पूरी दुनिया की ख़ाक छान ली। अब जाकर उनका पता लगा है, पर आप देख रहे हैं—यह भिखारी मेरी एक नहीं सुन रहा! कब से उसके हाथ-पाँव जोड़ रहा हूँ। अच्छा हुआ कि आप ऐन मौक़े पर पहुँच गए, शायद भगवान ने ही भेज दिया आपको...'' महेश को स्कूल में नाटक में भाग लेने का अनुभव था। फिर जात का बारोट जो था। सरस्वती उसकी ज़बान पर विराजती थी। वह बिलख-बिलखकर रोने लग गया, मानो वह लाश सचमुच ही उसके बाप की हो!

बल्लू आश्चर्यचकित हो गया, ''यह आदमी सफ़ेद झूठ बोल रहा है जमादार सा'ब!'' तिलमिलाकर वह बोल उठा, ''लगता है यह मुर्दों का कारोबार चलाता है! लाशों का सौदागर है! हड़काई माँ की क़सम—यह लाश हमारे बुजुर्ग बबाभा की है, आप पूछ लो किसी भी भिखारी को, सभी जानते हैं इनको। अगर ग़लत बोलूँ तो मेरी हड़काई माँ खा जाय मुझे...आप चाहोगे तो सुबह होते ही दिल्ली दरवाज़े की पूरी बागड़ी बिरादरी गवाही देने को तैयार रहेगी।''

बल्लू के पुण्य प्रकोप से सन्न रह गए महेश ने चालाकी से अंतिम पासा फेंकने का फ़ैसला किया। ख़ाकी वर्दी के मुँह का माप वह जानता था। इशारा करके वह जमादार को मंदिर के पीछे ले गया। निपट अँधेरे में पुलिस वाले की अनुभवी उँगलियों को पाँच सौ के पाँच नोट पहचानने में दिक़्क़त नहीं आई। रुपए जेब में डालकर कहने लगा, ''तुम अपने बाप की लाश ले जा सकते हो! कोई पूछेगा तो मैं बैठा हूँ! सूरज उगने से पहले ठिकाने लगा दो, बात ख़तम!''

लौटकर सीधे ही उसने बल्लू की पीठ पर दो डंडे जमा दिए! गाली-गलौज़ भी की। जब पिटाई सहन नहीं हुई, तब बल्लू ने जमादार के पाँव पकड़ लिए, ''माई-बाप, बिना किसी क़सूर के मुझ अनाथ पर क्यों टूट पड़े हो! आपका गू खा लूँ, चाहो तो! मेरी देवी की सौगंध भी आप नहीं मान रहे तो और क्या कर सकता हूँ? आप ही बताओ सा'ब! सच कहता हूँ, यह मेरे बबाभा की लाश है। ज़रा इतना तो सोचो, इस सेठनुमा आदमी का बाप भला मरने के लिए मेरे पास क्यों आता! ये सेठ साहब भी कैसे ऊल-जलूल दावा कर रहे हैं...ज़रा भगवान से तो डरते! बूढ़ा तो मर चुका है। कल हम सबको भी मरना है...कोई अमरपट्टा लेकर तो आया नहीं इस संसार में! ज़रा मुर्दे का लिहाज तो रखो...''

लेकिन वह किसी की गिड़गिड़ाहट की परवाह करे तो पुलिसवाला कैसा! उसने बड़ी बेरहमी से तीसरा डंडा ठोका, ''नौटंकी बंद कर और लाश सौंप दे चुपचाप! नहीं तो चल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुलिस स्टेशन! तेरा बबाभा ऊपर से लौटकर आए तो भी तुझे बचा नहीं सकेगा। अहमक कहीं का!'' उसे ठोकर मारकर दूर धकेलते हुए जमादार पूछने लगा, ''जल्दी में हूँ मैं, बता दे मुर्दा सौंपता है या फिर तुझे भी बूढ़े के पीछे जाना है! मैं तुझे छोड़ूँगा नहीं!''

चिरौरी करते हुए बल्लू बिलख-बिलखकर रोने लगा, ''अरे रे, ऐसा भी कभी होता है क्या? भलाई का यह कैसा बदला मिल रहा है बाबा!''

उसने लाश पर ढँकी चादर हटाते हुए कहा, ''लो बाबा, मेरा-तुम्हारा संबंध अब पूरा हुआ!'' वह फूट-फूटकर चीख़ उठा।

जमादार ने डाँट लगाई, ''चल, बहुत हो गया! अब चुप हो जा। फिर आँख मारकर महेश से पूछने लगा, ''बुज़ुर्ग को फ़रार हुए कितने महीने हुए होंगे?''

''क़रीब छह महीने ही समझ लीजिए!'' उसने दिमाग़ पर ज़ोर देकर तारीख़ याद करने की कोशिश की, ''ठीक सत्रह मई के दिन चले गए थे। दिमाग़ ख़राब हो गया था न! दो दिन पहले ही कानोड़िया अस्पताल में करंट दिलवाए थे। मैं ख़ुद लेकर गया था। उन्हें घर पहुँचाकर कंपनी के काम से मुंबई गया तो मिसेज का फ़ोन आया कि बाबूजी रात में ही कहीं चले गए हैं।''

बल्लू से रहा नहीं गया तो बड़बड़ाने लगा, ''ज़रा भगवान से तो डरो! ज़रा इस बूढ़े का मुँह तो देखो भगवान को माथे पर रखकर। भले मानुष! ये तुम्हारे बाबूजी नहीं हैं, ये तो हमारी पिछड़ी जाति में पैदा हुए बबाभा हैं...पंद्रह साल से यहीं पर बैठकर भीख माँगते रहे। सारा दरियापुर जानता है उनको...''

पुलिसवाले को बात बिगड़ती लगी, तब उसने बीच का रास्ता निकाला, ''चल, घड़ी भर मान लें कि ये तेरे बाबा हैं! पर अब तो वे मर चुके हैं न? मुर्दा बन चुके हैं, एक लावारिस लाश के अलावा कुछ भी नहीं तेरा यह बूढ़ा। लावारिस लाशों का हश्र तू नहीं जानता शायद! सिविल अस्पताल वालों को सिर्फ़ समाचार मिलना चाहिए, तुरंत आकर उठा ले जाएँगे। सौंप देंगे मेडिकल छात्रों में चीर-फाड़ के लिए। सब मिलकर नोचने लगेंगे गिद्धों की तरह! तेरे बबाभा की बोटी-बोटी काट-कूटकर फेंक देंगे कूड़ेदान में...इसके बजाय ये भाई साहब तो गाजे-बाजे के साथ अपने पिता का अग्निसंस्कार करना चाहते हैं! ख़ुद फ़ैसला कर कि तू इस देह की मिट्टी नुचवाना चाहेगा या उसकी सद्गति चाहेगा?''

बल्लू चकरा गया। उसकी आँखों के सामने पिछले आठ सालों में म्युनिसिपालिटी की शववाहिनी अनेक भिखमंगों की लावारिस लाशें उठा ले जाती रही थी। ख़ुद बबाभा ने ही उसे बताया था, ''इन लाशों का कोई रनी-धनी या वारिस नहीं होता। उठाकर ले जाएँगे अस्पताल और डाल देंगे बदबू से सने कुंड में। वहाँ महीनों तक पड़ी रहेंगी दवाई के पानी में! मुर्दा देह जब रब्बड़-जैसी चीमड़ बन जाएगी, तब वहाँ से निकाल-निकालकर मेडिकल पढ़नेवालों को चीर-फाड़ के लिए सौंप दी जाएगी। फिर टूट पड़ेंगे अपने-अपने औजार लेकर उसे नोचने— गिद्ध, सियार, गीदड़ की तरह।''

उसके जेहन में यह बात नहीं बैठ पाई तो चुपचाप एक दिन ख़ुद ही मेडिकल कॉलेज के एनाटॉमी डिपार्टमेंट में जा पहुँचा था। एक बड़ा लंबा-चौड़ा हॉल था, जहाँ से तीखी बदबू

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आ रही थी। उसकी अधखुली खिड़की से झाँककर देखा तो चक्कर खा गया। होठ भींचकर दीवार के सहारे खड़ा रहा, मुँह से चीख़ निकलते-निकलते रह गई। दीवार से सटे चबूतरे पर एक विद्रूप स्त्री देह पड़ी हुई थी—बिलकुल नंगी, निर्वस्त्र। ग़ौर से देखा तो दिमाग़ में बिजली-सी कौंध गई—अरे, यह तो शाहपुर वाले भीखा-मगन की लीलाड़ी! जब तक जीवित थी, सारा गाँव सिर पर उठाए घूमती रही। बड़ी चुलबुली लगती थी। ठस्सा तो देखते ही बनता उसका। अच्छे-अच्छे रईसज़ादे दिल्ली दरवाज़े की अप्सरा का दीदार कर पानी-पानी हो जाते। उनकी बेशक़ीमती इम्पोर्टेड गाड़ियाँ घड़ी-दो-घड़ी सड़क पर चिपक-सी जातीं। एक बार इस रूप की रानी ने बल्लू को कच्ची नींद से जगाया था। मादक इशारे करती हुई उसे हड़काई माता के पिछवाड़े तक खींच ले गई थी—फिर पता नहीं क्या क़यामत गुज़री थी...

बल्लू ने देखा, उसी रूपगर्विता की देह को चार सफ़ेद कोट पहने लड़के बारी-बारी से नोच-खींच रहे थे। उससे यह नज़ारा सहा नहीं गया, तब झुँझलाते हुए लड़खड़ाते क़दमों से सीढ़ियाँ उतर गया था।...

...''आप कह रहे हो तो...'' वह झिझक महसूस कर रहा था। पुलिसवाले ने उसे कंधे से पकड़कर हिला दिया, ''बोल दे, क्या विचार है तेरा?''

''सोच रहा हूँ, आपका हुक्म मानकर भाई साहब को मेरे बुज़ुर्ग की लाश सौंप तो सकता हूँ, पर मेरी एक अर्ज़ है माई-बाप!'' हिम्मत जुटाकर उसने धीरे-से अपनी शर्त पेश कर दी, ''बाबा का दाह-संस्कार मेरी आँखों के सामने किया जाय। बाद में पाँच साधु-फ़क़ीरों को जिमाया जाय...''

उसकी शर्तें सुनकर दोनों हँस पड़े।

''ठीक है, तेरी शर्तें मंजूर हैं! अब ज़्यादा माथा-पच्ची मत कर! उठाकर चुपचाप अपने बबाभा को पास खड़ी मारुति में सुला दे। ख़ुद भी बैठ जा उनको गोद में लेकर।''

'जमादार' की होशियारी पर महेश बारोट फ़िदा हो गया। मारुति में बैठ चुके दोनों ही शख़्सों को हिदायत देते हुए जमादार बोला, ''मेरी बात ग़ौर से सुन लो! लाश तुम्हारे पिता की है या भिखमंगे बबाभा की—इस पचड़े में सिर मत खपाना! मृतक कोई भी क्यों न हो, उसका सम्मान किया जाना चाहिए! इस पाजी को भी पाँच-पच्चीस देकर लौटाना! उसकी माँग के मुताबिक़ पाँच-सात बाबा-फ़क़ीरों को भी जिमा देना, समझ गए न? अब देरी मत करो! फँस जाओगे ख़्वामख़्वाह—किसी वर्दी वाले ने देख लिया तो सीधे थाने में पहुँच जाओगे!'' चलते-चलते आख़िरी बार भय दिखाया, पुलिसवाला जो ठहरा! ''ग़लती से भी कभी ख़ाकी और खादी वालों का भरोसा मत करना!'' वह हँस पड़ा।

महेश बारोट ने उसको ''थैंक्यू सर!'' कहा और मारुति स्टार्ट कर दी। पीछे वाली सीट में मृतक सिर गोदी में लिए बल्लू मौन बैठा रहा। रह-रहकर उसको मेडिकल कॉलेज में लाश के चीर-फाड़ कक्ष का वह भयावह दृश्य याद आ रहा था। संतोष इस बात का था कि उसके बुज़ुर्ग की लाश, दूसरे भिखारियों की लाश की जो दुर्गति होती रही है, उससे बच जाएगी। बूढ़ा बड़ा भाग्यशाली निकला! उसकी कोई अपनी संतान नहीं होते हुए भी मरते समय यह अजनबी चलकर बेटा बनने आ पहुँचा। न जान, न पहचान, फिर भी इसे अपना बाप समझकर ले जा रहा है। यह भाग्य की बलिहारी नहीं तो और क्या है!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरपट भागती हुई मारुति दिल्ली दरवाज़े से राजधानी गाँधीनगर जानेवाले राजमार्ग पर मुड़ गई। दिल्ली दरवाज़े के इर्द गिर्द पूरी ज़िंदगी काटनेवाले बल्लू ने शाही बाग़ और कैम्प के हनुमान मंदिर से परे कभी पाँव ही नहीं रखा था। अचानक आज उसकी हथेली में राजधानी गाँधीनगर की चमचमाती विशाल सड़कों पर मारुति यात्रा करने का राजयोग प्रकट हो गया था। लगता है, कोई नई शुभकारी रेखा फूट निकली थी। ''सुन ले भाई, बाबा को आज तू ही मुखाग्नि देगा! उनके बुरे वक़्त में तुमने ही तो पिता समान मानकर उनकी सेवाचाकरी की है। इसलिए यह तुम्हारा हक़ भी बनता है!''

बल्लू ख़ुश हो गया। बड़े लोग ऐसा अधिकार दे दें, यह कोई कम बात नहीं है। वरना पुलिसवाले को माता के मंदिर के पीछे बुलाकर पटा लिया गया था, बाज़ी अपने हाथ से निकल चुकी थी। हो सकता है, मृतक की आत्मा ने ही उन दोनों को सद्‌बुद्धि सुझायी हो! वरना दो और डंडे जमाकर लाश छीन लेते तो ख़ुद क्या कर सकता? ख़ाकी से दुश्मनी थोड़ी मोल लेता! फ़ुटपाथ पर अडिंगा जमाकर भीख माँगते हैं—उसी की मेहरबानी के बल पर। पानी में रह, मगर से बैर नहीं किया जा सकता, उसके साथ मधुर संबंध रखने में ही भलाई है।

मारुति इंदिरा सेतु पार कर तेज़ी से गाँधीनगर की ओर भाग रही थी। बाएँ हाथ पर कानोड़िया अस्पताल का बोर्ड दिखाई पड़ा। बल्लू के अंदर सुगबुगाहट जगी—बेचारे बबाभा...मेरी गोद में ऐसे सो रहे हैं मानो सेर भर घी का हलवा जीमकर आराम फरमा रहे हों! वहीं पर ले आया होगा उनका लखपति बेटा उन्हें करंट दिलवाने...अंदर-ही-अंदर हँसी आ गई। खखारकर उसे दबाने की कोशिश करते ही पुलिस के डंडे की मार ताज़ा हो गई। भीतर-ही-भीतर दब चुकी पीड़ा हूक बनकर फूट पड़ी।

अब गाड़ी 'च-ज़ीरो' सर्कल पार कर रही थी। इसे पास वाले गाँव के साथ जोड़कर इंद्रोड़ा सर्कल के नाम से भी पुकारा जाता है। मारुति अब साबरमती से सटे 'ज' मार्ग पर दौड़ने लगी। वाह रे बुढ़ऊ, तेरी क़िस्मत के क्या कहने! मन-ही-मन बल्लू दो मौतों की तुलना करने लगा। कहाँ तो उस रूप की रानी के अंग-उपांग शहर की चीर-फाड़... और कहाँ इस लाचार बूढ़े का यह जनाज़ा! शहर के बड़े-बड़े सेठ-साहूकार जिसके पीछे लार टपकाते फिरते थे, वह लीलाड़ी चारों खाने चित पड़ी थी, मेडिकल कॉलेज के चीर-फाड़ वाले कमरे में, एकदम नंगी मानो माँ के पेट से अभी पैदा हुई हो! उसे डॉक्टरी पढ़नेवाले चोला पहनकर गिद्ध और गीदड़ की तरह नोच रहे थे। उसके कोमल शरीर को चाक़ू-छुरी से काटा जा रहा था, एक-एक टुकड़े को छेदकर फिर कूड़ेदान में डाला जा रहा था। बाद में वह दूर किसी कूड़े के ढेर का हिस्सा बन गई होगी! कोई रईसज़ादा उसकी अंत्येष्टि करने नहीं पहुँचा। जब वह ज़िंदा थी, तब उसके पीछे पूरा शहर ही लट्टू था। और एक यह ग़रीब भिखमंगा...जीवन भर कार तो दूर की बात, शायद सिटी बस में भी उसने पाँव नहीं रखा होगा! गाँधीनगर किस दिशा में बसाया गया है, इसका भी उसे पता नहीं होगा! आज वही बुढ़ऊ-बबा बागड़ी-जैसे घोड़े पर चढ़कर राजधानी के वीआईपी श्मशान में जलने जा रहा था! जीवन भर शादी तो कर नहीं पाए, बिना विवाह किए ही चेलैया कुँवर जैसा सुपुत्र मिल जाना कोई साधारण उपलब्धि तो नहीं!

सेक्टर-30 का हवाई जहाज़ सर्कल पार कर मारुति जब साबरमती के तट पर नवनिर्मित भव्य मुक्तिधाम के द्वार पर पहुँची, तब प्राची में अरुणोदय की रंगोली दिखाई दे रही थी। बल्लू

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पल-दो-पल असमंजस में पड़ गया—यह कोई श्मशान भूमि है या उद्यान! देव-देवियों और साधु-संतों की भारी-भरकम मूर्तियाँ, सुगंधित ख़ुशबूदार फूलों के पौधे, घने पेड़ों की घटाएँ, हरी मख़मली चादर-सा लॉन, बीच-बीच में शीतल जलधाराएँ उड़ाते फ़व्वारे, सब पर हावी देवाधिदेव-मृत्यु के दाता महादेव, भोले भंडारी...

''नंबर-वन' स्टेट गुजरात का यह श्मशान गुजरात का पहले नंबर का मुक्तिधाम है। बड़े-बड़े मुख्यमंत्रियों का दाह-संस्कार इसी श्मशान भूमि में हो चुका है...अपने बबाभा की क़िस्मत तो देखो! उनको कहाँ-से-कहाँ खींच लाई!'' महेश के मुँह से 'अपने बबाभा'-जैसे शब्द सुन बल्लू को सुकून मिला। मानो अमृत-पान की डकार आ गई। 'यह सब ईश्वर की लीला है...' वह सोच रहा था, 'देर से ही सही, जो सत्य था, वही उसके होठों पर चढ़कर बोला, मृत देह ही सही, बबाभा ने आख़िर अपनी हैसियत दिखा ही दी, मजबूर कर दिया इस सेठ के बच्चे को...'

अलस्सुबह ही तीन शव आ चुके थे। दागिए उनकी चिताएँ सजा रहे थे। श्मशान में परंपरागत एवं विद्युत दाह-संस्कार—दोनों प्रकार की व्यवस्था उपलब्ध थी। मारुति कार को ठेठ विद्युत श्मशान गृह के दरवाज़े के पास खड़ा करते हुए महेश कहने लगा, ''तुम बाबा को सँभालो! मैं कुछ फूल-माला, नारियल और घी वग़ैरह ले आऊँ। नया कफ़न भी लाऊँगा। मेरा तो स्वभाव ही है, कोई भी काम सलीक़े से करूँगा...उसमें कोताही कभी नहीं बरतूँगा!'' वह जल्दी-जल्दी मुक्तिधाम के कार्यालय की ओर बढ़ गया। बल्लू गाड़ी में ही बैठा रहा, बुज़ुर्ग बबाभा का चेहरा फूलकर लाल सुर्ख़ हो गया था। उनका पेट हरदम पीठ से चिपका रहता, अब वह भी फूलकर ढोल-सा हो गया था। शव ने अचानक अपान वायु छोड़ी और पूरी मारुति में तीखी बदबू फैल गई। बल्लू ने अँगोछे से अपनी नाक बंद कर ली और जब सहा नहीं गया, तब खिड़की के बाहर थूक दिया।

सामान उठाकर लौट रहे महेश ने मोबाइल करके जल्दी-जल्दी फ़ोटोग्राफ़र को भी बुला लिया। दोनों ने शव को मारुति से निकालकर चबूतरे पर सुला दिया। महेश बल्लू को पटाने लगा, ''बाबा को विद्युत् दाह ही दिलाना ठीक रहेगा। लकड़ी वाले श्मशान में तो हमारी दोपहर तक बारी नहीं आ पाएगी, देख रहे हो न? तीन शव पहले ही आ चुके हैं। फिर मुझे तो ग्यारह बजे अपनी नौकरी पर भी पहुँचना पड़ेगा।''

बल्लू मौन था। वह चुपचाप शव को अंतिम विदाई के लिए सजा रहा था।

''मेरी बात नहीं जँची क्या?'' लाश पर चंदन की लकड़ी का छोटा-सा टुकड़ा रखते हुए महेश बोला, ''तुम ऐसा-वैसा वहम मत रखना! अब तो बड़े-बड़े अरबपति लोग बिजली वाली दाह-व्यवस्था ही पसंद करते हैं। आख़िर शव को तो जलना ही है! अभी आधे घंटे में तो बबाभा के अस्थिफूल भी मिल जाएँगे...और सुनो, भट्ठी में बाबा की अर्थी तुम ही समर्पित करोगे।'' थोड़ा रुककर उसने जोड़ा, ''इससे बबाभा की आत्मा को भी शांति मिलेगी कि मेरा अंतिम संस्कार बल्लू के ही हाथों संपन्न हुआ। बड़ी प्रसन्न होगी उनकी आत्मा...यह सोचकर 'कि बल्लू ने मेरा दाह-संस्कार राजधानी के वीआईपी श्मशानगृह में करवाया!''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बल्लू अपने बाबा की क़िस्मत पर पहली बार हँस पड़ा। उसके मुख पर प्रसन्नता देख महेश को तसल्ली हुई। मृत देह को फूलों से ढँककर उसने अपने मोबाइल कैमरे से अलग-अलग एंगल से फ़ोटो खींचे। ऑपरेटर ने भट्ठी का स्विच दबाकर अंतिम विधि शुरू की। वह लाश को स्ट्रेचर पर ले ही रहा था कि शहर का नामी फ़ोटोग्राफ़र अपनी हीरो होंडा भगाते हुए आ पहुँचा। जल्दी में कैमरा निकालकर उसने कई फ़ोटो खींच लिए।

भट्ठी का द्वार खुलते ही लाल सुर्ख़ धधकती आग में बल्लू ने स्ट्रेचर धकेल दिया। पलभर के लिए वह सन्न रह गया। आँखों से आँसू बह निकले। वह अपने आपको सँभाल नहीं पाया। यकायक वह बिलख-बिलखकर रो पड़ा, बाबा...सिधारो जी, राम राम! उसने हाथ जोड़कर बबाभा को अंतिम प्रणाम किया। तसल्ली इस बात की थी कि ख़ुद यह अजनबी अब उनको बबाभा ही पुकारने लगा था।

महेश बारोट ने भी शव को अंतिम प्रणाम किया, ''बाबा! मुझे माफ़ कर देना! जीभ तो चमड़े की है, कभी किसी चूक से अंट-शंट बक गई हो तो दिल बड़ा रखकर भूल जाना! पूत कपूत हो सकता है, आप तो बाप थे...''

उसने उदास चेहरे से आसमान में बैठे अपने पिता से मन-ही-मन माफ़ी माँग ली।

माहौल एकदम से ग़मगीन बन गया।

फ़ोटोग्राफ़र ने तत्काल कॉपियाँ निकालकर सौंप दी। महेश ने बिल चुकाना चाहा तो ''ऐसी क्या जल्दी है!'' कहते हुए वह लौट गया। बल्लू सोच रहा था, 'जो भी हो, आदमी इज़्ज़तवाला है।'

अब विद्युत् शवगृह में दो ही प्राणी रह गए थे—महेश और बिल्लू। दोनों के मुँह पर चुप्पी थी। गुमसुम बैठा हुआ बल्लू अचानक पूछ बैठा, ''साहेब, आपको ऐसा क्यूँ...'' रुककर उसने अपने ज़ेहन में उठ रहे कुछ शब्द पलटते हुए कहा, ''यह भी कोई बात हुई! क्या ज़रूरत थी एक भिखमंगे के पीछे यह सब करने की? न जान न पहचान—बन गए उसके बेटा...''

महेश बारोट की आँखें भर आईं। ''बड़ी लंबी दास्तान है दोस्त, जो बीत चुका उसे कुरेदने से भी तो फ़ायदा नहीं...तुमने साथ दिया, तुम्हारा आभारी रहूँगा। गहराई में झाँकना ठीक नहीं रहेगा। समझ लो, अंदर दलदल ही दलदल है। लेकिन तुम्हें सगे बाप की क़सम खाकर विश्वास दिलाता हूँ—अभी तो तुम्हारे बाबा के फूल लेकर नर्मदा जी जाऊँगा। इनके पीछे गरुड़ पुराण बिठाऊँगा। यथाशक्ति यहाँ रहते हुए भी दान-पुण्य करूँगा। गाँव जाकर भी जो बन पड़ेगा, करूँगा। छोटी-सी प्याऊ लगवा दूँगा चौराहे पर, मंदिर के अन्न क्षेत्र में तिथि लिखवाऊँगा।'' उसने डबडबाई पलकें पोंछते हुए कहा, ''यहाँ से सीधा अख़बार के कार्यालय चला जाऊँगा, श्रद्धांजलि—बेसना की ख़बर छपवाने। तुम्हें बस अड्डे पर उतार दूँगा...''

बटुआ निकालकर पाँच सौ का नोट बढ़ाते हुए गिड़गिड़ाने लगा, ''रख लो, ना करोगे तो मुझे कष्ट होगा! तुम्हें बबाभा की दुहाई देता हूँ। मेरा न सही, उनका मान रखना पड़ेगा!''

बल्लू उसकी बात टाल भी कैसे सकता था! हिचकिचाते हुए उसने वह नोट ले ही लिया। हालाँकि इतना तो ज़रूर कहा, ''आपने मृतक जीव की दुहाई दे दी, इसलिए मजबूर हूँ,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वरना मैंने तो बाबा के पीछे अपनी गाँठ की कमाई ख़र्च करने का इरादा कर लिया था। आपके रुपये से अपनी बिरादरी वालों को लड्डू खिला दूँगा। साधु-फ़क़ीरों को तो ख़ुद ही पूँजी ख़र्च करके ही जिमाना है। बबाभा को वचन जो दे चुका हूँ।''

वह इससे आगे कुछ नहीं बोला। शब्द ही नहीं मिल रहे थे, सदमा इतना गहरा था। मन-ही-मन अपने आपको मृतक के ख़िलाफ़ रची गई घिनौनी साज़िश का सहयोगी समझ रहा था। पर अब बात बिगड़ चुकी थी और भिखारी बबाभा किसी अजनबी के पिता के रूप में स्थापित हो चुके थे।

ठंडी पड़ी हुई भट्ठी से अस्थिफूल निकालकर श्मशान के रखवाले ने महेश को दे दिए। महेश ने उसे सौ रुपये का नोट पकड़ाया और वह चलता बना।

''इनमें से थोड़े फूल तुम भी लेते जाओ...'' महेश ने पैंट की जेब से एक प्लास्टिक की थैली निकालकर दे दी। ''दूधेश्वर के घाट पर साबरमती में पधरा देना। बाबा जी की आत्मा प्रसन्न हो जाएगी। उनकी सच्ची सद्गति तो—'' थोड़ी रुकावट के बाद उसने कहा, ''मैं सब कुछ समझ सकता हूँ बल्लू! आख़िर मैं भी किसी बाप का बेटा हूँ...'' वह सिर से पाँव तक सिहर उठा। रोंगटे खड़े हो गए। न जाने क्या-क्या याद आ गया!

पूरे दिन प्रतीक्षा करने पर भी गाँव से पटवारी का फ़ोन नहीं आया, तब हारकर महेश बारोट ने ही पहल की—''पंड्या जी, मैं महेश बारोट बोल रहा हूँ, गाँधीनगर से।''

इससे पहले कि पटवारी कोई जानकारी चाहता उसने उत्साह भरे शब्दों में पूछा, ''सुबह से एस एम एस करता रहा हूँ, मैसेज नहीं पढ़ते क्या?''

''मैसेज पढ़ने की फ़ुर्सत ही कहाँ मिलती है?'' अलसाई हुई आवाज़ में पटवारी ने पूछ लिया, ''कहिए, क्या है नई चीज़?''

महेश ने कृतज्ञ भाव से निवेदन करते हुए कहा, ''आपके गाइडेंस के मुताबिक़ सब काम संपन्न कर दिया है...पूरे छह महीने भटकता रहा, आख़िर जाकर आज मेहनत रंग लाई, आपकी दया से! कल सभी अख़बारों में श्रद्धांजलि का विज्ञापन निकल जाएगा। शाम तक बापू का डेथ सर्टिफ़िकेट भी मिल जाएगा...''

वह बोलता ही चला जा रहा था, लेकिन तभी पटवारी ने उसे बीच में टोका, ''सुनो, अब इसका कोई मतलब नहीं!'' खेदजनक समाचार देते हुए उसने बताया, ''मणि काका शायद वापस लौट आए हैं। आज तुम्हारा कोई मुहल्लेवाला ही बता रहा था कि कुछ दिनों से सुबह-शाम मंदिर में महंत जी के साथ बड़े इतमीनान से चिलम फूँकते दिखाई पड़ते हैं। हाँ, उन्होंने संन्यास अवश्य ले लिया है। कपड़े भी गेरुए रंग के पहनने लगे हैं।''

महेश तो पानी-पानी हो गया। उसके होश-हवास उड़ गए। आँखों के सामने लाल-पीली झाँइयाँ चकराने लगीं। उन झाँइयों के बीच रह-रहकर एक धुंधला-सा चेहरा प्रकट हो रहा था। वह तय नहीं कर पा रहा था कि वह चेहरा उस बूढ़े भिखारी का था या ख़ुद अपने पिता का।...सन्न होकर वह अपराधबोध महसूस करते हुए उस चेहरे को पहचानने की कोशिश करता रहा...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहानी

बाङ्ला

सुकांत गंगोपाध्याय

राक्षस

हर रोज़ की तरह नंदिता आज भी स्टेशन में घुसने से पहले ही अख़बार ख़रीद रही थी कि हॉकर बलराम के क़रीब बैठी ख़ानाबदोश जबा बोल उठी, ''मेरी शादी हो रही है दीदीमणी, आपको चंदा देना पड़ेगा।''

चौंककर थोड़ी देर तक खड़ी रह गई नंदिता। फिर हँसते हुए पूछ बैठी, ''कब हो रही है तेरी शादी ? दूल्हा कहाँ से है ?'' बलराम के पास से उठकर नंदिता के क़रीब चली आई जबा। उसके साथ-साथ चलते हुए बोली, ''सोच रही हूँ इस बैशाख में ही निबटा लूँ! दूल्हा बिहार से है...।'' थोड़ा रुककर जबा ने जवाब दिया। ''बंगाली-बिहारी का विवाह तो हो सकता है न दीदी ?''

''न होने जैसी कोई बात ही नहीं है ! आपस में अगर बातचीत करने में कोई तकलीफ़ न हो तो फिर ठीक ही है।''

नंदिता की बातों से शरमा गई जबा। बोल गई, ''नहीं, नहीं थोड़ा-बहुत बाङ्ला तो वह समझ लेता है। कुछ-कुछ बोल भी लेता है।''

दोनों ही अप प्लेटफ़ॉर्म पर पहुँच गईं। नंदिता डाउन की ओर चली गई। टिकट का झंझट नहीं है। मंथली पास बना लिया है। नंदिता रानीगंज के एक सरकारी स्कूल में पढ़ाती है। पैंतीस से ज़्यादा की हो गई है। घर-परिवार के झंझट में उलझकर शादी करनी रह ही गई। प्यार-मुहब्बत के मामले में एक बार धोखा भी खा चुकी है। और इधर देखो तो एक ख़ानाबदोश लड़की की शादी तय हो गई।

ओवरब्रिज़ की सीढ़ी पर पाँव रखकर एक बार मुड़कर जबा की ओर देखा नंदिता ने, आज घुटने से लंबा एक फ्रॉक और जैसा कि आमतौर पर उसका रहता है, आधा भीगा हुआ भी। तालाब

जन्म : 1961। *आदिम जनपद, अदृश्य नज़रदार* सहित कई पुस्तकें प्रकाशित। गल्पमाला पुरस्कार से सम्मानित। संपर्क : 19, एस.एन.बनर्जी स्ट्रीट, भद्रकाली, उत्तरपाड़ा, हुगली (प. बंगाल); मो. 09831509903.

अनु. **रानू मुखर्जी**। बाङ्ला, गुजराती, ओड़िया से हिंदी में अनुवाद। साहित्य अकादमी गुजरात, गुजरात साहित्य परिषद्, केंद्रीय हिंदी निदेशालय से पुरस्कृत। संपर्क : 17, जे.एम.के. अपार्टमेंट, एच.टी.रोड, सुभानपुरा, वडोदरा 390023 (गुज.); मो. 09825788781.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाग़-बग़ीचे में घूमती-फिरती जो रहती है। पाँव में प्लास्टिक की चप्पल, थोड़ा उचक-उचककर चलती हुई। उम्र का अंदाज़ लगाना कठिन है। बीस से पच्चीस की होगी। किस मूर्तिमान ने इससे शादी के लिए सहमति दी है, क्या पता? नंदिता पूछ बैठी, ''शादी की बात किसने चलाई?''

शरमाकर जबा ने सिर झुका लिया। नंदिता ने पूछा, ''लव मैरेज? तुमने ख़ुद ही बात चलाई है?''

एक सरल हँसी उसके चेहरे पर फैल गई। नंदिता ने देखा, उसके रूखे चेहरे पर एक अनोखी चमक फैल गई। ज़ाहिर था कि सचमुच इस लड़की के मन में मधु रात्रि की कामना ने घर कर लिया है।

जबा आज साथ छोड़ ही नहीं रही है। ओवरब्रिज़ के किनारे से साथ-साथ चल रही है। केवल चंदा के लिए तो इतना नहीं करेगी। अपने मन की ख़ुशी को किसी के साथ बाँटना उसे अच्छा लग रहा था, शायद इसीलिए। जहाँ तक नंदिता जानती है, उसका अपना कोई नहीं है। न जाने कहाँ से आकर इस कालीपहाड़ी पर अपना डेरा जमा लिया है इस लड़की ने। मौसम के अनुसार कभी नीम के पत्ते, बेर, आम, जामुन, सहजन की फली, फूल, भाजी बेचती फिरती है। नंदिता को देखते ही पकड़ा देती है। आज उसके हाथों में ऐसा कुछ भी नहीं है, केवल ख़ुशख़बरी है। डाउन ट्रेन के प्लेटफ़ॉर्म की सीढ़ी से उतरते हुए नंदिता ने कहा, ''प्यार करके जब ख़ुद ही शादी कर रही हो तो, घाघर बूढ़ी के मंदिर में जाकर शादी करना ही अच्छा है! इसमें तो कुछ ख़र्चा भी नहीं होगा, सो चंदे के लिए तुम्हें भटकने की भी ज़रूरत नहीं पड़ेगी।''

प्यार भरे स्वर में जबा बोल उठी, ''सभी को नहीं, केवल जो मुझे चाहते हैं उनको ही न्योता दूँगी। आपको भी आना पड़ेगा और चंदा भी देना पड़ेगा।''

''वो तो देखा जाएगा। पहले शादी की तारीख़ तो पक्की कर लो!'' कहकर जल्दी-जल्दी सीढ़ी से नीचे उतरने लगी नंदिता। ट्रेन के आने की आवाज़ उसने सुन ली थी। जबा वहीं पर रुक गई।

ट्रेन पर चढ़ते ही दूसरी ओर के दरवाज़े से सटकर खड़ी हो गई नंदिता। और दिन बीच में खड़ी हो जाती है। अपने नित्य सहयात्रियों से बतियाती है। काली पहाड़ी से तीन लोग चढ़ते हैं। अशोक, मीनादी और सुनंद। उन सभी लोगों ने देखा कि जबा नंदिता के साथ-साथ आ रही थी। इसलिए ट्रेन में चढ़ने से पहले अशोक ने जानना चाहा, ''वो पगली आपके पीछे क्यों पड़ी थी? क्या कह रही थी?''

''कुछ नहीं ऐसे ही!'' कहकर उनसे पीछा छुड़ा लिया नंदिता ने। अच्छी ख़बर इतनी जल्दी लोगों को बताना ठीक नहीं। लोगों की नज़र लग जाती है। न जाने कितनी बार नंदिता की संभावनाएँ होने पर भी शादी होते-होते रह गई। दौड़ती ट्रेन के बाहर नंदिता की दृष्टि टिकी हुई थी। चारों ओर केवल कोयले का ढेर और दूर-दूर तक फैला काला मैदान। इधर-उधर दो- एक फूल से लदे पलाश और सेमल के पेड़ खड़े-खड़े मुँह चिढ़ा रहे थे। चैत्र की कड़कती धूप और भूरे आसमान के बावजूद हवा में नमी बरक़रार थी। जबा की पोशाक की तरह ही भीगी-भीगी-सी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जबा लौटकर फिर अख़बारवाले बलराम के पास बैठ गई। डाउन ट्रेन के एक पैसेंजर को मैगज़ीन बेचकर बलराम ने जबा से पूछा, ''दीदीमणी को कितना देने के लिए कहा?''

''मैंने कुछ भी नहीं माँगा। सौ-दो सौ तो दे ही देंगी। दीदीमणी बड़ी दिलवाली है!'' कहते हुए बलराम के पास घुटने टेककर बैठ गई।

अपने पच्चीस वर्ष के हॉकर जीवन में बलराम कम-से-कम बारह-तेरह वर्ष से जबा को जानता है। जब से जबा ने कालीपहाड़ी स्टेशन में अपना आशियाना बनाया है, तभी से ही। जबा के मामले में कुछ हद तक बलराम के मन में एक अभिभावक की तरह दायित्व का भाव है। यह सब जबा को समझ में नहीं आता है। अपनी मनमर्जी से जीती है। लेकिन बलराम पर उसका अगाध विश्वास है। आजकल जबा ने प्लेटफ़ॉर्म पर सोना बंद कर दिया है। रेल लाइन के किनारे भाड़े के एक घर में रहती है। उसकी इच्छा है उसकी शादी उस घर के आँगन में ही हो। दूल्हा सिर पर टुपुर[1] बाँधकर शादी के मंडप में आएगा। क्या बिहारी दूल्हा उसे पहनने के लिए तैयार होगा?

दो पैसेंजर आए अख़बार ख़रीदने के लिए। उन लोगों के जाने के बाद बलराम ने जबा से कहा, ''तुमने मुझे एक बार उस लड़के को दिखाया तक नहीं। देखने पर कम-से-कम ये तो समझ में आता कि वह कैसा आदमी है?

''दिखाऊँगी, वह बहुत शरमाता है। एक दिन तुम्हारे पास उसे ला रही थी पकड़कर, पर आधे रास्ते से ही भाग गया।''

सुनते ही बलराम की चिंता बढ़ गई। शादी की बात सुनते ही बलराम को यह बात सताने लग गई कि शायद कोई लड़का बहला-फुसलाकर जबा के पैसों को हड़पना चाहता है। इस लड़की से ज़बरदस्ती पैसा छीन लेने की ताक़त इस काली पहाड़ी के किसी भी गुंडे में नहीं है। बलराम ने कहा, ''लड़केवाले इस शादी के पक्ष में नहीं हैं, तब तो तुम्हें ही पंडित को बुलाना पड़ेगा। क्या तुम रघु भट्टाचार्य से बात करने के लिए गई थी?''

''गई थी। पर साला मारने को दौड़ा। बोला, 'पागल-फागल लोगों की शादी मैं नहीं करवाता!' तब मैं उसके भतीजे के पास गई। संतु दा आजकल शादी-ब्याह में पंडिताई करने लगे हैं। कहा, 'पंचांग देखकर बताएँगे कि बैशाख में शादी का दिन कौन-कौन सा है।' चार जगह से ऑर्डर है। उन सभी के पास जाना है उनको। ख़ाली दिन देखकर बताएँगे।''

ये है जबा। पुरोहित को साला कहती है। शादी रचाने का मतलब ऑर्डर है। इस लड़की की शादी को लेकर चिंता नहीं होगी तो और किसकी शादी को लेकर होगी? संतु ने शायद जबा की बातों को कोई महत्त्व ही नहीं दिया होगा। इधर-उधर की बातें करके भगा दिया होगा। अभिभावकहीन लड़की तो इतना भी नहीं जानती कि अपनी शादी अपने आप ही तय करना कठिन है। उसे यही बात समझाने के लिए बलराम उससे आलोचना करना चाहता है। कहा, ''शादी में कितने लोगों को बुलाएगी, उसकी पर्ची बनाई है क्या? क्या-क्या खिलाएगी? इसमें कितना ख़र्चा आएगा...?''

---

1. बंगाली दूल्हे के सिर पर पहना जानेवाला सोले से बना शिखरनुमा मुकुट।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बीच में ही जबा बोल पड़ी, ''आपको तो पता है कि मैं हिसाब-किताब में बहुत कमज़ोर हूँ। आप नोट बुक में लिखकर हिसाब कर दीजिए न ? सबसे पहले मैं अपने मेहमानों के नाम गिना देती हूँ।''

अनमने भाव से अपने हिसाब-किताब की कॉपी और पेन उठाकर बलराम बोला, ''बोलो, मैं लिख रहा हूँ।''

जबा उँगलियों में गिनती हुई कहने लगी, सबसे पहले नंबर पर है स्टेशन की दादी माँ, फिर मुर्ग़ी चोर, चायवाले रामकिशोर दा, पत्तेबाज़ कानाई, लाल टमाटर पंचानन, पागल गोपाल की माँ...

अचानक बलराम ने रोककर कहा, ''तुम केवल नाम गिनती जाओ! बाक़ी मैं समझ लूँगा।''

अचानक जबा खड़ी हो गई, बोली, ''ज़रा रुक जाओ, डॉक्टर बाबू लौट रहे हैं, उनसे भी चंदा के बारे में बात करके अभी आती हूँ।''

कॉपी रखते हुए बलराम सोचने लगा, 'ऐसी अस्थिरमति के भाग्य में न जाने भगवान ने क्या लिखा है!' आसमान आग उगल रहा था। बलराम ने छाता खोल लिया। जबा से पहली मुलाक़ात आज भी अच्छी तरह से याद है बलराम को। ट्रेन पर से डीलर ने इतनी ज़ोर से अख़बार का बंडल फेंका कि डोरी के टूटने से सारे अख़बार प्लेटफ़ॉर्म पर बिखर गए। डीलर को गालियाँ बकते हुए अख़बारों को इकट्ठा कर रहा था बलराम। अचानक उसने देखा कि फ्रॉक पहनी हुई एक बारह-तेरह वर्ष की लड़की भी उन अख़बारों को उसके साथ इकट्ठा करने लगी है। काम ख़त्म करने पर हाथ बढ़ा दिया था उस लड़की ने। कहा था, ''पैसे दो! तुम्हारी मदद की है मैंने।''

उसके उच्चारण को सुनकर ही बलराम समझ गया था कि कोलकाता के आसपास के किसी ज़िले से आई है। विस्तार से सब कुछ जानकर बोला था, ''इतनी छोटी हो! पैसे लेकर क्या करोगी तुम ? चलो मेरे साथ, तुम्हें चाय, पाव रोटी खिलाता हूँ।''

उसकी बात को न मानते हुए जबा ने कहा था, ''नहीं, तुम मुझे मेरा पैसा दे दो!''

लड़की बड़ी ज़िद्दी निकली। इतने भीड़-भड़क्के में खोई भी नहीं। उसका दिमाग़ भी सही-सही काम कर रहा था। उसने बड़े व्यवस्थित ढंग से सारा काम किया था। फिर बलराम ने उससे कहा, ''ठीक है पैसे भी दूँगा और चाय भी पिलाऊँगा। तुमने आज मेरी बहुत मदद की है, चलो!''

स्टेशन के बाहर सूरज की चाय की दुकान पर दोनों आकर बैठे। बातों-ही-बातों में बलराम ने उसका नाम जान लिया। अनाथ आश्रम से भागकर आई है। जगह का नाम नहीं बता पाई। रात को पैदल बेंडेल तक आई, फिर वहाँ से ट्रेन से यहाँ आई है। भूख के चलते भोर होते ही इस स्टेशन पर उतर गई।

बलराम के मन में एक बार यह बात भी आई थी कि जबा को थाना ले जाए, लेकिन लड़की का भरापूरा शरीर देखकर वह डर गया था। अगर कुछ ग़लत हो जाए तो ? अपने घर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भी तो इसे नहीं ले जा सकता। किसी तरह से खींच-तानकर उसका घर चलता है और इधर पत्नी भी इसे अपने घर में जगह नहीं देनेवाली।

बलराम ने जबा को मंगलामासी के होटल में काम पर लगा दिया था। छोटा-मोटा काम करेगी वहाँ पर, जिससे उसके खाने-पहनने का ख़र्चा निकल जाएगा। हरदम उस होटल पर भीड़ लगी रहती है। कोलियारी के मज़दूर इसके ग्राहक हैं। मंगलामासी बड़ी चौकस औरत है। इस लड़की का ध्यान भी रखेगी।

लेकिन वहाँ बलराम ने जैसा सोचा था, वैसा कुछ भी नहीं हुआ। जबा वहाँ पर दो दिन भी नहीं टिक पाई। वापस प्लेटफ़ॉर्म पर लौट आई। उस समय वहाँ पर और तीन लोगों का ठिकाना था। पागल बुधिया, अंधा बूढ़ा, एक पाँवकटी बुढ़िया और इनके साथ वहाँ कुछ कुत्ते भी रहते थे। बलराम ने बहुत समझाया था जबा को कि रात को सोने के लिए प्लेटफ़ॉर्म ठीक जगह नहीं है। कभी भी विपदा का सामना करना पड़ सकता है। जबा ने उसकी एक नहीं सुनी। स्टेशन में जहाँ भी जिसे भी जब भी ज़रूरत पड़ती, उसकी मदद करती और बदले में पैसे लेती। इस तरह से उसकी कमाई अच्छी हो गई थी। जैसे मछलीवाले की टोकरी को एक जगह से दूसरी जगह तक ले जाना। चोरी के कोयले को ट्रेन पर चढ़ा देना। जब मन चाहे चाय की दुकान पर घुस जाती और कप-प्लेट धोने लग जाती।

जबा को लेकर बलराम हर समय परेशान रहता था। एक महीने के अंदर आश्रम के लोग आकर फिर से उसको पकड़कर ले गए। उस समय बलराम वहाँ पर नहीं था। सुनकर बलराम निश्चिंत हुआ था। पर दो महीने के अंदर फिर लौट आई जबा। पहले से और ज़्यादा ज़िद्दी हो गई थी। बताया, कि फिर वहाँ से भागकर आई है। आश्रम उसे एकदम पसंद नहीं है। लँगड़ाकर चल रही थी। पाँव पर छिल जाने के निशान साफ़ दिख रहे थे। पेड़ पर चढ़, बहुत ऊँची दीवार फाँदकर भाग आई थी।

फिर जबा को कोई भी लौटाकर ले जाने के लिए नहीं आया। इस बार वापस आकर उसने अपने घूमने-फिरने के क्षेत्र को और बढ़ा लिया था। लोगों के बाग़-बग़ीचे से नीम के कोमल पत्ते, फूल, बेल, आम, जामुन, खेतों से सब्ज़ियाँ चोरी करने लगी थी। तालाब में जाल फेंकने पर मछली पकड़नेवालों के काम में भी मदद करने लगी थी। मेहनत के बदले उसे दो-चार मछलियाँ मिल जाती थीं। कुछ मछलियाँ छुपाकर अपने गमछे में बाँधकर भी रख लेती थी। उसके इस स्वभाव के बारे में लोग जानते हुए भी उसे कुछ नहीं कहते थे। एक बार अगर उसकी ज़ुबान चलने लगेगी तो सबको फिर धोकर रख देगी। अगर पकड़ने आएँगे तो पत्थर तक मारने से नहीं हिचकती है। सब्ज़ियाँ, मछलियाँ लेकर बाज़ार में बेचने बैठ जाती। नहीं तो घूम-घूमकर भी बेचती रहती थी। पैंट-शर्ट पहनकर रिक्शा वैनरिक्शा भी चलाती थी। ऐसे काम कर-करके उसके पास अच्छे-ख़ासे पैसे जमा हो गए। पैसे कहाँ रखती है, ये किसी को भी पता नहीं है। यहाँ के रहनेवाले अपने बाहर से आनेवाले रिश्तेदारों को जबा को दिखाने के लिए लाते हैं। जैसे मंदिर, मस्जिद, कोलियारी, टूटी हुई नीलकोठी को दिखाते हैं...

प्लेटफ़ॉर्म में सोने के कारण केवल एक बार ही मुसीबत का सामना करना पड़ा था जबा को। मुसीबत किनका? जो लोग उसका रेप करने आए थे उनका या जबा का यह कहना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुश्किल है। एक स्वस्थ सुंदर लड़की को फ्रॉक पहनकर प्लेटफ़ॉर्म पर सोते देख कुछ शराबी बहक गए थे। रात को पैसेंजर ट्रेन से उतर पड़े थे। उनको मालूम नहीं था कि जबा को घेरकर जो कुत्ते सो रहे थे, वे जबा के लिए जान तक दे सकते थे। जबा उनको खाना खिलाती है, उनसे बातें करती है, उनको दुलारती है। बाहर से आनेवाले शराबियों के लिए ये भी जानना मुश्किल था कि जबा अपने सिरहाने, एक गमछे में लाइन पर बिछे पत्थरों को बाँधकर सोती है। सो जो होना था, वही हुआ। दल के कुछ लोगों ने भागकर अपनी जान बचाई, पर दो लोगों को उसने अपने क़ाबू में कर लिया। उसने ख़ून की नदियाँ बहा दीं।

थाना-पुलिस, अस्पताल सब हुआ। जबा को कोर्ट से बुलावा भी आया। लेकिन उसके पास वक़्त नहीं था वहाँ जाने का। फिर तो उन लोगों का क्या हुआ कुछ पता भी नहीं चला। जबा का वह रणचंडी कांड लोगों की जुबान पर चढ़ गया। तब से कोई भी उसके पास फटकने से डरता है।

लड़की जाने कब प्रेम में पड़ गई, बलराम को पता भी नहीं चला। लड़का, कोयारडि के कोयले की खदान में काम करता है। अगर देखा जाए तो लड़का बुरा नहीं है। रंग-रूप ठीक-ठाक है। उसने जबा को ही क्यों चुना, समझ में नहीं आया। हिन्दी गानों के मुखड़े को गुनगुनाती फिरती रहती है। आवाज़ अच्छी है। काली पहाड़ी के काले मैदान में धूप में तपकर कोयल की तरह घूमती-फिरती रहती है जबा। कोयल का घर बसाना क्या संभव है?

पाल डॉक्टर के पीछे जो दौड़ी जबा, अभी तक वापस लौटकर नहीं आई। शायद कहीं और चली गई होगी। इधर-उधर दौड़ते-फिरते रहना ही तो उसका स्वभाव है। यह स्वभाव उसके ख़ून में एकदम से घुल-मिल गया है।

शाम घिरने लगी। कृष्णसायर के तट से बिसला उठ खड़ा हुआ। पर जबा बैठी रही अकेली। कुछ दूर तक बिसला के साथ वह भी जा सकती थी, पर नहीं गई। ख़यालों में भगदड़-सी मची थी, उठने का मन नहीं हो रहा था। बिसला के राह की ओर एकटक देख रही थी जबा। आम, कटहल के बाग़ को पार कर कोयले वाले रास्ते की ओर क़दम बढ़ाया बिसला ने। फिर उस बड़े-से बटगाछ की ओट में चला गया बिसला। वहीं पर ग़ैरक़ानूनी खदान है। रात भर उस खदान में बिसला कोयला तोड़ेगा। उसके इस काम को लेकर ही जबा चिंतित है। इस खदान को, इलाक़े का बहुत बड़ा गुंडा किशोर साहू चलाता है। ऐसे और भी बहुत खदान हैं उसके। पुलिस, नेता लोगों को पैसा खिलाकर रखता है। जब पैसा नहीं दे पाता है तो पुलिस मज़दूरों को पकड़कर ले जाती है और तीन-चार महीने के लिए जेल में चालान कर देती है।

जबा ने बिसला से बहुत बार कहा है, ''इस काम को छोड़ दो! कोई दूसरा कारोबार करो! रिक्शा चलाओ! फिर मैं भी तो कुछ-कुछ कमाती हूँ कि नहीं!''

बिसला के कान पर जूँ तक नहीं रेंगती। कोयले की जोड़-तोड़ में जितना पैसा मिलता है, उतना और किसी भी कारोबार में नहीं मिलता है। काली पहाड़ी में इससे ज़्यादा हो ही नहीं सकता। खेती-बाड़ी बहुत कम होती है इस इलाक़े में। एक के बाद दूसरा मैदान कोयले के बुरादे से भर गया है। आस-पास के इलाक़े में ऐसी बहुत सारी चोरी की खदानें फैली हुई हैं,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिनका खुला भाग मुँह फाड़कर सब कुछ लील रहा है। शुरू के दिनों में जब जबा यहाँ पर आई थी, तब इस ओर हरियाली-ही-हरियाली फैली हुई थी। बड़े-बड़े पेड़। तालाब के किनारे बगुले बैठे रहते थे, झुंड-के-झुंड तोते उतरते थे, खेतों में दाने खाने के लिए। न जाने कितनी तरह के कारोबार करते थे तब लोग। आजकल एक ही कारोबार है कोयले का। बाबू लोग यहाँ पर नहीं के बराबर हैं। एक-एक करके सब आसनसोल जा रहे हैं। बाज़ार में पैसे वाले कुल ख़रीददार एक-दो ही रह गए हैं। अब इस इलाक़े में क़ुली-मज़दूरों की भरमार है और है मोटरसाइकिल वाले सूदख़ोरों की भरमार।

बिसला यहाँ पर सरकारी खदान में काम करने के लिए आया था। जामताड़ा, उसका गाँव है। गाँववाले एक चाचा ने कहा था कि यहाँ पर काम दिलवा देगा। इसलिए बीस हज़ार भी लिए थे चाचा ने। ज़मीन बेचकर बिसला के बाबा ने बीस हजार रुपये दिए थे। पर काम नहीं दिलवा सके। दिलासा दिए हुए हैं कि अब नौकरी दिलवा देंगे। कोयारडी के क़ुली धावड़ा में अपने उस गाँववाले चाचा के साथ रहता है बिसला। नौकरी के लिए दो महीने तक इंतज़ार किया बिसला ने। फिर चोराई के खदान में काम करने लग गया। पैसे अच्छे मिलते हैं। हफ़्ते में एक दिन घर जाकर पैसा देकर आता है बिसला। शायद उसके बाबा ने बेची हुई ज़मीन फिर से ख़रीद ली होगी! इधर बिसला दिन के उजाले में पुलिस के डर से निकलना नहीं चाहता है। जबा मन से चाहती थी कि बिसला का बलराम से परिचय हो जाए। बिसला को केवल इतना-सा ही झूठ बोलना पड़ेगा कि वह सरकारी खदान में नौकरी करता है। जबा ने भी ऐसा ही बताया है, बलराम दा को बिसला के बारे में। बिसला इसके लिए तैयार नहीं हुआ। इज़्ज़त उसके आड़े आ गई। स्कूल में बहुत ऊँचे दर्जे तक की पढ़ाई की है बिसला ने।

काली पहाड़ी पर जब उसे नौकरी नहीं मिली थी, तब वह इधर-उधर घूमता रहता था। ऐसे में अकसर उसे जबा मिल जाती थी। एक बार जबा ने ग़ौर किया कि इधर-उधर की मुलाक़ातें यूँ ही अचानक नहीं हो जाती हैं। दरअसल बिसला ही उसके पीछे-पीछे अकसर घूमता रहता है। जब कभी जबा रेल क्वार्टर की दीवार फाँदकर पेड़ों से आम चोरी कर रही होती तो इधर-उधर चौकन्नी होकर ताकते ही उसे बिसला नज़र आता, हैरानी से उसे एकटक चोरी करते देखते हुए। छुप-छुपाकर किसी के तालाब में मछली पकड़ने के लिए जाल फेंका जबा ने, जाल को खींचते ही जाल कँटीली झाड़ियों में अटक जाता तो पेड़ों की आड़ से निकलकर सामने आ खड़ा होता बिसला। वह पानी में उतरकर काँटों से जाल को अलग कर देता। जबा जब भी माल से भरा हुआ वैनरिक्शा खींचती, बाज़ार में सामान बेचती, तब भी बिसला उस पर दूर से नज़र रखता।

एक दिन रात को स्टेशन की बेंच पर सोते समय जबा ने देखा कि ओवरब्रिज की सीढ़ियों पर खड़े-खड़े बिसला उसे एकटक ताके जा रहा है। जबा का मिज़ाज गरम हो गया। दौड़कर उसके सामने जाकर चीख़ उठी, ''ऐ सुअर की औलाद! मेरे पीछे-पीछे हर समय क्यों घूम रहा है रे? तेरा धंधाबाज़ी मैं नहीं समझती क्या?'' और भी बहुत कुछ कहा था जबा ने बिसला को। आज सोचती है तो शरम से सिर झुक जाता है। बिसला ने चुपचाप उसकी गालियाँ सुनीं। फिर धीरे-से बोला था, ''तुम बहुत अच्छी लगती हो!''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसकी बातें सुनकर जबा को ज़रा भी अच्छा नहीं लगा था। ऐसी बातें उसने बहुत सुनी थीं। मर्द कितने बुरे हो सकते हैं, यह समझ में आ गया था उसे।

कुछ दिनों के बाद ही मन में हलचल-सी मची। मुसलिया गाँव में चक्कर लगाने गई थी जबा। अगर कद्दू, मूली-जैसा और कुछ मिल जाए तो बाज़ार में जाकर बेच देगी। दोपहर के बाद से ही आसमान में बादल घिर आए। बिजली से बहुत डरती है। क्यों डरती है पता नहीं, पर जब से बड़ी हुई है तभी से उसके मन में यह डर बैठ गया है। काले-काले बादलों को देखकर जबा ने डेरे की ओर अपना क़दम बढ़ा दिया था। बड़े रास्ते से कुछ दूर तक दौड़ने के बाद ही काले बादलों को चीरकर बिजली चमकने लगी और साथ में तेज़ बारिश भी शुरू हो गई। जबा की समझ में आ गया था, ऐसे में ज़्यादा दूर तक वह नहीं जा सकेगी। रुक-रुककर बिजली चमक रही थी, और इससे उसका दिल ज़ोरों से धड़क रहा था। इतने में रास्ते से थोड़ा हटकर उसे एक पुराना मकान दिखा तो वह उस मकान में घुस गई।

लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। बाहर से पता नहीं लग रहा था कि उस मकान की छत एकदम से ढह गई थी। दीवार से सटकर जैसे-तैसे अपने को बचा रही थी जबा। आसमान में तब भी लगातार बिजली चमक रही थी। कभी-कभी तो ऐसा लग रहा था जैसे बिजली की तेज़ झलकियाँ जबा को बेध देंगी। आसपास कहीं बार-बार बिजली गिर रही थी, जिसकी आवाज़ से पूरा इलाक़ा थर्रा उठा था। जबा डर के मारे थरथर काँप रही थी। इतने में बड़े ज़ोर से बिजली चमकी और उस तेज़ रोशनी में जबा ने बिसला को देखा, कूदकर उस मकान में घुसते हुए। गठा हुआ शरीर, कपड़े भीगकर शरीर से चिपक गए थे। उसकी समझ में आ गया था कि अब बिसला उसे इतनी आसानी से नहीं छोड़नेवाला है। बहुत दिन से देख रही थी जबा। मुड़कर वार करने का साहस नहीं रहा अब जबा के अंदर। इस आँधी-तूफ़ान ने उसके साहस को एकदम से ख़त्म कर दिया था। जबा की नज़र के सामने तेज़ बारिश में चीता-बाघिन-जैसी देह जब स्पष्ट होने लगी तब वह उस घर से भागने लगी और तभी एक ज़ोरदार ठोकर लगने के कारण गिर पड़ी।

उसके बाद का उसे कुछ भी याद नहीं था। होश आने पर उसने अपने आप को एक दवाई की दुकान के बेंच पर लेटे हुए पाया। दाहिने पैर के अँगूठे और सिर पर पट्टी बँधी हुई थी। अपने वज़नदार सिर को घुमाकर उसने देखा तो दुकान के सामने गीले कपड़ों में बिसला उकड़ूँ होकर बैठा दिखा। दुकानवाले परेश दा ने कहा, ''इस लड़के के कारण आज तुम बच गई। ख़ून तो पानी की तरह बह रहा था, सिर पर तीन टाँके लगाने पड़े।''

बरसात तब तक रुक गई थी। छत से पानी टपक रहा था। रास्ते के किनारे बैठकर कौआ अपनी देह झटक-झटककर पानी सुखा रहा था।

रिक्शे में बैठकर स्टेशन लौटते वक़्त बिसला से दोस्ती हो गई थी। तभी पता चला कि बिसला उसका हर वक़्त पीछा करता रहता है। उस टूटे हुए घर में इसलिए वह वक़्त रहते पहुँच गया था। लौटते वक़्त रिक्शे में एक-दूसरे से सटकर बैठते हुए न जाने जबा को क्या हो गया कि उसने उसी समय सोच लिया कि वह बिसला के साथ ही शादी करेगी। उस दिन उसने बिसला से कुछ भी नहीं कहा। कुछ दिन तक जंगल, मैदान, तालाब के किनारे साथ घूमने-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिरने के बाद अचानक जबा ने बिसला से कहा, ''केवल साथ घूमने-फिरने से नहीं चलेगा, शादी करनी पड़ेगी, समझे!''

बिसला तो एकदम से राज़ी हो गया। अनाथालय में रहकर जबा यह समझ गई थी कि शादी का मतलब बहुत अच्छा होता है। कोई बाहरी और भला आदमी उनके साथ शादी रचाकर ले जाता। विदाई के वक़्त दीदी बहुत रोती थीं। कुछ दिन के बाद फिर हँसती हुई अनाथालय की दीदीमणी से मिलने आती थीं। उनकी हँसी को देखकर ही जबा को अंदाज़ा लग गया था कि शादी का मतलब है, सुखमय जीवन।

अगर शादी बनाना है तो फिर यहीं रहकर बड़ा होना पड़ेगा। इतना धैर्य जबा के पास नहीं था। अनाथालय की छत से रास्ता दिखाई देता था और फिर पेड़-पौधे, घर, गाड़ी, मैदान, फेरीवाले सब उसे चुंबक की तरह खींचते रहते। यहाँ का शासन बहुत कठोर था। भरपेट खाना नहीं मिलता था। समय-समय पर मार भी पड़ती थी। पहली बार वहाँ से भागकर आने पर ही जबा को पता चल गया था कि बाहर की दुनिया का यहाँ कोई नियम-क़ानून नहीं है। इसलिए दूसरी बार भागकर आने में उसे ज़्यादा समय नहीं लगा। घर-परिवार बसानेवाली बात तो वह भूल ही गई थी। बाल-बच्चे के साथ किसी पति-पत्नी को देखते ही भाव-विह्वल होकर उनको देखती रहती। सोचती, ऐसा दिन उसके जीवन में कभी भी नहीं आनेवाला।

बिसला ने वचन दिया कि सरकारी खदान में नौकरी लगते ही वह शादी कर लेगा। एक दिन बस में बैठकर उसे अपने गाँव जामताड़ा लेकर भी गया। शादी के बाद तो जबा को उस घर में रहना पड़ेगा। पर बिसला के घरवालों ने उनको वहाँ से भगा दिया। कहा, बेजात की लड़की को स्वीकार नहीं करेंगे। बलराम दा ने सुनकर कहा, ''तुम लोगों की बोली अलग-अलग है, पर जात के बारे में ऐसा कहना ठीक नहीं लगा।''

जबा को यह सब समझ में नहीं आती है। ससुराल वालों ने कह दिया है कि यहाँ जगह नहीं मिलेगी, इसलिए जबा ने आलूवाले राजू दा के गोदाम घर को भाड़े पर लिया है। वह जगह ख़ाली ही थी। राजू दा का कारोबार भी आजकल मंदी में है। खपरैल की छत और कच्ची ईंट की दीवार वाले घर को रहने लायक़ बनाकर आजकल जबा वहीं पर रहने लगी है।

सरकारी खदान में काम नहीं मिलने के कारण आजकल बिसला चोराई खदान पर ही काम करने लग गया है। उसके इस काम से जबा बहुत नाराज़ है। अकसर कहती है, ''वहाँ एक्सीडेंट का डर है और पुलिस पकड़कर कभी भी जेल में डाल सकती है! ये सब करने की कोई ज़रूरत नहीं है! इससे तो अच्छा है कि ट्रेन में हॉकरी करो, बाज़ार में मछली बेचो!''

बिसला ने कहा, ''यहाँ ज़मीन के ऊपर माल नहीं है। नीचे बहुत है। हम घरवालों को दिखा देंगे कि बिसला कितना कमा सकता है।''

दिखा दिया है बिसला ने। हफ़्ते में एक बार देश में जाकर बाबा को पैसा देकर आता है बिसला। अब वे लोग ख़ुशी-ख़ुशी जबा को बहू बनाने के लिए तैयार हैं। पर ऐसा नहीं होने वाला क्योंकि बिसला का खदान पर काम करना जबा को एकदम पसंद नहीं है। और अगर बिसला काम नहीं करेगा तो ससुराल वाले जबा को घर में घुसने ही नहीं देंगे। इस बात पर कई दिनों से बिसला से लगातार बात-बहस हो रही है। आख़िरकार बिसला उस खदान के काम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को छोड़ने के लिए तैयार हो गया। और फिर आलूवाले राजू दा के साथ बिसला की बात करवा दी है जबा ने। बिसला आसनसोल के मुन्नी बाज़ार से आलू-प्याज़ लाकर यहाँ के बाज़ार में बेचेगा।

राजू दा ने कहा है कि पाँच हज़ार हाथ में लेकर ही इस कारोबार में उतरा जा सकता है। और उसी पाँच हज़ार के लिए ही बिसला आजकल खदान में फिर से उतर रहा है।

शाम हो गई है। चैती का भजन सुनाई दे रहा है। पूरे चैत्र ही बिहारी मज़दूर इकट्ठे होकर ढोल बजाकर चैती का गीत गाते हैं। कृष्णसायर के घाट पर से जबा घर की ओर लौटने लगी। उस ओर की झाड़ियों में जुगनू चमकने लगे थे। शादी के दिन अपने घर को टूनी बल्ब से सजाने की बहुत इच्छा है जबा की। निमंत्रित लोग उस दिन उसको देखने आएँगे। खाना खिलाने के लिए उसने बेंच और टेबल का इंतज़ाम भी किया है। गाना भी बजेगा। धूमधाम से शादी होगी। संतु दा ने बैशाख की छब्बीस तारीख़ को शादी के लिए सबसे अच्छा दिन बताया है। जबा को बहुतों ने चंदा दिया है। और लोग अभी बाक़ी हैं देने के लिए। बलराम दा ने उसे सावधान कर दिया है, "देख-भाल कर ख़र्च करना! ये सब तो लोगों के दिए हुए पैसे हैं। देखना, ऐन वक़्त पर तेरा प्रेमी तुझे धोखा न दे जाए। आज तक मैंने उसे देखा तक नहीं!"

कैसे दिखाएगी जबा, कोयला चोर तो लोगों के सामने आना ही नहीं चाहता! आज भी उसने कहा, "शादी के दिन को थोड़ा आगे बढ़ा दो। पाँच हज़ार जमा होने में अभी देर है।"

जबा ने साफ़ कह दिया है, "शादी तो उसी दिन ही होगी। उसके हफ़्ते भर पहले तुम ये सब काम छोड़ दोगे। घर का सारा ख़र्चा तभी मैं उठाऊँगी।"

चलते-चलते रास्ते पर आ गई जबा। पीपल के पेड़ के पीछे बाँस से बँधी हुई घर्घरी दिखाई दे रही है। वहीं पर खदान है, जहाँ बिसला काम करता है। कुएँ की तरह एक बहुत बड़ा गड्ढा दिखाई दे रहा है। घर्घरी की आवाज़ सुनाई दे रही है। कुछ दूर पर एक लॉरी खड़ी है। ज़मीन के नीचे से निकाले गए कोयले को उसमें लगातार भरा जा रहा है। बैटरी की रोशनी में सब कुछ स्पष्ट दिखाई दे रहा है। पुलिस के आते ही बत्ती बुझ जाती है।

ज़मीन के नीचे थोड़ी दूर तक जाकर खदान का गड्ढा किस ओर कितने दूर तक फैल गया है, किसी को इसकी जानकारी नहीं है। सोचते ही जबा सिहर उठती है। डर के मारे चार क़दम पीछे लौट आती है जबा। कहीं पाँव के नीचे बिसला तो नहीं है न? बहुत बड़ा पाप लगेगा तब जबा को! और कुछ ही दिन के बाद तो बिसला के साथ उसकी शादी है।

कल जबा की शादी है। अपनी शादी की तैयारी अपने आप करना कितना झंझट का काम है, जबा यह पल-पल महसूस कर रही थी। उसका यह भाड़े का मकान सोसायटी से काफ़ी दूरी पर है। वैनरिक्शा से सारा सामान ख़ुद ही खींच-खींचकर ला रही थी जबा। जैसे कि कुछ देर पहले ही पड़ती बाज़ार से सारी सब्ज़ियाँ ख़रीद लाई है। बाज़ार वाले ने ऐसे ही दे दिए, एक पैसा भी नहीं लिया। कल सभी लोग खाना खाने आएँगे। जबा ने कुछ दिन के लिए वैनरिक्शा भाड़े पर रख लिया है। वैनरिक्शा वाले से अगर माल मँगाया जाए तो बहुत पैसा लग जाएगा। बेकार का ख़र्चा एकदम नहीं करेगी जबा। ज़रा धूमधाम से शादी करना चाहती है जबा इसलिए पैसे थोड़े ज़्यादा ही ख़र्च हो रहे हैं। बिसला ने खदान में उतरना छोड़ दिया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जितने पैसे थे उसके पास, वह उन्हीं पैसों से आसनसोल से आलू ख़रीदकर बाज़ार में बेचने लगा है। पैसे उतने नहीं मिल रहे हैं। अभी तो जबा को ही दो जनों का पेट चलाना पड़ेगा।

मकान के सामने कच्चे रास्ते पर पंडाल का गेट बनाया गया है। सीढ़ी लगाकर वहाँ लाइट लगा रहे हैं उत्तम दा। ध्यान से वही देख रही थी जबा। सिर के ऊपर सूरज चमक रहा है। आज अगर लाइट नहीं लगाते तो भी चलता, पर कल काली पहाड़ी में चार जगह पर शादी है इसलिए आज ही उत्तम दा इधर का काम ख़त्म कर रहे हैं। साउंड बॉक्स अभी तक नहीं आया। उसकी ज़रूरत सबसे पहले है। कल भोर से ही जबा शहनाई वादन वाला रेकॉर्ड बजाना शुरू कर देगी। लाइट तो शाम को जलाई जाएगी। सीढ़ी पर चढ़े उत्तम दा से जबा ने कहा, ''क्या हुआ दादा, आपका साउंड बॉक्स तो अभी तक नहीं आया?''

जबा की ओर देखने से पहले उत्तम दा की नज़र किसी दूसरी जगह पर अटक गई। जबा ने उत्तम दा की नज़रों का पीछा किया। देखा स्टेशन के रास्ते पर कुछ लोग तेज़ी से दौड़ रहे थे।

उत्तम दा ने पूछा, ''क्या हुआ इधर?''

जबा ने कुछ जवाब नहीं दिया। धीरे-धीरे पक्के रास्ते की ओर बढ़ने लगी। लोगों के दौड़ने के साथ-साथ सायरन की आवाज़ भी सुन रही थी जबा। केवल कान में ही नहीं, उसके दिल में भी ख़तरे की घंटी बज रही थी। ग़ैरक़ानूनी खदान की दुर्घटना की घंटी निःशब्द ही बज उठती है। यहाँ आने के बाद से ऐसे अनुभव से दो बार गुज़र चुकी है जबा। उत्तम दा भी समझ गए। जबा निश्चिंत नहीं हो पा रही थी।

झुंड-के-झुंड लोगों के साथ जबा भी दौड़ने लगी। बुरे विचार उड़-उड़कर आ रहे थे मन में। उसे पता चल गया कि कोयारडी के पास चोराई खदान धँस गई है। बिसला उधर ही काम करने गया था। आज बिसला बाज़ार नहीं गया था।

पहले भी बिसला बहुत बार ऐसा कर चुका है। जबा ने एक बार उसको पकड़ भी लिया था और पूछा था, ''कहाँ गए थे?''

तब बिसला ने स्वीकार किया था, ''डबल मज़दूरी मिलेगी सुनकर मैं खदान में उतर गया था।''

उस दिन जबा ने उसे बहुत बुरा-भला कहा था। क्या आज भी डबल पैसे के लालच में बिसला राक्षस के पेट में उतरा था? जबा का गला सूखने लगा था। बिसला को देखे बग़ैर उसके मन को शांति नहीं मिलेगी।

बहुत बड़ा इलाक़ा धँस गया था। पुलिस भी आ गई थी। बहुत बड़ी तादाद में भीड़ इकट्ठी हो गई थी। जबा उस भीड़ में बिसला को ढूँढ़ रही थी। दो बॉडी निकाली गईं। जबा ने देख लिया था कि उनमें बिसला नहीं था। पर कहाँ गया बिसला? इतनी बड़ी घटना के बारे में सुनकर तो उसे यहाँ पर आ जाना चाहिए था।

अचानक जबा ने बिसला के गाँववाले चाचा को देखा। वह चुपचाप चेहरा लटकाकर एक ओर खड़ा था। इनके घर में ही तो बिसला रहता है। इसने ही तो कहा था कि उसे सरकारी खदान में नौकरी दिलवा देगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जबा की ओर नज़र पड़ते ही चाचा ने अपना चेहरा घुमा लिया। भागने की फ़िराक़ में ही था कि जबा दौड़कर उसके सामने खड़ी हो गई। पूछा, ''कहाँ है बिसला ?''

''गाँव चला गया।'' उसने कहा।

''कब गया ? मुझसे तो कुछ भी नहीं कहा ?''

''उसके पिताजी की तबीयत ख़राब है। ख़बर आते ही चला गया सुबह।''

उसके जवाब में उतना वजन नहीं था। न जाने क्यों जबा को लगा कि ये आदमी झूठ बोल रहा है। सीने का ख़ालीपन उसे कचोटने लगा। पुलिस खदान के गड्ढे के मुँह के सामने खड़ी थी। गड्ढे का आकार अब गोल नहीं रहा, वह माँग की तरह एकदम सीधा होकर ढह गया था। एक मातब्बर पुलिस को समझा रहा था कि ''केवल ये दो लोग ही नीचे उतरे थे, सर! हमें पूरी जानकारी है कि और कोई भी नहीं उतरा था।''

पुलिस अफ़सर लगातार सिर हिला रहा था, भरोसा करने लायक़ जवाब नहीं मिल रहे हैं उसे। ये तो जबा को भी मालूम है कि ये सारी बातें झूठी हैं। खदान में केवल दो लोगों को नहीं उतारा जाता है। एक साथ झुंड-के-झुंड लोग अंदर कोयला खोदने के लिए उतरते हैं। इधर-उधर नज़र घुमाते वक़्त अचानक जबा की नज़र झाड़ियों के नीचे ठहर गई। कुछ जोड़े जूते-चप्पल दिख रहे थे।

वह दौड़ी उस ओर। टायर काटकर तीन जोड़े बने चप्पल और एक जोड़ी सुंदर फ़ैशन वाली चप्पल। दामड़ा के हाट से बिसला को वह ख़ूबसूरत चप्पल ख़रीदकर दी थी जबा ने। उसने झट-से उस चप्पल को उठा लिया और चीख़ती हुई पुलिस को कहने लगी, ''सर भीतर और भी बॉडी हैं!''

न जाने तभी कौन अचानक कूद पड़ा जबा पर। मज़दूर-जैसा कोई था। कहने लगा, ये मेरी चप्पल है और चप्पल जबा के हाथों से छीनने लगा, ''छोड़ साली! छोड़ ना, ये मेरी चप्पल है...!''

जबा ने भी कसकर वह चप्पल पकड़ ली। छीना-झपटी होने लगी। बिसला की चप्पलों को सँभालते समय ही जबा ने देखा कि वे तीन जोड़ी चप्पलें न जाने कब ग़ायब हो गई थीं।

जेठ की ढलती शाम। हवा में धूप की तपन की गंध। अप लोकल में स्कूल से लौट रही थी नंदिता। रिक्शा स्टैंड पर ही उसके पाँव जड़ गए। एक रिक्शा के हैंडल को पकड़कर जबा खड़ी थी। लगभग एक महीने के बाद नंदिता उसे देख रही थी। बेचारी की शादी होते-होते रह गई। शादी के ठीक एक दिन पहले उसका प्रेमी ग़ैरक़ानूनी खदान के नीचे ज़मीन के धँस जाने के चलते मारा गया।

जबा ने नंदिता को देख लिया था। रिक्शा खींचकर उस तक ला रही थी। वह जानती है नंदिता उसके रिक्शे से ही जाएगी। रिक्शा चलाना जबा के दूसरे अनेक छोटे-मोटे कामों में से एक है। रिक्शा चलाते वक़्त वह पैंट-शर्ट पहनती है। आज उसने वह नहीं पहनी है, बल्कि घुटने तक की फ्रॉक पहने हुए है। मन मसोसकर जबा के रिक्शे में चढ़ गई नंदिता। किसी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लड़की का रिक्शा चलाना उसे आज भी पसंद नहीं है। उस पर आज तक यह लड़की, अपना दु:ख भुला नहीं पाई है। कम- से-कम उसके चेहरे से तो यही लगता है।

स्टेशन से काफ़ी दूर तक आ गए थे वे। गर्म हवा दोनों को झुलसा रही थी। आज जबा एकदम चुप थी। पहले पूरा रास्ता बकर-बकर करते हुए ले जाती थी। यही स्वाभाविक है। इतना बड़ा धक्का! अख़बार वाले बलराम से ही पता चला कि भावी पति का शरीर, जो इस खदान के नीचे दबा पड़ा है, जबा को उसकी चप्पल देखकर ही पता चल गया था। एक स्थानीय मज़दूर ने उससे वह चप्पल भी छीन ली और कहा, ये चप्पल उसकी है।

खदान के मालिक को बचाने के लिए मज़दूर ने ऐसा कहा या इसलिए कहा कि मालिक को अगर जेल हो जाएगी तो फिर खदान बंद हो जाएगा, वे लोग खाएँगे क्या?

जबा ने उसके घरवालों को जाकर बताया कि उनका लड़का खदान के नीचे दबा पड़ा है। उन लोगों ने उसकी बात नहीं मानी। कहा, उनका लड़का कोलकाता में है। नंदिता ने बलराम से सच्चाई जाननी चाही थी कि सच्चाई क्या है?

बलराम ने कहा, ''सच्चाई सब जानते हैं! ज़िंदा ही अपने क़ब्र में चला गया वह लड़का! असल में उस लड़के का भाई आजकल चोराई खदान में काम कर रहा है। घरवाले अगर अपने बड़े बेटे की मौत को लेकर हल्ला-गुल्ला मचाएँगे तो छोटे बेटे की भी नौकरी चली जाएगी न!''

यहाँ का हाल-चाल आजकल ऐसा ही है। देश की आबादी वैसी-की-वैसी बनी रही। सरकार को कुछ भी पता नहीं चला। शोषक और शोषित—दोनों के एक ही गिरोह में हो जाने पर और किया भी क्या जा सकता है! जबा लगातार हर दिन पुलिस के पास जाती है। कहती, ''कम-से-कम एक बार तो बॉडी को निकालकर दिखा दीजिए!''

पुलिस कहती, ''लड़के के गुम हो जाने की बात तो घरवाले मान ही नहीं रहे हैं। कोई शिकायत नहीं आई है इसलिए हम कुछ भी नहीं कर सकते!''

बलराम को केवल एक बात का डर है। अपनी ज़िद के कारण कोयला माफ़िया के हाथों जबा का ख़ून न हो जाए!

दूर छातापाथर के मोड़ पर सूरज डूब रहा था। चारों ओर पीले रंग की धूप में धूल उड़ रही थी। पक्षी अपने घर को लौट रहे थे। रिक्शा खींचने में जबा को तकलीफ़ हो रही थी। शायद खा-पी भी अच्छी तरह नहीं रही। आज थोड़ी दुबली भी लग रही थी। नंदिता ने पूछा, ''हाँ रे, तेरे उस लड़के के बारे में कुछ फ़ैसला हुआ?''

पैडल मारते हुए जबा ने ना में सिर हिला दिया। विषय बदलकर नंदिता बोल उठी, ''अब यहाँ पर रहना मुश्किल होने लगा है, समझी! कोयला काट-काटकर चारों ओर दीमक की ढूह-सा हो गया है ये इलाक़ा। किसी दिन ये पूरा-का-पूरा इलाक़ा बैठ न जाए! परसों ही तो तालपुकुरिया, पूरा-का-पूरा पानी के नीचे चला गया। हम लोग तो दो-एक महीने में यहाँ का घर बेचकर आसनसोल जा रहे हैं।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जबा ने कोई जवाब नहीं दिया। वकील पाड़ा आ गया। दाहिनी ओर मुड़ने के बाद ही नंदिता का घर आता है। रिक्शा से उतरकर नंदिता ने भाड़े के पैसे बढ़ा दिए तो जबा बोल उठी, ''रहने दीजिए! मुझे तो आपको पैसे लौटाने हैं।''

''क्यों रे? कैसे?'' हैरानी के साथ नंदिता पूछ बैठी।

जबा ने जवाब दिया, ''शादी तो हुई नहीं! आपने तो चंदे में दो सौ रुपये दिए थे। सारा उधार रिक्शा चलाकर चुका दूँगी। भाड़ा नहीं लूँगी।''

नंदिता ने जबा के एक हाथ में रुपया ठूँस दिया, बोली, ''तू भी मेरे साथ आसनसोल चली चल! यहाँ पर रहकर क्या करेगी? एक-एक करके यहाँ से सभी लोग चले जाएँगे।''

पैसे को फ्रॉक के पॉकेट में डालकर रिक्शे को लौटा लिया जबा ने। पैडल मारते हुए मेन रास्ते पर चली आई। एक बार तालपुकुरिया जाकर देख आने का मन हुआ। लोगों से सुना था कि तालाब सूख गया है। लेकिन कभी जाकर देखा नहीं।

घाघरबूढ़ी मंदिर के पास से पतली राह की ओर बढ़ गई जबा। कुछ दूर जाते ही कोयला पत्थर और झाड़-झंखाड़ों ने रास्ता रोक लिया। रिक्शा से उतरकर आगे बढ़ गई वह। शिरीष गाछ के नीचे आते ही तालाब को देखकर जबा को एक ज़ोरदार धक्का लगा। यह क्या देख रही है, जैसे काली पहाड़ी की आँख हो। जबा की तरह ही रो-रोकर उसका सारा पानी सूख गया है। इस तालाब की तरह जबा भी इस काली पहाड़ी को छोड़कर कहीं नहीं जाएगी। यहाँ की मिट्टी के साथ उसका बेहद अपनापा है। यही तो है इस अनाथ के जीवन का इकलौता सहारा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहानी

हिंदी

सीतेश आलोक

किसका प्यार

कल... हाँ, कल ही तो।

तो फिर आज की रात मैं कैसे सो पाऊँगा ! कैसे सोऊँगा ? क्या यह उलझन मुझे सोने देगी ? मैं अपनी हार का सामना कैसे करूँगा ?

'लेकिन क्यों ?' लगता है मेरे भीतर से ही कोई तर्क कर रहा है। 'जब हारना ही तय है, तो फिर उलझन कैसी ? क्या कोई उलझन तुम्हें हारने से बचा सकती है ? क्या रात भर जागने से इस समस्या का हल निकल सकता है ? नहीं न ! तो फिर चैन से सोते क्यों नहीं ?'

कहना आसान होता है...झेलना नहीं। शायद कोई तर्क मुझे समझा नहीं पाएगा। कोई तर्क मुझे इस उलझन का सामना करने की शक्ति नहीं दे पाएगा।

तो फिर मैं जाऊँ ही क्यों ? मेरी अनुपस्थिति में भी तो वही होगा जो मेरे वहाँ उपस्थित रहने से होगा। मिस्टर रंजन ने लगभग स्पष्ट शब्दों में मुझसे कह रखा है कि ''यह केस अब हाथ से निकला ही मानिए।'' संभावना थी... थोड़ी-बहुत ही सही, जब तक यह आशा थी कि सुपर्णा मान जाएगी... अपना केस वापस ले लेगी। लेकिन वह नहीं मानी। मेरी क़िस्मत का फ़ैसला तो उसी दिन हो गया था, जिस दिन अदालत ने, अपनी असमर्थता दिखाते हुए, सुपर्णा की अर्ज़ी को स्वीकार करके तलाक़ का निर्णय सुनाया था।

उस निर्णय में, बस एक पुछल्ला रह गया था। बड़ा प्यारा-सा पुछल्ला... मेरा पाँच साल का बेटा... वितान...वह किसके पास रहेगा ? किसके साथ रहेगा ? मिस्टर रंजन ने अपने गंजे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा था, ''वेल उदयन साब...'' बोलते-बोलते वे क्षण

जन्म : 1937 ई.। कविता, कहानी, व्यंग्य और यात्रा संबंधी कई पुस्तकें प्रकाशित। हिंदी अकादमी सहित कई साहित्यिक संस्थाओं से पुरस्कृत। संपर्क : 120, सेक्टर-15-ए, नोएडा 201301; मो. 9891357663

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भर के लिए रुके। लेकिन उनकी आँखें मेरी आँखों पर ही टिकी थीं। उनकी पलकें झपकीं, लेकिन उनकी दृष्टि ज्यों-की-त्यों मेरी आँखों में ही झाँक रही थी।

मुझे लगा, उनका चेहरा ही बहुत कुछ कह रहा है... वह सब कुछ जो उनके बत्तीस वर्षीय वकालत के अनुभव का निचोड़ है। उनकी पलक झपकाने के बीच मैंने वह सब पढ़ लिया, जो वह कहना चाह रहे थे। जो उन्होंने कुछ पल... कुछ लंबे पलों तक चुप रहने के बाद कहा, ''आपका केस बहुत वीक हो गया है उदयन साहब! मैंने बोला था न, कि जैसे भी हो... जो भी आपकी वाइफ़ कहे, समझौता कर लो! लेकिन आप...''

वह फिर रुके। लेकिन इस बार मेरी आँखों में झाँकते हुए नहीं, मुँह से सिगरेट लगाकर लाइटर के लिए इधर-उधर देखते हुए। मैं बीच का लंबा सन्नाटा तोड़ने के लिए कुछ कहना चाहता था। लेकिन कहने के लिए मेरे पास शब्द नहीं थे। शायद यह... कि कैसे करता समझौता? किस क़ीमत पर करता समझौता, समझौता करने की मेरी हर कोशिश बेकार होती रही थी... एक साल से... या शायद डेढ़-दो साल से।

मैं टूटता रहा था, तड़पता रहा था, महीनों... लेकिन आख़िर हारना ही पड़ा मुझे। उसने बड़ी ही कठिन शर्त रखी थी मेरे सामने, ''निकालो इस बुढ़िया को यहाँ से... मैं इस औरत के साथ एक दिन भी नहीं रह सकती!''

कई बार पहले भी सुनने के बावजूद मैं अपनी माँ के लिए 'यह बुढ़िया' और 'यह औरत'-जैसे शब्द सुनने का अभ्यस्त नहीं हो पाया।

मेरे सारे तर्क उसकी अंगारे उगलती आँखों के आगे धुआँ हो जाते थे। ''अरे, मैंने बहुत देखा है नाटक, तुम्हारी प्यारी अम्मा जी का... गालियाँ देती है मुझे! मुझे ही नहीं, मेरे मम्मी-डैडी को भी... घड़ी-घड़ी और बड़ी सीधी बन जाती हैं तुम्हारे सामने...। तुम्हारे घर लौटते ही...जैसे फूल बरस रहे हों मुँह से! सुना था मैंने तिरिया चरित्तर। यहाँ आकर देख भी लिया! साकार मूर्ति है तिरिया चरित्तर की, यह बुढ़िया!''

तिरिया चरित्र तो मैं देख रहा था... पर किसका? मैं लड़खड़ा जाता था।

एक दिन... दो दिन... महीना... दो महीना। वही समझाना, सुपर्णा को ही नहीं, माँ को भी। हाँ धीरे-धीरे माँ को भी। कुछ दिन सुपर्णा की शिकायतें झेलते, मुझे भी कहीं लगने लगा था कि कुछ तो किया ही होगा माँ ने, कुछ तो कहा ही होगा... कुछ अनजाने ही सही, जो सुपर्णा इतनी भरी बैठी है कि कुछ सुनना ही नहीं चाहती! महीनों, महीनों मुझे लगता रहा था जैसे मैं पत्नी के साथ नहीं, किसी झगड़ालू पड़ोसिन के साथ रह रहा हूँ। जिससे आँखें मिलाना भी गुनाह है... और बेहद ख़तरनाक भी।

मैं दो पल वितान के साथ भी हँस-बोलकर नहीं गुज़ार सकता था। वह बच्चा... छोटा-सा बच्चा, डरा-सहमा-सा, माँ की ओर देखता हुआ कभी-कभार मेरे पास आता था। मैं उसे चुटकुले सुनाकर, तो कभी गुदगुदाकर हँसाने का प्रयास करता था। क्षण-दो क्षण उसकी आँखों में चमक के साथ होठों पर निश्छल मुस्कान उभरती थी। लेकिन देखते-ही-देखते कोई ग्रहण लग जाता था उसके चहकते चेहरे पर। उसकी दृष्टि मेरी ओर से हटकर माँ की ओर भटक जाती थी, जहाँ सुपर्णा की कोतवाल-जैसी आँखें उसे कोई फ़रमान सुनाती दिखाई दे जाती थीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

या कभी हमारी खिलखिलाहट के बीच दूसरे कमरे से ही उसकी आवाज़ सुनाई देती थी, ''अरे बेटे, देखो तो तुम्हारा मिकी माउस कहाँ गया! जल्दी से पकड़ो उसे, नहीं तो कहीं भाग जाएगा।''

''अरे पापा... मेला मिक्की मोछ...'' कहते हुए वितान मुझसे हाथ छुड़ाता था।

वितान को माँ के पास जाना भी मना था। सुपर्णा ने उसे डरा रखा था कि वह बीमार हैं... तुम्हें भी छूत लग जाएगी। तुम भी बीमार हो जाओगे। बुड्ढों की तरह खों-खों करके दिन-रात खाँसते रहोगे। दादी के साथ रहोगे तो तुम भी बुड्ढे हो जाओगे।

वितान बताता था, तो मेरा ख़ून खौलने लगता था। कभी मैं चिल्ला भी पड़ता था सुपर्णा पर। मेरी बात सुनकर कभी वह मुस्कराकर कहती थी कि ''क्या ग़लत कह दिया मैंने! दिन-रात तो खाँसती रहती हैं तुम्हारी माँ! छूत नहीं लगेगी खाँसी की?'' और कभी वह बस मुस्कराकर देखती थी मेरी ओर... और किसी बेकार के काम में लग जाती थी। जैसे मुझे ठेंगा दिखा रही हो... चिढ़ा रही हो... कि चिल्ला लो, जितना जी चाहे चिल्ला लो! अपना गला फाड़ोगे... मेरा क्या!

एक बार मैंने झटके से उसका कंधा खींचकर उसे अपनी ओर घुमाया था, ''मैं कुछ कह रहा हूँ तुमसे...''

''हाथ मत लगाना!'' मेरी ओर घूमते ही उसने अंगारे उगलती आँखों से मुझे देखा था। उसके स्वर में चुनौती थी, ''हाथ लगाया तो, बताए देती हूँ...''

उसकी चुनौती में सारे क़ायदे-क़ानूनों की गूँज होती थी। मैं जानता था कि सुपर्णा अगर दहेज-प्रताड़ना या घरेलू हिंसा जैसा कोई आरोप लगा दे तो देखते-ही-देखते मुझे, माँ सहित, जेल में डाल दिया जाएगा। सुनवाई जब होगी, तब होगी। कौन जाने कितने दिन या कितने महीने बाद! सुनवाई में भी बहुत कुछ तो महिला के बयान पर ही निर्भर रहता है और अगर कुछ रहा—बचा, तो दाव पुलिस के हाथों में चला जाता है। पुलिस जो भी माँगती रहे, उसकी जेब भरते रहो... जैसे नचाए वैसे नाचते रहो!

मैंने अपनी सामर्थ्य भर सुपर्णा को समझाने का प्रयास किया था। उसे जानने-समझने का प्रयास किया था... कि आख़िर वह यह सब क्यों कर रही है! वह चाहती क्या है?

माँ से बात करने का भी कुछ परिणाम नहीं निकलता था। वह तो वैसे भी बहुत कम बोलती हैं और फिर अपने विरुद्ध बहू के आरोप सुनकर पहले तो वह हतप्रभ, फटी आँखों से देखती रह जाती थीं और... ''अच्छा, बहू ने यह कहा?'' कहते-कहते उनका मुँह अधखुला रह जाता था और आँखों से आँसू टपकने लगते थे।

''अब मैं क्या कहूँ, बेटे...'' रूँधे गले से उनके मुँह से जैसे-तैसे नपे-तुले शब्द निकलते थे, ''जब बहू ने इतना कुछ कह दिया, तो मैं क्या कहूँ... कैसे कहूँ? किस बूते पर कहूँ...?''

वकील साहब ने बताया था कि अदालत में बच्चे से भी पूछा जाएगा कि वह किसके साथ रहना चाहता है। ''आपका क्या ख़याल है? जब पूछा जाएगा तब क्या वह आपके साथ रहने की बात कहेगा?''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं जानता था, वितान चुप भले रह जाए... लेकिन यह नहीं कहेगा। और कहे भी तो कैसे ? बच्चा तो माँ के साथ ही पलता-बढ़ता है... जन्म से ही। माँ ही उसे खिलाती-पिलाती है। उसे पुचकारती-दुलारती हुई सुलाती है, जगाती है। पिता का क्या, वह तो दिन भर काम के बोझ तले थककर शाम को घर लौटता है, कभी-कभी दफ़्तर की समस्याएँ साथ लेकर भी। उसे तो कुछ घंटे ही मिल पाते हैं, बच्चों को दुलारने—प्यार करने के।

और मुझसे भी सुपर्णा ने कई बार समझाकर कहा था, ''थोड़ा डाँटते रहा करो इसे! ज़्यादा प्यार-दुलार से बच्चे बिगड़ जाते हैं! मेरी तो सुनता ही नहीं है यह। बड़ा ज़िद्दी होता जा रहा है।''

क्या इसमें भी सुपर्णा की कोई चाल थी ? ऐसा नहीं कि मैं वितान को प्यार नहीं करता था, दुलारता नहीं था। लेकिन कभी-कभार उसे आँखें भी दिखाता था। समझाता भी था कि ''बेटे यह मत करो... यह बुरी बात है।''

बच्चे माँ से इतना प्यार क्यों करते हैं ? लेकिन क्यों न करें ? सबसे अधिक समय वे माँ के साथ जो बिताते हैं। माँ जादूगरनी लगती है उन्हें। जो भी माँगो, वह ला देती है। कभी दूध, कभी मिठाई तो कभी कोई खिलौना... बच्चे नहीं जानते कि उनकी माँ को वह सब लाकर कौन देता है ? वे नहीं जानते कि उनकी माँ को यह निश्चिंतता कौन देता है कि वह आठों प्रहर उसकी सेवा में लगी रहे। वह नहीं जानता कि परिवार की रीढ़ तो उसका पिता है, जो उसे वह सब करता दिखाई नहीं देता... जो उसकी समझ से बाहर है। बच्चा जो ठहरा!

मुझको रह-रहकर बेटे की एक बात याद आती है। एक दिन उसने कहा, ''पापा, ये दुकानवाले अंकल बड़े अच्छे हैं। टॉफ़ी देते हैं। रोज़ दे देते हैं।''

सुनकर मैं मन-ही-मन मुस्कराया था। बच्चा है, बेचारा क्या जाने कि दुकानवाला अंकल उसे टॉफ़ी इसलिए देता है कि मैं उसकी टॉफ़ियों के सारे पैसे चुकाता रहता हूँ। मैंने उससे कह रखा है कि वितान जो भी माँगे, दे दिया करो! वितान भला कैसे समझे कि दुकानवाला अच्छा है तो क्यों अच्छा है ?

कल अदालत के सामने भी उसे माँ ही अच्छी लगेगी। वह शायद कभी न जान पाए कि उसकी माँ को अच्छा बनाए रखने के पीछे बहुत न भी सही, थोड़ा-बहुत तो उसके पिता का भी हाथ था। वह कभी नहीं समझ पाएगा कि उसके लिए मेरा प्यार, उसकी माँ के प्यार से कम नहीं है, तनिक भी कम नहीं!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहानी

हिंदी

हरदर्शन सहगल

हारमोनियम और ग्रामोफ़ोन

बाबू जेसूलाल, आज फिर ज़्यादा उदास, खोए-खोए-से दीख रहे थे। कल उनका जन्मदिन है; पर उनके पास बजाने को न तो हारमोनियम था और न ही ग्रामोफ़ोन।

स्वयं गाने, हारमोनियम बजाने और ग्रामोफ़ोन पर गाने सुनने से ही तो उनका स्नायु तंत्र तरंगित, प्रवाहमान होता था। इन्हीं से वे प्राण वायु अर्जित करते हैं। जन्मदिन पर तो कहना ही क्या! पूरी महफ़िल जमती थी। परिवार, दोस्तों, संगियों के बीच, जोशोख़रोश के साथ अपनी बुलंद आवाज़ में हारमोनियम बजाते हुए गाते थे। फिर ग्रामोफ़ोन पर नए-पुराने गाने सुनते। सुनाते।

जहाँ भी इनकी पोस्टिंग हुई, वहाँ के दोस्त कहते, ''यहाँ इतनी अदनी-सी नौकरी को लेकर क्यों चिपटा बैठा है। बंबई जा! तेरी आवाज़ सचमुच मुकेश, रफ़ी की आवाज़ के ठीक बीच की है। और कुछ नहीं तो लाहौर जाकर अपने कुछ रेकॉर्ड बनवा ले! देखना फिर तुम्हारे नाम की धूम मच जाएगी!''

पिछले जन्मदिन की तो कोई याद नहीं। कब आया कब निकल गया।

पर आज...और सिर्फ़ आज ही क्यों, पिछले सवा-डेढ़ साल से बाबू जेसूलाल परेशान, उदास रहने लगे थे। जैसे यह सब उनका स्थायी भाव बन गया हो! मगर नहीं, बीच-बीच में वे परिवार, बच्चों की ख़ातिर ज़बर्दस्ती, अपनी खोई हुई हँसी मुस्कुराहट को ढूँढ़ निकालते थे। हाँ, वह कहते, पाकिस्तान का आसमान निगल गया था, जो उनकी ज़िंदगी का ख़ास हिस्सा थे।

यह जो हिंदुस्तान था, जहाँ उन्होंने जन्म लिया था। जहाँ उनका घर था। ज़मीन-जायदाद थी, दोस्तों-रिश्तेदारों की भीड़ थी,

रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। संपर्क : 5/ई/9, 'संवाद', डुप्लेक्स कॉलोनी, बीकानेर 334003; फ़ोन : 0151-2529067

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वही हिंदुस्तान, पाकिस्तान में तब्दील हो गया था। और जब हिंदुस्तान, हिंदुस्तान ही नहीं रहा, नफ़रत का मैदान बन गया। मारकाट, आगज़नी, औरतों की इज़्ज़त लुटनी शुरू हो गई तो उन्हें भी किसी तरह अपनी जान पर खेलकर आज़ाद (?) हिंदुस्तान के उस हिस्से में भागकर आना पड़ा, (सब कुछ त्यागकर, निपट अकेले), जहाँ उनका कोई ठौर-ठिकाना नहीं था। यह कैसी सीलन भरी ज़मीन थी, जहाँ ऊपर से आसमान और हँसता हो! कम-से-कम उन जैसों के लिए तो यह आज़ादी विकराल माखौल ही थी, मुल्तान से निकलने से पूर्व ही, बाल-बच्चों, दीगर रिश्तेदारों की कोई ख़ैर-ख़बर पिछले छह महीनों से नहीं थी। तार, डाक व्यवस्था तक को दंगाइयों ने अपनी ज़द में ले रखा था। गाड़ियाँ बहुत कम चलती थीं। जो चलती थीं, बेरौनक़, ख़ाली-ख़ाली, खाने को दौड़ती थीं, ख़ौफ़ से भरी, भारी भारी। और बाबू जेसूलाल जैसे नामों के सफ़र करने का मतलब था—आ बैल मुझे मार। क़त्ल कर!

बेसाख़्ता उनकी ज़बान से निकलता रहता था—''ओह यह मेरा अपना भरा पूरा इलाक़ा, समाज बेगाना हो गया! अजब मज़ाक़, अजब तमाशा! हे भगवान यहाँ न सही, नए बने भारत में पहुँचकर मुझे, अपने बच्चों, क़बीले से ज़रूर मिलवा देना। हमेशा तेरा शुक्रगुज़ार रहूँगा। बेशक मुझसे सारा सामान, जायदाद छीन लेना, लेकिन मेरे प्यारे बच्चों, धर्मपत्नी जमना पर आँच न आने देना! भारत पहुँचकर मैं उन्हें हर हालत में कहीं से ढूँढ़ निकालूँगा!''

उनकी यह मुराद, सर्वशक्तिमान (जो दंगों, क़त्लों को न रोक सका था) ने क़बूल फ़रमाई थी।

भारत पहुँचकर, दो महीनों की मशक़्क़त के बाद, उन्होंने फ़क़ीरों-जैसी वेशभूषा में अपने परिवार को सुरक्षित ढूँढ़ निकाला था। फिर धीरे-धीरे कुछ और रिश्ते-नातेदार भी मिलते चले गए थे। सिवाय दो भतीज़ों—विष्णु, रामचंद्र के, जो नोशेरा में बैंक मुलाज़िम थे। इन दोनों भाइयों को वहीं क़त्ल कर दिया गया था। इस सूचना से भी बाबू जेसूलाल निढाल हो गए थे।

जमना भी अंदर से बेहद पीड़ित थी। पर बच्चों, पति की ख़ातिर वह ख़ुशी ओढ़े रहती थी। पति को समझाती, दिलासा देती रहती, ''यह क्या अकेले हमारे साथ हुआ है? जिनके साथ हमसे भी बदतर हुआ है, उनको देखकर सब्र करना पड़ता है!'' कहती—''मारो गोली सामान को! फिर बन जाएगा। जो चले गए, वे तो लौटकर नहीं आ सकते। जो ज़्यादातर बच कर आ गए, उनकी ख़ैर-ख़ुशी मनाओ! इससे ज़्यादा हमारे हाथ में क्या है! जिन लीडरों के हाथ में थीं, इस तक्सीम को रोकने की ताक़त, उन्होंने हिंदुस्तान को काटकर दो हिस्सों में बाँट खाया। इसमें हम-जैसी मामूली खलकत भला कर भी क्या सकती थी! शायद यही प्रभु-इच्छा थी!''

बाबू जेसूलाल गहरी साँस खींचते, ''बस मेरे भतीजे आ जाते और मेरा ग्रामोफ़ोन, हारमोनियम आ जाते। मेरे आधे-से ज़्यादा ग़म दूर हो जाते?''

जमना भी आह भरती, ''आदमी की फ़ितरत कैसी बनी है! जीते जी, अपनी किसी चीज़ को हाथ नहीं लगाने देता। मैं भी तो आपके ग्रामोफ़ोन, हारमोनियम के पीछे पागल हो गई थी! दे तकाज़े पर तकाज़ा! सरदार जी हमारा हारमोनियम, ग्रामोफ़ोन वापस पहुँचा जाओ।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब हम पूरी तफ़सील के साथ उस पसमंज़र का जायज़ा लेते हैं।

क़िला शेखूपुरा में, बाबू जेसूलाल रेलवे में बतौर टी.टी.ई तैनात थे। ऊपर से उनके तबादले का हुक्मनामा आया—सात दिन के अंदर मुल्तान जाकर ड्यूटी ज्वॉइन करें। ठीक बच्चों की पढ़ाई के सेशन के मध्य में।

अंग्रेज़ी हुकूमत। कोई अपील, तर्क, अनुशासन के ख़िलाफ़ समझा जाता। लिहाज़ा उन्हें अकेले मुल्तान जाना पड़ा था। बाबू जेसूलाल अभी गाड़ी लेकर लौटै ही थे कि स्टेशन पर ही उन्हें यह परवाना वसूल हुआ था। आगे के दो-चार शेड्यूल (कार्यक्रम) लाज़मी थे। ख़ैर, उस समय वह थोड़े ढीले क़दमों से घर की तरफ़ बढ़ चले। रास्ते में बारी-बारी से कुछ मिलने वालों से दुआ-सलाम हुई। सर्वत्र एक फुसफुसाहट कि दिन-ब-दिन ख़तरा नज़दीक आ रहा है। बाबू जेसूलाल बोले, ''कोई भी मुसीबत बड़ी नहीं होती, जितना उसका डर! हमें यहाँ क्या ख़तरा हो सकता है। सारे-के-सारे यहाँ के लोग हमारे अपने हैं, इस पर गुरतार सिंह बोला था, ''उन्हें यह भी पता है कि उनके मुक़ाबले, हमारी आबादी बहुत ज़्यादा है।'' ऐसी नौबत आएगी ही नहीं, बाबू जेसूलाल अपने गुलाबी होंठों से फीकी मुस्कान बिखेरते हुए, आगे बढ़े, अपना तो यहाँ से ट्रांसफ़र हो गया है।

घर में यह सुनते ही सबके चेहरे कुछ मलिन हो गए थे।

घर पर जमना उनकी प्रतीक्षा कर रही थी, ''क्या हुआ, गाड़ी की सीटी मैंने सुन ली थी। आपने आने में कुछ देरी कर दी?''

बाबू जेसूलाल ने उन्हें मुल्तान के ट्रांसफ़र ऑर्डर का बताया तो जमना बोलीं, ''यह तो ठीक नहीं हुआ! बच्चों के इम्तिहान अभी दूर हैं। हमें यहाँ आए हुए मुश्किल से सवा साल हुआ है!''

''सरकार इन बातों को नहीं मानती! अच्छा, खाना लगाओ! मैं नहाकर आता हूँ।''

जब बाबू जेसूलाल नहाकर लौटे तो जमना बोली, ''एक ख़ास बात तो मैं कहना ही भूल गई! आपके पीछे वह आपका सरदार सिंह आया था। आपका ग्रामोफ़ोन और हारमोनियम कुछ रोज़ के लिए माँग रहा था। मैंने साफ़ मना कर दिया कि बाउजी इन चीज़ों को तो किसी बच्चे तक को भी छूने नहीं देते। वह निराश भाव से जाने लगा तो मैंने उसे रोका—कल आना, अगर बाउजी ख़ुद दे दें तो मेरा क्या है!''

बाबू जेसूलाल बोले, ''यहाँ सभी लोग मेरे अपने चहेते हैं। पर सरदार सिंह की बात ही और है, बहुत ख़िदमतग़ार है। उसे तो मना किया ही नहीं जा सकता। कल फिर मुझे गाड़ी लेकर जाना है। मेरे पीछे आए तो बेशक दे देना। वैसे भी आजकल सुनने-बजाने का टाइम कहाँ है! मुल्तान भी इन्हें कैसे ले जाता फिरूँगा? अभी तो रहने का ठीक ठिकाना नहीं!''

ठीक हुआ भी यही था। दूसरे दिन सरदार सिंह, एक-एक कर दोनों चीज़ें ले गया था। कुछ लोग धीरे-धीरे चुपके-से बिना किसी को कुछ बताए हिंदुस्तान का रुख़ कर रहे थे। जमना सोचती, क्या पता सरदार सिंह भी कहीं ऐसा न करे। अपनी इस प्रकार की सोच पर वह ख़ुद को कोसती। माथा पकड़ लेती। तब फिर आप किस पर विश्वास करेंगे? सारे-के-सारे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुद्दतों से प्यार के साथ, साथ-साथ रहे। मुसलमान भी क्या दुश्मनों का दामन थाम लेंगे ? हम क्यों किसी पर ऐसे ही शक करें। वे हम पर शक करें, तो चल चुकी दुनियाँ!

ऐसे उल्टे-सीधे, उलझे हुए अव्यक्त-से विचारों से जमना जूझती रहती। गुरुनानक पुरा की पड़ोसिनों, सहेलियों पर भी निगाह रखती। सभी कहती, ''ना जी, हमें क्या ख़तरा! हम तो यहीं रहेंगे।'' दबंग स्वर निकालती। मगर अंदर से सब हिली-हिली-सी, आशंकित थीं—कल को न जाने क्या हो गुज़रे! ज़मीन डाँवाँडोल हो रही है। आदमी के ज़मीर का भी क्या भरोसा!''

भूकंप के झटके अभी नीचे ही नीचे थे। बाउजी मुल्तान के लिए रवाना हो चुके थे। पहले ख़ुद जाकर जम लें। सेशन ख़त्म होते ही बच्चों को ले आएँगे।

ठंडे उबासी भरे दिन गुज़रने लगे। आने-जाने वाले के हाथ जमना, सरदार सिंह को संदेश भेजती रहती कि हमारा हारमोनियम, ग्रामोफ़ोन दे जाए। उधर से कभी-कभी सरदार सिंह का जवाब आता, ''मुझे ख़ुद ध्यान है। मौक़ा लगते ही पहुँचा दूँगा। आप चिंता न करें!''

एक दिन तंग आकर जमना ने अपने छोटे लड़के को सरदार सिंह के यहाँ भेज दिया, जाकर कहो—चाचा जी हमारा ग्रामोफ़ोन, हारमोनियम वापस करो!'' बेटे के जाते ही जमना, बुदबुदाने लगी कि ''क्या अभी तक पेट नहीं भरा। कब तक सुनेगा!'' बहुत बाद में जमना को भारत आकर, अपने इस आचरण पर बड़ा पछतावा हुआ था।

सारे रास्ते भी, ठंडे ठंडे ग़मगीन-से थे। बेटे को सँभलकर जाने की चेतावनी देना भी नहीं भूली थी जमना।

वापस आकर बेटे ने बताया, ''चाचा बाहर चले गए थे। अब लौटे हैं। कहा, तुझसे तो उठेंगे नहीं। मैं ही ख़ुद पहुँचा दूँगा। क्यों ताँगे के पैसे ख़र्च करे!''

जमना ने मन-ही-मन में कहा, ''ठीक है। पर जब आ जाएँ तभी मानूँ। बड़ा गंदा ज़माना आ गया है।''

दूसरे दिन सरदार सिंह सिर पर ग्रामोफ़ोन रखे आ पहुँचा था, ''लो भरजाई जी! अपनी अमानत सँभालो! कल हारमोनियम दे जाऊँगा।''

ग्रामोफ़ोन चमक मार रहा था। फिर भी जमना ने उसे किसी मुलायम कपड़े से साफ़ किया। अख़बारों में लपेटकर रज़ाइयों वाले बड़े ट्रंक में सहेजकर रख दिया। ऊपर से दो बड़े-बड़े ताले लगा दिए।

नसीबा। उनकी दूसरी सुबह क़िलाशेखुपुरा में हुई ही नहीं। चिंगारियाँ, जो ज़मीन के अंदर-ही-अंदर सुलग रही थीं, ने ज्वालामुखी का रूप धारण कर लिया था। जो कपड़े वे पहने थे, उनके ऊपर कुछ और लबादे डलवाकर रात को किसी नेकबख़्त मुसलमान दोस्त ने उन्हें गाड़ी में चढ़ा दिया था।

यातनाओं, प्रताड़नाओं, अपमानों, बाल-बाल बच निकलने, हिंदुस्तान पहुँचने की कहानी बहुत लंबी और कलेजा चीर देनेवाली है। कैसे कहा जाए! कुल मिलाकर यही कि हिंदुस्तान में पहुँचकर दो महीने के अंदर बच्चों और बाउजी का मिलन हो गया था। धक्कों, बीमारियों, संघर्षों का दौर बहुत बाद में जाकर ही थमा था। बाबू जेसूलाल की बरेली में टी.टी.ई. की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नौकरी रेलवे ने बहाल कर दी थी। रहने को क्वार्टर भी मुहैया करा दिया था। वही पहलेवाली वर्दी का रोब उन्हें मिल गया था। उनके चारों ओर सहानुभूति की लहर चल निकली थी।

धीरे-धीरे घर का बहुत ज़रूरी-ज़रूरी सामान भी बनने लगा था। साथ ही उन्हें दमे की शिकायत ने आ घेरा था। वे जमना से बार-बार यही कहते कि "मुझे ग्रामोफ़ोन, हारमोनियम लेना है। इनसे मैं रोगमुक्त हो जाऊँगा।"

जमना तसल्ली देती, "वह भी आ जाएँगे। अभी ख़ूब इंतज़ार करना होगा। साग-सब्ज़ी, बच्चों की पढ़ाई, आपकी दवाइयाँ, ज़्यादा ज़रूरी है या आपका हारमोनियम, ग्रामोफ़ोन?"

यहाँ बरेली में भी बाबू जेसूलाल हरदिल अज़ीज़ थे। सब उनके लिए अपने थे; लेकिन बाबू कामेश्वर दयाल टी.टी.ई. उनके मर्म को सबसे ज़्यादा पहचानते थे। वे भी बाबू जेसूलाल की तरह अच्छे गायक थे। रामायण की सारी चौपाइयाँ उन्हें रटी पड़ी थीं। वे कभी बाबू जेसूलाल को अपने यहाँ बुलाते तो कभी ख़ुद ही अपना हारमोनियम उनके क्वार्टर में उठा लाते। दोनों सस्वर गाते-बजाते। लेकिन हाय शेखुपुरे वाला हारमोनियम?

अपनी चीज़ आख़िर अपनी होती है। उसको बजाने का मज़ा ही कुछ और होता है।

इसीलिए बाबू जेसूलाल आज ज़्यादा ही उदास थे। कल उनका जन्मदिन है, बिना हारमोनियम, ग्रामोफ़ोन के।

तभी ज़ोर से दरवाज़ा खटका। साथ ही सिर पर भारी गठरी सँभाले, अस्त-व्यस्त बालों वाले शख़्स ने प्रवेश किया। पगड़ी को थोड़ा पीछे धकेलते हुए गठरी को फ़र्श पर रखा। अंदर हाथ डालकर एक छोटा लिफ़ाफ़ा निकाला, "सतश्रीअकालजी! यह बच्चों के लिए शकरपारे।" अजीब-सी थकी-माँदी मुस्कान।

"ओए-ओए तू सरदार सिंह! कैंज किथों (कैसे कहाँ से)," बाबू जेसूलाल के गाल ख़ुशी से फड़फड़ाए। बड़ी फ़ुर्ती से लपककर सरदार सिंह को गले लगा लिया। दोनों ओर से अश्रुधारा बह निकली। जमना भी आँसुओं को रोक पाने में असमर्थ थी। बड़ी बेसब्री से मुश्किल से बोल पाई, "कहो, सारे ख़ैरियत नाल (के साथ) पहुँच गए ना!"

"बड़े दर्दनाक कहर टूटे। सुन नहीं सकोगी भरजाई, फिर कभी आराम से आकर सुनाऊँगा। कई-कई शहरों की धूल फाँककर अब शाहजहाँपुर में आकर आपका पता चला। अभी फ़ैक्ट्री के काम से पीलीभीत जाना है। गाड़ी का टाइम हो गया है।" गठरी को खोलकर हारमोनियम निकाला, "सँभालो अपनी दूसरी अमानत को! बड़ी मुश्किल से सब कुछ छोड़कर, इसे बचा लाया था।"

मुश्किल से चाय का प्याला ख़त्म करते-न-करते सरदार सिंह भाग खड़ा हुआ।

बाबू जेसूलाल सोच रहे थे! कौन-सा राग छेड़ूँ! या कामेश्वर दयालजी को बुलवा भेजूँ? और उनका अगला शाहजहाँपुर का टूर कब पड़ेगा!

उधर जमना कुछ और ही सोच रही थी। शायद ज़िंदगी की अंतहीन अनेक पहेलियों को सुलझाने में एक बुत-सी बन गई थी। फिर हाथ को ऊपर आसमान की तरफ़ ले जाकर बुदबुदाई, 'काश'!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहानी

हिंदी

अमितาभ शंकर राय चौधरी

साकेत की एक शाम

सात-आठ साल के नन्हे राघो को तो जैसे चैन ही नहीं मिल रहा था। एक बार घर के अंदर जाकर माँ का आँचल खींचता, ''अम्मा, बाबू ने तो चबेना खा लिया। अब चलते क्यों नहीं ?'' फिर दूसरे ही पल जाकर अपने बापू बिशाई की कसी हुई धोती को खींचता, ''बाबू, अब चलो न! कितनी देर हो रही है!''

''अरे बाबा चलते हैं न! नाहक परेशान क्यों हो रहा है? इतनी जल्दी मेला थोड़े ही न शुरू हो जाएगा! आज रामचंद्र युवराज की गद्दी पर बैठेंगे। कितने होम यज्ञ होंगे। कितना बड़ा मेला लगेगा। हज़ारों-लाखों की भीड़ इकट्ठी होगी। मेरे तो सारे खिलौने बिक जाएँगे।''

''बाबू, मुझे भी एक धनुष और तीर दिला देना। याद है न?''

''हाँ, बाबा, याद है! पहले बोहनी तो हो जाने दे!''

उधर से उसकी दादी कहने लगी, ''हाँ हाँ, तेरा बाप तुझे धनुष-बाण लाकर दे और तू बाण चलाकर किसी की आँख फोड़ दे। ना बाबा ना? ख़बरदार बिशाई, जो तूने राघो को धनुष-बाण दिलाया! यह सब बच्चों के झगड़े-टंटों की जड़ है! शांति से जा। रामचंद्र के युवराज बनने की धूमधाम देख! अपने खिलौने बेच और राज़ी-ख़ुशी घर वापस आ जा, बस!''

राघो अपनी माँ कारु के इर्द-गिर्द उछलने लगा, ''अम्मां, तुम भी चलो न! अयोध्या में बहुत मज़ा आएगा। बाबू कह रहे थे राजा के हाथी आज सज-धजकर निकलेंगे। लोग तरह-तरह के खेल दिखलाएँगे। नाच-गाना होगा। तमाशा होगा। जादू होगा। चलो न माँ!''

जन्म : 1955। चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट से पुरस्कृत। संपर्क : सी-26/35-40ए, रामकटोरा, वाराणसी 221001;
मो. 09455168359.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कारु के मन में भी बतासे फूट रहे थे। बस, दो-ढाई कोस की तो बात है। वह भी अगर बिशाई के साथ चली चले, तो शाम तक तीनों मज़े से वापस आ सकते हैं।

कारु की सास ने मुस्कुराते हुए कहा, ''हाँ, बेटी जा न! तू भी आज ज़रा घूम-घाम के आ। दिन भर तो इसी गृहस्थी की चक्की में पिसती रहती है। आज जा, राजधानी का ठाठ-बाट देख आ। और तू रहेगी तो खिलौने वग़ैरह बेचने में बिशाई का हाथ भी बँटा सकती है।''

दिन चढ़ने के पहले ही तीनों निकल पड़े। बिशाई के माथे की खँचिया में तरह-तरह के मिट्टी के खिलौने थे। तोता, गुड्डा, मोची, फ़ौजी, शेर—और न जाने क्या-क्या। आज ही के दिन के लिए पिछले एक महीने से वह यह सब बनाता रहा। कच्ची मिट्टी से खिलौने बनाता, उन्हें धूप में सुखाता, फिर अगले दिन रँगता। कारु के सिर की खाँची में दीया, मिट्टी के बरतन और गुल्लक आदि थे। गुड़ और चावल की बुकनी से बनी मिठाई, चिउड़ा, गुड़ वग़ैरह खाने के सामान एक छोटी-सी गठरी में बाँधकर राघो के सिर पर रख दिया गया था। नंदगाँव की पगडंडी छोड़कर तीनों अयोध्या के रास्ते पर आ गए। आपस में बाते करते हुए, हाँफते-बैठते उनके क़दम आगे बढ़ रहे थे।

तभी बग़ल से दो-तीन बैलगाड़ी जा रही थीं। सब में खचाखच सवारियाँ भरी थीं। मर्दों में किसी के सिर पर रंगीन पगड़ी थी तो किसी के कंधे पर नया अंगोछा। औरतें एक-से-एक चुनरी ओढ़कर बैठी थीं। उनकी कलाइयों में तरह-तरह के कंगन खनखना रहे थे। माँ की गोद में बैठा एक बच्चा गला फाड़कर रो रहा था। आख़िरी बैलगाड़ी जब बग़ल से गुज़रने लगी तो उसमें बैठा एक शैतान बच्चा राघो को मुँह बिचकाते हुए चिढ़ाने लगा, ''बोझा ढोता बुरबक बैल, दुम के नीचे गोबर मैल!''

''बाबू, देखो उस बदमाश को!''

''अरे जाने दे! ढेंचू ढेंचू गदहा करता, बना गवैया वह दम भरता!''

वह लड़का हँसते हुए फिर से मुँह बनाने लगा, तो राघो को ग़ुस्सा आ गया। उसने सड़क से एक ढेला उठा लिया। यह देखते ही मारे डर के वह लड़का अपनी माँ के पीछे दुबक गया।

उन्हीं की तरह और भी कई लोग पैदल चले जा रहे थे। अयोध्यानरेश दशरथ की ओर से चारों ओर ढिंढोरा पिटवा दिया गया था कि आज चारों भाइयों में बड़े राजकुमार रामचंद्र का अभिषेक होगा। इस ख़ुशी में सारी जनता राजधानी साकेत में आकर हर्षोल्लास में भाग ले, महाराज दशरथ की ओर से सभी को भोजन का निमंत्रण दिया जा रहा है, वग़ैरह। तो आज बच्चे, बूढ़े, सारी प्रजा साकेत की ओर उमड़ पड़ी थी।

गाय-भैंसों को हाँकते हुए ग्वालों के बच्चे, भेड़-बकरियों को चराते हुए चरवाहे ठहर-ठहरकर सभी को जाते हुए देख रहे थे। इतने में टीं-टीं करते हुए तोतों का एक झुंड उड़कर उसी ओर जाने लगा। राघो उछलकर पूछने लगा, ''अम्मां, राजा के घर इन चिरैयों का भी न्योता है क्या?''

''कहो बिशाई, क्या हाल है?'' इतने में फूलों की गठरी सिर पर लिए एक आदमी उनके साथ हो गया।

''सब ठीक है, पुहुप! बस आज मेरे सारे खिलौने अयोध्या में बिक जाएँ।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''मैं भी तो उसी भरोसे फूल लेकर चल रहा हूँ। सारे लोग अपने घरों को, अपनी दुकानों को माला से ख़ूब सजाएँगे। क्यों ?''

''ज़रूर भैया! बस, अब तो हम आ ही गए। वो देखो, औरतों के कंगन की तरह सरयू चमक रही है।''

देखते-देखते चारो नगर की रेल-पेल में समा गए। भीड़ में धक्के खाते हुए वे आगे राजमार्ग के पास बाज़ार की ओर बढ़ रहे थे। इधर-उधर राजा के सिपाही और संतरी सज-धजकर खड़े थे। राजमार्ग के दोनों किनारे, चौराहे पर बड़े-बड़े हाथियों पर भाले लेकर सैनिक बैठे हुए थे। हाथी ज्यों अपना सिर हिलाता, उनके गले के घंटे बजने लगते। मगर उन लोगों को एक बात खटक रही थी। सैकड़ों लोग आ-जा रहे हैं, कहीं-कहीं चबूतरे पर बैठे लोग बातें भी कर रहे हैं। मगर चुपके-से। कहीं कोई उल्लास का नामोनिशान नहीं है। मानो एक गूँगे सागर की लहरें तट तक आ रही हैं और फिर रेत से टकराकर चुपचाप वापस लौट रही हैं।

पुहुप को भारी अचरज हुआ, ''का हो भैया, इ चारों ओर इतना सन्नाटा काहे के ?''

''का मालूम!'' बिशाई राघो का हाथ थामे एक कुएँ के किनारे बैठ गया। कारु भी घूँघट काढ़कर बग़ल में बैठकर सुस्ताने लगी, ''ज़रा पानी ले आओ, तो बच्चे को कुछ खिला लें।''

''हाँ हाँ, क्यों नहीं ? हमें भी तो भूख लगी है। कितनी सुबेरे घर से चले थे। तू गठरी से सब निकाल। चल बेटा, तब तक हाथ-मुँह धो आते हैं।''

तिल के लड्डू खाते-खाते बिशाई चारों ओर नज़र दौड़ाकर देख रहा था कि किस जगह खिलौनों को सजाएँ कि राह चलनेवाले बच्चों की नज़र झट-से उन पर पड़े। इधर-उधर दो-एक आदमी अपने-अपने सौदे लेकर बैठ गए थे। एक औरत एक कपड़े पर चूड़ियाँ सजा रही थी, तो एक आदमी अपने चिउड़े के ढेर को करीने-से सजा रहा था। उधर एक हलवाई की दुकान के सामने गरमा-गरम जलेबियाँ तलकर एक पीतल की चमचमाती थाल पर रखी गई थीं। मगर उसे ख़रीदने-खाने के लिए दुकान के सामने एक भी ग्राहक खड़ा नहीं था। केवल मक्खियाँ और बर्रे ही जलेबियों पर मँडरा रहे थे।

इतने में कुएँ के पासवाली गल्ले की दुकान से कुछ कहा-सुनी की आवाज़ आने लगी। दुकान की सीढ़ियों पर बैठा एक ग़रीब किसान अपने दोनों हाथ फैलाकर सेठ से कह रहा था, ''अपने बैल की पीठ पर लादकर इतने दिन बारह बोरे चावल आपकी दुकान में पहुँचा दिए और आज आप कह रहे हैं कि उसका दाम ही नहीं दीजिएगा ?'' वह अंगोछे से अपना पसीना पोंछने लगा।

''अरे बलदेव, यह मैंने कब कहा कि उनके दाम ही नहीं मिलेंगे। मैं तो तुम्हें सिर्फ़ इतना समझा रहा हूँ कि आज मैं तुम्हें फूटी कौड़ी भी नहीं थमा सकता!''

''क्यों, बात क्या है सेठ जी ? आज तो बल्कि युवराज का अभिषेक हो रहा है। इतना मेला ठेला...''

''अब क्या बताएँ, भैया ? हम लोगों की तो क़िस्मत ही फूट गई है।'' फिर इधर-उधर देखते हुए अपनी आवाज़ को कुछ नीचा करके उसने समझाते हुए कहा, ''महाराज दशरथ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बड़े राजकुमार रामचंद्र को युवराज की गद्दी पर नहीं बिठाएँगे। उनका अभिषेक नहीं होगा। उनके बदले मझले कुमार—मझली रानी कैकेयी के बेटे भरत को राजगद्दी मिलेगी।''

''क्या! मगर क्यों? आख़िर बात क्या है? इतना सारा इंतज़ाम। इतनी भीड़! सारी जनता की उम्मीद—सब पर पानी फिर जाएगा?''

''अब मेरा मुँह ज़्यादा न खुलवाओ बलदेव! बातों के भी पर होते हैं। मैंने कहा कुछ, किसी ने सुना कुछ और महारानी कैकेयी के कानों में भरा गया और कुछ। तब तो जीते जी मेरी ख़ाल में भूसा भरवा दिया जाएगा। बस इतना समझ लो कि छटाँक भर चावल की बिक्री ही नहीं हुई तो कहाँ से तुम्हारा हिसाब कर दूँ? तुम्हीं बोलो। सारा तमाशा टाँय-टाँय फिस्स हो गया!''

बलदेव ने अपना सिर पीट लिया, ''हमने सोचा था कि आज पैसा मिलेगा तो ज़रा गृहस्थी का सामान ख़रीदकर ले जाऊँगा। मेरी घरवाली तो फटी धोती पहनकर रह जाती है। आज उसके लिए नई धोती ही ले लूँगा। मगर हे नारायण, ग़रीबों की बरही भी तेरही में बदलने में देर नहीं लगती!''

इतनी देर में बिशाई ने भी खँचिया से खिलौने निकालकर अपनी दुकान सजा ली थी। उसी के पास कारु भी मिट्टी के बरतन-भाँड़े और रंगीन गुल्लक लेकर बैठी थी। मगर ख़रीदने वाला कौन था भला?

राघो एक बार माँ के पास बैठता, एक बार कुएँ के चबूतरे पर चढ़ जाता। कारु बार-बार मना करती, ''यह क्या कर रहा है? नीचे उतर! यहाँ इधर नहीं खेल सकता?''

इतने में अपनी फूलमाला की गठरी को सिर पर लादे पुहुप लौट आया, ''अब तो कोई एक माला नहीं ख़रीदना चाहता है। सभी कह रहे हैं राम का अभिषेक ही नहीं होगा तो सजावट किस काम की?'' फिर आवाज़ नीची करके कहने लगा, ''सब बतिया रहे हैं कि आज ही दोपहर तक राम को बनवास में भेज दिया जाएगा। साथ ही, नई दुल्हिन सीता और रानी सुमित्रा का बेटा भाई लछमन भी जा रहे हैं।''

''हाय रे दईया!'' कारु ने अपने घूँघट को आगे सरकाते हुए दबी ज़ुबान में कहा, ''पूनो की रात में ही अमावस! अभी तो दो दिन पहले ब्याह भया है और आज चली बनवास को! बड़े घर के बड़े-बड़े फेर! राम की माँ कौशल्या ने कुछ नहीं कहा?''

''सुनने में आ रहा है राजमहल में रोना-धोना मच गया है। कौशल्या, सुमित्रा—दोनों रानियाँ पछाड़ खा-खाकर रो रही हैं। राजा दशरथ का हाल तो बेहाल है। कैकेयी को मना-मनाकर बेचारे हार गए। कई लोग तो यही कह रहे हैं कि कैकेयी के मायके की दासी मंथरा ने ही उनके कानों में ज़हर भर दिया है। तभी तो कैकेयी ऐसी ज़िद कर बैठीं। अयोध्या की तक़दीर में तो अनहोनी हो गई!''

''अरे क्या बड़बड़ा रहा है? आने-जाने के रास्ते में दुकान लगाकर बैठ गया! राज कर दिया है कि नहीं?'' एक सिपाही लाठी लेकर उसके सामने खड़ा हो गया।

''अरे सरकार, अभी तो बोहनी भी नहीं हुई है। इधर तो सारा मेला ठंडा पड़ गया!''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''ज़्यादा नखरा मत कर! चल कुछ निकाल! सुबह से हाथ में खुजली हो रही है। और जानता है न सिपाही के हाथ की खुजली पैसे मिलने से जाती है या लाठी भाँजने से!''

''अभी माफ कर दो, सरकार! हम शाम तक हैं न!''

''बिना दिए चंपत होगा, तो मुझसे बुरा कोई न होगा! नरक तक तेरा पीछा करूँगा!''

सिपाही चला गया। इक्के-दुक्के ग्राहक भी आ धमके। मगर बिशाई के चेहरे की सिलवटें बढ़ने लगीं। दोपहर तक अचानक हल्ला होने लगा कि सुमंत्र रथ हाँककर राम, जानकी और लक्ष्मण को सरयू के किनारे छोड़ने गया है। उनके पीछे दौड़ते-दौड़ते दशरथ राजमहल के सामने राजमार्ग पर बेहोश हो गए हैं। इतना सुनते ही सारी जनता हाय-हाय करने लगी, ''अरे राजा तो सठिया गया है!''

''अपनी औलाद को युवराज बनाने का वादा करके सुबह होते ही बनवास भेजना! छि: !''

मारे गुस्से के पगलाई भीड़ चिल्लाने लगी, ''राम को वापस बुलाओ! सारथी सुमंत्र को रोको!''

देखते-देखते दो-चार पहलवान क़िस्म के लोग राजपथ पर बने द्वार के बाँस और बल्लियाँ उखाड़ने लगे। जनता में भी जोश आ गया। जहाँ कहीं भी फूल माला या अशोक की पत्तियों से सजावट की गई थी, सब नोंचने लगे, उखाड़-उखाड़कर फेंकने लगे। दुकानदार डर गए। धड़ाधड़ दुकानें बंद होने लगीं। कई लोग मार्ग के आसपास खड़े रथों पर लाठियाँ बरसाने लगे। इधर हलचल, तो उधर भगदड़। हर कोई चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा था, ''राम हमारे युवराज हैं। अयोध्या उनकी राजधानी है!''

इसी बीच एक हल्के-से रथ में बैठकर नगर कोतवाल उधर से जा रहा था। उसने रक्षकों को डाँटते हुए कहा, ''तुम लोग तमाशा देखने के लिए यहाँ खड़े हो? भीड़ को यहाँ से भगाओ! सबको खदेड़ो!''

भीड़ को तितर-बितर करने के लिए हाथियों पर बैठे रक्षी उन्हें लोगों की ओर भगाने लगे। एक लँगड़ा भिखारी सड़क के किनारे बैठा था। वह उठ भी नहीं पाया कि एक हाथी ने सूँड़ से उठाकर उसे दूर पटक दिया। कोहराम मच गया। कोई चिल्ला रहा था, ''बचाओ!'' कोई रो रहा था, ''अरे मार डाला रे!''

पैदल सिपाही जनता पर लाठी हाँक रहे थे। भाले की नोंक पर उन्हें सड़क से दूर खदेड़ रहे थे। इस हलचल में डर के मारे दो साँड यहाँ से वहाँ दौड़ने लगे। बरगद पर बैठे कबूतर और कौए पंख फड़फड़ाकर उड़ने लगे।

बिशाई सबसे पहले कारु को पीछे घसीटकर सारा सामान समेटने लगा। जब तक वह अपने खिलौनों को भी खँचिया में भरता घंटी बजाता हुआ एक हाथी उधर आ धमका। देखते-देखते हाथी के पैरों के नीचे उसके सारे खिलौने चूर-चूर हो गए। राघो फूट-फूटकर रोने लगा, ''माँ, हमारे खिलौने सब...''

कारु उसे खींचकर दूर ले गई। बिशाई बुत बना खड़ा रहा। उसकी आँखों के सामने ही उसकी एक-डेढ़ महीने की मेहनत मिट्टी में मिल गई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिर धीरे-धीरे सारा कोलाहल शांत हो गया। सरयू के पश्चिमी तट पर लाल सूरज धीरे-धीरे अस्त हो रहा था। सब अपने-अपने घर की ओर लौट रहे थे। चुपचाप। रास्ते की हवा भी शायद फुसफुसाने से कतरा रही थी...

जैसे किसी भयंकर अंधड़ के आने से लोगों के घर उजड़ जाते हैं, उसी तरह आज इन बेचारों की सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया था। कोई रोया नहीं। किसी ने कोई शिकायत भी नहीं की।

घर लौटकर कारु चुपचाप खाना बनाने लगी। उसकी सास बार-बार उससे पूछ रही थी, ''बात क्या है ? तुम लोग इतने उदास क्यों हो ?''

जब बिशाई ने सबकुछ कह सुनाया, तो वह भी सिर पीटकर वहीं बैठ गई।

सभी चुप थे। आकाश के तारे टिमटिमा रहे थे। चाँद भी बादलों के पीछे अपना मुँह छुपा रहा था। इतने में राघो आकर बिशाई से सटकर बैठ गया, ''बाबू, ऊँचे लोगों में ऐसा ही होता है क्या ?''

बिशाई चौंका, ''क्या बात है रे ?''

''युवराज बनाने की बात कहकर कोई अपने बेटे को जंगल में भेज सकता है ?''

''अब इ सब राजकाज की बात है भैया! हम तो ठहरे मामूली लोग!''

राघो थोड़ी देर चुप रहा, फिर अपने नन्हे हाथों से बाबू का मुँह अपनी ओर फेरकर कहने लगा, ''बाबू, तुम तो कभी मुझे इस तरह अपने घर से नहीं निकालोगे ? है न ?''

''नहीं बेटा, नहीं ! तू तो मेरा लाल है ! मेरी जिनगी है !'' बिशाई ने उसे अपने कलेजे से लगा लिया और लगा उसके दोनों गालों को चूमने...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहानी

मलयाळम

ई. संतोष कुमार

दूरियाँ

''जेम्स, मैं यहाँ आई हूँ। इधर, इसी छड़ को पकड़कर खड़ी थी।'' झूले के पुल की छड़ पर ज़ोर से हाथों को दबाकर बहते पानी की धीमी आवाज़ पर ध्यान देते हुए कमला ने कहा।

''वह तो निकलते वक़्त ही तुमने कहा था।'' जेम्स हँसा।

—''ऐसा! तो भी देखो, बिलकुल यहाँ, इसी जगह पर, मैं खड़ी थी। एक बार इसे छूने पर सब कुछ मुझे याद आ रहा है। मुझे तो आश्चर्य हो रहा है!''

''अरे!''

—''हाँ जेम्स, लेकिन तब तो और ज़्यादा पानी था। उसकी आवाज़ काफ़ी दूर तक सुनाई देती थी। बारिश का मौसम ख़त्म होने के तुरंत बाद हम यहाँ आए थे। उस समय तो हम लोग बेंगलूरु में थे न। मैंने जो कहा, तुम्हें यक़ीन नहीं हो रहा है क्या?''

—''नहीं-नहीं, मेरे विश्वास की बात नहीं। कोई पाँच साल पहले तुम यहाँ आई थी न कमला? फिर कैसे तुम बता रही हो, यहीं खड़ी थी?''

''मैं कह सकती हूँ जेम्स, खुली आँखों से तुम जो कुछ भी नहीं देख पा रहे हो, ऐसा बहुत कुछ मैं देख सकती हूँ।''

''तुम हमेशा आँखों के बारे में बात करती हो!'' जेम्स ने कहा।

कमला ज़ोर-ज़ोर से हँसी, ''तो कम-से-कम मैं आँखों के बारे में बात तो कर लूँ, जेम्स?''

वह चुप हो गई और पानी की आवाज़ पर ध्यान देने लगी। पर्यटकों में से कोई उसे पार कर गया, तो झूले के पुल पर लगे लोहे का छड़ जैसे ग़मगीन हो पड़ा।

मलयाळम के युवा रचनाकार। केरल साहित्य अकादमी तथा अन्य संस्थाओं से पुरस्कृत। संपर्क : 2ए, पल्लत अपार्टमेंट्स, पल्लत लेन ईस्ट, पूंकुन्नम पोस्ट, त्रिश्शूर 680002, केरल;
मो. 09447224145.

अनु. सुमित पी.वी.। मलयाळम और हिंदी में लेखन तथा परस्पर अनुवाद। संपर्क : वथलायी, चुण्डा पोस्ट, चेरुपुषा मार्ग, केरल 670511;
मो. 09489823584.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''देखो, इसी जगह पर ऐसे ही खड़ी थी मैं।'' कमला ने याद करने की कोशिश की, ''तब सैलानियों के लिए मौसम अच्छा था। इतनी भीड़ थी कि लोग आपस में छूकर ही निकल सकते थे। तब पुल काफ़ी तेज़ी से हिल रहा था। एक बार आगे बढ़ती हुई मैं गिरने लगी थी। जेम्स, बिलकुल इसी जगह पर। अच्छा हुआ कि नंदन ने पकड़ लिया। वह उसी तरह था। नंदन हमेशा मेरे साथ रहता था और मेरी अच्छी देख-भाल करता था।''

''मेरी इस तरह की बातों से तुम्हें दुःख तो नहीं पहुँचा?'' इकहरे झरने की ओर कैमरा केंद्रित करते हुए जेम्स ने पूछा।

''अरे, इसमें दुःख पहुँचने की क्या बात हुई?''

''नहीं, लेकिन मैंने तुम्हारी आँखों के बारे में कहा था।''

''मुझे इस बात का दुःख है कि तुमने मेरी आँखों के बारे में कुछ भी नहीं कहा। देख नहीं सकती तो भी आँखों की भला क्या दिक़्क़त है जेम्स? मैं एक राज़ की बात बताऊँ? नंदन को मेरी आँखें बहुत पसंद थीं। वह हमेशा कहता था, मेरी बड़ी-बड़ी आँखें हैं। उसने एक बार मेरी आँखों में काजल भी लगा दिया था।''

''इज़ इट?''

''सच।''

''तब तो वह पक्का इश्क़बाज़ होगा?''

''जेम्स, अपने प्यारे लोगों की आँखों में काजल लगाना कौन-सी बुरी बात है?''

''हू नोज़? लेकिन मैं तुम्हारी आँखों में काजल नहीं लगा सकता, उसका तुम इंतज़ार मत करना कमला!''

''जेम्स, प्लीज़ डोंट कंपेयर! हर एक इनसान अलग होता है न!''

झरने के पास थे तो भी गर्मी लग रही थी। शाम चार बजे की मुरझाई धूप से मिट्टी पर पत्तों का प्रतिबिंब उभर आया।

उन्होंने रास्ते से ककड़ी ख़रीदकर खाई। ककड़ियाँ काफ़ी ठंडी थीं। ककड़ी को एक बार काटकर कमला ने उसके चार टुकड़े करवाकर उसमें मसाला लगवा लिया। जेम्स को प्यास लग रही थी। उसका चाय पीने का मन भी कर रहा था।

''तुमने झरने की फ़ोटो खींची?'' कमला ने पूछा।

''हाँ!'' जेम्स ने एक सुस्त जवाब दिया। कैमरा एक पालतू जानवर की तरह उसके कंधे पर आराम कर रहा था।

''सफ़र के बीच नंदन इस तरह की चीज़ें खाता था।'' ककड़ी को ख़त्म कर कमला ने बात जारी रखी, ''कभी लगता था कि बड़ा कंजूस है। मगर असल में उसे डर था कि बाहर से कुछ खाने पर पेट ख़राब हो जाएगा। वह हमेशा यह कहता भी था। तो क्या? दो दिन घर से दूर रहने पर पतला हो जाता था।''

तब जेम्स ने कुछ पूछना चाहा तो भी नहीं पूछ सका। कमला के चेहरे पर हल्की मुस्कुराहट आई, ''तुमने यही सोचा होगा जेम्स कि वह मैंने कैसे देखा?''

जेम्स ने अपनी शर्मिंदगी छुपानी चाही।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''मैं देख सकती हूँ। मैं दूसरों के दिमाग़ को पढ़ सकती हूँ। गले लगाते समय हम लोग दूसरों को नापते हैं, है न जेम्स?''

''मुझे चाय पीनी है!'' जेम्स ने कहा।

तब जेम्स के मोबाइल में एक कॉल आई। उसने नहीं उठाई।

झरने के सामने वाली राह से बाहर निकलने के दरवाज़े तक दूरी ज़्यादा और चौड़ाई कम थी। बीच में कभी थक जाने पर कमला रास्ते के बग़ल में लकड़ी के बेंच पर बैठ जाती।

''कई दिन हुए इतनी दूर चले हुए।'' उसने कहा। ''पैर में दर्द हो रहा है।'' कमला साड़ी के छोर को थोड़ा ऊपर कर पैर दबाने लगी। जेम्स उसके पास बैठ गया। कमला के शरीर से पसीने की गंध आ रही थी। कुछ लड़कियाँ ऊँची आवाज़ में बातें करती हुईं उनको पार कर झरने की ओर गईं। उनकी आवाज़ के निकल जाने तक कमला ने सिर झुकाकर अपने पैरों को दबाना जारी रखा।

''तुमने उन पर ध्यान दिया?'' कमला ने पूछा।

''किन पर?''

''अभी जो लड़कियाँ गई थीं...?''

''नहीं, क्या हुआ?''

''झूठ, लड़कियों पर तुम ध्यान नहीं देते हो?''

''अरे, ऐसा कुछ नहीं!''

''सुंदर लड़कियाँ थीं?''

''होंगी!''

''इस तरह क्यों बोल रहे हो? सुंदर लड़कियों को देखना चाहिए न जेम्स?''

''तुम्हारे साथ आकर मैं दूसरी स्त्रियों को कैसे देखता रहूँ?'' जेम्स हँसने लगा।

''स्त्रियाँ नहीं, लड़की, वे लड़कियाँ हैं। आवाज़ से पता चलता है।''

''सही है कमला, ऐसा ही है।''

''नंदन के साथ आने पर यही सब फ़ायदा था। सब कुछ वह मुझे बता देता था।''

''तब तो तुम्हें ग़ुस्सा आता होगा?'' जेम्स ने पूछा।

''किसलिए? मैं कोई छोटी लड़की थोड़े ही हूँ?'' कमला हँसने लगी।

''जेम्स, जब हम बेंगलूरु में थे तो हर दिन किसी मॉल के सामने खड़े होते थे। युवा बच्चों को देखते थे। उनमें लड़के और लड़कियाँ होती थीं। उनके बारे में बात करते थे। समय काटने का वह एक अच्छा तरीक़ा था। तुम नहीं हँसोगे तो मैं कुछ बता सकती हूँ।''

''अरे मैं कैसे हँस सकता हूँ! तुम बहुत बड़ी माहिर हो न?''

''थैंक्यू जेम्स!''

''क्या कहनेवाली थी? हाँ, एक मज़ाक़। मैं क्या बोलनेवाली थी? हाँ, मॉल के सामने खड़े होने पर युवा लड़के आते थे। नंदन कहता था उनकी कमर के ऊपर, जींस के नीचे से अंतर्वस्त्र दिखाई देता था। नवयुवकों का यही स्टाइल है।''

''फिर?''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''फिर क्या ? तो उस बारे में कहने के लिए मैंने नंदन से कहा। उस शाम इस तरह हमने अंतर्वस्त्रों की गिनती कर मज़ा लिया।''

कमला हँसने लगी। हँसते-हँसते उसे खाँसी आ गई।

''कमला तुम थोड़ी-सी पागल हो!'' जेम्स ने कहा। ''सिर्फ़ तुम ही नहीं, तुम्हारा वह भी। फिर भी मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है कि वह तुम्हें छोड़कर कैसे चला गया? एक्चुअली, यू वेर मेड फ़ॉर ईच अदर!''

कमला ने कोई जवाब नहीं दिया। धीरे-से साड़ी का छोर पकड़कर सीधा कर बाँहों को आपस में बाँधकर बैठी रही। आँखें बंद कीं। उन पलकों की फीकी नग्नता की ओर जेम्स ने ज़्यादा देर तक देखा नहीं। उसने बैग से कैमरा निकालकर बिन पत्तों वाले किसी पेड़ की फ़ोटो खींचने की कोशिश की। उन बिन पत्तों वाले पेड़ के शिखरों पर तीन चिड़ियाँ बैठी थीं।

जेम्स का मोबाइल फिर से आवाज़ करने लगा। इस बार एक-दो बार बजने के बाद उसने फ़ोन बंद कर दिया।

''चलते हैं।'' कमला ने कहा। ''वह ड्राइवर इंतज़ार कर थक गया होगा!''

''वही तो उसकी नौकरी है। उसके लिए हम पैसे दे रहे हैं न?''

''तुमने फ़ोन क्यों नहीं उठाया?'' कमला ने पूछा।

''बाद में बात करूँगा।''

''एलिज़ाबेथ थी क्या?''

''हाँ, क्या हुआ?''

''मुझे लग रहा था, वह अभी भी तुम्हें फ़ोन करती है।''

''उसकी ज़रूरत है न, करेगी ही।''

''इतनी बड़ी क्या ज़रूरत है?'' कमला ने पूछा।

''वह, वह कुछ नहीं।''

''फिर भी, मेरे जानने से कोई दिक़्क़त?''

कमला मुस्कुराई। ''मैं ज़रा अंदाज़ लगाऊँ क्या? ए वाइल्ड गेस्स? तुम्हारे पास उससे जुड़ा कुछ है। कोई ख़त या ख़बर, ऐसा कुछ, राइट?''

''तुम्हारा अनुमान है। सही या ग़लत, मैं क्यों बताऊँ?''

''तब तो वही है उसका जवाब।'' कमला कुछ देर तक हँसती रही। फिर चुप हो गई।

''मत करो जेम्स वह सब। उसे छोड़ दो!'' कमला ने कहा।

जेम्स ने जवाब नहीं दिया।

''कोई बात नहीं!'' कमला ने उसकी ओर चेहरा करके कहा, ''अब ग़ुस्से में कुछ करने पर सालों बाद अफ़सोस होगा। प्यार जैसी ही है नफ़रत भी। कुछ समय बाद उबाऊ लगने लगती है।''

जेम्स ने कुछ भी नहीं कहा।

उधर पेड़ की फुनगी से चिड़ियाँ उड़ गई थीं।

अचानक याद करते हुए जेम्स ने पूछा, ''तुम्हारे पुराने वाले का क्या नाम था? हाँ, नंदन! तुम नंदन से बात करती हो?''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"हाँ, सपने में।" ऐसा कहते हुए कमला ने उसका हाथ पकड़ा। उसे लगा कि कमला की हथेलियों में असामान्य-सी ठंड है।

"जेम्स यह अच्छी जगह है क्या?"

"हाँ, क्यों पूछ रही हो?"

"पता नहीं, पिछली बार की तरह अच्छा नहीं लग रहा है।"

"कमला, उठकर इस बेंच के छोर पर खड़ी हो जाओ, हाँ उसी तरह हाथ नीचा कर...यस, नाउ आई कैन टेक ए स्नैप, राइट?"

"हाँ। एक और।"

"दिन की रोशनी में तुमने फ़्लैश क्यों चालू रखा है?"

"वह तुम्हें कैसे पता?"

"पता है। उतना ही। नंदन फ़्लैश का कभी इस्तेमाल नहीं करता था। ही प्रिफ़र्ड नैचुरल डे लाइट।"

वे गेट पार कर पार्किंग की जगह पर पहुँचे तो गाड़ी को घुमाकर ड्राइवर उनके पास आ गया। सुबह होटल से टैक्सी का इंतज़ाम किया था। मध्य वय का ड्राइवर। कहा कि पत्नी मलयाली है। मलयाली होने के कारण या सहानुभूति के चलते उसने उस दौरान हमारा काफ़ी ख़याल रखा।

बुद्ध मंदिर तक पहुँचने में एक घंटे से अधिक समय लगा। शाम हो चुकी थी। पिछली बार नंदन के साथ आने की यादों को कमला ने ताज़ा करने की कोशिश की।

"तब मंदिर के सामने लामा लोगों द्वारा संचालित होटल में कमरा लिया था। एक दिन वहाँ ठहरा भी था। शाम के वक़्त मंदिर के सामने से शुरू हो रही राह पर अंदर के गाँवों की ओर हम दोनों टहलने निकले थे। वह रास्ता बिलकुल सुनसान और एकांत था। अँधेरा छा जाने पर भी नंदन ने टहलना जारी रखा था। वह केवल शरणार्थियों का गाँव था। उनके विद्यालय, मठ, घर और छोटी दुकानें इत्यादि थीं। उसके अलावा बाजरे के खेत थे। इन सबके बारे में नंदन बताता रहता था। लौटकर आते समय रास्ते में होटल से हम लोगों ने चाय भी पी थी। वह रेस्तराँ भी शरणार्थियों का था। उसका मालिक युवक था। उसका जन्म यहीं पर हुआ था। अपनी मातृभूमि के बारे में उसे केवल सुनी-सुनाई जानकारी ही थी। नंदन इस तरह की सारी बातें पूछ लेता था।"

"हम भी यहाँ लामाओं के होटल में कमरा ले सकते थे।" कमला ने कहा।

"इस होटल में कभी पानी और बिजली नहीं रहती है मैडम!" ड्राइवर ने टूटी-फूटी मलयाली में कहा।

"कमला को बिजली से क्या मतलब है?" जेम्स ने कहा। फिर तुरंत ख़ामोश हो गया।

"सही है।" कमला भी हँसने लगी। "हमेशा बिजली की क्या ज़रूरत है हमें? पुराने लोग भी तो उसके बिना ज़िंदगी जिया करते थे?"

तभी एक भिखारी आकर उनसे भीख माँगने लगा। वह ख़ुद को अंधा कहकर रोया। जेम्स ने पर्स से सिक्के निकालकर उसको दिए।

"जेम्स, तुमने भीख दी?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''बेचारा, अंधा है न?'' उसने कहा।

''वह अंधा है इसीलिए बेचारा हुआ?''

''है न?''

''नहीं। तुम्हारे हिसाब से मैं बेचारी हूँ क्या?''

''नेवर।''

''तब तो अंधा होने भर से भीख देने की ज़रूरत है?''

जेम्स ने कुछ भी नहीं कहा। दूर बुद्ध मंदिर का सुनहरा दरवाज़ा और उज्ज्वल प्रभापूरित सूरज को उसने देखा। जेम्स को उस दृश्य की एक फ़ोटो खींचने की इच्छा हुई।

''किसी को दिखाई नहीं देता है तो उतना ही है।'' कमला ने बात आगे बढ़ाई। ''हर एक इनसान की कितनी कमियाँ होंगी? उन सबको भीख देना ही काफ़ी है? अंधा है तो भी उसे और कोई दिक़्क़त नहीं है।''

''अरे, कमला छोड़ो तुम्हारा यह तत्त्वज्ञान! तुम्हारा ही है या तुम्हारे उसका?''

''नंदन किसी को भीख नहीं देता था। इट वॉज़ हिज़ पॉलिसी!''

''तुम भी मत दो! हो गई न बात?''

मंदिर के अंदर हॉल में काफ़ी देर तक कमला प्रार्थना में मग्न होकर ख़ामोश बैठी रही। उसे लगा कि नीरवता किसी निगूढ़ मंत्र की तरह उसके चारों ओर गूँज रही है।

एक होम-स्टे में ठहरने का इंतज़ाम किया था। दो दिन पहले जेम्स ने इंटरनेट पर ढूँढ़कर निकाला था। दो मंज़िल का घर। ऊपरी मंज़िल पर मेहमान, नीचे सेवामुक्त दंपति। उनके बच्चे विदेश में नौकरी कर रहे हैं। एक सहारा भी हो जाएगा। सैलानियों की भीड़ नहीं थी इसीलिए किराया भी बहुत कम था। उनके साथ ही खाने की भी तैयारी की गई थी।

''उन लोगों ने हमें दंपती समझ रखा है।'' दूसरी मंज़िल पर जाने की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए जेम्स ने कहा।

''तुम सच बता सकते थे न?''

''बाहर कर देंगे तो हम इतनी रात में कहाँ जाएँगे? फिर, पत्नी की अच्छी देखभाल करने के लिए उन्होंने मुझसे कहा।''

''बालकनी के छड़ की लंबाई कम है। तुम्हें अकेला नहीं छोड़ने की चेतावनी भी दी।''

''मैं कमरा छोड़कर बाहर नहीं जाऊँगी, तुम डरो मत!''

''अब तो मैं उन लोगों की निगाहों में एक हीरो हूँ।'' जेम्स ने कहा।

''हाँ-हाँ, एक बेचारी अंधी को तुमने ज़िंदगी दी इसलिए?'' कमला हँसने लगी।

सोने से पहले जेम्स का फ़ोन फिर से बजा। उसने नंबर देखे बिना कॉल काटे फ़ोन को साइलेंट मोड पर कर दिया।

कमला बुद्ध मंदिर के बारे में ही सोच रही थी। पिछली बार आने पर दिन भर वहीं थे। मंदिर के आसपास घूमते रहे। हॉल में लगी तिब्बती मालाएँ, दीवार पर लिखे गए मंत्र, सब कुछ नंदन ने बता दिया था। बीच-बीच में लामाओं द्वारा घंटी बजाकर प्रार्थना करने की आवाज़। किसी एक तख़्ती पर लिखी भिक्षु-परंपरा में विवरण को नंदन ने ज़ोर से पढ़ा। उसके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाद प्रार्थना हॉल में देर तक बैठा रहा। कमला के पास यादों की बारात आ गई। उसने धीरे-से अपनी आँखें बंद कर लीं।

''अरे, तुम सो गई?'' ललाट पर उसके हाथों के स्पर्श से कमला ने आँखें खोलीं। छोटे खुरदरे हाथ और उस पर भीगे रोम।

''जेम्स, तुमने दारू पी रखी है?''

''हाँ, थोड़ी-सी। हिम्मत के लिए।''

''मुझे यह पसंद नहीं है!'' कमला ने कहा। ''दारू पीने के बाद कुछ भी सही नहीं होगा।''

''ऐसे ही, एलिज़ाबेथ उस तरह की नहीं है। कभी हम साथ बैठकर पीते थे।''

''पता नहीं, पीने से मुझे कोई एतराज़ नहीं, लेकिन पीने के बाद साथ सोनेवाला दारू लगने लगता है। ऐसा जान पड़ता है कि बेडरूम में कोई दूसरा आदमी आकर खड़ा है।''

''अरे छोड़ो न!'' जेम्स ने कमला को अपनी ओर खींचा।

''इतनी ज़ोर से मत पकड़ो जेम्स! मुझे दर्द होता है!''

वह आवेग में था। जब उसने कमला की गर्दन दबाई तो कमला साँस लेने के लिए खाँसने लगी। उसकी खाँसी जेम्स को पसंद नहीं आई। लगा कि वह उसके शरीर के जलप्रपातों, बावड़ियों और उतार-चढ़ावों में सफ़र कर रहा है। उसके गाल चूमने लगा तो कमला ने चेहरा घुमा लिया।

''तुम सहयोग नहीं कर रही हो कमला!'' उसने कहा। ''इतनी दूर हम किसलिए आए हैं?''

दिलासा देने के लिए कमला ने उसे गले लगाया। शाम को झरने के पास के रास्ते में जब उसने हाथ से छुआ था तो जो ठंडक थी, उसी ठंडक का एहसास जेम्स को हुआ।

''एलिज़ाबेथ ने दुबारा फ़ोन किया?'' कमला ने पूछा।

''शी इज़ मैड!'' जेम्स ने कहा।

''छोड़ो जेम्स, इस तरह ज़िद न करो! कई दिनों तक तुम्हारे साथ थी न?''

''शिट!'' जेम्स ने कमला से अपनी बाँहों के घेरे हटा लिए।

''वह तुम्हें पसंद करती थी, मैं जानती हूँ। उतना काफ़ी है न? हमेशा एक ही आदमी को पसंद करते रहना है, ऐसा तो नहीं है न?''

''अरे, मैंने कभी उससे प्यार करने की कोशिश नहीं की है। शी वॉज़ सच ए बिच!''

जेम्स एक सिगरेट जलाकर फूँकने लगा। आधी सिगरेट पीने के बाद उसे बुझाकर एक प्रयास के रूप में कमला के हाथों को सहलाया। तब उसे लगा कि कंधे के नीचे, दायें हाथ की कोहनी के ऊपर कुछ अटक रहा है।

''यहाँ क्या है?''

''वह...वह तो स्टील की एक छड़ी है।'' कमला ने कहा।

''क्या हुआ था?''

''एक एक्सिडेंट! उससे कोई दिक़्क़त नहीं।'' कमला ने अपने हाथ से उसे छूकर देखा, ''इसीलिए तुमसे कहा था धीरे-से पकड़ना। कुछ साल हुए, पर अभी भी दर्द करता है।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''कब हुआ था?''

''कुछ समय हो गया।'' कमला ने अनमने ढंग से कहा।

''अभी इसे निकाल नहीं सकती?''

''हाँ शायद, लेकिन नहीं निकालूँगी, वह भी एक याद है न जेम्स? वहीं रहने देते हैं।''

जेम्स उसकी रात की पोशाक के बटनों को खोलने लगा। वे दोनों रोशनी में ही नंगे हो गए। कमला ने जेम्स के ललाट को चूमा। उसके बाद पलंग पर उठकर बैठ गई।

''मेरी छाती की ओर देखो!'' स्तागत करती हुई कमला ने कहा। ''हल्के लाल रंग का एक छछूँदर है न?''

''कहाँ?''

''देखो, इधर...बायें स्तन के नीचे। हृदय के पास।''

''अब तो मुझे यक़ीन ही नहीं हो रहा है कमला कि तुम देख नहीं सकती हो!'' जेम्स ने उस छछूँदर को होठों से दबाते हुए कहा।

''मुझे नहीं पता था।'' कमला हँसने लगी।

''तो नंदन ने बता दिया होगा?'' जेम्स ने मज़ाक़ के रूप में पूछा।

''कम-से-कम तुमने यह तो सही अंदाज़ लगाया।'' कमला ने कहा।

''पता नहीं!'' उस समय जेम्स को लगा कि नंदन उसके पास आकर खड़ा है। उसे ठंड लगी।

''इतना ही नहीं, मेरी देह के मौसम का भी उसे पता था। बारिश, सर्दी और गर्मी—सब कुछ, बहुत अच्छे से। तुम इन स्तनों पर ध्यान दो जेम्स! इनके चुचुक अब काले पड़ चुके होंगे?''

''फिर?''

''मेरा बिलकुल मन नहीं कर रहा है जेम्स! मैंने कहा ना, बात वही है। अगर मेरा मन होता तो इनका रंग लाल हो जाता है।'' कमला हँसने लगी।

जेम्स को फिर से नंदन की नज़दीकी पर शक हुआ। ओझल होने पर भी उसके सामने हारने जैसा। उसने प्रतिकार-भाव के साथ कमला को पास खींचा। कमला ख़ामोश होकर उसकी ताक़त के नीचे लेटी रही। उसे लगा कि सिर के चारों ओर एक मधुमक्खी मँडरा रही है। उसे पता चला कि जेम्स अपनी वासना को पूरा कर, थककर पलंग के छोर पर लेटा हुआ है। गूँजनेवाली नीरवता ने उसे घेर लिया। धीरे-धीरे वह भी नींद की ओर फिसल गई।

नींद से जगने पर कमला जान गई कि वह नग्न पड़ी है। उसने हाथों से ढूँढ़कर कपड़े पहन लिए। बाहर बालकनी से जेम्स की आवाज़ गूँज रही थी। वह फ़ोन पर किसी से झगड़ रहा था। उसके बाद जल्दी से बाहर निकल जाने की आवाज़ भी सुनाई दी।

दोपहर तक वह कमरे से बाहर नहीं निकली। नीचे से एक लड़की आकर नाश्ता मेज़ पर रख गई। कमला ने नाश्ता नहीं लिया। दोपहर होने पर जेम्स आया।

''तुमने खाना नहीं खाया?'' उसने पूछा।

''भूख नहीं लगी।''

''नहा लो, खाना खाकर हम निकलेंगे।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''कहाँ ?''

''कावेरी की चोटी पर।'' उसने कहा। ''वह टैक्सीवाला आएगा।''

''नहीं, मुझे अच्छा नहीं लग रहा है।'' कमला ने कहा।

''ठीक है तो नहीं जाएँगे, लेकिन तुम आकर खाना तो खाओ।''

''भूख नहीं है!'' उसने दुहराया।

''बुख़ार है ?''

''नहीं।''

''फिर ?''

''फिर। फिर। फिर कुछ नहीं है। जस्ट लीव मी एलोन!''

''उसने तुम्हारे साथ यूँ ही तलाक़ नहीं लिया था!'' जेम्स ने ग़ुस्से में आकर कहा।

कमला को एक तरह की कसमसाहट हुई।

''कौन ?'' कमला किसी तरह उठ खड़ी हुई। ''किसने मुझसे तलाक़ लिया था जेम्स ? हू टोल्ड यू दैट रबिश ?''

''अरे, वह सब कहने की ज़रूरत है क्या ? तुम तो हमेशा मंत्र की तरह उस नाम का जप करती हो!'' कमला रोने लगी। थोड़ी देर तक उन दोनों ने आपस में बातें नहीं कीं।

''जेम्स, हम खाने चलते हैं।'' कमला ने अपना चेहरा पोंछते हुए हल्की आवाज़ में कहा। उन्होंने ख़ामोशी से खाना खाया। दोपहर के बाद टैक्सी से मंगलूर की तरफ़ रवाना हुए। सूखे पड़े गाँवों को पार कर टैक्सी आगे बढ़ती गई।

''जेम्स!'' कमला ने पुकारा। ''आई एम सॉरी! मैंने तुम्हारे साथ अच्छा नहीं किया ?''

''न।'' जेम्स ने आलस के साथ कहा।

''हाँ, मुझे पता है, मगर, मगर...बहुत कुछ मैं भूल नहीं पा रही हूँ जेम्स! उस स्टील की छड़ी की तरह वह सब हमेशा मेरे अंदर है। हम दोनों का एक ग़ज़ब का रिश्ता था जेम्स! तुमने कहा था ना, मेड फ़ॉर इच अदर। दैट वॉज़ इट। रिश्ता टूटने पर भी उस बारे में सोचकर दुखी न होने के लिए हमने पहले से क़रार कर रखा था। इसीलिए, मैं तुम्हारे साथ आई और सफ़र करती रही। फिर भी, मुझे लगता है मैं उस तरह व्यवहार नहीं कर पाऊँगी।''

''लीव इट!'' जेम्स ने कहा।

''नो। वह नहीं। तुमने पूछा था न! वह क्यों मुझे छोड़कर गया था। इट वॉज़ ए सीक्रेट। मैंने अब तक किसी को बताया नहीं। मंगलूर के हमारे दोस्त को भी...आई नेवर वांटेड एनिबडीज़ सिंपथी! लोग मेरी अंधता के कारण मेहरबानी दिखाते हैं। आई एम फ़ेड अप विद दैट! उसके अलावा अब एक विधवा का स्टेटस भी आ जाए तो...नो...आई कांट स्टैंड इट!''

''कमला तुमने क्या कहा ? विधवा!''

''सच। नंदन ही इज़ नो मोर! वही है। मैं अब वह भी हूँ।''

जेम्स ने अचानक उसका हाथ पकड़ा। तब भी उसको बहुत ज़्यादा ठंड लगी।

छोटे-छोटे उतार-चढ़ाव को पार कर गाड़ी समान गति से आगे बढ़ती रही।

''एक छोटे झरने से कावेरी नदी का उद्भव होता है।'' कमला ने धीमी आवाज़ में कहा। ''उसके बाद वह कितने गाँव, शहर और खेतों की सिंचाई करती चल रही है। वह तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक तरह की हैरानी ही है जेम्स। लेकिन मेरी यह ज़िद! हम कावेरी की चोटी पर जा सकते थे।''

''कोई बात नहीं!'' जेम्स ने कहा। ''बाद में कभी जाएँगे।''

''इससे पहले जब गए थे तो नीचे मंडप की ऊँची ज़मीन पर हम बहुत देर तक बैठे थे।'' कमला ने याद किया। ''अच्छी हवा थी। एक छोटी लड़की हमारे साथ आई थी। नंदन ने उसकी कई फ़ोटो खींची थीं। मेरे कमरे में फ्रेम करके रखी हैं। अभी भी हैं। तुमने देखी क्या?''

जेम्स ने कोई जवाब नहीं दिया।

''जेम्स, हमारी इस यात्रा की कई फ़ोटो तुमने खींची हैं न?'' कमला ने पूछा। ''वह मेमोरी कार्ड कहाँ है?''

''कैमरे में ही है।'' जेम्स ने कहा। ''मंगलूर पहुँचकर हम प्रिंट लेंगे।''

''मैं प्रिंट का क्या करूँगी? तुम वह कार्ड दिखाओ! मैं ज़रा छू लूँ।''

जेम्स ने कैमरे से डाटा कार्ड बाहर निकालकर कमला के हाथ में दिया।

कमला उसको आश्चर्यचकित करती हुई उस मेमोरी कार्ड को मुँह में डालकर चबाने लगी। उसके बाद कार का दरवाज़ा खोलकर बाहर की ओर थूक दिया।

''तुम पागल हो क्या कमला? जितनी फ़ोटो हमने खींची थीं, सब गई न!'' जेम्स ने आवाज़ बढ़ाकर कहा।

''जाने दो।'' कमला ने आलस भाव से जवाब दिया।

जेम्स ने बाहर की ओर देखा। उसे लगा कि गाड़ी कोई छोटे शहर के नज़दीक पहुँच रही है। गाड़ियों की संख्या बढ़ती गई।

''हरामज़ादे, सोते समय तुमने मेरी फ़ोटो खींची थी न?'' कमला ने कहा, ''यू कोट मी नैकेड। मुझे लग रहा था।''

जेम्स ने उसे ध्यान से देखा। उसकी आँखों की सफ़ेद पुतलियाँ, उससे निकलती रोशनी, जेम्स को उससे चोट लगने का डर हुआ।

कमला ज़ोर-ज़ोर से हँस पड़ी, ''यू कांट ब्लैकमेल ए ब्लाइंड! नेवर! अंधी की नंगई सचमुच उसके दिमाग़ में है। फिर भी वे फ़ोटो तुम्हारे हाथ में नहीं रहनी चाहिए। मैंने यह तय किया जेम्स। तुम उसे रखने लायक़ नहीं हो! यू आर, जस्ट ए बिग...बिग बास्टर्ड!''

जेम्स ने अपने हाथों से चेहरा पोंछ लिया और बाहर की ओर नज़रें दौड़ाईं।

अब गाड़ी शहर की उस एकतरफ़ा ट्रैफ़िक से आगे बढ़ रही थी। आगे कारों की लंबी क़तार। हॉर्न के साथ-साथ गाड़ियों की आवाज़। बीच-बीच में गाड़ी रुकी। फिर थोड़ी दूर चली। उसी तरह रेंगकर चलती हुई वह एक ट्रैफ़िक सिग्नल के सामने आकर खड़ी रही।

''जेम्स, उस सिग्नल की ओर देखो!'' कमला ने कहा।

जेम्स ने देखा।

''वह आँकड़े दिख रहे हैं न? पढ़ो। इस सिग्नल पर हम कितनी देर तक रहेंगे?''

''अभी चौरासी सेकेंड बाक़ी हैं।'' लाल आँकड़ों को पढ़ते हुए जेम्स ने धीरे-से कहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहानी

मलयाळम

सी. राधाकृष्णन

मृतसंजीवनी

"कितनी बार समझाया, तो भी समझती नहीं! क्या करूँ?" सात-आठ साल की लड़की को हटाकर फाटक बंद करते हुए चौकीदार ने ऊँची आवाज़ में कहा। लगता है यह लड़की बंजारों की किसी टोली की है।

पिछले कुछ दिनों से तीसरी मंज़िल की बालकनी पर कंबल ओढ़कर बैठा हुआ मैं नीचे घट रही बातों का निर्विकार गवाह हूँ। बुख़ार की सिहरन के अलावा बारिश की ठंडक भी मुझे परेशान कर रही है। ठीक से साँस लेने की कोशिश करता हूँ तो ज़ोर की खाँसी आती है। डॉक्टरों द्वारा निर्धारित एंटीबायोटिक्स खाने से होनेवाली थकावट अलग से।

ग्यारह मंज़िलों वाली इस इमारत में छत्तीस फ़्लैटों में उतनी ही संख्या में परिवार बसते हैं, वहाँ चोर-भिखारियों का उत्पात रोज़ाना की बात है। कोई फाटक खुला छोड़ दे तो रास्ते से चलती-फिरती बलाएँ अंदर घुस जातीं। चौकीदार सभी बलाओं को डरा-धमकाकर दूर भगा देता और ऐसे अवसरों पर दुनिया भर को कोसता। फाटक से सटकर जो चौकी है, उसी में वह रहता है। उसे बहुत सारे काम करने हैं। आने-जानेवाली गाड़ियों का नियंत्रण करना है, यह भी देखना है कि इमारत में कहीं जल और बिजली की व्यवस्था में कोई गड़बड़ी तो नहीं। परिसर को गंदगी से मुक्त रखना है। फ़्लैटों में रहनेवालों के बच्चे जब आँगन में भारी शरारतें करते हैं, तब उनको, नियंत्रित करना है। बग़ीचे के पौधों को सींचना, खाद देना, सुंदर ढंग से काट-छाँट करके उनका संरक्षण करना—सब उसका काम है। कोई किसी फ़्लैट में जाकर दरवाज़ा बंद किए बग़ैर लिफ़्ट

मलयाळम के वरिष्ठ एवं चर्चित रचनाकार। जन्म : 1939। उपन्यास, नाटक, कहानी, कविता की लगभग पचास पुस्तकें प्रकाशित। साहित्य अकादेमी, केरल साहित्य अकादमी तथा ज्ञानपीठ के मूर्तिदेवी पुरस्कार से सम्मानित। संपर्क : 66 आश्रम लेन, आज़ाद रोड, कोच्चि - 682017 (केरल)

अनु. **एस. तंकमणि अम्मा**। जन्म : 1950। हिंदी और मलयाळम में मौलिक लेखन और परस्पर अनुवाद। भारतीय अनुवाद परिषद् से पुरस्कृत। संपर्क : मणि मंदिरम्, आनयरा, तिरुअनंतपुरम् 695029; मो. 09349193272.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को छोड़कर चला गया तो उतनी मंज़िलें चढ़कर उधर पहुँचकर लिफ़्ट को नीचे उतारना है। फ़्लैटों के लाडले पालतू जानवरों को बाहर निकालकर उनकी प्राथमिक क्रियाएँ निभवानी हैं। फ़्लैट में रहनेवाले कभी-कभी अपनी ज़रूरतों के लिए उसे बाहर भी भेज देते हैं।

बारिश की बूँदा-बाँदी झेलती हुई उस लड़की को उधर खड़े क़रीब एकाध घंटे गुज़र चुके होंगे! लड़की ग़रीब तो नज़र आती है, लेकिन भिखारिन नहीं। हाथ में फटी-पुरानी झोली या फूटी थाली नहीं। फटा-पुराना पाजामा और बाएँ कंधे तक सिलाई वाला ढीला-ढाला कुर्ता। गौरैये के घोंसले-जैसे बाँध रखे बिखरे थोड़े-से बाल। वह दुबली-पतली लड़की आँगन की ओर देखती हुई चुपचाप खड़ी थी। ऐसा लग रहा था कि सड़क से बेतहाशा दौड़नेवाली गाड़ियों का या तेज़ बारिश का या ऊपर की बालकनी से मेरे द्वारा उसे निहारने का कोई पता उस लड़की को नहीं है।

बहुत देर बाद ही उसे पता चला कि उस बड़े-से फाटक की कुंडी नहीं लगी है। दुबली होने के बावजूद उसके तन के बोझ का दबाव बहुत देर तक फाटक पर बना रहा तो, आवाज़ से बचाने के लिए अच्छी तरह तेल लगाए फाटक का एक हिस्सा थोड़ा-सा खुल गया, तभी उसे इस बात का भान हुआ था। फिर क्या, तुरंत उसने फाटक को पहले की तरह बंद कर दिया, मानो उसने कोई बड़ा अपराध किया हो! उसके बाद फिर उससे सटकर पहले की तरह खड़ी रही। अनजाने ही वह फिर से सरक गया। फिर उसने उसे बंद कर दिया।

बारिश के तेज़ गति पकड़ने के आसार दिखाई दिए। लेकिन वह वहीं खड़ी रही। ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी के बाहर आने के इंतज़ार में खड़ी हो! तीसरी बार भी फाटक के पल्ले खुले तो उसने उसे बंद करने की कोशिश नहीं की। यही नहीं, वह दो क़दम आगे की ओर बढ़ी। फाटक के आगे के पैदल-रास्ते के छोर पर खड़े खिले फूलों वाले दुर्लभ पौधे की तरफ़ ही उसने क़दम रखा था। वह भी मुझे बिलकुल सहज ही लगा। लड़की जो ठहरी! फूल देखकर कौतूहल की अनुभूति जागी होगी! वह उस पौधे के पास पहुँची ही थी कि चौकीदार न जाने कहाँ से अचानक आ गया। "जा, चली जा!" चिल्लाता हुआ (फेरीवालों जैसी ऊँची आवाज़ में ही वह आमतौर पर बातें करता है।) आया और लड़की का हाथ पकड़कर उसे फाटक के बाहर कर दिया। फाटक बंद कर कुंडी लगाने के बाद ही उसके मुँह से वह स्वगत कथन निकला था।

लड़की ने न तो उसे दीनता से देखा, न रोई, न कोई शिकायत की और न ही उसकी पकड़ को छुड़ाने की कोशिश की। एक गुड़िया की तरह उसने निर्विकार होकर सब कुछ सह लिया। यही नहीं, उस बंद फाटक के बाहर वह फिर भी वैसे ही खड़ी रही।

मूसलाधार बारिश! वह पानी में सराबोर हो गई। उसका कुर्ता-पाजामा भीगकर तन से चिपक गया तो पता चला कि उसका तन कितना दुबला है। यही नहीं, जब उसके बाल भी भीग गए तो वह उस गिलहरी की शावक-सी दिखाई दी, जो घोंसले के नीचे गिर-बिखर जाने पर पास के पौधे से चिपकी पड़ी हो!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पोर्च में पहुँचा चौकीदार मुड़कर देखे बग़ैर ही चिल्ला उठा, ''जा!'' सुनने का कोई आसार नहीं लगा तो फिर ज़ोर-से पाँव पटककर चीख़ उठा, ''चली-जा!'' फिर भी उसने जाने का नाम नहीं लिया।

ड्योढ़ी से इमारत तक के पैदल-रास्ते पर बिछाई गई षट्कोणी ईंटों पर स्वच्छ जल बिंदु बिखरकर मानो मुस्कुरा रहे थे। ऊपर के छज्जे पर गिरा पानी तेज़ी से बहकर बड़े शोर के साथ प्लास्टिक के नल से आँगन की ओर बह आया। आँगन में बरसे पानी के साथ मिलकर लड़की के पैरों तले होकर यह पानी सड़क की ओर बहता गया। उसके, बिना चप्पल के पाँव उस पानी के प्रवाह को रोके हुए थे। आसमान से गिरनेवाली बूँदों को बढ़ाए अपने नन्हें हाथों में लेकर वह मुँह में उँड़ेल रही थी। मुँह भर जाता तो पी लेती। उसका चेहरा अब ख़ुशी से भरा हुआ था।

उसकी क्षमताहीनता के सबूत के रूप में कोई उधर खड़ी है, इस बात पर चौकीदार परेशान हो रहा था। हाँ, थोड़ी तसल्ली इस बात की थी कि वह फाटक के बाहर ही खड़ी थी।

बालकनी की बेंत की कुर्सी पर जहाँ मैं बैठा था, वहाँ से अब मैं चौकीदार को देख नहीं पा रहा था। लेकिन आवाज़ से समझ पा रहा था कि जाने-पहचाने सारे इशारे करता हुआ वह उस लड़की को धमकाकर दूर भगाने की कोशिश कर रहा था।

यह चौकीदार नया-नया आया है। यहाँ नौकरी में लगे केवल तीन महीने ही हुए हैं। ठीक से पता नहीं कि कहाँ का है? फिर भी उसके आचरण-व्यवहार से फ़्लैट के सारे लोग परिचित हैं। चौकीदारों को काम पर रखवानेवाली एजेंसी से रेसिडेंट्स एसोसिएशन की सचिव मालिनी मेनन उसे बुला लाई थीं। उसके सारे हाल-हवाले का पता उस एजेंसी को ही है। मासिक वेतन एजेंसी ही लेती है, इसलिए सारा ज़िम्मा उसके ऊपर है।

गली में कई लोग छतरी तानकर चल रहे थे। वे कौन हैं और कहाँ जा रहे हैं, इस पर कुछ भी विचार नहीं किया जा सकता। कौन जाने! ऊपर छाते, नीचे पैर। कई प्रकार के पैर। कई प्रकार के छाते। बिना छाते के चलनेवाले भी थे। अंतरिक्ष यात्रियों की-सी वेशभूषा में अचकन और टोपी पहने लोग भी थे। भीड़ के बीच से होकर ग्लास ऊपर उठाकर आँखें मूँदकर घुरघुराती वातानुकूलित मोटर गाड़ियाँ आदि-आदि। छाते के नीचे क्या है? शैम्पू के विज्ञापन जैसे केश अथवा गंजा सिर? रेन कोट के भीतर पुरुष या स्त्री? कार में चीता है या फिर चूहा? सोचना ही बेकार है।

मैं बस इस बारे में आकुल हो रहा था कि हवा बहेगी कि नहीं। डॉक्टरों ने सलाह दी है कि बारिश की बूँद तन पर कभी न लगे। फेफड़े अभी ठीक नहीं हुए हैं। न्यूमोनिया है। सावधानी बरतनी है। अकेले कमरे के भीतर कंबल ओढ़े लेटे-लेटे बुरी तरह ऊब चुका हूँ। मूसलाधार बरसनेवाली भीगी बारिश के साथ हवा न बह आए, यही मेरी चिंता थी।

नहर के किनारे जम जानेवाली बेकार चीज़-जैसी कोई वस्तु — उस लड़की के बारे में यही सोचना काफ़ी है। लेकिन उस लड़की में जान है, यही एक अंतर है। एक ज़िंदा मछली भी इस प्रकार एक जगह पर टिकी नहीं रहती। उसका जन्मजात स्वभाव उसकी अनुमति देगा नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या, चौकीदार ने भी कुछ ऐसा ही सोचा है? छाता खोलकर वह फाटक के पास पहुँचा। उसके वहाँ पहुँचने का कोई असर लड़की पर नहीं पड़ा, न कोई डर, न कोई चंचलता।

छाते को दाएँ हाथ से बाएँ और बाएँ से दाएँ में पकड़कर चौकीदार ने चौड़ी सड़क और बाहर की राह हठपूर्वक उसे दिखा दी। बारिश के जयघोष के बीच उसकी कोई आवाज़ अलग से सुनाई नहीं दे रही थी। तो भी इसका कोई शक बचा नहीं था कि उस लड़की को फाटक से दूर हटाने की कोशिश में ही वह लगा हुआ होगा। बहुत कुछ कहने के बाद पीछे मुड़कर वह दो-तीन क़दम चला तो मुझे उसकी एक झलक मिली। पहले की तरह ही वह खड़ी थी, उसी निस्संग भाव से। चेहरे की चमक में कोई कमी नहीं आई थी। काली पुतलियों में शरारतभरी ज़िद की चमक। दुबले पैरों पर पहाड़-सी वह अचल खड़ी थी। उसे देखते हुए हृदय में एक उमंग उमड़ आई। लेकिन चौकीदार उसके और निकट जाकर खड़ा हुआ तो फिर मैं उसे देख नहीं पाया।

फाटक के सीख़चों के बीच से हाथ डालकर पता नहीं, उसने उस लड़की को सताने की कोशिश की या केवल उसे हटाने की? कुछ समझ में नहीं आया। जो भी हो, फाटक से वह थोड़ा हट गई। उसने दोनों हाथ माथे पर रख लिए। लगा कि छोटे-छोटे दाँत दिखाकर हँस रही थी। शायद वह हँसी उसके होंठ पर गिरी बारिश की नन्हीं बूँदों की चमक ही रही होगी!

अपनी जीत पर ख़ुश होकर वापस आया चौकीदार छाता बंद कर रहा था कि उसके पहले लड़की फाटक के पास फिर आकर खड़ी हो गई। इस प्रकार की आवाजाही कई बार हुई। वह उस ओर जाता, उसके पहले ही लड़की दो क़दम पीछे हट जाती। वह कुछ-न-कुछ बोलकर लौट आता। उसके पोर्च पर लौट आने के पहले ही वह लड़की फिर से सीख़चों पर अपना गाल चिपकाकर, फाटक से सटकर खड़ी हो जाती। थोड़ी देर बाद वह फिर उसे हटाने जाता। एक खेल जैसा। किसी को ऊब नहीं हुई।

दोपहर हो गई। बारिश थम गई। षट्कोणी सिमेंट-ईंटों और उनके बीच रोपे गए दूब के पौधों की नमी सूखने लगी। चौकीदार खाना खाने चौकी की ओर चला गया। दोपहर का उसका खाना वहाँ की किसी झोंपड़ी से कोई औरत ला देती। सुबह और शाम का खाना वह ख़ुद पकाता।

मेरी भूख मिटाने के लिए खाना पत्नी ने कैसरोल में रखा है—थोड़ा-सा चावल का दलिया, मिर्ची की जगह अदरक से बनाई गई चटनी। ज़रूरी लगे तो दो मिनट में गैस स्टोव पर पापड़ सेंक लेने की जानकारी देकर, रोज़ की तरह आज भी वह दफ़्तर चली गई है। लेकिन भूख है कि लगती नहीं।

चौकीदार अपने खाने का एक हिस्सा लेकर चौकी से बाहर निकलकर उस लड़की की ओर जा रहा था। इस बात पर मैं चकित हुए बग़ैर नहीं रह सका कि मेरे फ़्लैट के तमाम सारे निवासियों और मुझसे कितना भला इंसान है वह बेचारा चौकीदार। दलिए का आधा हिस्सा उसे देने का मेरा मन नहीं हुआ था, इसका भान होने के बावजूद कि वह सारा दलिया मैं पी नहीं पाऊँगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रिमझिम बरसती बारिश में सिर के ऊपर एक हथेली को छाता बनाकर खाना लेकर अपनी ओर आनेवाले चौकीदार को कौतूहल से देखकर उस लड़की ने हल्की हँसी बिखेर दी। बारिश धीमी हो चली थी। इसलिए ठीक से सब कुछ दिखाई दे रहा था। कोई शक नहीं। हँसी ही थी। उसी हँसी के साथ यह जताने के लिए उसने सिर हिलाया कि उसे खाना नहीं चाहिए।

हालाँकि चौकीदार ने दो-तीन बार अपने हाथ का खाना उसकी ओर बढ़ाया भी था, लेकिन वह फाटक की एक तरफ़ हटकर, दीवार की ओट में आ गई। क्या, वह चली गई?

चौकीदार का अपनी चौकी की ओर वापस जाना, बारिश का तेज़ हो जाना और मूसलाधार बरसना—इन सबसे अवगत रहते हुए भी मैं एक झपकी में फिसल गया। कितनी देर तक सोता रहा, इसका कोई पता नहीं। साँझ की लालिमा की रोशनी में ही मैं जागा था। बारिश थम गई थी। आसमान थोड़ा-बहुत साफ़ और स्वच्छ हो गया था। नीचे फ़्लैट के आँगन में निवासियों का एक छोटा दल इकट्ठा हो गया था। उनके बीच चौकीदार, वह लड़की और मिसेज़ मेनन भी थीं। पौधों की ओर उँगली दिखाकर वे जो बातें कर रहे थे, इससे ज़ाहिर था कि निशागंधी के फूलों की समस्या से ही जुड़ा कोई मुद्दा है।

किसी भी हालत में विचलित न होनेवाली मिसेज़ मेनन बिलकुल थकी-सी दिखाई दे रही थीं। वह पौधा दरअसल उनकी जान है। वह पौधा ख़ुद उन्होंने अपने पैसे से ख़रीदा और पाला-पोसा था। एसोसिएशन की बैठक में किसी ने यह सवाल उठाया कि क्या, हमें इतने क़ीमती पौधे की ज़रूरत है, तो तुरंत उन्होंने जवाब दिया था कि उसका ख़र्चा वे ख़ुद वहन करनेवाली हैं।

उसके बाद ख़ुद वे ही सुबह-शाम उसकी देख-रेख किया करती थीं। सब-के-सब यह कहने लगे कि विदेश में रहनेवाले अपने पति तथा दूर बोर्डिंग में रहकर पढ़नेवाले अपने दो बच्चों के बराबर या उनसे ज़्यादा वे इस पौधे को प्यार करती हैं। कभी-कभार ही फूलनेवाले एक पौधे के लिए भला ऐसी सनक क्यों, किसी-किसी ने दाँतों तले उँगली दबाकर पूछा भी। लेकिन अचानक एक दिन उसमें फूल खिल उठे तो सब-के-सब ख़ुश हो गए। उन अनोखे फूलों की तसवीर खींचने के लिए पत्रकार आए। समाचार-पत्रों में वे तसवीरें छपकर आईं। तब तक कई बहुमंज़िली इमारतों में हमारे आवास को प्रसिद्धि मिल गई। निशागंधी फूल खिलनेवाले इस अपार्टमेंट की ख्याति सब ओर फैल गई।

इतने महत्त्वपूर्ण फूलों में से एक फूल ग़ायब हो गया था। इकट्ठे हुए लोगों में किसी को भी यह शक नहीं रहा कि किसने यह फूल तोड़ लिया है। उसी लड़की ने। उस फूल पर नज़र डालती हुई फाटक के पास खड़ी उस लड़की को कइयों ने देखा था। दरअसल फ़्लैट के निवासियों का बहुमत यही था कि मूसलाधार बारिश के दौरान चौकीदार अपनी चौकी में खर्राटे भरकर सो रहा होगा! ऐसे में कोई भी किसी भी चीज़ की चोरी कर सकता है। चौकीदार तो कुछ बताता भी नहीं है।

ऐसी हालत में कैसे यहाँ जिएँगे? मिसेज़ मेनन का यही सवाल है। लो, आज बग़ीचे से उनके लाड़ले फूल को कोई चुरा ले गया। कल यदि फ़्लैट से क़ीमती ज़ेवरों की या फिर इसमें रहनेवाले की ही चोरी हो गई तो किससे पूछेंगे?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनाथ बालिका के सूखी टहनी-से हाथ को चौकीदार ने पकड़ रखा था। बालिका के चेहरे पर कोई दुःख नहीं। पहले जैसी प्रसन्नता। दूसरा हाथ अपने फटे और गंदे पहनावे पर पोंछती हुई वह अपने चारों ओर के लोगों को बारी-बारी देखती हुई शांत खड़ी थी।

उसकी माता-सी लगनेवाली एक कंगाल युवती मलयाळम में, जो पूरी तरह उसके क़ाबू में नहीं, रो-रोकर बता रही थी—''हम ग़रीब हैं। चोरी करनेवालियाँ नहीं हैं। मूर्तियाँ बनाकर उन्हें बेचकर जीविका चलाती हैं। यह लड़की तो गूँगी और बहरी है। किसी भी ख़ूबसूरत चीज़ को देख ले तो वह उसे एकटक देखती रहती है। खींच लेने पर भी हटेगी नहीं। लेकिन मालिक से पूछे बग़ैर वह कोई भी चीज़ नहीं लेगी। अब अगर उसने फूल ले ही लिया तो वह कहाँ है? उसने कुछ लिया ही नहीं है।

''यह तो सरासर झूठ है!'' मिसेज़ मेनन ने हठ पकड़ा। फिर फ़्लैट के अंदर जाकर फ़ोन करके पुलिस को बुला लिया। अगर एक बालिका ने कोई फूल तोड़ ही लिया है तो भी उसमें मुक़द्दमा चलाने के लिए क्या रखा है? उन अधिकारियों का यही विचार था। ''अगर आप लोग ऐसी चोरियों के पक्ष में रहेंगे तो मुझे उच्च अधिकारियों से बोलना पड़ेगा!'' मिसेज़ मेनन ने कर्कश स्वर में कहा। मिसेज़ मेनन ने यह भी कहा कि फ़िलहाल यहाँ और भी कई चीज़ों की चोरी हो गई है। तब पुलिसवालों ने भी कहा, ''उन सबको जोड़कर कोई शिकायती पत्र लिखकर दे देंगी तो हम उचित कार्रवाई करेंगे।''

मिसेज़ मेनन ने एसोसिएशन की ओर से शिकायती पत्र लिख दिया। पुलिस बालिका और उसकी माँ को लेकर चली गई। पीछे की ओर मुड़-मुड़कर देखते हुए और यों ही हँसते हुए बालिका माँ की उँगली पकड़कर चलने लगी। माँ ने तो सिर्फ़ एक बार मुड़कर देखा। लगा कि अगर वह थोड़ी देर और टकटकी लगाए देखती रहती तो यह दुनिया एकदम से तहस-नहस हो जाती।

रिटायर्ड कर्नल गंगाधर शेनाय ने मिसेज़ मेनन से यों ही पूछा, ''पौधा तो उधर ही खड़ा है न? उसमें तो और भी फूल खिलेंगे न? सिर्फ़ संदेह के नाम पर क्यों इतना... ?''

मिसेज़ मेनन ने जवाब दिया, ''बच्चे की चोरी हो गई तो उसकी पीड़ा केवल माँ ही समझ सकेगी!'' मामला इतना गंभीर है, ऐसा कर्नल ने नहीं सोचा! वे चुपचाप अपने फ़्लैट की ओर लौट गए।

दवाइयाँ लेकर और आराम करते हुए ऊब और आलस में, और एक हफ़्ता मुझे बालकनी पर ही बिताना पड़ा। जिस प्रकार किनारे पर जम गया कोई काठ का टुकड़ा अथाह समुद्र को लहरें मारता देखता हुआ पड़ा हो, वैसे ही।

फूल के ग़ायब होने के दूसरे दिन सुबह ही मिसेज़ मेनन ने अपने एक चिर-परिचित जवान दोस्त और होर्टीकल्चरिस्ट को बुला लिया और आपातकालीन सेवा-सुश्रूषा कराई। इस बात की जाँच की गई कि फूल को खींचकर तोड़ते वक़्त पौधे की जड़ें उखड़ तो नहीं गई हैं। नहीं, ऐसा कुछ भी नहीं हुआ है। यह सूचना पाकर मिसेज़ मेनन की तकलीफ़ और नाराज़गी थोड़ी कम हुई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस दिन शाम को मिसेज़ मेनन के निर्देश पर शहर के एक प्रतिष्ठित लोहा उद्योगवाले ने लोहे का घेरा लाकर निशागंधी को उसके भीतर क़ैद करके ताला लगाया और चाबी चौकीदार के हाथों में दे दी। ब्यूटी पार्लर से मिसेज़ मेनन के वापस आते ही चौकीदार ने चाबी उनके हाथों में सौंप दी थी। यह तो मैंने बताया ही नहीं था कि मिसेज़ मेनन शहर की एक मशहूर ब्यूटी पार्लर की ब्यूटीशियन और उसकी मालकिन हैं।

दूसरे दिन सुबह ही मैंने सुना कि मिसेज़ मेनन चौकीदार को बुरी तरह फटकार रही हैं, ''पौधे पर चढ़ रहे कीड़े को क्या तुमने नहीं देखा? क्यों उसे निकाल नहीं दिया? पौधे का एक डंठल पूरा-का-पूरा उसने चबा डाला है न!''

चौकीदार बड़बड़ाया कि साँझ को ही उसने कीड़े को देखा तो था, लेकिन चाबी हाथ में न होने की वजह से वह कीड़े को निकाल नहीं पाया। तभी तो लोहे के घेरे की दो चाबियों में से एक चौकीदार को मिली।

बाद में देखने को मिला कि ख़ूब लहलहाते खड़े उस निशागंधी पौधे की एक-एक टहनी दिन-ब-दिन मुरझा रही है। होर्टीकल्चरिस्ट फिर बुलाया गया। कीटनाशक दवाई छिड़की गई। 'अग्रो-नेट'—नाम का प्लास्टिक जाल लाकर कठघरे के ऊपर आवरण बनाया गया। जाल के बाहर से देखने पर वह पुराने पौधे का प्रेत-सा दिखाई पड़ता।

फिर बात क्या थी? न उसका कीड़ा-दोष दूर हुआ और न कुम्हलाना ही।

लाख कोशिश करने पर भी मिसेज़ मेनन अपने चेहरे में ख़ुशी, आनंद और सुंदरता नहीं ला पाई।

पौधे का संरक्षण न कर पाने की सारी ज़िम्मेदारी उन्होंने चौकीदार के कंधे पर डाल दी। मूल कारण तो फूल की चोरी रही। उससे लेकर यथासमय कीड़ा-दोष का उपचार नहीं करने और नीचे जमे जल को न बहाने जैसे सैकड़ों अपराध उस पर मढ़ दिए गए। शिकायत और फटकार रोज़ाना की बातें थीं; उसने सब कुछ चुपचाप सह लिया। लगा कि साक्षात् महात्मा गाँधी में भी इतनी सहनशीलता नहीं रही होगी!

उस बहरी लड़की के ऊपर चोरी का अपराध मढ़ देने के पाँचवें दिन बग़ीचे के तमाम पौधे कुम्हला गए। फिर क्या? सूचना पाकर सभी फ़्लैटों के निवासियों के अत्यधिक आश्चर्य के साथ नीचे की ओर ताकने तथा सारे नियंत्रणों को लाँघकर मिसेज़ मेनन के चौकीदार को डाँटने-फटकारने का दृश्य दिखाई पड़ा।

चौकीदार कान बंद कर खड़ा रहा। यह देख मिसेज़ मेनन और भी नाराज़ हो गई।

तब उसने अपने कानों से दोनों हाथों को हटाया और बोला, ''बस, बस करिए, मैं नौकरी छोड़कर जा रहा हूँ! अभी तो केवल पौधे ही मुरझाए हैं! कल, शायद यहाँ के निवासी भी इसी तरह मुरझा जाएँगे या भूकंप में यह इमारत ही ढह जाएगी तो भी मैं ही इन सबका ज़िम्मेवार ठहराया जाऊँगा! इस आधे बित्ते पेट के लिए इतना सब सह नहीं पाऊँगा—यही मेरा फ़ैसला है! मैं समझता हूँ कि मिट्टी की देवमूर्तियाँ बनाकर और गलियों में घूम-घूमकर और उन्हें बेचकर मैं अपनी बीवी, एक बेज़ुबान लड़की और अपनी जीविका तो चला ही लूँगा।... यह पोशाक अब मुझे नहीं चाहिए!''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चौकी में घुसकर उसने ख़ाकी पोशाक उतार दी और पुराना पाजामा और बिना बटन का सिकुड़ा-उधड़ा जूता पहनकर बाहर आ गया। फिर उस इमारत के सब लोगों को विनम्रतापूर्वक नमन करके चला गया।

मिसेज़ मेनन और सबके चेहरों और दिल में यह सवाल उभरकर आया कि क्या आजकल के ज़माने में इतनी जल्दी और आसानी से कोई चौकीदार की अच्छी-ख़ासी नौकरी छोड़कर जा सकेगा? मिसेज़ मेनन और दूसरों के चेहरों पर और मन में सवाल अंकुरित, पल्लवित हो उठा और उसमें से सनकी फूल भी खिल उठे। मिसेज़ मेनन ने उसकी करनी को खुले तौर पर घमंड घोषित भी कर दिया।

बुख़ार ठीक होने के बाद जब मैं थोड़ी फुर्ती से नहाकर, एक सुबह दफ़्तर की ओर जाने लगा, तभी मैंने दिल बहलानेवाला वह दृश्य देखा था।

जूड़ा बाँधे हँसमुख अपनी बेटी को एक कंधे पर और दूसरे कंधे पर पहाड़ ढोनेवाले हनुमान की मिट्टी की मूर्ति को लिए चौकीदार गली में चल रहा था। बिना किसी संदेह के वह ज़ोर-ज़ोर से बोल रहा था कि हनुमान द्वारा ढोए हुए पहाड़ की चोटी पर मृतसंजीवनी नामक औषधि का एक अनोखा पौधा है। लड़की के पाँव के नूपुर उसकी छाती पर उसकी बोली के अनुरूप ताल दे रहे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहानी

मराठी

उज्ज्वला केळकर

लीडर

एक आधुनिक प्रशस्त अस्पताल के नीचे के तल्ले पर अतिदक्षता कक्ष में वह पड़ा है। असहाय, आख़िरी साँसें गिनता। तीन डॉक्टर चिंतित होकर कार्डिओग्राम पर दिखाई जानेवाली दिल की धड़कनें देख रहे हैं। कमरे में डॉक्टर्स, सिस्टर्स, वॉर्ड बॉयज़—सब की भीड़-सी लगी है। फिर भी कमरे में इतनी शांति है, मानो कमरा ख़ाली हो! केवल कार्डिओग्राम की आवाज़, वहाँ खड़े लोग भी साँस इतने धीमे-से ले रहे हैं कि कहीं साँस की आवाज़ से भी मरीज़ को नुक़सान न पहुँचे। कार्डिओग्राम देखते-देखते डॉक्टरों के चेहरे धीरे-धीरे खिलने लगे। आज सुबह से आशाजनक स्थिति थी। दिल की धड़कन नियमित हो रही थी। पहले तीन दिन कृत्रिम साँस देनी पड़ी थी। सुबह से धीमी-धीमी साँस चलने लगी थी। अब उसने पलकें झपकाईं और पुकारा, ''चिनॉय... !'' वहाँ खड़े सब लोगों ने चैन की साँस ली। ख़ुशी की महीन लकीर उनके चेहरे पर दिखाई दी।

पिछले तीन दिन बहुत ही तनावपूर्ण थे। खाना, पीना, सोना, थकावट—किसी बात का होश नहीं था। ख़ासतौर पर डॉ. तपन इतने चिंतित थे कि उन्हें लगा कि उनका भी रक्तचाप बढ़ता जा रहा है। वे अस्पताल के सुपरिंटेंडेंट थे। उसके भले-बुरे की ज़िम्मेदारी उन पर थी। वह मरीज़ बड़ी हस्ती थी। उसके दिल की हर धड़कन की ओर सारी दुनिया की नज़रें थीं। उसकी सेहत के बारे में पूछताछ करनेवाले, प्रार्थना करनेवाले पत्र लिखे जा रहे थे। उसकी पूछताछ करनेवाले लोगों का अस्पताल में ताँता लगा था। कई लोग शीशे से आँखें लगाकर उसे देखते रहते थे। बार-बार डॉक्टरों को हिदायत दी जा रही थी कि उसके इलाज में कोई कमी न रहे। प्रार्थनाएँ की जा रही थीं। शुभकामनाएँ दी जा रही थीं। डॉक्टर सोच रहे थे, इन बड़े

मराठी रचनाकार। संपर्क : 176/2, गायत्री, प्लॉट नं. 12, वसंत दादा साखर कामगार भवन, जवक, सांगली 416416 (महा.); मो. 09403310170.

अनु. **सुशीला दुबे**। मराठी-हिंदी में परस्पर अनुवाद प्रकाशित। संपर्क : फ़्लैट नं. 303, बिल्डिंग नं. डी-2, शिवसागर को-ऑपरेटिव सोसायटी, माणिक बाग, सिंहगढ़ रोड, पुणे 411051; मो. 09923011613

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोगों की बीमारी मतलब जान पर बन आना। मरीज़ की क़िस्मत अच्छी है तो वह ठीक हो जाएगा और उन्हें शोहरत मान-सम्मान मिलेगा। लेकिन अगर बदक़िस्मती से ऐसा नहीं हुआ तो...तो तूफ़ान आ जाएगा! क्या कमी रह गई? क्या हुआ? उसकी मौत का ज़िम्मेदार कौन है? इलाज ग़लत तो नहीं हुआ? किसी और से सलाह-मशवरा क्यों नहीं किया?...जाँच कमिटी नियुक्त की जाए—जीते-जागते इंसान का जीना हराम हो जाएगा! इसीलिए सभी डॉक्टर इस मरीज़ को बहुत सावधानी और ध्यान से देख रहे थे। सिर्फ़ इसलिए नहीं कि उसे कुछ हो गया तो अपना गला फाँस लिया जाएगा, बल्कि इसलिए कि उन्हें उसकी ज़रूरत थी। वे तहेदिल से चाह रहे थे कि वह ज़िंदा रहे... और कुछ साल...नहीं नहीं और बहुत साल तक...उसका इतनी जल्दी जाना ठीक नहीं। वह उनका लाडला नेता है...वह बहुतेरे...सभी लोगों का प्यारा लीडर है। उसकी ज़िंदगी के लिए उन्होंने अपना ज्ञान, बुद्धि, औज़ार—सब कुछ दाँव पर लगा दिया था।

उसकी शख़्सियत बहुत आकर्षक और लुभावनी थी। वह साँवला था लेकिन सीधी नाक, किसी के भी मन की थाह लेनेवाली आँखें—कुल मिलाकर आकर्षक चेहरा। उसके माथे पर लहरानेवाले बाल आजकल पतले होने लगे थे और थोड़ी तोंद निकल आई थी। बस्स! इतना ही! उम्र बढ़ी लेकिन चेहरे का माधुर्य कम नहीं हुआ। वह देखने में आकर्षक था लेकिन उससे ज़्यादा आकर्षक था उसके बात करने का ढंग। आम सभा में भाषण देते हुए वह आक्रामक हो जाता। ऐसे शब्द फूटते मानो पटाखों की लड़ी लगा दी हो और अगर मंत्रियों का भ्रष्टाचार, उनकी स्वार्थांधता, मुट्ठीभर धनिकों को लाभ पहुँचानेवाली उनकी नीति, ऐसे किसी विषय पर बोलना हो तो, शिकार पर झटपनेवाले चीते की तरह वह प्रतिपक्ष पर टूट पड़ता। वह केवल सभा जीतने के लिए नहीं बोलता था। उसके मुँह से निकलनेवाले हर शब्द से उसके अंतर्मन की तिलमिलाहट प्रतीत होती, सुननेवालों के दिल को छू लेती। उसका इस तरह टूट पड़ना उसकी लोकप्रियता का कारण था। व्यक्तिगत स्तर पर उसकी वाणी नम्र, कोमल होती थी। वह मिलने आनेवाले हर आदमी से अपनेपन से पेश आता। उसके समीप आने पर उसके शब्दों का गुलदस्ता खिल जाता। आनेवाला आदमी प्रसन्न और निश्चिंत हो जाता। उसे इतमीनान हो जाता कि अपना काम हो जाएगा! वह उसकी तारीफ़ करके चला जाता। वह उनकी समस्याएँ सुलझाने का प्रयास करता। ख़ासतौर पर उपेक्षित, बहुजन समाज के लोगों की...।

वह आँखें खोलकर पुकारता है, ''चिनॉय...चिनॉय... !'' उसे अपने आसपास के चेहरे इतने अलग क्यों महसूस हो रहे हैं? कहीं यह मेरा भ्रम तो नहीं? और हाँ, यह चिनॉय, राधाकिशन और सुब्बाराव—तीनों एक साथ मेरे सिरहाने खड़े होकर किस बात की चर्चा कर रहे हैं? पायताने खड़ी चिनॉय की पी.ए. आज इतनी सिंपल क्यों लग रही है? ये सब लोग अपने बेडरूम में क्या कर रहे हैं? ''चिनॉय, क्या बात है... ?'' इतना सोचने से भी उसे थकान महसूस होती है। वह आँखें मूँद लेता है।

''अब वह होश में आ रहा है और कुछ याद करने की कोशिश कर रहा है।''

''अच्छे लक्षण हैं उनके लिए और हमारे लिए भी।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''भगवान का लाख-लाख शुक्र है! हम आशा करते हैं कि वे जल्द-से-जल्द ठीक हो जाएँगे।''

डॉक्टर नर्स को सलाइन लगाने को कहते हैं। नर्स की सैंडल की टक-टक आवाज़ से उसे लगता है, कोई उसके दिमाग़ पर प्रहार कर रहा है। कोई संवेदना नहीं है, केवल सिर पर होनेवाला आघात कम-ज़्यादा, और ज़्यादा...सलाइन की आधी बोतल ख़त्म हुई। उसे पहली बार महसूस हुआ कि वह अपना हाथ हिला नहीं सकता। आँखें खोलता है तो लगता है जैसे दीवारों का सफ़ेद रंग चारों ओर से कफ़न की तरह उसकी ओर झपट रहा है। इसका मतलब...मतलब यह अपना बेडरूम नहीं है। आहिस्ता-आहिस्ता उसे आसपास के माहौल से पता लगता है कि वह किसी अस्पताल में पड़ा हैं। उसे सलाइन दिया जा रहा है। कई उपकरणों से उसे जकड़ दिया गया है।...आसपास के चेहरे डॉक्टरों के हैं।...और वह... वह चिनॉय की पी.ए. नहीं, यहाँ की नर्स होगी! अब उसे सारी बातें साफ़-साफ़ समझ में आ गईं। बाईं तरफ़ दरवाज़े के ऊपर से देखनेवाली दो आँखें भी वह जान गया। फिर वह सोचने लगा, 'मैं यहाँ कब लाया गया? कैसे? कौन ले आया?'

गुरुवार की रात...राष्ट्रीय क्रांति संगठन के पदाधिकारियों, और संगठन के बड़े लोगों की बैठक का आयोजन किया गया था। बहुत रात नहीं हुई थी। यही कोई साढ़े दस का समय होगा। राधाकिशन की बैठक में कोई बीस-पच्चीस सदस्य हाज़िर थे। धीमी आवाज़ में फुसफुसाहट...उसके वहाँ जाते ही ख़ामोशी फैल गई। खुली चर्चा...आगामी चुनाव के संबंध में टिकट वितरण संबंधी नीति...किसे नज़दीक लाना है...किसे दूर करना है...स्थानीय परिस्थितियों के मद्देनज़र किसके साथ समझौता करना है?...किसके साथ राष्ट्रीय स्तर पर समझौता करना है...इन सबके परिणामों का विश्लेषण...ख़ूब ऊहापोह हुई...देखते-ही-देखते फुसफुसानेवाले स्वर ऊँचे होते गए...ख़रीदना...ख़रीदे जाना...फ़ैसला लेना ज़रूरी था। वह भी तुरंत...इस मध्यावधि विभाग में लिए जानेवाले फ़ैसले की ओर देशभर की शाखाओं के स्थानीय तथा अलग-अलग स्तर के नेताओं की निगाहें लगी थीं। चार महीने बाद पार्टी का अखिल भारतीय महासम्मेलन होनेवाला था। सम्मेलन के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सदस्य तय करने थे। इसीलिए इस सभा का आयोजन किया गया था।

चर्चा शुरू हुई। घंटे भर में बोलनेवालों की आवाज़ ऊँची होती गई। बहुत-से सदस्य उससे सहमत थे। लेकिन तीन-चार लोगों ने कटु शब्दों में उसका विरोध किया। यहाँ तक कि उसे बाप की गाली दी गई। इसे जल्दी ही हटा देना चाहिए। उसके मन में गाँठ पड़ गई। अगली सभा में टिकट का मुद्दा सामने लाया जाएगा। नरेश अभी राजनीति में रुचि नहीं ले रहा है। नहीं तो उसके लिए अच्छा अवसर था। आनेवाले चुनाव में बहुमत मिलने की संभावना है।

इतने में बाएँ कोने से रंगनाथन की आवाज़ आई, ''सुना है कि चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के लिए क्वार्टर्स बनवाकर देने के लिए निश्चित की गई ज़मीन, मुख्यमंत्री जी पर दबाव डालकर मिस्टर मित्रा को कारख़ाने के लिए दी गई। यह सवाल विरोधी संसद में पेश करनेवाले हैं। मिस्टर मित्रा ने मिस्टर सिन्हा को ज़मीन दिलाने के लिए अपने कारख़ाने में ढाई फ़ीसदी साझेदारी देना क़ुबूल किया है।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''यह सरासर झूठ है! कारख़ाने में विविध प्रकार की मशीनों के कलपुर्जे बनाए जाने वाले हैं। उनकी अरब देशों में बड़े पैमाने पर माँग है। हमें विदेशी मुद्रा और उससे भी ज़्यादा ज़रूरत है पेट्रोल की। केंद्र सरकार ने क़रार किया है। अरब देशों की ओर से मशीन के कलपुर्जों के बदले में उतनी ही क़ीमत का क्रूड ऑयल और पेट्रोल मिलेगा। केंद्र सरकार की सूचना के अनुसार वह ज़मीन मित्रा जी को दी गई है। सिन्हा जी अपने छोटे बेटे अरविंद के कहने पर इस कारख़ाने के कुछ शेयर्स ख़रीदनेवाले हैं।''

''लेकिन वह ज़मीन रिहायशी क्वार्टर्स बनाने के लिए इस्तेमाल की जानेवाली थी।''

''यह बात भी ग़लत है। वह ज़मीन कारख़ाने के लिए ही बेची जानी थी। अगर सरकारी कर्मचारियों के लिए घर बनाने के लिए वह ज़मीन निश्चित की गई होती, तो हमें ज़रूर पता होता। गृहनिर्माण विभाग का मंत्री अपना वर्मा ही है न! अगर वैसा होता तो हम लोगों ने आंदोलन किया होता! अनशन पर बैठ जाते! सत्याग्रह करते! किसी भी हालत में ज़मीन मित्रा जी को नहीं मिलने देते। हमारे लिए मिस्टर मित्रा और मिस्टर सिन्हा की अपेक्षा चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी ज़्यादा अहमियत रखते हैं। हाँ मिस्टर सिन्हा मेरे भानजे हैं, फिर भी! रंगनाथन तुम्हें ग़लत जानकारी मिली है।''

''इस सफ़ाई पर विरोधी विश्वास नहीं करेंगे। उन्होंने पुख़्ता सबूत जुटाएँ हैं। और अगर संसद् में होनेवाली चर्चा ज़ाहिर हो गई तो लोगों का मन प्रतिकूल हो जाएगा।''

''लेकिन वे साबित कर ही नहीं सकेंगे। क्योंकि वस्तुस्थिति वैसी नहीं है। फिर वे सबूत कहाँ से जुटाएँगे, और कैसे? देखो रंगनाथन किसी भी ठोस सबूत के बिना हम अपने ही लोगों के बारे में चर्चा करें और संदेह करें, यह ठीक नहीं है। वह हमारी पार्टी के मुख्य आधार हैं। बंगला के चुनाव हम उन्हीं के बलबूते पर जीतते हैं और हम उन पर ऐसे खोखले आरोप लगाएँ!'' रंगनाथन चुप रहा। वह जानता था, बोलने का कुछ फ़ायदा नहीं। यहाँ उपस्थित सभी लोगों पर उसका ज़बरदस्त प्रभाव है। अगर मैंने कुछ कहा तो सब लोग यही सोचेंगे कि अपने स्वार्थ के लिए स्टंट कर रहा है। पार्टी के सभी सदस्यों पर उसका इतना रोब है कि अपनी बात से कोई खुलेआम सहमति नहीं दिखाएगा।

रंगनाथन की बातों से वह परेशान हुआ। क्या सचमुच विरोधी दल वाले ऐसा प्रस्ताव लानेवाले हैं? कल सभापति जी से मिलना चाहिए। अगर यह सच है तो वह सवाल उठना ही नहीं चाहिए। पर क्या इस मामले के पीछे विरोधी ही हैं? या फिर इसी के सड़े भेजे में यह ज़हरीला विषाणु पैदा हुआ है? आख़िर यह है कौन-सी पार्टी का... ? कहीं वह विरोधी पार्टी से मिला हुआ तो नहीं? चिनॉय से कहकर उस पर नज़र रखनी होगी। उससे सावधान रहना चाहिए। यह आस्तीन का साँप...अब उस पर शक होने लगा। वह अपने आपको दिलासा दे रहा है...मुझे इतना परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। अपने ख़िलाफ़ कोई कुछ साबित नहीं कर सकेगा। चर्चा के बवंडर से कुछ भी हाथ लगनेवाला नहीं है। फिर भी किसी अपने आदमी का निराधार इल्ज़ाम लगाना, एकदम झूठा! कहीं इसी बहाने मुझे इस संगठन से—अध्यक्ष पद से हटाने की कोशिश तो नहीं? आज तक अपनी ओर श्रद्धा से, भक्ति से देखनेवाली निगाहों में संदेह पैदा होना...अकारण, लेकिन वे अकारण क्यों करेंगे? रंगनाथन इस संगठन का अध्यक्ष

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बनना चाहता है। हाँ, यही बात है। चिनॉय से कहना पड़ेगा कि उस पर पैनी नज़र रखे। उसे अपनी जासूसी व्यवस्था पर गर्व हुआ। वह सी.बी.आइ. के समांतर थी और फिर...फिर उसे अचानक एक साथ लाखों सुईयाँ चुभने-सा सिर में दर्द महसूस हुआ। ''चिनॉय...चिनॉय...'' वह एकदम चीख़ा फिर...क्या हुआ उसे पता नहीं।

वह होश में आ रहा है। उसे महसूस हुआ कि उसके सिर में दर्द का विस्फोट हो रहा है। कोई भेजा नोच रहा है। तभी पायताने में खड़ी नर्स वरदा मुस्कुराते हुए सामने आई। सिर झुकाकर अभिवादन किया, ''गुडमॉर्निंग सर!'' उसकी मुस्कुराहट से सिर का दर्द धीरे-धीरे कम होता गया। वह सोचने लगा, 'भला ऐसी कौन-सी ख़ास बात है इसमें ? जो भी हो, उसके यहाँ होने से इस बेजान माहौल में जान आ गई। शायद इसी की वजह से सिर में होने वाले दर्द को सहते हुए इस बेड पर पड़े रहना सुसह्य हो रहा है। इसकी कोमल हँसी से सुकून मिल रहा है। नहीं तो...नहीं तो मैं कभी का ख़त्म...लेकिन आज...आज ये ख़याल मन में क्यों आ रहे हैं ?'

उसे याद आया, स्वतंत्रता संग्राम में वह लाहौर जेल में था। वहाँ कितने जुल्म सहे थे उसने! सिगार के चरके, कोड़े की मार, ख़ून के फ़व्वारे—कौन-से जुनून में सहा वह सब! और अब कुछ अच्छे दिन आए हैं, अपनी पार्टी के लिए...अपने लिए...कितनी कठिनाइयों से, परिश्रम से रास्ता निकाला था। कितना सँभलकर...अब जाकर कहीं स्थिरता मिली है, तो यह झंझट! क्या अपनी क़िस्मत में यश, सत्ता, सुख का उपभोग करना लिखा ही नहीं है ? यह शरीर कहीं साथ छोड़ तो नहीं देगा ? कहीं मैं अपाहिज...अपाहिज़ की कल्पना मात्र से उसके रोंगटे खड़े हो गए। डॉक्टर से पूछने पर वे मुस्कुराकर बोला, ''हमें यक़ीन है, आप बहुत जल्द ठीक हो जाओगे।'' लेकिन कितने दिन ? यहाँ आए कितने दिन हुए ? समय का एहसास ही भूल गया। यह अस्पताल ही है या आभास ? कहीं यह जेल तो नहीं ? किसी से मिलने की इजाज़त नहीं...कहते हैं, मेरी भलाई के लिए...और कितने दिन अकेला रहना पड़ेगा ? मेरा मनोबल कम होता जा रहा है। यहाँ से आसमान भी नज़र नहीं आता। वह नीला-नीला आसमान क्या मैं फिर से देख पाऊँगा ? इस ज़मीन पर मैं फिर से क़दम रख सकूँगा ? क्या मैं अपने आप खड़ा हो सकूँगा ? या यहीं पर इस बंद कमरे में...इसी बिस्तर पर सब कुछ समाप्त हो जाएगा ? इससे तो लाहौर की जेल बेहतर थी। वहाँ कम-से-कम अपना शरीर हिला सकते थे। जेल की खिड़की में लगे सिकंजों से दिखनेवाले आसमान के नीले टुकड़े आँखों को ठंडक पहुँचाते थे। और अपने साथी...प्यारे, अज़ीज़ साथी—उनसे बतियाने में कितना आनंद आता था! आज बँगले के भव्य दीवानख़ाने में बैठकर चर्चा करते हुए वह ख़ुशियाँ नहीं मिलती। राजा के सिर पर बाल से बँधी तलवार लटकती रहने पर उसकी जो मनोदशा होती होगी, मन में वही अनुभव हो रहा है।

आजकल किसी अनजान डर का साया दिल पर हावी होता जा रहा है। लाहौर जेल के वे दिन...हम कितने क़रीब आ गए थे...रामरतन, हमीद और मैं...कितनी गपशप...कितने मनसूबे—कितनी योजनाएँ बनाई थीं जब...उसी बलबूते आज मैं यहाँ तक पहुँचा हूँ। वहाँ मच्छर, खटमल, पिस्सू, घूस—किसी की तकलीफ़ महसूस नहीं होती थी। और अब कुशन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चेयर भी चुभने लगती है और मैं परेशान हो जाता हूँ। बाद में हमीद पाकिस्तान चला गया। उसका क्या हुआ, कुछ पता नहीं चला। अगर वह राजनीति में होता तो उसका नाम कहीं-न-कहीं पढ़ने में, सुनने में आता। पता नहीं वह ज़िंदा भी है या नहीं? रामरतन आज तक अपने साथ है। वैसा वह कहता तो है। शायद दिखावा करता हो! उसकी वही श्रद्धा और विश्वास आज भी मुझ पर होगा? आजकल उसकी आँखों में भी ढिठाई नज़र आने लगी है। कहीं यह सब अपने ही मन का खेल तो नहीं? रामरतन सचमुच अपने साथ है या अपने पर नज़र रखता है? काश! कोई आदमी के मनोभाव पढ़नेवाली मशीन का आविष्कार करता! इस समय मैं बिलकुल असहाय हूँ...हेल्पलेस...

"चिनॉय...चिनॉय...!" वह चीख़ता है। उसे घबराहट हो रही है। भेजे में बिच्छू के डंक मारने-सी वेदना हो रही है...असहनीय...। वरदा कार्डिओग्राम की ओर देखती है। हड़बड़ी में ओ.पी.डी. में जाकर डॉक्टर शर्मा को बताती है, "डॉक्टर ई.सी.जी. इरेग्युलारिटी दिखा रहा है, प्लीज़ जल्दी चलिए!" डॉक्टर और सिस्टर दोनों की भागदौड़!

वे फिर से उसकी जाँच करते हैं। उस पर ध्यान देने के लिए कहकर डॉक्टर बाहर आते हैं। डॉक्टर सिकंदर को फ़ोन करते हैं। उनसे सलाह लेकर वापस वार्ड में आते हैं। "सिस्टर इन्हें कांपोज़ का इंजेक्शन दीजिए।" सिस्टर के हाथ में बड़ी-सी सिरिंज। वह सोचता है, शरीर में सब जगह सूईयाँ लग चुकी हैं। अब और इंजेक्शन लगाने के लिए जगह नहीं है। वरदा सिरिंज लेकर मुस्कुराते हुए उसके पास आती है। इस वेदनामय दुनिया में ज़िंदगी के पल बिताने पर भी यह इतनी हँसमुख कैसे रह सकती है? सिस्टर ने किसी एक जगह सूई घोंप दी। सिरिंज की दवा शरीर में जाते ही उसे धीरे-धीरे मूर्छा आने लगी। आँखें सुस्ताने लगीं। मस्तक में डंक मारने वाले बिच्छू कम होने लगे। दर्द कम होने लगा। हाथ-पाँव सुन्न होने लगे। वह एहसास उसे अच्छा लगा। शरीर पंख-जैसा हल्का लगने लगा। शरीर या मन?...हवा में उठने जैसा सुखद एहसास...

"अभी तबीयत ठीक नहीं है। हालत चिंताजनक है। इंटेंसिव केअर में ही रखा है। पिछले चार दिन से हम यही सुन रहे हैं। डॉक्टर है या हज्जाम? स्साला....दवाइयाँ दे रहा है या यूँ ही..."

"बड़े लोगों का यह हाल है...आप-हम जैसे लोगों का क्या होगा?"

"गुरुवार की रात निजी बैठक समाप्त करके लौटते वक़्त गाड़ी में ही चिनॉय के कंधे पर गर्दन लुढ़क गई। बैठक में क्या हुआ, यह पूछने के लिए मैं रंगनाथन के घर जा रहा था। रास्ते में यह दृश्य! चिनॉय ड्राइवर से गाड़ी अस्पताल की ओर लेने के लिए कह रहा था। मैंने भी अपना स्कूटर गाड़ी के पीछे दौड़ाया। अपने अख़बार में लेटेस्ट न्यूज़ आनी चाहिए।...सबसे पहले..."

"मुझे भी घंटे भर बाद पता चला और मैं दौड़ा-दौड़ा चला आया। यहाँ आने पर पता चला, उसकी हालत ख़राब है! मरणासन्न! दो घंटे से ज़्यादा नहीं निकाल पाएगा। ब्रेन में रक्तस्राव की वजह से हार्ट पर प्रेशर ख़तरनाक...ज़्यादा-से-ज़्यादा आधा दिन...हड़बड़ी में मृत्युलेख लिखकर कंपोज़ करने के लिए दे दिया।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''हमने भी उसकी ज़िंदगी की प्रमुख घटनाओं का वर्णन और फ़ोटोग्राफ़्स ब्लॉक्स बनाकर रखे हैं। उसकी ज़िंदगी और किए गए कामों पर रोशनी डालनेवाले!''

''लेकिन ऐसे दरवाज़े पर आँखें गड़ाए कब तक बैठे रहेंगे? डॉक्टर अगर कह देते हैं कि अब उसकी जान को ख़तरा नहीं है, तो भी ठीक होता! 'लोगों के प्रिय, जुझारू नेता साक्षात मृत्यु से जूझकर फिर से हमारे बीच...' इस प्रकार की सनसनी ख़बर छाप देते। इतनी मेहनत से, भागदौड़ करके जो सामग्री मिली है उसका उपयोग...''

''लेकिन इस वक़्त ऐसा कुछ भी किया नहीं जा सकता! सब कुछ अधर में है। जान टँगी है...उसकी और हमारी भी...''

सोमवार की रात, राधाकिशन के घर दस-बारह सदस्य इकट्ठे हुए हैं। सब रंगनाथन के भरोसे के आदमी हैं। चिनॉय को इसकी ख़बर नहीं है। केवल दत्त, अरोड़ा, रामदुलारे और ऐसे ही गिने-चुने आठ-दस लोग।

रंगनाथन ने आते ही बताया, ''कल जय मुखर्जी आए थे।'' सबकी आँखों में सवाल। रंगनाथन ने आगे बताया, ''शुक्रवार को संसद के सत्र में सम्मिश्र सरकार पर अविश्वास प्रस्ताव लाने का उनका इरादा है। अपनी पार्टी के बारह सदस्यों का समर्थन मिला, तो प्रस्ताव पास हो सकता है।''

''लेकिन हम क्यों उन्हें समर्थन दें?'' राधाकिशन ने पूछा।

''मुखर्जी ने आश्वासन दिया है कि अगर उन्हें मंत्रीमंडल बनाने का मौक़ा मिला तो वह चार जगह क्रांति संगठन को देंगे।''

चार जगह, मतलब रंगनाथन और राधाकिशन को मौक़ा! मुखर्जी ने भी बताया कि यही नाम उनकी आँखों के सामने है। बाक़ी लोगों को आगामी चुनाव में टिकट मिलने की संभावनाएँ नज़र आने लगी।

''उससे पहले शर्मा और चक्रवर्ती को मंत्री पद से इस्तीफ़ा देना होगा।''

''उन्होंने वैसा करने से मना कर दिया तो?''

''साहब अस्पताल में...ऐसे महत्त्वपूर्ण निर्णय...''

''साहब बीमार हैं इसलिए इंतज़ार तो नहीं किया जा सकता! निर्णय लेना ही पड़ेगा। जल्द-से-जल्द। उपाध्यक्ष होने के नाते, आप सबकी सहमति से मैंने यह निर्णय लिया है। वह आप सबको मान्य होगा...और प्रतिबंधक भी।'' रंगनाथन ने कहा।

''मेरी राय है कि कल साहब से पाँच मिनट मिलकर उन्हें पूछा जाए। इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर उनकी राय नहीं ली गई तो पार्टी में हंगामा होगा!'' रामरतन ने कहा।

''लेकिन डॉक्टर इजाज़त नहीं देंगे...मैं आज डॉक्टर श्याम से मिला था। उन्होंने कहा, 'नो पॉलिटिक्स'!''

''मैंने सुना है कि साहब ने बहुत ज़िद की, तब डॉक्टर ने कल थोड़ी देर के लिए मिलने की इजाज़त दी है। वैसे अब उनकी तबीयत सँभल गई है। और कल उनका जन्मदिन भी है।''

''वो तो ठीक है, पर उनकी ऐसी हालत में उन्हें परेशान करना ठीक नहीं। क्या हम लोग पार्टी की भलाई-बुराई जानते नहीं?''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"वह अस्पताल में हैं, यही ठीक है। वह मुख्यमंत्री के पक्ष में हैं। अविश्वास प्रस्ताव पर सहमति देने को वह तैयार नहीं होगा। मुख्यमंत्री ने मिस्टर मित्रा को ज़मीन दी है ना! और कुछ लायसेंस भी देनेवाले हैं।...बिहारी बता रहा था।"

"बृहस्पतिवार की बैठक में इस बात पर कितना परेशान हुआ था। हार्ट पर प्रेशर यूँ ही नहीं आया। उसने बड़ी होशियारी से हमें अलग रखा है।"

"आजकल उसका 'हम करे सो क़ायदा' बढ़ता ही जा रहा है। दूसरों को ज़रा-सी स्वतंत्रता नहीं। वह तानाशाह बनता जा रहा है।"

"मगर हम क्या कर सकते हैं? वरिष्ठ नेताओं की उस पर मर्ज़ी है ना!"

"जयदीप सांस्कृतिक मंडल के साथ रूस जा रहा है। वह भी अच्छा ही हुआ।"

मैंने उसे कहा है, हो सके तो वहाँ भी बात करे..."

"स्साला, हमारी क़िस्मत भी ऐसी वाहियात है! वह स्वर्ग के द्वार से लौट आया है। हम आगे बढ़ने लगे तो वह अर्थी से उठकर हमें पीछे खींचेगा।"

"दरअसल चक्रवर्ती और वर्मा के बजाय उसे हमारे नाम सूचित करने चाहिए थे। वह हमारा सही हक़ था। हमने उसके लिए, पार्टी के लिए, संगठन के लिए इतना कुछ किया...हमें क्या मिला? संगठन मज़बूत करने के लिए और प्रसार करने के लिए संगठन के पदाधिकारी मंत्रीमंडल में न जाएँ, यह शगूफ़ा इसी ने निकाला था। जान-बूझकर हमारी उपेक्षा की थी। वर्मा और चक्रवर्ती छोटे-मोटे निर्णय भी उससे पूछकर लेते हैं। सही मायने में वही मंत्री है। वे सिर्फ़ नाममात्र के मंत्री..."

"स्वतंत्र विचारों वाले आदमी उसे नहीं चाहिए। पर हम कब तक सहते रहेंगे? भीगी बिल्ली बनकर रहना..."

राधाकिशन, रंगनाथन, सभी उससे नाराज़ हैं। जय मुखर्जी को समर्थन देने का फ़ैसला कर चुके हैं।

"यह भी संभावना है कि सरकार विरोधी पार्टी के कुछ सांसद अपने पक्ष में कर लेगी। अगर ऐसा होता है तो हमारी हालत 'ना घर का ना घाट का' होगी।" रामदुलारे ने कहा।

"मुझे तो यही ठीक लगता है कि कल हम उससे मिलें। उसे जन्मदिन की शुभकामनाएँ दें। और इस संबंध में बात करें। वर्मा और चक्रवर्ती उसके आदेश के बिना मानेंगे नहीं।"

"रामदुलारे बार-बार उस पर निष्ठा दिखाना बंद करो! कितने सालों से तुम उसके साथ हो?"

"अठारह साल हो गए..."

"उसने तुम पर जो एहसान किए थे, उसकी पूरी उगाही की है उसने तुम्हारी निष्ठा के रूप में!...मैं अगर मंत्री बना तो तुम्हें अपना पी.ए. बनाऊँगा।"

"तो फिर यह जुआ खेला जाए? क्यों राधाकिशन?"

"अगर यह जुआ हार गए तो?...तो हम पर अनुशासन भंग की कार्रवाई हो सकती है। जो भी हो, पार्टी की वजह से हम हैं।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''तू तो साला बड़ा डरपोक निकला रे! व्यर्थ ही स्कूल मास्टर की नौकरी छोड़कर राजनीति में आया है। अरे हिम्मत चाहिए...हिम्मत... ! नहीं तो रहो लाचार होकर...उसके मरने तक...''

''सुनहरा मौक़ा और साहब अस्पताल में पड़े हैं! अरोड़ा, केवल दत्त, राधाकिशन, रंगनाथन—इनके रंग-ढंग ठीक नहीं हैं। परसो रात राधाकिशन के घर पर साढ़े तीन बजे तक मंत्रणा चल रही थी। हसन अली का चचेरा भाई ढाका से उससे मिलने आया है। शाम सात बजे उसके बैरे से मुलाक़ात होने पर पता चलेगा कि क्या हुआ? मुख्यमंत्री के पीछे पड़कर जयदीप संघी-संस्कृति संवर्धन शिष्टमंडल के साथ रूस जा रहा है। संस्कृति संवर्धन के साथ-साथ राजनीति भी हो सकती है। उस दिन की वह नोक-झोंक और अब इन लोगों के यह पैंतरे! ये सब अपने आपको निष्ठावान कार्यकर्ता कहलाते हैं। कहते ये, अगर बेईमानी की तो तुम्हारी जूती हमारा सिर! जूती से नहीं पिस्तौल से उठाना चाहिए एक-एक को! रामदुलारे मोर्चे में घोषणा देता रहता था। चीख़-चीख़कर और भूख से अब तक ख़त्म हो जाता, पर साहब ने उसे सहारा दिया। अब दो वक़्त अच्छा खाता है। अच्छे कपड़े पहनता है। रिक्शा, टैक्सी में घूमता है। और अब वह भी बेईमानी पर उतर आया है। रंगनाथन के दरवाज़े पर कुत्ते की तरह पड़ा रहता है। नमकहराम स्साला! साहब को बताना पड़ेगा!''

''जय मुखर्जी अविश्वास प्रस्ताव लानेवाला है। उसे समर्थन देने का निर्णय रंगनाथन ने लिया है। वह सबसे कह रहा है कि यह निर्णय साहब का है। वर्मा और चक्रवर्ती को त्यागपत्र देने का आदेश भी साहब का ही है और एक सनसनीख़ेज ख़बर है। राधाकिशन डाकू लल्लू के गिरोह में शामिल था। उस पर ख़ून का इल्ज़ाम भी था। विरोधी पार्टी में यह फुसफुसाहट सुनाई दे रही है। उनके पास पुख़्ता सबूत है। सच क्या है, पता लगाना चाहिए। कल से यहाँ रुका हूँ। साहब से मिलने की डॉक्टर ने इजाज़त दी थी। मैं अंदर जाने ही वाला था कि रंगनाथन, राधाकिशन और अरोड़ा आ गए। मैं रुक गया। सोचा, फ़ुरसत से मिलेंगे। तब तक शेट्टी मिलने गया। फिर पता नहीं क्या हुआ, डॉक्टर ने सबको अंदर जाने से मना कर दिया। सुना है कि साहब बेहोश हो गए थे। वह किसी ऐसी-वैसी बात का प्रेशर लेनेवाले नहीं हैं। फिर यह डॉक्टर...वह क्यों मना कर रहे हैं? किसी ने जान-बूझकर उन्हें ऐसा करने पर मजबूर तो नहीं किया है? कहीं अरोड़ा...बनर्जी...केवल दत्त इनसे डॉक्टर के संबंध...आज छह दिन से नज़र रखे हुए हूँ पर कुछ भी हाथ नहीं आया। साहब को ख़बर करनी चाहिए। उनका दिमाग़ कंप्यूटर की तरह काम करता है।...ऐक्युरेट...डेटा डाला कि सोल्यूशन तैयार। कल कुछ आशा थी उनसे मिलने की। तब रंगनाथन ने अंदर जाकर झमेला कर दिया। अब सबसे कह रहा है, डॉक्टरों ने आशा छोड़ दी है।''

वरदा हर रोज़ गुलाब के फूलों का गुलदस्ता लाकर दीवार के कोने में हुक से लटका देती है। क्यों करती है वह यह सब? क्या चाहती है वह मुझसे? पदोन्नति, बदली या और कुछ? कहीं किसी से सिफ़ारिश? किसलिए? कल यूँ ही सोच रहा था। मुझे समझ लेना चाहिए। वह लड़की हमेशा ख़ुश रहे। उसकी मुक्त हँसी माहौल को ख़ुशनुमा बनाती रहे। मैंने उससे पूछा, ''क्यों करती हो यह सब? तुम्हारी ड्यूटी के अलावा...'' तब खिलखिलाकर हँसते हुए बोली, ''आपको घर का माहौल महसूस होगा...'' अस्पताल में भी मुझे हँसी आई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कृत्रिम घर का माहौल...और घर के लोगों से—भाई, बेटा, माँ से मिलने की मनाही है। उनसे बात करना भी मना है। और यह लड़की मुझे घर का माहौल महसूस हो, इसलिए फूल लाकर रखती है। आज सुबह आते ही शुभकामनाएँ देते हुए उसने धीरे-से बताया, ''सर, कल आपके गुज़र जाने की अफ़वाह फैली थी। आप ध्यान मत दीजिए! डॉक्टरों ने कहा है कि अब आप ख़तरे से बाहर हैं!''

मेरे मरने की अफ़वाह फैली, कैसे? फैली या फैलाई गई? कौन होगा इस षड्यंत्र के पीछे? अपने साथी या विरोधी? कल अपना जन्मदिन था। डॉक्टर ने थोड़ी देर के लिए घर के लोगों को मिलने की अनुमति दी थी। सुबह माँ और चाचा आकर गए थे। पाँच मिनट तबीयत के बारे में पूछा। चाचा ने शुभकामनाएँ दी। माँ ने धीरज बँधाया। मगर जाते-जाते उसकी आँखें भर आई थीं। चाचा ने कहा, ''देश के कोने-कोने से और अन्य देशों से भी शुभेच्छा संदेश आए हैं। कल-परसों तुम्हें अच्छा लगने पर पढ़कर सुनाएँगे।'' चाचा की बातों से याद आया—तीस साल पहले चाचा के साथ एक ज्योतिषी आया था। कुतूहल से उसने मेरा हाथ देखा था। उस समय मैं आम आदमी था। अतिसामान्य, तुच्छ। लेकिन उसने कहा था, ''तुम लीडर बनोगे। तुम्हें बहुत लोकप्रियता हासिल होगी।'' तब मैं हँसा था। मेरा ज्योतिष पर विश्वास नहीं था। लीडर होने की कोई संभावना नहीं थी। वैसा मैंने कहा भी था, पर उसने ध्यान नहीं दिया। ''उम्र के पचपनवे साल में बहुत बड़ा ख़तरा है। मगर मृत्युयोग नहीं है। मृत्यु तुम्हें स्पर्श कर निकल जाएगी। तुम्हें लेकर नहीं जाएगी।'' कल पचपन साल पूरे हुए। देश के कोने-कोने से संदेश आए, विदेश से भी। कई लोग अस्पताल आकर गए। तबीयत के बारे में पूछताछ की। और रात को अफ़वाह फैली...अचानक...कैसे? कहाँ होगा वह ज्योतिषी अब? मैं तो भूल ही गया था। आज सुबह अपनी मृत्यु के बारे में सुना और एकदम याद आया। क्या सचमुच मृत्यु स्पर्श कर गई? इसका मतलब अब ख़तरा टल गया! क्या हम ज्योतिष को विज्ञान मानते हैं? इत्तेफ़ाक़ से ज्योतिषी का बताया भविष्य सही साबित हुआ, उत्तरार्ध सही होगा, इसकी क्या गारंटी? मतलब...मतलब...मैं मौत के मुँह से बाहर आऊँगा, इसका कोई भरोसा नहीं?

सुबह वरदा कह रही थी, शाम साढ़े छह बजे से आधा-पौन घंटा आप बेहोश थे। पल्स रेस्पिरेशन में को-ऑर्डिनेशन नहीं था। डॉक्टर हताश होकर कार्डिओग्राम देख रहे थे। फिर इंजेक्शन देने के बाद सब ठीक हो गया। डॉक्टर ने किसी से कुछ कहा नहीं। बाहर के किसी ने...कौन होगा इस षड्यंत्र के पीछे अपनी पार्टी के...विरोधी पार्टी के...चिनॉय से मिलना चाहिए...तभी पता चलेगा...दरवाज़े पर लगे शीशे से एकटक देखनेवाली आँखें...क्या देखने की उम्मीद लिए हैं? जीता-जागता मैं या मेरा शव? इन आँखों के पीछे का उसका मन जान लेना है। उसमें प्रेम, श्रद्धा, स्नेह है या झपटनेवाले जानवर की आक्रामकता? चिनॉय...डॉक्टर मना कर रहे हैं। कहते हैं, ''आप बात करने का तनाव झेल नहीं पाएँगे। आप एकदम शांत लेटे रहिए। सोचिए मत!'' ऐसा कहने से सोचना बंद होता है क्या? वे दरवाज़े पर टिकी आँखें...उनमें कौन-से भाव हैं? नज़रों से नज़रें मिलाकर ढूँढ़ना चाहता हूँ। कोई भी कुछ भी छिपा नहीं पाएगा मुझसे...कौन चिंता से देख रहा है? कौन भक्ति भाव से? कौन कर्तव्य निभाने के लिए? अनिच्छा से...लालच से...अपनी पैनी नज़र सब कुछ साफ़-साफ़ देखती है। किसी का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भी मन उसकी आँखों में पढ़ लिया जाता है। जैसे कोई किताब पढ़ी जाती है। मेरा यह अभिमान भी कहीं झूठ तो नहीं साबित होगा? मैंने आँखें पढ़कर आदमी जुटाए। उनके मन पहचाने लेकिन...लेकिन...कहीं कोई ग़लती तो नहीं हो गई? कहीं ऐसा तो नहीं कि मैं किसी का मन, चेहरा ठीक से पहचान नहीं पाया? डॉक्टर के चेहरे के भाव कितने मासूम निरीह! अपने लिए कितना सम्मान है उनके दिल में! वरदा बता रही थी कि "मुझे अस्पताल में जब भर्ती किया गया, तब दो दिन वह घर नहीं गए थे। अस्पताल में ही ज़्यादातर इसी कमरे में थे। कितने हँसमुख, प्रसन्न, बातें भी मीठी-मीठी करते हैं। "हमें आपकी ज़रूरत है लीडर...और बहुत सालों तक...इसीलिए मैं कोई भी ख़तरा मोल लेना नहीं चाहता..." डॉक्टर ने यह दिल से कहा था। या किसी ने उन्हें बहलाया-फुसलाया है?...किसने?

कल शाम रंगनाथन आया था। पाँच मिनट के लिए...उसने सूचित किया था कि मैं अपने कार्यकर्ताओं को संदेश दूँ! क्यों? अपने जन्मदिन के उपलक्ष्य में या और कुछ है उसके दिल में? उसने कहा, वह स्वयं ध्यान रख रहा है कि इलाज में कोई कमी तो नहीं हो रही? क्या मुझे ख़ुश करने के लिए उसने ऐसा कहा? या उसका और कोई मक़सद था? उसके शब्दों में कौन-सी गंध थी? सरकार में कुछ गड़बड़ी होने की संभावनाएँ हैं। जल्दी निर्णय लेना ज़रूरी है।

उसने यह भी कहा कि आपकी बीमारी में निर्णय लेने का अधिकार आप मुझे दीजिए। राधाकिशन ने सम्मति में सिर हिलाया था। क्या है इनके दिल में? शेट्टी तो पीछे पड़ा है कि उसे उत्तराधिकारी नियुक्त किया जाए। मृत्यु किसी के लिए रुकती नहीं। क्या यह सब मेरे मरने का इंतज़ार कर रहे हैं? यह सब सोचकर मेरे सिर में टीस उठी। और शायद उसी वक़्त मैं बेहोश हो गया। शेट्टी के आकर जाने के तुरंत बाद। और फिर मेरे मरने की ख़बर फैली। फैली या फैलाई गई? अनजाने या जान-बूझकर? कहीं डॉक्टर भी इस षड्यंत्र में शामिल तो नहीं? और वह प्रसन्न रहनेवाली वरदा? चिनॉय से मिलना ही चाहिए। कल जब बेहोश हुआ, तब से डॉक्टर किसी से मिलने नहीं दे रहे हैं। कल चिनॉय क्यों नहीं आया? डॉक्टर से कहना होगा, वरना अपने मन को शांति नहीं मिलेगी। और अपनी तबीयत भी नहीं सुधरेगी। चिनॉय के बिना इस काँच पर लगी आँखों का रहस्य सुलझेगा नहीं। इन आँखों का कोई भरोसा नहीं। लेकिन अपने पीछे अपार जनसमुदाय की आँखें लगी रहती हैं। अपने लिए आदर से लबरेज़ रहती हैं। दर्द से नम होती हैं। उनकी शक्ति ही अपना बल है।

चिनॉय से कहा है, इन सब पर नज़र रखे। मेरे मरने का इंतज़ार करनेवाली, मुझे लील जानेवाली निगाहों पर! वे नहीं जानते उनकी हर एक हरकत पर उनके गले में पड़ा फंदा कसा जाएगा। अभी भी, अभी भी फंदा मेरे हाथ में है। लेकिन चिनॉय से मुलाक़ात नहीं हुई। शेट्टी और रंगनाथन के मिलकर जाने के बाद बहुत तकलीफ़ हुई, ऐसा डॉक्टरों का बयान है। परंतु चिनॉय के न मिलने से मुझे क्या कम तकलीफ़ हो रही है? कहीं यह सब जान-बूझकर तो नहीं किया जा रहा है? पूर्व निर्धारित...चिनॉय और डॉक्टर की मिलीभगत तो नहीं? और उन दोनों की किसी और से? उन्हें क्या चाहिए ज़िंदा मैं या मेरा शव? मैं या मेरा उत्तराधिकारी? या और कोई? मस्तक पर तनाव असहनीय...एक ज़ोरदार चीख़...कार्डिओग्राम पर इरेग्युलर ट्रेसिंग...डॉक्टर-नर्सेस की भाग-दौड़...शरीर में चुभन... ख़ून में सिक्विल फैलता जा रहा है...और आँखें झपकने लगती हैं...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहानी

सिंधी

आनंद टहलरामानी

बदनाम बस्ती

झोंपड़ी के बाहर, खिड़की पर बैठी, रेशमा बीड़ी पी रही थी, सूर्य की पहली किरण उसके साँवले चेहरे को चमका रही थी। उसकी आँखें कुछ रोशनी के कारण, कुछ बीड़ी के धुएँ की वजह से लाल हो गईं। उसकी पेशानी की सिलवटों से ज़ाहिर है कि वह कुछ गहरी सोच में है। मायूसी उसके चेहरे से नुमाया हो रही थी। बीड़ी के आख़िरी टुकड़े से, दो-तीन फूँक मारते हुए, बीड़ी फेंकी और उठ खड़ी हुई।

वह चारों ओर देख रही थी। बस्ती थी और झोंपड़ियाँ, कुछ नीचे, कुछ थोड़ी दूर चारों तरफ़ फैली हुई। आगे शाही रास्ता है, जहाँ सुबह की चहल-पहल शुरू हो गई। पीछे शानदार बँगले हैं, जिनमें अभी तक कोई हलचल नहीं है। यह गोपालपुरी है। शहर के सुंदर चेहरे पर बदनाम दाग़ों में से एक बड़ा दाग़! यह 'बदनाम बस्ती' के नाम से ज़्यादा मशहूर है। बदनाम इसलिए है कि, कहते हैं सभी बुराइयाँ यहाँ जन्म लेती हैं और बुरा काम इस बस्ती का सरमाया है। गंदगी, कचरे और मैल का घर है यह बस्ती! फैलती बीमारियों की जड़ यह बस्ती ही है। फिर भी इस बस्ती में इंसान रहते हैं (अगर उन्हें इंसान कहना वाजिब है तो!), जो कीड़े-मकोड़े की मानिंद बढ़ रहे हैं। और झोंपड़ियाँ भी मकड़ी के जाल की तरह फैल रही हैं।

रेशमा भी इस गंदगी का कीड़ा है। इस बस्ती का एक हिस्सा। यहीं पर उसका जन्म हुआ और पलकर बड़ी हुई। उसकी माँ के बारे में यहाँ के सभी लोग जानते हैं, उसे देखा है। वह भी इसी बस्ती की रहवासी थी। कालू रेशमा का भाई है। कहते हैं, कालू के बाप का एक रात दारू के लिए पैसे न मिलने के कारण रेशमा की माँ के साथ झगड़ा हो गया। दूसरे दिन सुबह से वह ग़ायब रहा, पर किसी ने भी उसे तलाशने की कोशिश नहीं की, क्योंकि यहाँ ऐसा होता रहता है।

'कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। संपर्क : 21, चंद्र नगर सोसायटी, वाघरिया रोड, वडोदरा 390001

अनु. **देवी नागरानी**। सिंधी-हिंदी में परस्पर अनुवाद प्रकाशित। संपर्क : 9-डी, कॉर्नर व्यू सोसायटी, 16/33, रोड, बांद्रा (वेस्ट), मुंबई-400059.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कभी कोई आदमी (पति कहना इतना लाज़मी नहीं है!) औरत से झगड़ा करे, कभी नशे में उसे मारकर चला जाता है। अकसर दो-तीन दिन के बाद लौट आता है, औरत से माफ़ी माँगता है और अच्छे चाल-चलन की क़सम खाकर ज़मानत देता है। बस समझो कि औरत-मर्द के बीच में कुछ अरसे के लिए सुलह हो गई। किन हालातों में मर्द दो-तीन महीने लापता हो जाता है और फिर अचानक एक दिन लौटकर हाज़िर होता है और औरत पर मर्द होने का दावा करता है। लेकिन अपनी जगह पर किसी और मर्द को देखकर कोहराम मचाता है। बस्ती के चार भले-बुरे आदमी इकट्ठे होकर उस पर लानत उछालते हैं। ''छी...ऐसा-वैसा! तुझमें जब औरत को पालने की हिम्मत नहीं है तो फिर तुम्हें मर्द कहलाने का कोई हक़ नहीं!'' और बेचारा बड़ों की लानत सुनकर मुँह छिपाता हुआ किसी और बस्ती में जा बसता है। औरत-मर्द के संबंध से पैदा हुआ बालक, उनके बीच की खींचतान से बेख़बर, फ़ुटपाथ पर या बस्ती में पलकर बड़ा होता है। माँ की जानकारी तो उसे अकसर होती है, पर बाप की नहीं!

कालू का बाप फिर वापस नहीं लौटा। उसकी जगह भरते हुए किसी को नहीं देखा गया। रेशमा की माँ पीछे वाले दो-चार बँगलों में मेहनत-मज़दूरी करके पेट पालती रही। कालू बड़ा हो गया, बस्ती में और लड़कों की तरह भटकता और खाता-पीता था और एक दिन यह ख़बर मिली कि उसकी माँ को बेटी हुई है। कुछ कहा-सुनी नहीं हुई। बच्चे को देखकर सब ने कहा, ''भई वाह! इसका रंग नैन-नक्श तो झोंपड़ी में रहनेवालों जैसा नहीं लगता!'' किसी और ने कहा, ''ये लड़की नहीं, जैसे कोई सुंदर गुड़िया है!'' किसी ने जोड़ दिया, ''नर्म और मुलायम ऐसी है जैसी रेशम! यह तो पालनों में पलने के लिए पैदा हुई है!''

रेशमा पालनों में तो नहीं पली, पर इस बस्ती की सख़्त पथरीली ज़मीन पर लेटी, कभी फ़ुटपाथ की पथरीली चादर पर सोकर बड़ी हुई। माँ के साथ मेहनत और मज़दूरी करके उसका शरीर पुष्ट और हड्डियाँ लोहे की तरह सख़्त हो गईं। रेशमा आज जवान है, उसके अंग-अंग से अल्हड़ जवानी झाँक रही थी, जिसकी सँभाल करने के लिए माँ का साथ था; पर पिछले बरस वह भी रेशमा को अकेला छोड़कर परलोक सिधार गई। अकेली रेशमा को अपनी जवानी की रक्षा करने के लिए कभी-कभी चंडी माता का रूप अख़्तियार करना पड़ता था।

इस बस्ती की कोई हैसियत नहीं थी। तो भी जो चीज़ खुले बाज़ार में नहीं मिलती, वह यहाँ मिल जाती है। स्त्री की इज़्ज़त और अस्मत भी और चीज़ों की तरह यहाँ बिकती है। हर चीज़ का सौदा होता है; दीन और ईमान भी बिकता है यहाँ! साँझ होते ही इस बस्ती के रंग-ढंग बदल जाते हैं, इसलिए यह बस्ती बदनाम है।

रेशमा ने इर्द-गिर्द नज़र दौड़ाई। बस्ती अभी नींद में थी। झोंपड़ियों के बाहर लोग सोये थे, पर उनमें अभी कोई हरक़त दिखाई नहीं पड़ रही थी। नीचे झोंपड़ी के बाज़ू में सूअर और उसके सात-आठ बच्चे उससे लिपटे बच्चे बारी-बारी से दूध पीने की कोशिश कर रहे थे।

खिड़की से थोड़ा नीचे रेशमा का भाई कालू टूटी हुई खाट पर लेटा था। एक कुत्ता वहाँ से गुज़रा, खाट के नज़दीक जाकर, एक टाँग उसने ऊपर की ही थी कि रेशमा ने उसे दुत्कारा और पास में पड़ा हुआ पत्थर उठाकर फेंका। कुत्ता 'कीं-कीं' करता भाग गया।

''रेशमा!''

उसने पीछे मुड़कर देखा, वह चंपा थी, जवान और गठीली, उम्र में उससे कुछ छोटी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"क्यों मुर्दार! आज सवेरे ही उठकर आ गई, रात कोई गिराहक नहीं मिला क्या?"

"भाड़ में जाए ये ग्राहक!" कहते हुए उसने बीड़ी से एक लंबा कश लिया और धुआँ नथुनों से छोड़ते हुए पास में रखे पत्थर पर बैठ गई, रेशमा ने भी उसके पास बैठते हुए पूछा, "क्यों क्या हुआ?"

"उस दिन वाली वारदात ने तो नींद ही हराम कर दी है रेशमा!" उसने रेशमा की ओर देखा और आँखें उठाकर एक सरसरी निगाह मुर्दा बस्ती पर डाली। "सोचती हूँ, हमें क्या ज़िंदा रहने का हक़ नहीं है?"

"इतनी छोटी और इतना बड़ा क्यों सोचती हो? देखती नहीं हो, जी रहे हैं?"

"मज़ाक़ में मत उड़ाओ रेशमा!" चंपा ने गंभीर आवाज़ में कहा। उसने बुझी हुई बीड़ी का टुकड़ा फेंक दिया।

"इतनी ज़िल्लत की ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं, फिर भी मुर्दार सुख से सोने नहीं देते—आख़िर क्यों?"

"क्योंकि हम ज़ुल्म सहने के आदी हो गए हैं। हममें ज़ोर और ज़बरदस्ती का मुक़ाबला करने की हिम्मत नहीं है, हम ईंट का जवाब पत्थर से नहीं दे पाते।"

"सच कह रही हो रेशमा! उस दिन जो तूने जुर्रत दिखाई, उसने थानेदार और कर्मचारियों के हौसले पस्त कर दिए। तेरी गर्जना और ललकार ने औरों में भी हिम्मत पैदा की और सब बाहर आकर खड़े हुए। नहीं तो आज यहाँ झोंपड़ियों के बजाय मैदान दिखाई दे रहा होता!"

रेशमा की नज़र झोंपड़ियों से होती हुई रास्ते तक पहुँची, यह अहसास कि उनकी ये झुग्गियाँ, पुरानी अटारियाँ भरभराकर ज़मीन पर धरी रह जाएँगी, चारों तरफ़ रह जाएगा सिर्फ़ और सिर्फ़ लकड़ियों के, पुट्ठों के, घास के, गूनियों (टाट) के और मिट्टी के ढेर। औरतें और बच्चे, जवान और बूढ़े अपने टूटे-फूटे सामान के पास, कड़ी धूप में पड़े दिखाई देंगे। किसी शजर की छाँव में, कुछ गोबर के थेपले सुलगते नज़र आएँगे, आधे नंगे बच्चे इन सब हक़ीक़तों से अनजान, अपने ही फूटे हुए नसीब के ढेरों पर खेलते और दौड़ते रहेंगे—और उसने एक ठंडी आह छोड़ी।

"एक बात कहूँ चंपा, दिल पे मत लेना!"

"बोलो, दीदी!"

"यह जिस्म का सौदा छोड़कर, इज़्ज़त और आबरू की ज़िंदगी गुज़ारने की कोशिश क्यों नहीं करती?"

चंपा भड़क उठी, "इज़्ज़त! किसकी इज़्ज़त? कौन-सी इज़्ज़त। कौन-सी आबरू? यह इज़्ज़त तो उन ऊँची इमारतों में रहनेवालों की पूँजी है, हम फ़ुटपाथ पर जन्म लेनेवालों और झोंपड़ियों में पलनेवालों के पास ऐसी नायाब चीज़ है कहाँ? हममें इस इज़्ज़त जैसी चीज़ की हिफ़ाज़त करने के लिए ताक़त कहाँ है, हौसला कहाँ है?"

"तुम भूल रही हो चंपा! हर औरत का नूर और सिंगार उसकी इज़्ज़त और अस्मत है; फिर चाहे वह औरत ग़रीब हो, चाहे साहूकार।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''ये सब कहने की बातें हैं दीदी ! जैसे आँख खुलती है तो ख़ुद को फ़ुटपाथ पर पाते हैं, फटे-पुराने कपड़ों से नंगे शरीर को ढँकते, भूखे पेट बड़े होते हैं, अभी जवानी में क़दम रखा नहीं कि कामी कुत्तों और हवस के भूखे दरिंदों के शिकार होते हैं ! कहो रेशमा ! इस पापी पेट के बारे में सोचें या इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करें ?''

''क्यों मैं ये सब नहीं जानती ? औरत बराबर नाजुक और अबला है। लेकिन उसमें शेरनी की ताक़त भी छुपी हुई है चंपा !''

''काश, सब तुम जैसी शेरनियाँ पैदा हों !''

''भरोसा रखो, तुम भी वही हो सकती हो चंपा !''

''ये सब फ़िज़ूल की बातें हैं !'' और बीड़ी सुलगाते हुए वह उठ खड़ी हुई। धुआँ हवा में छोड़ते हुए कहा, ''भला क्या रखा है इस शरीर में ! अगर रात को गंदा-मैला होता है तो सुबह उसे साफ़ करेंगे। क्या गुनाह है ? पाप क्या जिस्म में चिपक जाता है ?'' चंपा हँसती रही।

''पूरी औरत जात बदनाम होती है चंपा !''

''वैसे तो यह पूरी बस्ती बदनाम है, जो कुछ हम करते हैं, वह गुनाह है, पाप है। पर अगर यही काम वह अटारियों वाले करें तो यह उनका मन बहलाना कहलाता है। यह इज़्ज़त और शान उनकी धरोहर है, हमारे हिस्से में सिर्फ़ बदनामी है।''

''तू समझ नहीं पाएगी चंपा !''

''और मैं समझना भी नहीं चाहती !'' और वह हँसने लगी थी—थोड़ी दूर जाकर लौट आई, ''एक बात तुमसे कहना भूल गई !''

''बोलो, क्या है ?''

''तुम्हारे पास जो नारी जाति की दौलत है, उस पर कितने ही हब्शी शिकारियों की नज़र है। तुम्हारी वह दौलत लूटने के लिए साज़िश की जा रही है और कालू भी उसमें शरीक़ है। ज़रा सावधान रहना !''

रेशमा की भौंहें तन गईं, हाथों की उँगलियाँ ख़ुद-ब-ख़ुद मुट्ठी में बँधती गईं। उस वक़्त कुत्ते की गुर्राहट की ज़ोरदार आवाज़ आई। सामने रास्ते पर से तेज़ रफ़्तार से जानेवाली कार ने कुत्ते को कुचल डाला, उसकी कराहती चीख़ फ़िज़ा में फैलकर, जल्द ही सर्द हो गई।

आज बस्ती में ज़िंदगी लौट आई है। आज की शाम की रंगीनी कुछ और भी ज़्यादा है। कारण साफ़ है, कालू के तीन साथियों—गंगू, काशीनाथ और अहमद को पुलिस की ज़मानत पर आज़ाद किया गया है, यह जश्न उसी ख़ुशी में है। कुछ दिनों से बस्ती में जो मायूसी और उदासी छाई हुई थी, वह अचानक ख़ुशी में बदल गई है। कालू और उसके तीनों साथी बस्ती के सिरमौर हैं। इनकी मौजूदगी में किसी ग़ैर की बस्ती में पाँव धरने की हिम्मत नहीं होती। सरकारी दफ़्तर में उनका नाम दर्ज है। जेल भेजे जाने की धमकी उन पर कोई असर नहीं करती। वे उनसे बख़ूबी वाक़िफ़ हैं।

उनके लौटने से उनके धंधे में काफ़ी इज़ाफ़ा हुआ है। बस्ती की झोंपड़ियों के पीछे अँधेरे में अनेक सरगर्मियाँ जारी हैं। सामने रास्ते पर मोटर और गाड़ियों का रुकना बढ़ गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रास्ते की बत्तियों से कुछ दूर वे रुकती हैं, आपस में कुछ फुसफुसाहट होती है, कुछ लेन-देन होता है और गाड़ी फिर स्टार्ट होकर रास्ते पर जाती भीड़ में ग़ायब हो जाती है।

धीरे-धीरे रात की शान बढ़ती है। ट्रैफ़िक का ज़ोर कम होता है। महफ़िल का दौर बस्ती में पूरे ज़ोर पर है। मन बहलाव के हर रंग से महफ़िल गर्म है। बस्ती के पीछे बँगले की बत्तियाँ धीरे-धीरे बुझने लगीं, अंधकार गहरा था। महफ़िल के शोर के सिवा बस्तियाँ ख़ामोशी के आलम में थीं।

रेशमा अपनी झोंपड़ी में है, दरवाज़ा बंद है। अंदर हल्की रोशनी का प्रकाश है जो झोंपड़ी के सूराख़ों से बाहर झाँक रहा है।

अचानक दरवाज़े पर दस्तक हुई। रेशमा ने दरवाज़ा खोला। दरवाज़े पर खड़े शख़्स को देखकर वह चीख़ने को थी कि उस शख़्स ने फुर्ती से उसका मुँह हाथ से बंद करके, तेज़ी से दरवाज़ा बंद कर दिया। रेशमा ख़ुद को आज़ाद कराने के लिए छटपटाने लगी, पर उस मरद की मज़बूत गिरफ़्त से ख़ुद को आज़ाद कराने में असफल रही और वह जाल में फँसी मकड़ी की तरह तड़पती रही। मरद ने घसीटकर उसे कोने में पड़ी खाट पर डाला। झटके से उसकी चोली फाड़ी, लेकिन दूसरे ही पल उसकी चीख़ हवा में गूँज उठी। रेशमा के मुँह पर रखा हाथ हट गया और उसमें से ख़ून का रेला बह निकला, लेकिन दूसरे हाथ से उसने एक ज़ोरदार थप्पड़ रेशमा के चेहरे पर दे मारा। जिससे वह पलटी खाकर दूर जा गिरी।

''साली हरामज़ादी! आज तेरा ग़रूर चकनाचूर करके छोड़ूँगा! देखूँ कौन तुझे बचाता है?'' और वह जल्दी से उसकी ओर बढ़ा। ''ख़बरदार, अगर एक भी क़दम आगे बढ़ाया तो—'' और उसके हाथ में पकड़ा धारदार चाक़ू हल्के प्रकाश में चमक उठा। हवा के झोंके से जलता दीपक बुझ गया, झोंपड़ी अँधेरे में नहा उठी। भीतर गालियों की बौछार जारी थी। झटकों की वजह से झोंपड़ी हिल रही थी, डर से फड़क रही थी। एक ज़ोरदार भूकंप की तरह धरती काँपने लगी थी। एक तेज़ चीख़ झोंपड़ी के झरोखों से निकलकर हवा में गूँजती हुई महफ़िल की रौनक में समा गई। रंग में भंग पड़ते ही भीड़ झोंपड़ी की तरफ़ बढ़ी।

अचानक ज़ोर से दरवाज़ा खुला। एक वर्दी पहना हुआ शख़्स एक गट्ठर की तरह बाहर की ओर लुढ़क आया और ढलान से नीचे की ओर लुढ़कता चला गया। उसके पीछे उसकी चप्पल उस पर गिरी। खुले दरवाज़े के पास रेशमा एक हाथ में छुरी और दूसरे हाथ में जलती बत्ती पकड़े खड़ी थी। खुले हुए बाल, फटे कपड़े, आँखों से आग बरसाती, जैसे साक्षात् काली माता खड़ी हुई हो!

''बदमाश, साला हरामख़ोर, सूअर की औलाद! अगर फिर किसी औरत की तरफ़ आँख उठाकर देखा भी, तो इस बत्ती से मुँह के दूसरी तरफ़ भी जला दूँगी!''

लोगों का शोर झोंपड़ी की ओर बढ़ता गया। वह शख़्स तेज़ी से उठा, जूता सँभालकर उठाया और कराहते हुए लँगड़ाता हुआ भाग निकला। एक परछाईं झोंपड़ी के पीछे से निकलकर उसके पीछे ग़ायब हो गई।

''थू! कुत्ते की औलाद!''

और ज़ोर से दरवाज़ा बंद हो गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहानी

गुजराती

दीपक रावल

बंद गले का ब्लाउज़

बालूभाई कब से बेचैन थे! आज लीला ने क्यों देरी की होगी? रोज़ाना तो समय से आ जाती है। शंका-कुशंकावश बेचैनी बढ़ रही थी। चहलक़दमी करने के बाद वे आराम-कुर्सी में बैठ गए। उनकी नज़र सामने के घर पर गई। नारण अख़बार पढ़ रहा था। उसने बालूभाई को देखा तो अजीब-सी हँसी हँस पड़ा। बालूभाई ने मुँह घुमा लिया। उन्हें नारण का मुँह नहीं सुहाता, हरामख़ोर...साला! जब भी हँसता है तो मुँह टेढ़ा कर लुच्चई से हँसता है। पिछले कुछ दिनों से तो ...शायद उसने भाँप लिया है। खड़े होकर उन्होंने खिड़की बंद कर दी।

तकिये के नीचे से घड़ी करके रखा हुआ गुलाबी रंग का बंद गले का गरम ब्लाउज़ निकाला। हाथ से कुछ देर सहलाया। सुहावने स्पर्श का अहसास था। नटुभाई की पसंद का भी जवाब नहीं। इसीलिए तो उन्होंने नटुभाई को यह काम सौंपा था। यहाँ गाँव भर में ऐसा ब्लाउज़ नहीं मिलेगा। ऊपर से सभी दुकानदार पहचानते हैं तो पूछेंगे ही, "साहब, आप किसके लिए ब्लाउज़ ख़रीद रहे हैं?" इसी डर से नटुभाई को कहा था, "साहब, आप हरिद्वार जा रहे हैं, मेरा एक काम नहीं करेंगे?"

"अरे कहो तो, क्या काम है?" नटुभाई ने पूछा था।

"मैंने एक कामवाली रखी है। बेचारी ग़रीब विधवा है। आप तो जानते ही हैं कि घरवाली ने तो खाट पकड़ ली थी। घर के सारे काम मुझे करने पड़ते थे। ऊपर से नौकरी करनी। बेबस था। मुझे काम से राहत मिली और उसे चार पैसे का सहारा। घरवाली के गुज़रने के बाद भी उसे रखा है क्योंकि उसे छोड़ दूँ तो फिर खाने-पीने के लाले पड़ जाएँगे, घरवाली के सारे कपड़े उसको दे दिए हैं,

दस पुस्तकें प्रकाशित। कहानीकार, आलोचक। संपर्क : एम.ए. परीख फ़ाइन आर्ट्स एंड आर्ट्स कॉलेज, जी डी मोदी विध्यासंकुल, पालनपुर 385001 (बनासकांठा), गुजरात;
मो.: 09998402254;

अनु. **मदनमोहन शर्मा**। आलोचनात्मक आलेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। गुजराती-हिंदी में परस्पर अनुवाद। संपर्क : प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, सरदार पटेल विश्व-विद्यालय, वल्लभ विद्यानगर (गुज.)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर बेचारी ठंड में सिहरती रहती है। मैंने सोचा कि उसे एकाध गरम ब्लाउज़ दिलवा दूँ। मुझे पता चला कि आप हरिद्वार जानेवाले हैं, इसीलिए आपसे कहा।''

''अरे, ज़रूर ले आऊँगा, इसमें क्या है ?''

''बंद गले का लाना। जो पैसे होंगे, दे दूँगा।''

''अरे सा'ब, यह क्या बात हुई ? ब्लाउज़ किस साइज़ का लाऊँ ?''

''लगभग चालीस के आसपास उम्र है, मध्यम डील-डौल है।'' बालूभाई ने सकुचाते-सकुचाते कहा। नटुभाई को थोड़ी हँसी आ गई, पर रोके रहे। बालूभाई बड़े थे और उनके बेटे को ट्यूशन पढ़ाते थे, तो लिहाज़ करना भी ज़रूरी था। नटुभाई गुलाबी रंग का बंद गले का गरम ब्लाउज़ ले आए थे और जब पैसे देने को कहा तो उन्होंने मना कर दिया था।

बालूभाई ने ब्लाउज़ की तहें खोलीं और देखने लगे। नाप तो ठीक होगा। छाती पर शायद कसा हुआ रहे, पर दो-चार बार पहनने के बाद ढीला हो जाएगा। उन्होंने ब्लाउज़ को तहाकर फिर से तकिये के नीचे रख दिया और लीला का इंतज़ार करने लगे।

बालूभाई का असली नाम बालाशंकर है, पर सब उनको बालू के नाम से ही पहचानते हैं। बेचारे करम के फूटे थे। वैसे सारे दुःख लेकर ही जन्मे थे। घर भी ग़रीब। छोटी-सी खेती। गाँव में चार दर्जे तक पढ़े। आगे की पढ़ाई पास के गाँव इडर जाकर नहीं कर सकते थे। ख़र्च कहाँ से आता ? इडर में उनके फूफा रहते थे।

विधवा माँ ने हाथ-पैर जोड़कर उनके यहाँ पढ़ने भेजा। वहाँ बालूभाई का समय पढ़ने से ज़्यादा घर के कामों को करने में बीतता, घर की सफ़ाई, कपड़े धोना, रसोई में हाथ बँटाने में जाता था। अगर कोई भूलचूक हो जाए या देर-अबेर हो जाए तो ढोर की तरह मार खानी पड़ती थी। इस सबके बीच किसी तरह फ़ाइनल यानी सातवीं कक्षा पास की। उस ज़माने में फ़ाइनल पास करने के बाद शिक्षक या पटवारी की नौकरी मिल जाती थी। बालूभाई के शिक्षक बालूभाई की माली हालत से वाक़िफ़ थे। उन्होंने शिक्षण अधिकारी से सिफ़ारिश की और उन्हें एक आदिवासी गाँव की पाठशाला में शिक्षक की नौकरी मिल गई। उस समय आवागमन के ज़्यादा साधन नहीं थे। खेडब्रह्मा तक बस जाती थी। वहाँ से पंद्रह किलोमीटर पैदल चलकर नौकरी की जगह पहुँचे थे। गाँव के सरपंच ने पाठशाला की ही एक कोठरी में उनके रहने की व्यवस्था कर दी थी। एक कमरे की पाठशाला में दूसरे ही दिन से बालूभाई ने पाँच विद्यार्थियों को पढ़ाना शुरू किया था।

जैसे ही बालूभाई को नौकरी मिली, उनकी माँ ने उनकी शादी की तैयारी शुरू कर दी। सगाई तो बचपन में हो गई थी। विधवा माँ ने अपनी सामर्थ्य के हिसाब से ख़र्च कर शादी की। बालूभाई ने लड़की को कभी देखा नहीं था। सुना था कि हर समय बीमार रहती है। नाम था — कांता। सोलह साल की उम्र में बालूभाई उमंग से ब्याहे गए। शुरू के कुछ वर्षों तक बालूभाई नौकरी की जगह अकेले ही रहे। कांता उनकी माँ के साथ रहती थी। सास-बहू में खटपट बनी रहती। रोज़ क्लेश होता। छुट्टी में जब बालूभाई घर आते तो दोनों का खटराग मिलता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बालूभाई माँ से कुछ कह नहीं सकते थे। कांता को बहुत समझाते, पर सब बेकार। कभी-कभी तो क्लेश से ऊबकर छुट्टी बची होने पर भी वापस चले जाते। लेकिन माँ की मौत के बाद ज़बरन कांता को अपने साथ ले जाना पड़ा। कांता गाँव में ही पली-बढ़ी थी, फिर भी आदिवासी गाँव में उसको रुचता नहीं था। बात-बात में झगड़ती। उसकी बीमारी तो जाती ही नहीं थी।

बालूभाई जैसे-तैसे घर-गृहस्थी चला रहे थे। इस बीच कांता गर्भवती हुई। लगा कि संतान होने पर उसका स्वभाव बदल जाएगा, पर दुर्भाग्यवश गर्भपात हो गया। उसका स्वभाव और भी बिगड़ गया, दूसरे साल वह फिर से गर्भवती हुई, लेकिन फिर वही गर्भपात। बालूभाई ने नज़दीकी शहर के डॉक्टर को दिखाया तो उसने कहा कि ''अब संतान नहीं होगी और अगर फिर से गर्भवती हुई तो जान का जोखिम भी है।'' बालूभाई उदास हो गए, उधर कांता का क्लेश और बढ़ता चला गया। ऊपर से उसकी बीमारी में दवा-दारू का ख़र्च भी बढ़ता गया। शहर के अस्पताल तक उसे ले जाने-आने में बड़ी तकलीफ़ थी, सो उन्होंने अपनी बदली तहसील की पाठशाला में करा ली, पर दुर्भाग्य पीछा छोड़ता ही नहीं था। कांता को दिल का दौरा पड़ा और उसे लक़वा मार गया। काफ़ी इलाज कराया और अंततः उसने खाट पकड़ ली। बालूभाई ने इस हालात को ईश्वर की इच्छा मानकर स्वीकार कर लिया। संसार का सुख मानो नसीब में था ही नहीं। कांता की हालत दयनीय थी। उसके मुँह से बदबू आती रहती। ऐसे में धीरे-धीरे बालूभाई की इच्छाएँ भी जैसे मर गईं।

सेवा-निवृत्त होने में अभी दो-चार साल थे। जीवनक्रम यथावत् था। कांता की तबीयत फिर बिगड़ी, दिन में कई बार बिस्तर ख़राब कर देती। बालूभाई की चिंता बढ़ चली थी। एक दिन सामने रहनेवाला नारण आया। वह गाँव का वाहियात आदमी था। बालूभाई को वह फूटी आँख नहीं सुहाता था। उसके आने पर उन्होंने 'आओ' भी नहीं कहा, वह बैठकर कांता के बारे में पूछने लगा, फिर धीरे-से बोला, ''मेरी बात मानो तो कामवाली बाई रख लो!''

''कौन इस तरह की सेवा करने को राज़ी होगा?'' बालूभाई ने पूछा।

''मेरी नज़र में है एक। वह शांतिलाल की विधवा है न? बेचारी को खाने के भी लाले हैं। पति क़र्ज़ छोड़ गया है। मेरे भी दस हज़ार रुपये निकलते हैं। तुम्हारे घर काम करेगी तो उसे दो वक़्त का खाना मिलेगा। तुम पर काम का बोझ कम होगा और उसके वेतन से मेरे पैसे भी निकल आएँगे। तुम कहो तो बुला दूँ?''

बालूभाई के हामी भरने पर वह उसे बुला लाया। वह आकर खड़ी हो गई। नाज़ुक-रूपवती। साड़ी फटी थी पर चेहरे पर चमक...साँवली-नाज़ुक देह जो ढँके ढँक नहीं रही थी।

''क्या नाम है तुम्हारा?'' बालूभाई ने पूछा।

''लीला।''...नारण बीच में ही बोल पड़ा, ''यह गूँगी है, मैंने इसे काम के बारे में समझा दिया है। मन लगाकर काम करेगी। इस बात की गारंटी है!'' फिर लीला की ओर मुख़ातिब होकर बोला, ''मैंने कहा था न कि काम दिला दूँगा, दिला दिया न? और हाँ, साहब की हाज़िरी में कहे देता हूँ कि हर महीने आधी तनख़्वाह मुझे दे देना, भूलना मत!'' बोलते समय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नारण ने आँख मिचकाई थी, फिर टेढ़ा मुँह करके बोला, ''मैं अब चलता हूँ, अब तुम जानो और यह जाने!''

उसके जाने के बाद लीला खड़ी रही। बालूभाई ने कांता से उसकी पहचान करवाई। घर दिखाया, काम बताया, लीला झटपट काम में जुट गई। स्टोव पर पानी गर्म कर दिया। घर की साफ़-सफ़ाई की। कांता को नहला-धुलाकर कपड़े बदले। बिस्तर ठीक किया। झटपट रसोई कर डाली। पहले कांता को खिलाया, फिर बालूभाई को। गरमागरम खिचड़ी, बैंगन की सब्ज़ी, मकई की रोटी—बालूभाई ने जी भरकर खाई। लीला ने बरतन साफ़ किए।

वह घर जाने लगी तो बालूभाई ने पूछा, ''तुमने खाया?'' उसने सिर हिलाकर हामी भरी। ''रोज़ समय से खा लेना। संकोच मत करना! अपना ही घर मानना। और किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो बताना, सकुचाना नहीं।''

लीला मुँह नीचा किए सुन रही थी। बालूभाई का बोलना जारी था, ''सुबह ज़रा जल्दी आ जाना, पानी जल्दी चला जाता है।''

लीला ने फिर हामी भरी और धीमे क़दमों से चली गई।

बालूभाई काफ़ी देर तक झूले पर बैठकर उसके बारे में सोचते रहे। सोने के लिए खड़े हुए। बिस्तर तैयार था। धुली चादर और धुले हुए अस्तरवाला तकिया। लेटते ही आँख लग गई। सपने में लीला सामने खड़ी थी। वही हँसता-खिलखिलाता चेहरा, वही आँखें, वे निहारते रहे। फिर उसके चेहरे को दोनों हथेलियों में लेकर चूमने गए कि आँख खुल गई। शरीर पसीना-पसीना हो गया। काफ़ी देर तक बिस्तर पर बैठे रहे, 'अरे रे, मेरे मन में ऐसी सोच! मैं ऐसा कर सकता हूँ? किसी को पता चला तो क्या कहेगा?' वे पूरी रात माला जपते हुए बैठे रहे, परंतु माला के साथ स्मरण तो लीला का ही बना रहा।

दिन बीत रहे थे। लीला मन लगाकर काम करती थी। बालूभाई को अब घर की चिंता नहीं थी। नियमित भोजन मिलता, नींद भी अच्छी तरह आती। अब अगर सपने में लीला आए तो जागते नहीं थे, बल्कि सपने का आनंद उठाते। शरीर भी अच्छा हो चला था। लीला जब घर में काम करती, तब उससे नज़रें चुराकर उसे निहारते रहते। अगर कभी नज़रें मिल जातीं तो तुरंत नज़र झुका लेते। किसी काम से लीला पास आती या पास से गुज़रती तो दिल की धड़कन बढ़ जाती। लीला को देखकर उन्हें अपार सुख की अनुभूति होती।

इसी बीच, एक दिन कांता की तबीयत और बिगड़ गई। बालूभाई डॉक्टर बुलाकर लाए, डॉक्टर ने जाँचकर सिर हिलाते हुए कहा, ''नहीं बचेगी, कुछ घंटों की मेहमान है।''

डॉक्टर चला गया, लीला लगातार सेवा कर रही थी। रात हुई तो उन्होंने लीला से कहा, ''तुम्हें जाना है तो जाओ, मैं हूँ न!'' लीला ने सिर हिलाकर मना कर दिया और कांता की सेवा करती रही। कांता की कराहें बढ़ती गईं। शरीर खिंचने लगा। खाट में उछलने-सी लगी। लीला और बालूभाई उसे दबाए रखते थे। देर रात गए उसने प्राण छोड़ दिए। बालूभाई ने विलाप किया। आस-पास से सब लोग आ गए, सुबह अग्निदाह हुआ। बालूभाई ने विधि-विधान से क्रिया-कर्म किया, सबको भोज दिया। यथाशक्ति दान-पुण्य किया। इस बीच लीला ने घर की सारी ज़िम्मेदारी सँभाली थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सब कुछ ठीक ढंग से निपट चुका था।

एक दिन बालूभाई बिस्तर में आँखें बंद किए पड़े थे और कांता के साथ बीते वर्षों को दु:स्वप्न की तरह याद कर मन-ही-मन रो रहे थे। इस बीच नारण आ धमका।

''बालूभाई आराम फ़रमा रहे हैं ?''

बालूभाई ने जवाब दिए बिना बिस्तर में बैठते हुए, अपने मुँडाए सिर पर हाथ फिराया, नारण कुर्सी पर बैठ गया।

''बेचारी कांताबेन...मुक्त हुई...और तुम भी मुक्त हो गए नहीं ?'' उसने आदतन ताली मारने के लिए हाथ लंबा किया। बालूभाई के कुछ न बोलने पर थोड़ी देर चुप रहा फिर बोला, ''साँवली नहीं आई ?''

''कौन साँवली ?''

''अरे...लीला...'' नारण ने आँखें मिचकाईं।

''अभी-अभी काम करके गई।'' बालूभाई ने ठंडा उत्तर दिया।

''भाभी तो रही नहीं, बचे तुम अकेले। अपना काम तो कर ही लेते हो, फिर बेकार में तनख़्वाह क्यों देनी ? लीला को भी मुक्त कर दो!'' उसने धीमे-से कहा।

बालूभाई को उलझन हुई। तुरंत कोई उत्तर नहीं सूझा, लीला को काम से छुड़ाने की बात से ही वे काँप उठे। उसके आने के बाद से घर भरा-भरा-सा लगता था। जीवन अच्छा लगता था, उसकी आदत पड़ गई थी। घर की एक-एक चीज़ पर उसकी छुअन मौजूद है। अगर वह काम पर नहीं आएगी तो घर बिलकुल वीरान हो जाएगा। नारण ने लीला से काम बंद करवाने की बात इस तरह की थी, मानो लीला उसके क़ब्ज़े में थी। बालूभाई को ग़ुस्सा आया था, पर क्या करते ? चुपचाप बैठे रहे।

''क्या सोचने लगे ?''

''सोचना क्या है ? वैसे तो तुम्हारी बात सच है, पर आजकल मेरी तबीयत नरम-गरम रहती है। पहले-सा काम नहीं होता। भले ही वह काम पर लगी रहे। उस बेचारी को भी काम की तो ज़रूरत है ही न! अभी तुम्हारा क़र्ज़ा भी बाक़ी है...'' बालूभाई ने अपने मन की बात छिपाकर सावधानी से जवाब दिया।

''मेरे क़र्ज़े की चिंता मत करो। मुझे वसूलना आता है। अपनी बात करो! तुम कहते हो कि तबीयत ठीक नहीं रहती, पर लोग तो कहते हैं कि तुम अब जवान लगने लगे हो!'' नारण ने कुछ झुककर कहा, ''तबीयत के बहाने और कोई बात तो नहीं है न ?''

''देखो सँभलकर बोलो! तुम्हारे बात करने का ढंग मुझे अच्छा नहीं लगता!'' बालूभाई अपना ग़ुस्सा रोक नहीं पाए।

''ठीक है, नहीं पसंद तो नहीं कहेंगे। उसे सहारा तो मेरे यहाँ से भी मिल जाएगा। वैसे पहले भी मैं अपने यहाँ काम दे सकता था, लेकिन कांताबेन की तबीयत की वजह से आपके घर काम दिलवाया। अब अपने पैसे तो मैं अपने यहाँ काम कराकर भी वसूल लूँगा। मैं उससे बात कर लूँगा। मेरा कहना तो उसे मानना ही पड़ेगा न! चलता हूँ। आराम करो। जयश्री कृष्ण!''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नारण चला गया पर बालूभाई की बेचैनी बढ़ गई। उन्हें चिंता हुई कि कहीं उस बेचारी को फँसा न दे। रातभर सो नहीं पाए। अगले दिन जब लीला आई तो बालूभाई ने नारण के घर की ओर देखा, वह नहीं था। बालूभाई धीमे क़दमों से रसोई में गए। लीला उस घड़ी बरतन सहेज रही थी।

''एक बात करनी है, कल नारण आया था। यहाँ से तुम्हारा काम छुड़वाने की बात कर रहा था। बेकार का आदमी है। उसकी बातों में मत आना।'' वे धीमे स्वर में कह रहे थे और लीला चुपचाप सुन रही थी। उसने सिर हिलाकर हामी भरी तो उन्हें चैन पड़ा। वे लीला के कुछ और क़रीब गए, ''तुम्हें ठंड नहीं लगती? सुबह गरम कपड़े तो पहना करो! मैंने तुम्हारे लिए बंद गले का गरम ब्लाउज़ मँगवाया है। तुम्हारी छाती खुली रहती है तो मुझे नहीं सुहाता। बंद गले का ब्लाउज़ पहनोगी तो छाती ढँकी रहेगी और ठंड भी नहीं लगेगी।'' बोलते हुए बालूभाई को पसीना आ गया था। डर था कि लीला क्या करेगी? पर वह वैसे ही खड़ी रही तो उनकी हिम्मत बढ़ गई। उन्होंने आहिस्ते-से लीला के कंधे पर हाथ रखा। लीला वैसे ही ऊपर से नीचे तक काँप गई, जैसे गाय के शरीर पर कोई पंखी आ बैठने पर वह सिहर उठती है। उसने ऊपर की ओर देखा और दोनों हाथों से रसोई का प्लेटफ़ॉर्म पकड़ लिया।

''तुझे किसी बात की चिंता करने की ज़रूरत नहीं, मैं हूँ न!'' बालूभाई 'तुम' से 'तू' पर आ गए थे। लीला एकटक देख रही थी, मानो आँखों से सुन रही हो। बालूभाई ने आज लीला के चेहरे को बिलकुल नज़दीक से देखा था। विधाता ने फ़ुरसत से गढ़ा है। थोड़ी पैनी नाक, हिरनी जैसी आँखें, कसे हुए होंठ...उन्हें चूमने का मन हुआ, पर साहस नहीं हुआ। कहीं भाग न जाए...नहीं नहीं, ऐसा नहीं कर सकती। वरना, क्या इस तरह बिलकुल नज़दीक खड़ी रहती? उसकी आँखों में बालूभाई का प्रतिबिंब दिखता है। उसने पलक भी नहीं झपकी। अतिशय रोमांच हुआ। नाभि से नीचे शरीर में सरसराहट-सी हुई...ना...ना...शरीर अभी मरा नहीं है। इच्छाएँ अभी भी जीवित हैं। उनका मन हुआ कि सारे जन्म की कामना अभी पूरी कर लूँ, उन्होंने हाथ उसकी कमर पर रखा।

इसी बीच कोई बरतन गिरा...बालूभाई चौंक गए और दौड़कर रसोई से बाहर निकल गए। पलंग पर बैठकर अख़बार पढ़ने का ढोंग करने लगे। देखा कि आगे का दरवाज़ा बंद था, पीछे का खुला था...कोई देख गया होगा...तो? नारण होगा? वह तो पूरे गाँव में बात फैला देगा। इन तर्क-वितर्कों के बीच दूध लगे मुँहवाली बिल्ली दरवाजे के पास आ खड़ी हुई। बालूभाई को हुआ कि धत्त तेरे की...वैसे ही डर रहा था। बिल्ली रसोई में चली गई। लीला ने उसे ज़ोर से लात मारी और वह म्याऊँ-म्याऊँ...करती भाग निकली। बालूभाई को रसोई से धीमे-धीमे सिसकने की आवाज़ आई। शायद वह रो रही थी। उनकी इच्छा हुई कि जाकर उसके आँसू पोंछें, उसे गले लगाकर उसकी पीठ सहलाएँ, पर वे जा न सके। उन्हें ख़ुद पर धिक्कार आया। कब जाएगा यह डर? जीवन भोगा नहीं, जनम बेकार गया। आज सुख हाथ में था, पर नहीं पाया। लीला क्या सोचेगी? बालूभाई के मन में घमासान जारी था और उधर रसोई से ज़ोर-ज़ोर से बरतनों की आवाज़ आ रही थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थोड़ी देर के बाद लीला पल्लू से हाथ पोंछते हुए चली गई। बालूभाई ने सामने देखा तक नहीं। जाते समय दरवाज़ा भी ज़ोर से बंद किया और वह जैसे बालूभाई के सिर में लगा हो। बालूभाई काफ़ी देर तक आँखें बंद कर पड़े रहे, खाना नहीं खाया। याद आया कि नटुभाई हरिद्वार से आ गए होंगे। उनके यहाँ जाकर ब्लाउज़ ले आए। तकिये के नीचे रखकर सो गए। उन्हें लगा कि वे लीला की छाती पर सिर रखकर सो रहे हैं।

आज तड़के ही नित्यकर्म निपटाकर, उसका इंतज़ार कर रहे थे। कब वह आए और कब उसे ब्लाउज़ दें। पर आज वह अभी तक आई नहीं थी। उन्हें चिंता हुई। बालूभाई ने देखा कि नारण वहीं बैठा है। लगा कि लीला आएगी ही नहीं। कल की घटना से नाराज़ हो गई होगी! शायद उसे मेरी कायरता अच्छी नहीं लगी होगी! शायद डर गई हो! हो सकता है नारण ने बहकाया हो! वह भी इंतज़ार करके बैठा है। वह वाहियात कुछ भी कर सकता है। इस सोच-विचार के बीच उन्होंने लीला को आते देखा तो उन्हें चैन पड़ा। वे उठकर बैठ गए। पर उन्होंने देखा कि लीला को आते देख नारण खड़ा हो गया है। उन्हें शक हुआ। ज़रूर कोई बात है, अब क्या होगा?

लीला रोज़ाना की तरह धीमे-धीमे चलकर आ रही थी। नारण के घर के सामने आई तो उसने इशारा किया। लीला ने बालूभाई के घर की तरफ़ एक नज़र डाली और नारण के घर में चली गई। पीछे-पीछे नारण ने घर में घुसकर दरवाज़ा बंद कर दिया।

बालूभाई को काटो तो ख़ून नहीं। तकिये के नीचे तहकर रखे ब्लाउज़ को मुट्ठी में पकड़ा तो मुट्ठी छूट गई। वे निराश होकर रो पड़े।

इस बीच ज़ोर से आवाज़ आई, धड़ाक से नारण के घर का दरवाज़ा खुला। बालूभाई उठ खड़े हुए। देखा तो लीला तेज़ी से आ रही थी। हाँफ़ते-हाँफ़ते आकर बालूभाई के पास खड़ी हो गई। बाहर नारण चिल्ला रहा था, ''देख लूँगा...ये थप्पड़ तुझे बहुत महँगा पड़ेगा...तेरे पति को रुपये उधार दिए थे, उन्हें वसूल करना मुझे आता है...हाँ...!''

बालूभाई ने दरवाज़ा बंद कर दिया, लीला अब भी डर से थरथरा रही थी। उसकी छाती पर नाख़ूनों के निशान थे। बालूभाई ने तकिये के नीचे से ब्लाउज़ निकाला और उसकी छाती पर ढँक दिया। लीला बालूभाई से लिपट गई। बालूभाई ने उसे दोनों बाँहों में ले लिया...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता

अंग्रेज़ी

केकी एन. दारूवाला

गाँधी

1

तुम अंकित हो स्मृति में इस तरह
जैसे लगभग कोई और नहीं,
तुम बस एक रेखांकन,
तुम्हारा गोल गंजा सिर
जिसे तुम्हारे चश्मे की गोलाइयाँ करती हैं प्रतिबिंबित।
बाद में हल्की-सी झुक आई तुम्हारी पीठ
और छड़ी का सहारा लिए हुए तुम्हारी देह।
घुटनों से नीचे बिना वस्त्र,
मैं सोचता हूँ तुम्हारे लंबे डगों के बारे में
एक महाद्वीप के आर-पार जाते हुए,
जेलों की काली दीवारों से
दांडी के सफ़ेद नमक तक।

2

गाँधी, मुझे 'महाकाव्य'-जैसे बड़े शब्द पसंद नहीं—
हम हिंदुस्तानी ऐसे लफ़्ज़ों का इस्तेमाल करते हैं बेहद और बेपरवाह;
लेकिन अगर कोई महाकाव्य था तो वह था तुम्हारा ही जीवन।
पश्चिमी वेशभूषा में एक अभिप्रेरक गुजराती,
एक मामूली वकील
गोया किसी क़स्बे की किराने की दुकान से आया हुआ
जिसने मुक़ाबला किया अफ़्रीका की गोरी नस्ल
और गोरे नस्लवादियों से,

अंग्रेज़ी के चर्चित कवि एवं कहानीकार। जन्म : 1937। *द कीपर ऑफ़ द डैड, क्रॉसिंग ऑफ़ रीवर, नाईट रीवर* चर्चित पुस्तकें। साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत। संपर्क : 79, माउंट कैलाश, एसएफएस अपार्टमेंट्स, पॉकेट-ए, नई दिल्ली 110065; मो. 9910208237

अनु. **मंगलेश डबराल**। जन्म : 1948। सुपरिचित कवि। *पहाड़ पर लालटेन, घर का रास्ता, लेखक की रोटी* चर्चित पुस्तकें। साहित्य अकादेमी, श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार से सम्मानित। संपर्क : ई-204, जनसत्ता अपार्टमेंट्स, सेक्टर-9, वसुंधरा, ग़ाज़ियाबाद 201012; मो. 9910402459

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुक़ाबला किया सोला टोपों[1]
और सैम ब्राउनों[2] से,
और उस तेज़-तर्रार बोली से,
जिसने माली की कैंची की तरह आधी दुनिया में
तेज़ी से बनाई थी राह।
यह कोई इतिवृत्त नहीं है
वरना मैं लिखता ही चला जाता...
इतना ही कहना चाहता हूँ
कि मैं तुम्हें पढ़ूँगा बजाय होमर[3] के,
बजाय उस क़ातिल एकिलीज़[4] के कारनामों के
या बजाय उस कुटिल मेनिलेअस[5] के
या पुत्री-हंता एगामेमनॉन[6] के,
मैं तुम्हें पढ़ूँगा बजाय इलियड के।

3

वह आख़िरी साल भयावह रहा होगा तुम्हारे लिए,
तुम्हारे मुँह में प्रसन्नता और यश का स्वाद राख में बदलता हुआ,
और रक्त का वह ज्वार, जिसने कई नदियों को स्याह बना दिया,
गो कि पोरबंदर में तुम्हारा समुद्र बना रहा साफ़।

तुम लपटों और आगजनी के बीच से गुज़रे
और तेज़ धार वाले इस्पात को लहराती भीड़ में से,
जिसकी पुतलियों के कोर जल रहे थे नफ़रत से।
पार्श्व में आराम से बैठे हम सोचते थे
तुम्हारी शांति की गुहार
बदल रही है युद्ध के तड़ित्-चाल में
और तुम्हारी अहिंसा की वकालत
आनेवाली ज्वालाओं को कर रही है प्रज्वलित।
हम ग़लत थे, हमेशा की तरह—

---

1. अंग्रेज़ों के ज़माने के, कॉर्क से बने हैट, धूप से बचने के लिए।
2. अंग्रेज़ी सेना और पुलिस अधिकारियों की पेटी—जिसका चौड़ा फीता कमर में और सँकरा फीता दायें कंधे तक तिरछा पहना जाता था।
3. क़रीब 800 ईसा-पूर्व ग्रीक महाकवि, *इलियड* और *ओडिसी* महाकाव्य के रचयिता।
4. *इलियड* का केंद्रीय पात्र, ट्राय के युद्ध का नायक।
5. स्पार्टा का राजा, हेलेन का पति और ट्राय के युद्ध का नायक।
6. मेनिलेअस का भाई उक्त युद्ध का सेनापति, जिसने अपनी बेटी इफिजीनिया की बलि चढ़ाई थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारा विरोध करनेवाले सही नहीं हो सकते थे कभी।
तुम चले नोआखाली के चाक़ुओं के बीच से
और कलकत्ता की ख़ून टपकाती हुई गलियों से।
तुम जानते थे कि तुम एक ज्वालामुखी की
तीखी धारवाली चौहद्दी पर चल रहे हो,
मानव-हत्याओं की भीड़ में
तुम एक अकेली ऐच्छिक आत्महत्या की तरह।
महात्मा, तुम मृत्यु को आमंत्रित करते रहे,
जब तक गोडसे की गोली ने नहीं कर लिया तुम्हें हासिल।

तीस जनवरी की प्रार्थना

हम नहीं कहते तुमसे असंभव को संभव करने के लिए—
पदार्थ और कुछ-नहीं के बीच का अंतराल ख़त्म करने के लिए
या संसार को किसी उल्कापात से बचाने के लिए।
हम नहीं माँगते निश्िंचतता, हालाँकि हम जानते हैं
कि निश्चित कुछ नहीं की भूमि कुछ-नहीं जितनी ही बुरी है।
हम नहीं कहते जिनकी झोंपड़ी और चमड़ी जल गई है
उन्हें फिर से पहले जैसा बना दो,
हालाँकि हम चाहेंगे जहाँ जमा हो गई है राख
वहाँ फिर से संभव करो जीवन।

हमारे वक़्त की तीखी हवाएँ
उड़ा न दें प्रेम।
वक़्त की कठोर हवाएँ हमारे अवबोध को
न बदल दें एक दीवार में
जिसकी आड़ में अपने चाक़ू पैने करें लोग।
हमारे वक़्त के कठोर स्वप्न निगल न जाएँ हमें
हमारे हाज़मे समेत।
हमें मलबे के इस भू-दृश्य से ले चलो पानी की ओर,
लेकिन ध्वनियों को रहने दो वास्तविक—
ट्रैफ़िक की आवाज़ भी लगे रात की लहरों की तरह।
और पानी सिर्फ़ पानी ही रहे
बदल न जाए वह ख़ून में।

ले चलो हमें रासायनिक रंगों से वनस्पति रंगों की ओर,
प्लास्टिक से कपास की ओर,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खंड-खंड से अखंड की ओर।
हम जो क्षणभंगुर हैं,
हमें छू ले अनंतता कहीं पर।
हमें काल के पेड़ से विलग करो
और जिनमें नहीं है कोई विश्वास
उन्हें आस्था के जल से आकार दो।

जो दबे हैं उन्हें लाओ प्रकाश में,
जो गुप्त है उसे बनाओ ज्ञान।
समरसता लाओ
उनमें जो करते हों छायाओं की बात
और उनमें जो करते हों धूप की बात।

अप्रकाशमान को होने दो प्रकाशमान।
हमारी राह करो आलोकित।
वन को अँखुआने दो।
गीत को अँखुआने दो।

हिंदी

कैलाश वाजपेयी

फ़कीरचंद

जन्म : 1934। हिंदी के चर्चित कवि। *सक्रांत, सूफ़िनामा, हवा में हस्ताक्षर* चर्चित पुस्तकें। साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत। संपर्क : डी-203, साकेत एनक्लेव, नई दिल्ली 110017;
मो. 9717656207

तुम इस विसंगति को
ठीक से समझ लो
फ़कीरचंद।

यह निरी अनर्गल लड़ाई है
निर्लज्ज पूँजी के आक्षितिज फैले साम्राज्य में
एकतरफ़ा
पशोदावार निहत्थों पर

फ़कीरचंद। सच है
छेड़ा नहीं था तुमने यह महायुद्ध
जिसका इतिहास पसरा पड़ा है
देवासुर संग्राम तक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ख़ुश थे तुम देसराग गाने में मस्त
तुम्हें रहा मुग़ालता

गिद्धों की रुचि क्योंकर होगी भला
तुम्हारे सगापात पर तुम्हारे चबेने पर

लेकिन फ़कीरचंद
अतिरिक्त की रिक्ति
अति से कहीं ज़्यादा ख़ूँख़ार होती है
ग़फ़लत का दंड
घर उजाड़ू संहार है

संहार तै हो चुका था
तुम्हारी बर्बादी की पटकथा
लिखी जा चुकी थी
बीती शताब्दी में

फ़कीरचंद! माना
कमी में कभी कुछ कम नहीं पड़ता
मगर
लोभ का योग
    अधम अतिचारी है

एक की संख्या के आगे
    हज़ार शून्य भी कम पड़ते हैं

यह बलिप्रसंग है फ़कीरचंद
बिना रक्तपात का
सब स्वाहा होना है
    इस अभिचारी यज्ञ में!

सारे-के-सारे जीवधारी
बची-खुची संपदा पृथ्वी के भीतर की
और तुम हीरक हस्ताक्षर विराट के
तुम्हारी बुनी संस्कृति की

झूलन डोरियाँ
    मंजूषा स्वप्नलोक को

धूल-धूसरित जयघोष

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्मृतियाँ
एक-दूसरे को रिझाने की

लोरियाँ नन्हे-मुन्नों को सुलाने की

यह सब अब कच्चा माल है

हवन सामग्री
आवारा धनपंडों के वास्ते

इस विश्वव्यापी चक्रव्यूह से
बाहर आ पाना भी
दुष्कर है

और परंतप की भी
दृष्टि कहीं और है

लोई

बाहर पीपल के नीचे
संत समागम चल रहा था

कबीर गा रहे थे—

अनहद के बोल
गुन ढाई आखर के

और तभी भीतर से

टेरा लोई ने
रसोई तैयार है
सब संतो
जीम लो आ करके

एकाएक
बुझती धूनी से

चटख़ी चिनगारी ने

कटाक्ष किया

यहाँ सभी दास हैं
दाल भात के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंजाबी

सुरजीत पातर

कविताएँ

1.

लातिनी अमरीका का
कोलंबिया देश
मैदेयिन शहर के
उबरेरो पार्क में
कविता उत्सव के दिनों में
एक स्पेनी बच्चा
साईकिल चलाता
मेरे पास आया
मेरी पगड़ी और दाढ़ी देखकर
पूछने लगा—
'तुम जादूगर हो?'
मैं कहनेवाला था 'नहीं'
लेकिन बच्चे का उत्साह देखकर
मुझसे इनकार करते नहीं बना
मैने कहा—'हाँ,
मैं आसमान से तारे तोड़कर
लड़कियों के लिए...
हार पिरो सकता हूँ
मैं पेड़ के पत्तों में
साज के सुर भर सकता हूँ
हवा को—
किसी साजिंदे के पोर
मैं ज़ख़्मों को
फूलों में बदल सकता हूँ
हाँ मैं जादूगर हूँ।'

बच्चे ने हैरान और ख़ुश होकर कहा—
'अच्छा, तो फिर

जन्म : 1944। पंजाबी के प्रतिष्ठित कवि। *हनेरे विच सुलगदी वर्णमाला* अकादेमी से 1993 ई. में पुरस्कृत एवं चर्चित। संपर्क : 46-47, आशापुरी, अग्गर नगर के पास, लुधियाना 148001; मो. 09814504272.

अनु. **केवल गोस्वामी**। जन्म : 1940। कई कविता-संग्रह प्रकाशित। पंजाबी-ओड़िया से हिंदी अनुवाद। संपर्क : जे-363, सरिता विहार, मथुरा रोड, नई दिल्ली 110076; मो. 9871638634

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तू साईकिल को घोड़ा ही बना दे!'
मैंने कहा—'मैं बच्चों का जादूगर नहीं—
बड़ों का जादूगर हूँ।'
बच्चा कुछ देर सोचने के बाद बोला—
'अच्छा, तो फिर
तुम मेरे माँ-बाप के घर को
महल बना दो!'
मैंने खीझकर कहा—
'वास्तव में मैं चीज़ों का जादूगर नहीं
शब्दों का जादूगर हूँ।'
बच्चा मुस्कुराया—
'मैं समझ गया,
तुम पोएट हो पोएट!'
वह मुस्कुराता
पार्क के बाहर चला गया
और प्रवेश कर गया
मेरी कविता में।

2.

तुम मुझे बहुत याद आते हो
ओ कविता के तीरथ मैदेयिन

ओ श्रोताओं के रंगीले, रसीले, सुरीले समुंदर
ओ कविता के हर शब्द संग बजते महान साज
मैं तुम्हें बहुत याद करता हूँ।

तुमने मुझे किस तरह लपेट लिया था।
अपनी हज़ार-हज़ार बाँहों के बीच
तुम एक-एक शब्द के साथ समुद्र की तरह उछले

ओ मैदेयिन
तुम्हारी भोली, हिरण-जैसी आँखें, हज़ारों आँखें
मेरे साथ नम हुईं, उदासी और ख़ुशी में
एक-एक वाक्य के मोड़ के साथ।
मेरे श्रोता, हरी आँखों वाले वृक्ष बन गए
हर पंक्ति के तेवर के साथ
तुम्हारे पेड़ फलों से लद गए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ओ मैदेयिन, मैं तुम्हारा अकिंचन सहभागी
मियामी के एअरपोर्ट पर बैठा तुम्हें याद करता हूँ
जहाँ मैं बिलकुल अजनबी हूँ।

तुम्हें याद तो आता होगा
अपना अकिंचन सहभागी
ओ कविता के तीरथ मैदेयिन!

3.

रोज़ी के पीछे-पीछे
आया नंद किशोर
चलकर दूर बिहार से
सियालदह गाड़ी में सवार
उसके साथ कई और।

रामकली भी संग थी।
सुघड़ लुगाई नंद की
लुधियाने के समीप ही
एक गाँव बाड़ेहाथ में
जड़ लगी और अँखुआई
जन्मी बेटी उसकी
नाम रखा था माधुरी
कल मैंने देखा माधुरी को
उसी गाँव के स्कूल में
चोटियों को बाँध रिबन से
सुंदर तख़्ती समेटकर
ऊड़ा ऐड़ा लिख रही।

ऊड़ा ऐड़ा लिख रही
बेटी नंद किशोर की
कितना गहरा संबंध है
अक्षरों का, रोटी का।

इसी गाँव के लाड़ले पोते
अछरासिंह के
बापू की कार में बैठ
लुधियाने आते
कॉनवेंट में पढ़ रहे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ए बी सी डी सीखते

ए बी सी डी सीखते
पोते अक्षर सिंह के
कितना गहरा रिश्ता है
अक्षर और आकांक्षा का

4.

तुम्हारी हर नज़्म पातर बिक गई है
तुम्हारे गीतों का सौदा हो गया है

तुम्हारी उड़ान से ख़ुश होकर
भेजा है उन्होंने सोने का पिंजरा

उनके पौण्ड जितने भी थे मगर
रुपयों में जब तब्दील हुए
चाँद तारों से भी महँगे निकले
और सूरज उठे हुए पलड़े पर बुझ गया।

बहुत समय पहले सोने का जंगल
जब कहकर मैं लौटने लगा।
क्या तुम्हारे चाँदी रँगे काँटों में
मेरी पगड़ी का शमला अटकता है।

मैं सपने में लौटता हूँ सफ़र से
दहल जाता हूँ जो कुछ देखता हूँ
खुले हैं पट घर के दरवाज़े
आँगन का पौधा कहाँ गुम हो गया!

5.

कोई डालियों से गुज़रा हवा बनकर
हम रह गए पेड़ की आह बनकर

तुम्हारी पैड़ियों पर दूर-दूर तक मेरे पत्ते
गिरे मेरी बहारों के गुनाह बनकर

कभी बंदों की तरह भी हमसे मिलाकर
यूँ ही गुज़र जाते हो पानी कभी हवा बनकर

जब मिले थे साथी स्वर्ग सरीखे
जब जुदा हुए, तो खुदा बनकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

असमिया

मिताली भराली

रात का सागर : बढ़ता जलस्तर

रात के सागर का जलस्तर बढ़ता है
बिछौने पसीने से भीगते हैं,
विदा हो चुके सूरज के बारे में कौन सोचता है?
पानी में कछुआ साँस लेता है
रोशनी के उजले पंख फैलाकर
अँधेरे के पत्ते को तोड़कर
सो रहा है चाँद।
माघ का मेघ माटी तक उतरता है
बीस बरस की युवतियाँ
फूल की तरह महक रही हैं।
फैली हुई वसंत की
मुग्ध छाया के साथ
आवाज़ के दीए जलते हैं
हिलते-डुलते।
धान की गंधवाली पगडंडी पर धूल उड़ाती
उतर रही हैं वर्षा की बूँदें
चरवाहे की बाँसुरी की आवाज़ को चीरती हुईं।

असमिया कवयित्री। संपर्क : द्वारा वासुदेव भराली, एम.बी. रोड, शुवालकुचि, पो. शुवालकुचि, ज़िला कामरूप 781103 (असम); मो. 09864425510

अनु. **दिनकर कुमार**। जन्म : 1967। *आत्म निर्वासन, नीहारिका* प्रकाशित। हिंदी-असमिया में परस्पर अनुवाद। संपर्क : हाउस नं. 66, मुख्यपथ, तरुण नगर-एबीसी, गुवाहाटी - 781005 (असम); मो. 09435103755.

हिंदी

निदा नवाज़

बर्फ़ और आग

बर्फ़ के घरों में रहते थे
वे लोग
ठंडक बसती थी
उनकी सभ्यता में

जन्म : 1963। *अक्षर अक्षर रक्त भरा* प्रकाशित। केंद्रीय हिंदी निदेशालय से पुरस्कृत। संपर्क : निकट नूरानी नर्सिंग कॉलेज, एक्सचेंज कॉलोनी, पुलवामा 192301 (जम्मू व कश्मीर); मो. 09797831595.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बर्फ़ के सपने उगते थे
उनकी आँखों में
और आज पहली बार
वे घर लाए थे आग
इतिहास में केवल
इतना ही लिखा है।

कंकाल आदमी

क्या तुम्हें भी कभी
अपने भीतर
पत्तों के झरने की
आवाज़ें सुनाई देती हैं ?

क्या तुमने भी कभी
कबूतर की लाल होती
आँखों के सागर में
ख़ुशी-ख़ुशी अपनी नाव को
डुबो दिया है ?

क्या तुम्हें भी कभी
अपने भीतर
अपने रेवड़ से बिछुड़नेवाले
मेमने की अंतिम चीख़ सुनाई देती है ?

क्या तुमने भी कभी
रेत होती हुई आँखों के पन्नों पर
उभरनेवाली अंतिम इबारत को पढ़ा है ?

क्या तुम्हारे हाथों से भी
अधिकतर
फिसल जाती हैं मछलियाँ
और तुम देखते रहते हो
पानी पर लहरों से लिखे
प्रश्न को ?

क्या तुमने भी कभी
मरुस्थल की लपेट में आनेवाले
पेड़ की अंतिम हरियाली की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वसीयत देखी है ?

और क्या तुम्हें भी कभी
अपने विचारों के धरातल पर
अनिवार्य लगती है
एक क्रांति
पथरीले खेत की मुँडेर पर खड़े
उस कंकाल आदमी के लिए
जो अभी तक चूस रहा है
दु:खों की दराँती से कटा
अपना अँगूठा ?

अगर तुम्हारे पास
ऐसा कोई अनुभव नहीं
तो समझना
कि जीवन से तुम्हारा रिश्ता
टूट चुका है
और तुम क़ब्रिस्तान के
वह पेड़ बन चुके हो
जिसकी छाँव में
केवल मुर्दे दफ़नाए जाते हैं।

एक बड़ा शोषण

हमें चुप्पी तोड़नी होगी
उन लोगों की
जो एक रेवड़ की तरह
हाँक दिए जाते हैं
राजनीति से रँगी
सांप्रदायिकता की लाठी से
समझौतों की चरागाहों की ओर
उन्हें दिए जाते हैं
धर्म नाम के ट्रैंक्वेलाइजर्स
लगातार, मुसलसल
और उतार दी जाती है
ऊन के साथ-साथ
उनकी पूरी ख़ाल भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनके मस्तिष्क पर
रोप दिए जाते हैं
अफ़ीम और चरस के पौधे
एक बड़ा षड्यंत्र
बचपन में ही
भर दी जाती है रेत
उनकी मुट्ठियों में
अंधविश्वास की
और बाँधी जाती हैं पट्टियाँ
उनकी आँखों पर
तर्कहीनता की
फिसल जाता है उनका पूरा जीवन
उनकी उँगलियों की दरारों से
मर जाते हैं उनकी आँखों के सपने
उनके शरीर में भर दिए जाते हैं
नफ़रत के रक्तबीज
और विस्फोट किया जाता है उनका
भरे बाज़ारों में
बड़े शहरों में
रिमोट कंट्रोल द्वारा

हमें चुप्पी तोड़नी होगी
और लाना होगा उन्हें वापस
इन सांप्रदायिकता की
बारूदी चरागाहों से
यह चुप्पी अब पक चुकी है
समय की भट्ठी में
और पहुँच चुकी है उस सीमा तक
जहाँ उत्पन्न होती है
चुप्पी से एक चीख़
एक पुकार
हमें बेनक़ाब करना होगा
राजनीति और धर्म की आड़ में
रचा जानेवाला
यह आदमख़ोर शोषण।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विजय शंकर

छल

इस उम्र में भी
लोग मुझे छलते हैं

छलना!
क्या कोई स्थायी भाव है?

किसी निश्चित समय में
रहने-जगने की
यह कोई अनिवार्य शर्त तो नहीं है?
मैं छले जाने को
स्वीकार क्यों नहीं कर रहा हूँ?

जो दिख रहा है
वह झूठ है
जिसे देखना कहते हैं
वह दंभ है

शायद
छल एक रेखा है
अनगढ़-सी

अस्मिता के उद्‌भव का
कोई सूत्र है

इतना भोला
और पारदर्शी छल
इस शताब्दी में कैसे टिक पाएगा?

दुःख

पता नहीं
किसका दुःख है

ज़ेहन में उतर आया है

कुछ घटा भी नहीं
न कोई चेहरा

कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। संपर्क : 434, गणेश नगर-2, स्ट्रीट नं.-2, शकरपुर, दिल्ली 110092.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

न शब्द
न स्मृति
सूरज भी
समय पर उपस्थित था

पता नहीं किसका दु:ख है।

जिजीविषा

सब खड़े हो गए हैं
मेरे और उसके बीच

शिलालेख
स्मृतिगंध
मूर्तियाँ
घोषित-अघोषित इतिहास
शब्द और
उनके उच्चारण

नेपथ्य में
चली गई है जिजीविषा।

वंदना मिश्र

कवि चाहता है

कवि चाहता है कि उसकी कमज़ोरियों को
देखें लोग सहानुभूति से,
इसकी नादानियाँ और क्षुद्रताएँ,
कठोरता से न देखी जाकर
देखी जाएँ उसके कोमल मन के
प्रभाव में लिपटी
कि माना जाय उसे साहित्य के प्रभाव से निकला
उसकी बेवफ़ाई को जिसे वह प्यार से—
अतिरिक्त प्यार की तलाश कहता है,
स्नेहपूर्ण तरीक़े से (माफ़ किया जाय)

जन्म : 1970। कविता-संग्रह *कुछ सुनती ही नहीं लड़की* प्रकाशित। संपर्क : सहायक प्रोफ़ेसर हिंदी, जी.डी. बिनानी पी.जी. कॉलेज, मिर्ज़ापुर 231001; मो. 09415876779

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समझा जाय, वह अकसर नाराज़ हुए लोगों को
सद्भावना से शून्य मानता है।
सोचता है : मेरे प्रेमी मन को समझ पाते
अगर होते ज़रा-सा साहित्यिक,
मानता है कि जो संवेदनशील होगा
वह रेत में पानी ज़रूर देखेगा
पर ज़रा-सा संदेह होने पर कटखना हो जाता है,
अपने प्रिय के लिए कवि
सचमुच अपनी दूसरी दुनिया से
बाहर नहीं आना चाहता
और नहीं चाहता कि कोई आए
उसकी दुनिया में,
नहीं जानता कि बिना अंदर आए
कैसे समझेगा कोई उसे,
अपने राई से दुःख को पहाड़ की तरह देखता है,
कवि और दूसरों के दुःखों पर सिर्फ़ कविता
लिखता है,
चलता है टेढ़ा-टेढ़ा, कहता है समय है,
पर टेढ़ों से ख़ौफ़ खाता है,
उसकी तीन चौथाई कविता
उनके ही ख़िलाफ़ है।

बेरोज़गार लड़के

कुछ बेरोज़गार लड़के न हों तो
सूनी रह जाएँ गलियाँ,
बिना फुलझड़ियों के रह जाए दिवाली
बिना रंगों के रह जाए होली
बेरौनक़ रह जाएँ सड़कें, त्योहारों का पता न
चल पाए, बिना इनके हुड़दंग के
मंदिर सूने रह जाएँ, बिना श्रृंगार के
अगर ये चंदा न उगाहें, फूँकें ट्रांसफ़ार्मर
दिनों तक न बनें, यदि वे नारे न लगाएँ।
धरने, प्रदर्शन, तमाशों के लिए हमेशा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाज़िर रहती है इनकी जमात
हम बड़े ख़ुश होते हैं जब हमारी
सुविधाओं के लिए ये नारे लगाते हैं या
पत्थर फेंकते हैं, पर सामने पड़ते ही बिदक
जाता है हमारा अभिजात्य, हम इन्हें मुँह नहीं लगाते,
इनकी खिलखिलाहट खिझाती है हमें
हम बंद कर लेते हैं खिड़कियाँ, दरवाज़े
इनकी आवाज़ सुनकर अजीब तरह से ताली बजाकर
हँसते हैं, लफ़ंगा समझते हैं हम इन्हें,
नुक्कड़ पर खड़ा देख कोसते हैं हम,
और ये हमें स्वार्थी समझते हैं, सचमुच
हम चाहते हैं ये नज़र न आएँ हमें बिना काम
पर इन्हें कहीं खड़ा रहने की जगह
नहीं दे पाते हैं हम या हमारी सरकार।

सोमदत्त शर्मा

आहट

खलबली है
जंगल में
पेड़ों की डालों पर
चहचहातीं चिड़ियाँ
चिचियाते हुए उड़ने लगी हैं।
बेचैन बंदर
खौं-खौं कर
सूचित और सतर्क कर रहे हैं साथियों को
मानों कह रहे हों—
'वो' आ रहा है।
जंगल में चारों ओर बदहवासी फैली है
आँधी के कारण हिलती डालियाँ
और पत्तों की आपसी रगड़ से—
फैलती आग के कारण।
गीदड़, लोमड़ी, लकडबग्घे

कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। संपर्क : आई-94, गोविन्दपुरम्, ग़ाज़ियाबाद 201002; मो. 9953561402

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घबराकर इधर से उधर
दौड़ रहे हैं—
नए ठिकानों की तलाश में।
एक 'वो' है जो—
चला आ रहा है मस्ती से
अपने विचार-परिवार के साथ
बे-फ़िक्र, बे-ख़ौफ़...।

बाँध एक दृष्टि

शब्द
जब अर्थच्युत हो जाए, और
जीवन
नियमित चर्या से विमुख हो जाए, तो
भीड़ जन्म लेती है।
भीड़ समाज नहीं होती, और—
समाज, भीड़ नहीं होता।

नदी में बेकूत पानी हो,
पानी में वेग हो,
वेग में ऊर्जा हो
पर, नदी पर बाँध न हो तो—
नदी का पानी, उसका वेग, और उसकी ऊर्जा
धरती, धन-धान्य, कला और संस्कृति
सबको एक साथ लील जाती है।
नदी जीवनदायिनी हो
नदी फलदायिनी हो
इसलिए बाँधे जाते हैं
जगह-जगह बाँध।
बाँध एक दृष्टि है—
अनियंत्रित नदी को नियंत्रित करने के लिए
भीड़ को समाज बनाने के लिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सपन सारन

शब्द

क्या तुम्हें गोद में ले लूँ—
आत्ममोही बच्चे की तरह
झूला झुला दूँ, लोरी सुना दूँ?

क्या तुम्हें सिर पर बिठा लूँ—
किसी घमंडी प्रेमी की तरह
—दिन का हर मिनट तुम्हारे नाम लिख दूँ?

या फिर तुम्हें थप्पड़ जड़ दूँ
गाली दे डालूँ
बाल खींचकर
अँधेरे कमरे में
महीने भर के लिए तुम्हें बंद कर दूँ?...
...बिना पानी,
बिना हवा,
बिना बातचीत के।

और जब तुम ज़ोर-ज़ोर से
चीख़ो
चिल्लाओ
झुलसो
रोओ
तड़पो
सहमो
काँपो
और हार जाओ,
तब बाहर निकालकर
चाय पर
कवि की तरह पूछूँ
अपने शब्द से,
''मेरे साथ रहोगे न!''

कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। संपर्क : 733, बिल्डिंग 39, आज़ाद नगर 2, वीर देसाई मार्ग, अँधेरी वेस्ट, मुंबई-400058

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दरवाज़ा

किसी पुराने दरवाज़े के पीछे
जाने कौन खड़ा है।
क्या खोलना ठीक होगा?
अगर कोई पुराना प्यार हुआ तो?

क्या प्यार भी पुराना होता है
क्या यह सोचकर मैं डर जाऊँ
या दरवाज़ा खोलूँ कि नहीं खोलूँ,
इसी में देर कर दूँ!

कमरे में और भी चीज़ें हैं—
टेबल, कुर्सी, मैं, तुम
फिर ध्यान दरवाज़े पर ही क्यूँ
कहीं उसे ना खोलकर
मैं लाखों की कोई लॉटरी तो नहीं गँवा रहा?

छोड़ो!
व्यर्थ ही इतना सोच रहा हूँ
लकड़ी का इक मामूली दरवाज़ा ही तो है
और कौन-सा उसके पीछे
मेरी बरसों पहले छूटी दादी खड़ी हैं!

पर सोचो!
सोचो अगर दरवाज़ा नहीं होता
तो?
तो मुझे पता कैसे चलता कि मैं
बाहर हूँ कि अंदर?
अगर कभी मेरा दम घुटा,
तो मैं दौड़कर क्या खोलूँगा
कि घर में हवा आ जाए?
क्या केवल खिड़कियों से काम चल जाएगा?

दरवाज़ा नहीं—किसी का इंतज़ार नहीं
देर से आने पर गुस्सा नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जल्दी आने पर हड़बड़ी नहीं
नहीं आने पर दर्द नहीं
पर इतने सारे नहीं में, क्या है सही?

दरवाज़ा होने से किसी के होने का पता चलता है
ज़िंदा होने का
शायद ज़रूरी है।

कुलजीत सिंह

भटकन

भटक रहा हूँ
अजनबी ज़मीनों पर
पत्ते-सा, जल-सा,
किसी भागती चीज़ के पीछे बँधी
अवश देह-सा
ताकि घर पहुँचूँ
तुम्हारे घर लौट आने के बाद

जब हाथ हवा के हो जाएँ
तो उन हाथों की मुट्ठियों में
पकड़कर, दौड़ते घोड़े के अयाल
तुम रोक नहीं सकते उसे
न बैठ ही सकते हो उस पर उछलकर

अपघटित होने लगे प्यार
तो बेहतर है अंतहीन, लक्ष्यहीन
यात्राओं पर निकल जाना अकेले

एकाकी ही रहना हो तो रहो
अनजान शहरों में बेपहचान
सुनो देर रात के सुनसान में
अपरिचित इमारतों का करुण विलाप
खड़खड़ाती सड़कों का सनसनाती प्रलाप

जन्म : 1946। *रात की नदी* प्रकाशित। संपर्क : एम-117, गोपबंधु नगर, छेंड कॉलोनी, राउरकेला-769015 (ओड़िशा); मो. 09437341577

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाल बिखराए फ़ुटपाथ पर पड़ी
असहाय रोशनी की बेआवाज़ सिसकियों के साथ
बेसुरे काले अट्टहासों का मख़ौल

हर नए शहर से पिक्चर पोस्टकार्ड
ख़रीदो, उस पर लिखो किसी का नाम
और अपने पास सहेजकर रख लो
या पोस्ट कर दो किसी ग़लत पते पर
बिना लिखे अपना नाम

कितने क़दम और

सूरज की सीध में
सुनहले अस्थि-पंजर-सा जलता
सामने खड़ा पेड़

तेज़ हवा में मेरा चेहरा
किसी पंख की तरह
उड़ता फरफराता हुआ

समुद्र का स्याह लहराता श्मशान
कहीं-कहीं सुलगती चिंगारियाँ, एकाध लपट
नीली राख की लहरें, जल चुकी चिताओं की

अभी कुछ समय और
चलें किनारे की रेत पर
बिना पदचिह्नों के, न जाने
कितने क़दम और
हो सके तो
साथ-साथ

प्यार का साथ

एक बार आकर
जीवन में
कभी अकेला नहीं होने देता
प्यार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह आता है
तो उसके साथ होता है
मौन, अदृश्य दुःख जाता है
तो उसे कर जाता है
दृश्य, मुखर

वैसे कह सकते हैं ये भी
कि हमेशा के लिए
अकेला कर जाता है प्यार, अगर
हमारे लिए एक ही मतलब हो
अकेलेपन, दुःख और प्यार का

राजेंद्र उपाध्याय

पिता

1

पिता हर चीज़ ताले में बंद कर रखते थे
और उनकी चाबियाँ कहीं रखकर भूल जाते थे।

जब देखो तब घर में चाबी बनाने वाले सरदार जी आते रहते थे
और हर ताला, हर अलमारी खोल देते थे।

कुछ दिन बाद फिर वह चाबी खो जाती थी
और सरदार जी आते रहते थे।
और यह सिलसिला चलता रहता था।

आख़िर में वे कई चीज़ें कई अलमारियों में रखकर भूल गए
और उनकी चाबियाँ बनानेवाले सरदार जी भी कहीं चले गए!
अलमारी में से निकाल नहीं पाए पिता
अपनी ज़िंदगी के बचे-खुचे वर्ष!

2

पिता छोड़ गए चाबियों का एक गुच्छा
हमें मालूम नहीं वे किन तालों की हैं?

जन्म : 1958। कविता, कहानी एवं व्यंग्य-संग्रह प्रकाशित। हिंदी अकादमी से पुरस्कृत। संपर्क : बी-108, पंडारा रोड, नई दिल्ली 110003;
मो. 9953320721

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब भी कोई मुश्किल मामला आता था
पिता से पूछता—'उसकी कुंजी कहाँ है ?'
पिता झट बता देते थे उसका पता।

अब सवाल ही सवाल हैं
मामले ही मामले
उनकी कुंजियाँ खो गई हैं।

जामुन

सुबह शाम
गुज़रता हूँ तुम्हारे नीचे से
तुम बरसा देते हो तुम्हारे गहने
मीठे-मीठे जामुन

मैं चाहता हूँ सब बटोर लूँ
अपनी झोली भर लूँ

बाल-बच्चों के लिए
और अतिथि के लिए घर ले जाऊँ।

तुम्हारे जामुन कितने काले कितने रसीले हैं
देखते ही मुँह में भरकर चूसने की इच्छा होती है।

पर क्या करूँ
मन मसोसकर रह जाना पड़ता है
सुबह शाम तुम्हें देखकर ही केवल काम चलाना पड़ता है।

मैं तुम्हें बीन-बटोर नहीं सकता
कोई देखेगा तो क्या कहेगा
इस कॉलोनी में सब बड़े लोग रहते हैं
वो हर चीज़ ख़रीदते-बेचते हैं
कोई उन्हें मुफ़्त में दे तो नहीं लेते।

तुमने कब अपने जामुनों को बेचा है
तुमने कब अपने जामुनों का मोल-भाव किया है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुमने कब अपने जामुनों का पैसा लगाया है!

तुम तो जब भी जो भी दोगे, मुफ़्त में ही दोगे।

तुमने कब मुझसे किसी चीज़ का पैसा लिया है जो अब लोगे!

मैं कितना अभागा
तुम्हारा यह आशीर्वाद भी सिरमाथे नहीं लगा सकता।
रोज़ ठुकराकर चल देता हूँ अपने काम पर।

पालना

ख़ाली पालना झुलाना अपशगुन होता है
पर पालना ख़ाली कब होता है

उसमें हमेशा कोई-न-कोई झूलता ही रहता है
कभी ईश्वर
कभी समय

और वे दोनों भी न हों तो
शून्य
केवल शून्य!

कोई पालना कभी ख़ाली नहीं होता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नाटक

हिंदी

अशोक गुजराती

बीर-बहूटी

पात्र-परिचय

चंद्रहास	:	38 वर्ष, एमएनसी में नौकरी
अरुंधति	:	36 वर्ष, चंद्रहास की पत्नी, प्राइवेट कंपनी में नौकरी
रोचक	:	10 वर्ष, चंद्रहास-अरुंधति का बेटा
रिद्म	:	9 वर्ष, चंद्रहास-अरुंधति की बेटी
रूपा	:	20 वर्ष, नौकरानी
किशन	:	21 वर्ष, नौकर
अक्षत	:	35 वर्ष, अरुंधति का सहकर्मी
वसुंधरा	:	33 वर्ष, अक्षत की पत्नी
डॉक्टर	:	30 वर्ष, चंद्रहास का पड़ोसी

दृश्य-1

(बैठक सभी सुख-सुविधाओं के सामान से सुसज्जित, बैठक में ही एक ओर चार कुर्सियों वाला काँच के टॉप का डाइनिंग टेबल। दीवार घड़ी में रात के नौ बज रहे हैं, चंद्रहास सोफ़े पर अधलेटा-सा है, सामने सेंटर टेबल पर शराब की बोतल, आधा भरा गिलास, नमकीन की प्लेट आदि रखे हैं। चंद्रहास बेचैन है, बार-बार दरवाज़े की ओर ताकता है, ज्यों किसी का इंतज़ार हो! बीच-बीच में शराब का घूँट भरकर अपने-आपसे ही अनर्गल बोलता रहता है।)

जीवनी, कहानी-संग्रह, आलेख, उपन्यास, व्यंग्य आदि की कई पुस्तकें प्रकाशित। केंद्रीय हिंदी निदेशालय, महाराष्ट्र हिंदी साहित्य अकादमी से पुरस्कृत। संपर्क : बी-40, एफ़-1, दिलशाद कॉलोनी, दिल्ली-110095; मो. 9971744164.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चंद्रहास : अरे यार! ये दारू भी मुझे बेहोश नहीं कर पा रही...वह अब तक क्यों नहीं आई...कहीं कुछ उसके साथ ग़लत तो नहीं...पर वह इन दिनों ऐसे ही देर से आने लगी है...।

किशन : (*अंदर आकर चुपचाप खड़ा हो जाता है, चंद्रहास अपने में खोया उस पर ध्यान नहीं देता, तब वह साहस कर बोलता है।*) साब, खाना लगा दूँ...काफ़ी देर हो गई है।

चंद्रहास : (*उसकी ओर एकटक देखता रहता है, जैसे कुछ समझ न पा रहा हो।*) हाँ... नहीं... देखो, मेमसाब को आ जाने दो, तब साथ में ही डिनर लेंगे।
(*किशन जाने को होता है, उसे रोकते हुए*) रुको किशन, मेरे लिए तुम ऐसा करो, एक आमलेट गरमा-गरम बनाकर ला दो, और ए.सी. भी चालू कर दो। उफ़! बला की गर्मी है!

किशन : जी साब! (*ए.सी. चालू करने के बाद भीतर जाने के लिए मुड़ता है।*)

चंद्रहास : (*एकाएक, जैसे याद आने पर*) किशन, बच्चों ने खाना खा लिया?

किशन : साब, रोचक बाबा अपने दोस्तों के साथ फ़िल्म देखने गए हैं और रिद्म बेबी पड़ोस में अपनी सहेली के यहाँ बर्थडे पार्टी में गई है, दोनों बस आते ही होंगे।

चंद्रहास : ऐं... दोनों भी घर पर नहीं! ये क्या होता जा रहा है मेरे परिवार को...सब अपनी मर्ज़ी के मालिक जो हैं...

किशन : साब नहीं...नहीं...अभी सब आ जाएँगे, आप फ़िकर न करें, मैं आमलेट बनाकर ला रहा हूँ। (*अंदर जाता है।*)

चंद्रहास : क्या तो ज़िंदगी थी और क्या हो गई है... (*गिलास उठाकर एक झटके में ख़ाली कर देता है। काँपते हाथों से अगला पेग बनाता है। एक सिप लेता है।*) कहाँ तीस हज़ार और कहाँ ये कंगाली...सब एक पल में ख़त्म हो गया, ज्यों पानी का बुलबुला हो...(*एक और सिप लेकर*) मैं मालिक रहा ही नहीं, ग़ुलाम बन गया हूँ... लेकिन यह शराब का चस्का...इसे छोड़ना पड़ेगा। यह वैसा ही है जैसे माँ कहा करती थी—जेब में नहीं कौड़ी और बाज़ार में दौड़ा-दौड़ी... हा ऽ हा ऽ हा ऽ इसे कुछ इस ढंग से भी बयाँ कर सकते हैं—क्या था वो...हाँ, याद आया—बुआ चली...नहीं, नहीं...घर में नहीं दाने और बुआ चली भुनाने! वाह! क्या कहा है...
(*किशन आमलेट लाकर टेबल पर रखता है, चंद्रहास फिर पूरा गिलास ख़ाली कर देता है।*) किशन, पेग बनाओ! (*किशन बुदबुदाता है*) बस साब! (*उसकी तरफ़ ध्यान न देते हुए—*) किशन, तुम जानते हो, मैडम कितने बजे घर लौटती है?... अरे! पैग बनाओ न... (*ख़ुद ही गिलास में शराब डालता है और नीट ही गटक जाता है।*) मैडम... मैडम... हैं... मेरा कोई हक़ ही नहीं रहा स्साला... (*सोफ़े पर लुढ़क जाता है, किशन सहारा देकर बिठाता है।*)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किशन : साब, आमलेट खा लो! आपने नमकीन भी वैसा ही छोड़ दिया है, अभी मेमसाब आ जाएँगी तो खाना...

(*चंदर फिर लुढ़क जाता है, पहले से भी ज़्यादा।*) अरे! अरे! साब, उठो! चलो, मैं आपको बेडरूम तक ले चलता हूँ। आप वहाँ लेट जाना।

चंद्रहास : (*किशन का हाथ झटकते हुए*) तुम जाओ यहाँ से, मुझे कुछ नहीं हुआ है और हुआ है तो दिल में हुआ है। ख़ैर छोड़ो! तुम क्या समझोगे... जाओ! जाओ कहा न! (*किशन जाकर दरवाज़े के पास खड़ा हो जाता है*) दुश्मन है... समूची दुनिया मेरी दुश्मन है...अपने ही अपने नहीं रहे...क्या करूँ ?...

(*माथे पर हाथ टिकाये शून्य में देखते हुए खो-सा जाता है, मंच पर उजाला कम होता हुआ, देर तक अँधेरा। धीरे-धीरे प्रकाश।*)

(*बहुत अधिक सामान नहीं लेकिन बैठक व्यवस्थित तथा सादगी से सजी हुई। गुलदान में ताज़ा फूल। चंद्रहास एवं अरुंधति कुर्सियों पर बैठे एक-दूसरे की ओर प्यार से देख रहे हैं।*)

अरु! मैंने सोचा नहीं था कि जीवन में इतना सारा सुख एक-मुश्त मुझे मिल जाएगा।

अरुंधति : हाँ चंदर, मैं भी रात-दिन यही सोचती रहती हूँ कि इतनी ज़्यादा ख़ुशियाँ मैं कैसे तो सह पाऊँगी!

चंद्रहास : ठीक कहा तुमने, हम दोनों बहुत ख़ुशनसीब हैं। अब बस एक कमी है। हम दोनों के प्यार का जीता-जागता सबूत जल्द-से-जल्द आकर हमारे साथ खेले-कूदे, बड़ा हो और हमें बौराये रखे।

अरुंधति : (*कुछ देर चुप रहने के बाद*) चंदर, मैं कुछ और विचार कर रही हूँ। तुमको नहीं लगता कि यह ज़रा जल्दी हो जाएगा...

चंद्रहास : अरे नहीं! तुम पच्चीस की हो और मैं सत्ताईस का। साल भर बाद हम माँ-बाप बने तो उस बच्चे के पढ़ने-लिखने, नौकरी मिलने, शादी होने तक हम हो जाएँगे पचास वर्ष से ऊपर, अगर हम और देर करेंगे तो क्या बुढ़ापे में उसको सही शिक्षा, सही दिशा देने के क़ाबिल रह जाएँगे...

अरुंधति : आख़िर तुमने अपने गणित का कमाल दिखाकर हिसाब लगा ही लिया कि एक या दो बच्चों का भविष्य सँवारने के वक़्त तक हम सक्षम रहें। पर एक पहलू और है...

चंद्रहास : क्या ?... चलो, तुम भी अपना नज़रिया बता दो।

अरुंधति : चंदर, हमने प्रेम-विवाह किया है। एक साल तक हम मिलते-जुलते रहे। माना कि मौज-मस्ती करते रहे लेकिन...

चंद्रहास : हाँ, हाँ, कहो न।

अरुंधति : (*कुछ झिझकते हुए*) तुम्हें क्या लगता है, ज़िंदगी सिर्फ़ साल-दो साल की होती है। एक बार बच्चों के बीच मैं घिर गई तो हम बँट जाएँगे। जितना संभव

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है, उतना आनंद ले लें, आगे पहाड़-सा समय पड़ा हुआ है, ज़िम्मेदारियाँ निभाने के लिए...

चंद्रहास : (*गंभीर होकर*) तुम्हारी सोच ग़लत नहीं है। चलो, कुछ अरसा और इंतज़ार कर लेते हैं...

अरुंधति : (*बीच में ही*) और इस दरमियान हम हमारी माली हालत भी ऐसी कर सकते हैं कि बच्चों के पालन-पोषण में कहीं कोई कोर-क़सर न रह जाए।

चंद्रहास : मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा...!

अरुंधति : सरल है। देखो, मैं शादी के पहले नौकरी करती थी। अब फिर से शुरू कर सकती हूँ। इससे होगा यह कि हमारा डबल इंजन सारी आवश्यक सुविधाओं को खींच ले आएगा।

चंद्रहास : (*सोचते हुए*) यार! तुम भी नौकरी करोगी तो घर कैसे चलेगा... ?

अरुंधति : इटस् सो सिंपल, चंदर! हम नौकर रख लेंगे, तुम पच्चीस हज़ार कमा रहे हो। मुझे बीस हज़ार शादी से पूर्व मिलते ही थे। ये तो मुझे अपना शहर छोड़ने पर मजबूर किया हमारे प्यार ने, वरना मैं नौकरी से इस्तीफ़ा क्यों देती...! अब यहाँ पंद्रह तो मिलेंगे ही मिलेंगे, मेरे अनुभव को देखते हुए। इतने में हम सब कुछ बढ़िया जुटा लेंगे। तुम यह मुझ पर छोड़ दो...

चंद्रहास : (*थोड़ा रुककर*) अब तुम ज़िद कर रही हो तो मुझे स्वीकार है।

अरुंधति : न तुम मेरे शहर में अपने दफ़्तर के काम से आते और न हमारी भेंट होती और न हम एक-दूजे के हो पाते, मालूम है यह कैसे—क्यों हुआ ?

चंद्रहास : (*आश्चर्य से*) कैसे ?

अरुंधति : अरे भई, मैंने पहली ही नज़र में परख लिया था कि यह बंदा न केवल मुझसे प्रेम करेगा बल्कि मेरी सारी ख़्वाहिशों को सोच-विचारकर सहमति भी देता रहेगा...

चंद्रहास : और मुझे भी पहली निगाह में यह अहसास हो गया था कि तुम मुझे ताउम्र प्यार ही नहीं दोगी, सँभालोगी, सँवारोगी भी।

(कहते-कहते चंदर अरु के निकट जाता है। दोनों आलिंगन में बँधे एक-दूसरे को चूम रहे हैं कि प्रकाश धीरे-धीरे कम होता जाता है। पुनः उजाला होने पर बैठक में अरु और उसका सहकर्मी अक्षत कॉफ़ी पी रहे हैं। घड़ी में आठ बजे हैं।)

अरुंधति : अक्षत, कॉफ़ी कैसी लगी ? मैंने ख़ुद बनाई है। (*कॉफ़ी की चुस्की लेकर अक्षत प्रशंसा में सिर हिलाता है।*) आज रूपा—हमारी नौकरानी शाम से छुट्टी लेकर गई है। मेरा ख़याल है, एक और नौकर रखना पड़ेगा।

अक्षत : वह भला क्यों... आप दोनों ही तो हैं।

अरुंधति : एक न आए तब दूसरा होता ही है और वैसे भी हमें दोनों की ज़रूरत है।

अक्षत : वह क्यों ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अरुंधति : वह इसलिए कि एक खाना-नाश्ता-चाय बनाए तो दूसरा घर की साफ़-सफ़ाई करे और छोटा-मोटा काम। इसमें कहीं कोई बाधा नहीं रहेगी। फिर बच्चे होने के बाद...

अक्षत : हाँ, तब तो तकलीफ़ होगी।

(*थोड़ी देर दोनों चुपचाप कॉफ़ी पीते रहते हैं।*)

(*अचानक अक्षत*) आपने यह नौकरी ले ली, इससे कोई समस्या नहीं रहेगी!

अरुंधति : सच कहते हो, दोनों पति-पत्नी नौकरी में हों तो कम-से-कम धन की समस्या नहीं रहती।

अक्षत : लेकिन क्या पैसों की समस्या ही सबसे प्रमुख है ?... मुझे देखो, मैं अकेला कमा रहा हूँ, शी इज़ सिंपली ए हाउस वाइफ़!

अरुंधति : हाउस वाइफ़ मैं भी थी, ज़िद करके जॉब कर रही हूँ।

अक्षत : फ़र्क़ इतना ही है कि मैं घर जाता हूँ, तब वह मुझे पूरे प्यार से खाना खिलाती है। थकी होती है लेकिन समर्पण में कोई क़सर नहीं छोड़ती।

अरुंधति : यानी तुम उसको गृहस्थी की सारी ज़िम्मेदारियाँ सौंपकर निश्चिंत यहाँ बैठकर एक तरह से अकेले राज कर रहे हो!

अक्षत : *(सिटपिटाते हुए)* नहीं, नहीं, ऐसा भी नहीं है। मैं उसके दुःख-दर्द का ख़याल रखता हूँ। अब अगर मैं दिन भर बाहर काम कर पैसे कमा रहा हूँ तो वह मेरा घर सँभाल रही है।

अरुंधति : मेरा घर! हमारा नहीं कह सकते न, क्योंकि तुमको लगता है कि मैं पैसा कमा रहा हूँ तो मैं सर्वेसर्वा हूँ। इसका मतलब तुम उसे कनीज़ ही समझते हो...

अक्षत : ऐसा बिलकुल नहीं है। मैं उससे प्रेम करता हूँ। हमने हमारे काम बाँट लिए हैं। वह घर सँभालती है, मैं घर के ख़र्च का ज़िम्मा उठाता हूँ।

अरुंधति : यह बँटवारा पारंपरिक रूप से एकदम सही है लेकिन वह चारदीवारी में क़ैद रहती है, यानी वह तुम्हारी ग़ुलाम नहीं हुई तो क्या हुई?

अक्षत : ये अपना-अपना नज़रिया है। आप दोनों कमा रहे हैं। आप स्त्री-मुक्ति का परचम लहरा रही हैं लेकिन क्या वह शांति, वह संतुष्टि, वह समाधान आप लोग रुपयों से पा सकते हैं, जो हमें सहज-सुलभ हैं ?...

अरुंधति : हमको नहीं, अकेले तुम्हें! रहा हमारा सवाल, हम दोनों इस समझौते में सौ फ़ीसदी संतुष्ट हैं। आपसी संतुलन में कोई दिक़्क़त नहीं है। दिनभर हम दोनों आज़ाद हैं तो बाक़ी वक़्त में निकटता का भरपूर आनंद भी भोग लेते हैं। आवक है तो नौकर है। सारे भौतिक आवश्यकता के साधन उपलब्ध हो रहे हैं। हम सुखी हैं।

अक्षत : हम दोनों भी। इससे यह सिद्ध हुआ कि चाहे मेरी राह पर चलें या आपके रास्ते जाएँ, हम संयमित आचरण करें तो दोनों किनारे ख़ुशहाली रहेगी।

अरुंधति : नहीं! मेरा मत तुमसे अलग है। औरत को तुम बाहरी दुनिया में आने-जाने से रोक रहे हो! क्या उसकी क़ाबिलियत का सिला उसे रसोई में खपने से ज़्यादा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं मिलना चाहिए? या वह भी हमारी दादी-नानी-जैसी ज़िंदगी जिये, वहीं मरे...

अक्षत : ना... ना... पर आपका फ़ॉर्मूला उन पर लागू होता है, जो पढ़ी-लिखी हैं।

अरुंधति : तो तुमने कम पढ़ी-लिखी से विवाह क्यों किया? क्या यह भी साज़िश का एक हिस्सा नहीं है?

अक्षत : मेरे बारे में यह सरासर झूठ है! मेरा विवाह माँ-बाप की मर्ज़ी से हुआ। वह ज़्यादा पढ़ी-लिखी नहीं थी तो मैं क्या कर सकता था...

अरुंधति : शादी से इनकार। ख़ैर! अब जो हो गया पर अगर तुम्हें पढ़ी-लिखी बीवी मिलती और तुम न भी चाहते तो भी वह तुम्हारे कारावास से मुक्त होने की कोशिश करती। बल्कि मुझे भरोसा है, तुम भी उसका साथ देते—जैसे चंद्रहास ने मेरा दिया है। इससे होता यह कि दुगुने वेतन में आराम की ज़िंदगी नसीब होती और तुम्हें कोई शिकायत नहीं होती।

अक्षत : इसमें एक ख़तरा मुझे दिखाई देता है, दोनों के बीच किसी तीसरे का प्रवेश।

अरुंधति : तुम कहना चाहते हो, तीसरा व्यक्ति पत्नी का प्रेमी हो सकता है...

अक्षत : हाँ, यह अंदेशा तो बना रहेगा ही।

अरुंधति : और पुरुष नौकरी करेगा तब ऐसा कभी कुछ संभव नहीं है!

अक्षत : मैं... न...

अरुंधति : क्या, मैं... न...! आदमी को परस्त्री-गमन का पूरा अधिकार हमारे पुरुष-सत्तात्मक समाज ने दे ही रखा है, तुम भी मर्द ही हो न...

अक्षत : लेकिन स्त्री के पर पुरुष संबंधों से सब कुछ बरबाद नहीं हो जाएगा?

अरुंधति : और पुरुष के विवाहेतर कार्यकलापों से क्या होता है?

अक्षत : वह समाज में किसी हद तक मान्य है। लेकिन इसका इलाज भी है और यह स्त्री की चरित्रहीनता-जैसा भयानक भी नहीं है।

अरुंधति : कहना तुम यह चाह रहे हो कि इस तरह की आज़ादी मर्द को मिले लेकिन औरत को बिलकुल नहीं। क्यों भई, यह भेदभाव क्यों?

अक्षत : क्योंकि स्त्री, स्त्री है जबकि पुरुष, पुरुष!

अरुंधति : तुम किस काल में जी रहे हो! ज़रा ख़ुद को अपडेट करो! गया वो ज़माना, अब मर्द-औरत के समान अधिकार हैं।

अक्षत : यानी औरतें कुछ भी कर सकती हैं?

अरुंधति : नहीं, तुम स्त्री को अभी तक समझ नहीं पाए। अपवाद हो सकता है, लेकिन कोई भी समझदार औरत बिना किसी विशेष परिस्थिति के कभी भी अपने चरित्र से समझौता नहीं करेगी। और अगर मर्द-जैसा वह भी किसी कारण ऐसा दुस्साहस कर जाती है तो तुम्हारे पुरुष-प्रधान समाज को ऐतराज़ क्यों है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अक्षत : (*लगभग हार की मुद्रा में*) आपका तर्क विचारणीय है। मुझे आपसे आज बहुत-कुछ सीखने को मिला है। अर्धांगिनी मात्र अंग से ही नहीं, कर्म से भी पूरक होनी चाहिए।

अरुंधति : बिलकुल। लेकिन कर्म सिर्फ़ बाहर का ही नहीं होता। घर के कामकाज को तुम अपनी नौकरी के बराबर क्यों नहीं समझते ?

(*घंटी बजने पर अरुंधति दरवाज़ा खोलती है। चंद्रहास का प्रवेश।*)

चंद्रहास : (*अक्षत की ओर अपरिचय से देखते हुए, अरुंधति से*) बहुत थक गया हूँ यार! क्या बताऊँ रास्ते में भयंकर जाम लगा हुआ था! (*पसीना पोंछते हुए बैठता है।*)

अरुंधति : इनसे मिलो, मेरे सहकर्मी हैं अक्षत। (*दोनों हाथ मिलाते हैं।*) अपनी ही कॉलोनी में रहते हैं। ऑफ़िस से लौटते हुए मैंने कॉफ़ी पर बुला लिया।

चंद्रहास : अच्छा किया और भाई अक्षत, कैसा लगा हमारा ग़रीबख़ाना ?

अक्षत : बढ़िया है। अभी हमारी इसी विषय पर चर्चा चल रही थी। अरुंधति जी ने आख़िरकार मुझे कन्विंस कर दिया कि पत्नी का नौकरी करना हर तरह से फ़ायदेमंद है।

चंद्रहास : यह तो है ही। अरु, आज अक्षत जी पहली बार आए हैं। तुम इनको केवल चाय-कॉफ़ी पर टाल रही हो, यह कहाँ तक उचित है ?

अरुंधति : मैं समझ गई। अक्षत जी, आप लेते हैं न ?

चंद्रहास : (*अक्षत को शायद सवाल समझ नहीं आया, यह सोचकर*) भैया, दारू-शारू चलती है न ?

अक्षत : कभी-कभार ले लेता हूँ, लेकिन आज नहीं। घर पर वसुंधरा प्रतीक्षा कर रही होगी। (*उठते हुए*) मैडम, अब मैं चलूँगा। सर जी, माफ़ी चाहता हूँ।

चंद्रहास : किस बात की! फिर कभी बैठेंगे।

(*दोनों अक्षत को छोड़ने दरवाज़े तक जाते हैं।*)

अरुंधति : (*वापिस आते हुए*) चंदर, तुम नए नौकर की व्यवस्था करनेवाले थे ?

चंद्रहास : (*कलाई घड़ी देखकर*) कहा तो था उसने आने के लिए। जहाँ काम करता है, वहाँ का निपटाकर आएगा। (*घंटी बजती है*) लो, शायद आ गया!

(*चंदर दरवाज़ा खोलता है, किशन का प्रवेश*)

हाँ भई किशन, क्या तय किया तुमने ?

किशन : साब, आप माथुर साब से दो सौ रुपये ज़्यादा देंगे तो हम क्यों नहीं आएँगे ?

अरुंधति : दे देंगे, कब से आओगे ?

किशन : आज उनतीस तारीख़ है। एक से आ जाऊँगा, मेमसाब!

अरुंधति : ठीक है, सुबह सात बजे आ जाना! मैं सारा काम समझा दूँगी।

किशन : अच्छा साब, अब जाते हैं। (*जाता है...*)

अरुंधति : मैं खाने का देखती हूँ। रूपा शाम से छुट्टी लेकर गई है।

किशन : पहले मुझे पानी, गिलास, नमकीन आदि देती जाओ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(अरु भीतर से पानी की बोतल, आइस बॉक्स, नमकीन लाकर सेंटर टेबल पर रखती है। तब तक चंदर अपने ऑफ़िस बैग से पव्वा निकाल लेता है।)

चंद्रहास : तुम भी बैठो!

अरुंधति : बस दो मिनट में आई। सुबह रूपा खाना बनाकर चली गई थी। सब्ज़ी-दाल गरम करनी है। (*जाती है*)

(चंदर पैग बनाता है। सिप लेकर हाथ में गिलास पकड़े चहलक़दमी करता हुआ कमरे का चारों दिशाओं में निरीक्षण करता है, थोड़ी देर में अरु आती है।)

चंद्रहास : ए.सी. लगाना है, नया एलसीडी टीवी लेना है, पर्दे बदलने हैं—कितना कुछ करना है!

अरुंधति : फ्रिज़ और अवन के बग़ैर मुश्किल हो रही है। चिमनी भी लगानी है, छत की दीवारों पर कालिख जम रही है। वॉशिंग मशीन, कूकिंग रेंज...

चंद्रहास : हौले-हौले सब हो जाएगा। अगले महीने मेरा प्रमोशन ड्यू है। तुम्हारा भी वेतन, क़रीब साल भर होने को आया, बढ़ना चाहिए।

अरुंधति : बढ़ेगा, दो महीने बाद। चंदर, मैंने कहा था न कि हम दोनों नौकरी करने लगेंगे तो सारा कुछ लाइन पर आ जाएगा।

चंद्रहास : तुमने जैसा प्लान किया, वैसा ही हो रहा है। नया नौकर भी आ गया है। अब मेरे सपने को भी सच में बदलने की घड़ी नज़दीक आ रही है।

अरुंधति : तुम्हें और कुछ सूझता नहीं है। मैं माँ बनूँगी तो नौकरी का क्या होगा?

चंद्रहास : क्या होगा! मैटर्निटी लीव मिल जाएगी, और क्या! बाद में रूपा-किशन सँभालने के वास्ते हैं ही। बहुत हुआ तो 'डे केयर' में छोड़ जाएँगे। अब मेरा मन बच्चे के बिना लगता नहीं है!

अरुंधति : लगता तो मेरा भी नहीं है! कितना वीरान लग रहा है घर! बच्चे रहेंगे तो हरदम चहल-पहल बनी रहेगी।

चंद्रहास : पता है तुमने अभी क्या कहा—बच्चे!

अरुंधति : मैं क्या दो के लिए मना कर रही हूँ। एक बेटी—एक बेटा, बस!

चंद्रहास : मुझे मंजूर है। और आज का दिन भी शुभ है (*मुस्कुराकर*) बीजारोपण के लिए। (*गिलास से अंतिम घूँट लेकर अरु के पास जाता है।)*

अरुंधति : चलो हटो! इतनी क्या जल्दी है!

चंद्रहास : अरे भई, इसकी योजना नौ महीने पहले बनानी पड़ती है, आओ। (*अरु को पकड़कर अपने निकट बिठाता है।)* मेरे लिए दूसरा और आख़िरी पैग बनाओ। फिर खाना खाएँगे और... (*अरु पैग बना रही है और चंदर उसे यहाँ-वहाँ स्पर्श कर छेड़ रहा है। अरु बनावटी ग़ुस्से से उसे बरत रही है। प्रकाश कम होते-होते बुझ जाता है।)*

(उजाला होने पर बैठक की कुछ नई साज-सज्जा। रूपा अपने कपड़े तहा रही है। किशन थोड़े फ़ासले पर खड़ा दत्त-चित्त हो उसे निहार रहा है।)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किशन : रूपा, तुमको यह फ़रक़ दिखाई नहीं दिया ?

रूपा : कौन-सा, कहाँ पर ?

किशन : यही हमारे साब के मकान में। तुम तो पहले से ही काम कर रही हो। मैं जब आया-आया था, ये घर ख़ाली-ख़ाली लगता था। अब कितना सामान नया आ गया है...

रूपा : ये तो होना ही था, पहले अकेले साब नौकरी करते थे। एक-डेढ़ साल से दोनों इतना कमा रहे हैं कि नई-नई चीज़ें ख़रीदते ही जा रहे हैं।

किशन : पर रूपा, ये भरा-भरा घर फिर भी सूना नहीं लगता क्या ?

रूपा : वो तो है ! जब तक नन्हे-मुन्ने नहीं आ जाएँ, सूना-सूना ही लगेगा। और जल्दी ही वे आनेवाले हैं...

किशन : तेरे को कैसे पता ?

रूपा : ये औरतों के जानने की बातें हैं, तुम नहीं समझोगे।

किशन : ख़ैर छोड़ो, तुम्हारे कितने बच्चे हैं ?

रूपा : (*नाराज़ होते हुए*) तुमको शरम नहीं आती ये पूछते हुए... (*नक़ल उतारते हुए*) बच्चे कितने हैं ?... मेरा ब्याह नहीं हुआ तो क्या बच्चे आसमान से टपक पड़ेंगे ?

किशन : नहीं, टपकेंगे तो नहीं !

रूपा : *(थोड़ी नाराज़गी)* तुम्हारे कितने हैं ?

किशन : मेरे ? तुमने ही बताया कि आसमान से नहीं टपकते...

रूपा : *(ज़रा प्यार से)* फिर ?

किशन : अगर तुम चाहो...

रूपा : क्या फ़ालतू बक रहे हो !

किशन : बकता नहीं, सच कहता हूँ। (*थोड़ा रुककर*) क्या मैं इतना बुरा हूँ...

रूपा : मैंने ऐसा कब कहा ?

किशन : साब-मेमसाब दिन भर बाहर रहते हैं, हम खाना बनाने, साफ़-सफ़ाई करने में ही खोए रहते हैं, आगे बच्चे भी सँभालेंगे। क्यों न हम ये सारे काम साथ मिलकर करें...

रूपा : साथ ही तो करते हैं।

किशन : वैसे नहीं, (*उसके निकट जाते हुए*) ऐसे !

रूपा : ऐसे। यानी...

किशन : वैसे ही ज्यों... (*उसके कंधे पर हाथ रखते हुए*) कोई मर्द-औरत करते हैं...

रूपा : (*दूर हटते हुए*) चलो जाओ, तुम तो बहोत बेशरम हो !

किशन : (*दोबारा उससे सटने के प्रयास में*) बेसरम तो हूँ !

रूपा : (*छिटकते हुए*) देखो जी, मेरे को ये सब पसंद नहीं, हाँ !

(गुस्से से इठलाते हुए अंदर जाती है)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दृश्य-2

(बैठक वही, पर सब बदला-बदला। लग्ज़री वस्तुओं से बैठक ठसाठस भरी नज़र आती है। ए.सी. लगा है, डाइनिंग टेबल आ गया है, परदे नए हैं, सोफ़ा-सेट भी, सजावट आकर्षक है। किसी उच्च मध्यमवर्गीय का ड्रॉइंग रूम लगता है। किशन झटकनी से धूल झाड़ रहा है। रूपा का प्रवेश।)

रूपा : क्या कर रहे हो, किशन?

किशन : वही रोज़ का काम। तुम्हारा खाना बन गया?

रूपा : हाँ, अभी-अभी ख़तम हुआ है सारा काम, ज़रा ए.सी. चला दो न, गर्मी लग रही है!

किशन : (*ए.सी. के रिमोट का बटन दबाते हुए*) समय कैसे हवा-जैसा पंख लगाकर उड़ रहा है...

रूपा : मेरे को पता ही नहीं चला, किस तरह ये दस साल बीत गए।

किशन : दस से ऊपर हो चले हैं, तब से अब तक कितना बदलाव आ गया है। घर में चारों ओर ख़ुशहाली ही ख़ुशहाली है। बच्चे बड़े हो गए हैं। साब-मेमसाब सुखी हैं लेकिन...

रूपा : लेकिन क्या?

किशन : तुम नहीं बदली, अब भी किसी बछिया-सी बिदकती रहती हो!

रूपा : मैं बिदकती हूँ और तुम साँड-जैसे उछलते हो!

किशन : सच बताऊँ, इन दस सालों में गाँव से माँ-बाप के कई संदेशे आए, वो मेरे लिए लड़की देख-देखकर आख़िर थक गए। मैं आनाकानी ही करता रहा।

रूपा : भला ऐसा क्यों?

किशन : बता दूँ?... मेरे मन में कोई और ही समाई हुई है!

रूपा : अच्छा! कौन है वो किस्मतवाली?

किशन : (*मुस्कुराकर*) तुम्हारे सिवा और कौन हो सकता है! रूपा, अब रूठना छोड़ो, मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ। साब नया मकान बनानेवाले हैं, वहाँ सरवेंट कार्टर में हम अपनी गिरस्ती जमाएँगे, साथ काम करेंगे और साथ ही रहेंगे...

रूपा : मेरी माँ भी कब से शादी के लिए मेरे पीछे पड़ी है!

किशन : तो फिर कर लेते हैं शादी!

रूपा : (*इतराकर*) बातें बनाना कोई तुमसे सीखे!

किशन : नहीं, मैं तुम्हारी कसम खाकर कहता हूँ...

(तभी दोनों बच्चे दौड़ते हुए आते हैं।)

रोचक : किशन काका, आपको पता है, आज मम्मी-पापा कहाँ गए हैं?

किशन : मम्मी-पापा? कहाँ जाएँगे...ऑफ़िस गए हैं!

रिद्म : नहीं, नहीं, ऑफ़िस से कहाँ जाएँगे?

किशन : दफ्तर से घर आएँगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोचक : (*अपना मोबाइल दिखाते हुए*) घर तो आएँगे, पर कैसे ?

किशन : बाइक से आएँगे, और क्या!

रिद्‌म : यही तो पहेली है। वे आज कार से आएँगे।

रूपा : (*ताज्जुब से*) कार से!

रोचक : हाँ, आज मम्मी-पापा हमारी नई कार से आ रहे हैं, मुझे फ़ोन पर पापा ने अभी-अभी बताया है। (*तालियाँ बजाकर नाचने लगता है, रिद्‌म भी उसके क़दम से क़दम मिलाने की कोशिश करती है।)*

किशन : अरे रूपा, कुछ समझ में आया तेरे को, साब ने नई कार ख़रीद ली है और दोनों उसमें बैठकर... (*कहते-कहते रूपा का हाथ पकड़ उसे पास खींचकर नृत्य की मुद्रा बनाने लगता है। तभी कॉल-बेल बजती है।)*

रोचक : आ गए, आ गए मम्मी-पापा! नई कार लेकर।

(रिद्‌म भागकर दरवाज़ा खोलती है।)

रिद्‌म : (*पापा से लिपटते हुए*) कहाँ है अपनी कार...

रोचक : मम्मी, नई कार लाए न... ?

(मम्मी-पापा 'हाँ, हाँ' करते हुए रिद्‌म और रोचक को गोद में उठाकर बाहर की ओर जाते हैं, पीछे-पीछे किशन-रूपा भी। अँधेरा होता-होता पूरी तरह छा जाता है। उजाला होने पर बैठक में ही...)

रिद्‌म : (*बाहर से आते हुए*) भैया, भैया, तुम कहाँ हो ?

रोचक : (*अंदर से आते हुए*) क्या है ? क्यों घर सिर पर उठा रखा है ?

रिद्‌म : भैया, तुम इतने ग़ुस्से में क्यों बोल रहे हो...

रोचक : नहीं तो, मैं कंप्यूटर पर गेम खेल रहा था, तेरी इतनी ऊँची आवाज़ सुनकर दौड़ा चला आया। क्या हुआ, जल्दी बताओ, मेरा खेल बीच में छूट गया है। बेहद इंटरेस्टिंग पॉइंट पर था।

रिद्‌म : रुको भैया! मैं तुम्हारे लिए कुछ लेकर आई हूँ।

रोचक : तेरा रिजल्ट आ गया क्या ?

रिद्‌म : ऐसा ही समझो, पापा ने आज मुझसे वादा किया है कि वे मुझे नया मोबाइल ले देंगे।

रोचक : गुड! तब तो हम आपस में भी बात कर सकेंगे, है न ?

रिद्‌म : हाँ भैया, और सुनो, पापा ने आज अपनी बाइक भी बेच दी। अब मम्मी के लिए स्कूटी लेनेवाले हैं।

रोचक : बहुत ख़ूब! वह तो मैं भी चला लूँगा।

रिद्‌म : (*अचानक भीतर जाते हुए*) अरे! मैं तो भूल ही गई, मुझे अभी कार्टून देखना था, बाय... (*किशन का प्रवेश*)

रोचक : काका, आज की ताज़ा ख़बर सुनी...

किशन : वह क्या है बाबा, मेरे को भी बताओ ? (*रूपा भी आ जाती है।)*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोचक : (*रूपा को संबोधित करते हुए*) दीदी, लेटेस्ट ब्रेकिंग न्यूज़ सुनो! (*रूपा के पल्ले कुछ नहीं पड़ता, वह हैरानी से उसे देखती है।*) रिद्म को मोबाइल और मम्मी को स्कूटी का गिफ़्ट मिल रहा है। स्कूटी, जो मैं भी चलाऊँगा, होऽ होऽ होऽ

किशन : बाबा, ये तो ख़ुशी वाली ख़बर है! मोबाइल बिटिया के लिए, स्कूटी आपके और मेमसाब के लिए...

रोचक : काका, कोई स्वीट डिश बना लो! मैं चला अपना गेम खेलने...

रूपा : (*रोचक के जाने पर*) किशन, अब वह घड़ी आ गई है...

किशन : मैं उसी की राह देख रहा था। तू देर से आई पर दुरस्त।

रूपा : चुप रहो! मैं दूसरा कुछ कह रही हूँ।

किशन : कहो।

रूपा : यही कि हमारा पगार बढ़ाने के लिए साब से कहने का समय आ गया है। तवा गरम है...

किशन : एकदम आ गया है। तेरे-मेरे सौ-पचास भी बढ़ जाए तो हमारे संसार की गाड़ी दौड़ पड़ेगी...

रूपा : (*बीच में ही*) फिर वही राग अलापना शुरू कर दिया तुमने... !

(घंटी बजती है। रूपा दरवाज़ा खोलती है। चंद्रहास और अरुंधति के हाथों से सामान के थैले लेती है। किशन भी तुरंत आगे बढ़कर उनके ऑफ़िस बैग थाम लेता है।)

अरुंधति : रूपा, ये फल-सब्ज़ियाँ फ्रिज़ में रख दो। (*रूमाल से पसीना पोंछते हुए*) काका, ए.सी. ऑन कर दो। बहुत पसीना आ रहा है।

चंद्रहास : और ये बैग हमारे कमरे में रख दो। (*दोनों थके-थके-से सोफ़े पर लुढ़क पड़ते हैं।*) किशन ज़रा कोल्ड ड्रिंक ले आओ!

रिद्म : (*भीतर से दौड़कर आते हुए*) पापा, मेरा मोबाइल...

चंद्रहास : हाँ, हाँ, तेरा मोबाइल है बेटे! (*जेब से निकालकर नया मोबाइल उसे देते हुए*) भैया, तुझे इसका ऑपरेशन सिखा देगा। रो...

रोचक : (*अंदर से प्रवेश कर पुकारते ही*) चल रिदू, मैं सब समझा दूँगा, मम्मी, आपकी स्कूटी...

चंद्रहास : वो कल मिलेगी, आज नहीं हो पाया। (*रिद्म खींचते हुए रोचक को भीतर ले जाती है।*)

अरुंधति : रूपा, आज खाने में क्या बनाया है ?

रूपा : मेमसाब, आज मैंने टीवी देखकर नई 'रसपी' सीख ली। गोभी के पराँठे, राजमा की तरकारी, रायता और...

किशन : और... स्वीट डिश भी है, बाबा-बेबी ने हमको मोबाइल और स्कूटी के बारे में बता दिया था। हमने श्रीखंड बनाया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चंद्रहास : श्रीखंड ? ये कौन-सी मिठाई है भई ?

किशन : ये हमारे महाराष्ट्र की ख़ास मिठाई है। दही से बनती है। आप लोग खाएँगे तो बार-बार फ़रमाइश करेंगे।

अरुंधति : ठीक है, देखते हैं तुम्हारे श्रीखंड का भी टेस्ट। पहले कोक की बड़ी बोतल से दो गिलास भर लाओ। बर्फ़ डालना मत भूलना!

किशन : जी साब, (*जाता है।*)

(थोड़ी देर के लिए अँधेरा। प्रकाश होने पर... चारों डाइनिंग टेबल पर बैठकर खाना खा रहे हैं। रूपा और किशन बारी-बारी से खाना परोस रहे हैं। कभी चंदर कोई जोक सुनाता है, कभी अरु, कभी रोचक, कभी रिद्म (आवाज़ नहीं आती, केवल मुद्राएँ)। हर बार लतीफ़ा समाप्त होने पर सब हँसते हैं। सिर्फ़ अभिनय। धीरे-धीरे अँधेरा।)

(प्रकाश होने पर अरु टीवी देख रही है। बेल बजती है। दरवाज़ा खोलने पर...)

अक्षत : नमस्ते मैडम!

अरुंधति : नमस्ते, आओ बैठो! (*दोनों बैठते हैं, उसको ग़ौर से देखते हुए*) तुम कुछ उखड़े-उखड़े लग रहे हो ? क्या हुआ ?

अक्षत : क्या बताऊँ मैम, मैं बहुत परेशान हूँ!

अरुंधति : परेशान, वह क्यों ?

अक्षत : वसुंधरा मायके चली गई है।

अरुंधति : वह तो हर औरत जाती ही रहती है। इसमें परेशानी वाली क्या बात है ?

अक्षत : वही कह रहा हूँ, वह मायके वैसे नहीं गई, झगड़ा करके गई है।

अरुंधति : झगड़ा! किस सिलसिले में ?

अक्षत : बताना मुश्किल है। आप ये समझ लीजिए कि छोटी-मोटी बात पर विवाद हो गया था, बस! लेकिन इसका यह मतलब तो नहीं कि वह घर छोड़कर चली जाए!

अरुंधति : तुम्हारे लिए वह छोटी-मोटी बात होगी, अक्षत! हो सकता है उसे इससे गहरी चोट लगी हो इसीलिए... वरना...

अक्षत : चलो, आपका अनुमान मान लेता हूँ! लेकिन क्या ज़रा-से कलह के बाद उसे इतना कड़ा फ़ैसला लेना ज़रूरी था ?

अरुंधति : देखो अक्षत, तुम अभी तक यह जान ही नहीं पाए हो कि स्त्री क्या उम्मीद रखती है। तुम्हारी कोई संतान नहीं है। पहला मुद्दा तो यही बनता है अंतर्मन में नाराज़गी का, दूसरे, तुमने कहीं कुछ अति की ही होगी!

अक्षत : मैडम, आप हमेशा औरतों का ही पक्ष लेती हैं! पुरुष की निगाह से भी आपको देखना चाहिए। बच्चे नहीं हैं, तो इसका क्या मैं अकेला दोषी हूँ ? मैंने अपने टेस्ट करा लिए हैं। कहीं कुछ गड़बड़ नहीं है। डॉक्टर ने उसमें भी कोई कमी नहीं पाई। ऐसे में इसे भाग्य के खेल के अलावा और क्या कह सकते हैं...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अरुंधति : ठीक है भाई, उसे और कोई शिकायत हो सकती है!

(डोर बेल, किशन के दरवाज़ा खोलने पर चंदर का आगमन।)

चंद्रहास : अच्छा हुआ अक्षत तुम मिल गए। शाम से मेरा दिल कह रहा था कि किसी दोस्त के साथ बैठा जाए! किशन, टेबल पर ड्रिंक लगा दो!

(किशन सारे तामझाम में .फ़ौरन लग जाता है।)

अरुंधति : मैं तुम लोगों के लिए गरमा-गरम पकौड़े तलकर लाती हूँ, आराम से बैठो! अक्षत, तुम्हारा ग़म ग़लत करना भी ज़रूरी है। (*जाती है*)

चंद्रहास : ग़म ग़लत करने की ऐसी क्या नौबत आ गई, अक्षत जी?

अक्षत : बस यूँ ही, ज़रा घर में कुछ माहौल बिगड़ा हुआ है।

चंद्रहास : क्या हुआ भई, हमें भी बताओ? अगर कोई आपत्ति न हो! शायद कोई उपाय निकल आए!

अक्षत : कुछ ख़ास नहीं भैया! वह रूठकर मायके चली गई है।

चंद्रहास : ऐं... मायके चली गई है... ये औरतें भी न अक्षत, आदमी को सदा दबाकर ही रखना चाहती हैं, कुछ इधर-उधर हुआ नहीं कि अकड़ जाएँगी। तुम चिंता मत करो। ख़ुद ही लौट आएगी। तुम झुकोगे तो वह और नख़रे करेगी। (*रूपा पकौड़ों की प्लेट लाती है। किशन पैग बनाकर दे रहा है।*)

अक्षत : आप दुरुस्त फ़रमा रहे हैं। पूरी दुनिया में पति की मनमानी और उसके द्वारा पत्नी की प्रताड़ना के चर्चे होते रहते हैं। कोई भी पत्नी-पीड़ित पुरुष का उल्लेख तक नहीं करता। असल में तो वह पत्नी की मर्ज़ी के बिना उसे हाथ भी नहीं लगा सकता! वह अकसर नकारने, ज़िद करने और अपनी इच्छा मनवाने के लिए अड़ी रहती है। इसका कोई ज़िक्र भी नहीं करता...!

चंद्रहास : अक्षत जी, ये सारे बलात्कार के केस, अगर्चे उसके हाथ-पैर बाँधकर ज़ोर-ज़बरदस्ती न की गई हो, संभव ही नही है। बग़ैर औरत की सहमति के दो महीने से अमुक शख़्स बलात्कार कर रहा था। उसे कहीं निर्जन स्थान पर क़ैद करके नहीं, उसके घर में जाकर, यह कैसा बलात् किया गया कार, यानी कार्य है?

अक्षत : और ज़बरन किए संभोग में आदमी को भी क्या मिलता है...

चंद्रहास : हैवान को तो मिल सकता है।

अक्षत : ख़ैर! हम दांपत्य संबंधों पर बातचीत कर रहे थे। मैं कहता हूँ, अगर दोनों के समान अधिकार हैं, तो पति की ललक का भी पत्नी को सम्मान करना चाहिए। यहीं जाकर मर्द नाराज़ हो जाता है। जो स्वाभाविक है। मैं भी इसके लिए सारी कसरत कर रहा हूँ और ये अमूमन मेरी सेक्स की चाह नकारकर पता नहीं, कैसा घमंड प्रदर्शित करती है। यह कैसा अहम् है इन स्त्रियों का!

चंद्रहास : यह अहम् है अक्षत, अपने अस्तित्व को सिद्ध करते रहने का। वह पति के सामने अपने वजूद को साबित करे तो कैसे... बस यही ज़रिया है कि आप

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उससे चिपटना चाहते हैं तो वह करवट बदलकर सो जाए ताकि आप उसके सामने अपने 'मैं' को झुकाकर, घुटने टेककर उससे समर्पण की दरख़्वास्त करें। हो सकता है भीतर से उसका भी मूड हो तो तैयार हो जाए, वरना आप भी करवट बदलकर अपने अरमानों का क़त्ल कर उसके खर्राटों के नेपथ्य संगीत में चुपचाप देखते रहिए।

अक्षत : पर वह ऐसा क्यों करती है ?

चंद्रहास : क्योंकि पति पर हावी होने का उसके पास यही एक रास्ता है... (*रूपा पकौड़ों की बड़ी-सी प्लेट लेकर आती है। पीछे से अरु उत्तेजित-सी...*)

अरुंधति : मैं किचन में आप मर्दों की बातचीत भी थोड़ी-बहुत सुन रही थी। दो पुरुष आपस में मिल गए तो लगे औरतों पर आरोप लगाने... ! मैं एक प्रश्न पूछती हूँ तुमसे अक्षत, मैंने माना कि तुम्हारी पत्नी तुम्हारी दैहिक इच्छा को बारहा ठुकरा देती होगी। हो सकता है, इसके लिए वह तन या मन से तैयार न हो। यह भी माना है उसका यह तरीक़ा ग़लत है लेकिन उसके बाद भी जो आदमी करता है, वह वाजिब है ?

चंद्रहास : क्या करता है आदमी ?

अरुंधति : तुम्हारी फ़ितरत अलग है चंदर, तुम शांत स्वभाव के हो। पीने के बाद भी नॉर्मल रहते हो। मैं उनके बारे में कह रही हूँ जो पत्नी की मर्ज़ी हो न हो, अपनी धाक जमाने के लिए कुछ भी कर गुज़रते हैं। बीवी अगर उनकी हवस के आगे किसी वजह से लाचारी दिखा रही है तो इसका अंजाम क्या औरत की शर्मनाक ठुकाई में तब्दील होना लाज़िमी है ?
(अक्षत नीची गर्दन कर बगलें झाँकने लगता है।)

चंद्रहास : नहीं, यह तो सरासर ज़्यादती है। संभोग का अर्थ है सम-भोग। दोनों का आनंद, दोनों की तृप्ति। अगर एक पक्ष को यह सब उस घड़ी स्वीकार नहीं है, तब उस हरकत का कोई मतलब नहीं रह जाता।

अरुंधति : कभी औरत की चाहत हो और पति अपने कार्य की व्यस्तता में या फिर अपने ग़रूर में उसे ठुकरा दे तो क्या वह मारपीट पर उतर आती है—क्या ऐसा कोई एक उदाहरण है तुम्हारे पास अक्षत ?

अक्षत : (*कनखियों से देखता हुआ*) न... न... नहीं... ऐसा तो कभी सुना नहीं।

अरुंधति : तो फिर मेरे कथन की गाँठ बाँध लो! परिवार में कमोबेश ऐसी मामूली कहा-सुनी चलती रहती है। उभय पक्ष को सहन करना पड़ता है। बेहतर है कि तुम अपना इगो ज़रा ताक पर रख दो और उसे मनाने ससुराल फटाफट निकल पड़ो। इसमें कोई छोटा नहीं हो जाता। हो सकता है, इस विवाद में तुम्हारी पत्नी—क्या नाम है उसका... अं... वसुंधरा से ही चूक हो गई हो, इस हालत में तुम उसे लेने जाओगे तो तुम्हारा बड़प्पन उसे पछतावे से भर देगा। नतीजा यह होगा कि तुम लोगों का आपसी प्रेम अनायास बढ़कर दुगुना हो जाएगा। इसमें कोई नुक़सान नहीं, लाभ ही लाभ है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चंद्रहास : अरु जो कह रही है अक्षत, यह दांपत्य जीवन की बहुत बड़ी सच्चाई है! एक-दूसरे की ख़ातिर झुकना ही पड़ता है। कभी इसे, कभी उसे। इसी आपसी समझ से दंपती आजीवन मिल-जुलकर रह सकते हैं, चाहे इसे तुम अपने अहंकार से समझौते के रूप में भी ले सकते हो! अपने मतलब दोनों के—पति और पत्नी के।

अक्षत : भाई साब, आप दोनों की सलाह मेरे लिए सिर-आँखों पर! मैं कल ही रवाना हो जाता हूँ। हाँ, मैडम, आपको मेरे लिए एक काम करना होगा! मैं लीव एप्लिकेशन लिखकर आपको...

अरुंधति : तुम उसकी फ़िक्र मत करो। मैं ऑफ़िस में बता दूँगी। तुम लौटने पर अर्ज़ी दे देना।

अक्षत : धन्यवाद मैडम... अब मैं चलता हूँ। (*जाता है*)

(मंच पर धीरे-धीरे प्रकाश कम होता है। दोबारा उजाला होने पर बैठक में ही किशन-रूपा टीवी पर कोई कार्यक्रम देखने में खोए हुए हैं।)

किशन : चलो, ये सीरियल तो समाप्त हुआ। कैसा लगा?

रूपा : बहुत अच्छा था।

किशन : (*सोचते हुए*) रूपा, कल जो मेम साब की अक्षत साब से बहस चल रही थी, सुनी तुमने?

रूपा : हाँ, बेचारे अक्षत साब की बीवी मायके चली गई है!

किशन : इस पर साब-मेम साब ने उनको कितनी सही सलाह दी।

रूपा : मेरे को पता है। क्या तो कह रहे थे कि पति-पत्नी एक ही गाड़ी के दो पहिए हैं। दोनों से ही गिरस्ती चलती है।

किशन : तुमको नहीं लगता कि हमारी गाड़ी भी ऐसे ही दौड़ेगी...

रूपा : तुम्हारा क्या भरोसा, कल को बदल गए तो...

किशन : तुम मेरे पर बेकार इल्ज़ाम लगा रही हो! हम ग़रीब लोग हैं। थोड़े में गुज़ारा करनेवाले। अगर एक-दूसरे के वास्ते ईमानदार बने रहें तो इन बड़े लोगों की तरह हमारी सीधी-सादी जिनगी में किसी परेशानी की कोई जगह नहीं है। मैं वचन देता हूँ कि बस तुम ही पहली और आख़िरी औरत रहोगी, मेरी जिनगानी में!

रूपा : मैं भी क़सम खाती हूँ... (*शरमा जाती है।*)

किशन : (*उसकी ओर बढ़ते हुए*) तो मैं आज ही साब-मेम साब से ज़िकर करता हूँ, तुम भी साथ रहना!

(रिद्म का प्रवेश। कान से मोबाइल लगाए, अपनी ही धुन में। किशन-रूपा आश्चर्य से उसे देखते रहते हैं।)

रिद्म : गति, तू मेरी बात समझ नहीं रही हो! मैं प्रतीक के बारे में...

गति : ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रिद्म : हाँ, वही तो, मेरे नोट्स माँगकर ले गया था वो।

गति : ...

रिद्म : अरे नहीं, नोटस् लौटाए तो पट्ठे ने उसमें गुलाब का फूल दबाकर रखा हुआ था। इतना बदमाश है वह!

गति : अरे...

रिद्म : ऐसा भूल से रखता है कोई! मैं अब छोटी नहीं हूँ। सब समझती हूँ, वो जो हमने फ़िल्म देखी थी, उसमें ऐसा ही तो था...हैलो... हैलो... आवाज़ नहीं... हाँ... हाँ... (*बोलते-बोलते भीतर चली जाती है।*)

किशन : देखा रूपा, आजकल के बच्चों का चाल-चलन!

रूपा : अभी दूध के दाँत भी नहीं टूटे और परेम करने चले हैं!

किशन : तब हम क्यों इतने झिझक रहे हैं, बड़े हैं, समझदार हैं। अपनी ज़िम्मेवारी हमको मालूम है, कमा रहे हैं।

रूपा : तुम ठीक कहते हो किशन, हम साब-मेम साब से आज ही बोल देंगे कि...(*घंटी बजने पर दरवाज़ा खोलती है, चंद-अरु का प्रवेश, उनके हाथों से बैग लेकर चंदर भीतर जाता है। रूपा ए.सी. ऑन करती है। दोनों थके-माँदे कुर्सियों पर पसर जाते हैं। रूपा के पास किशन आकर खड़ा हो जाता है।*)

चंद्रहास : क्या हुआ... तुम दोनों ऐसे क्यों खड़े हो!

किशन : साब वो...

अरुंधति : हाँ, हाँ, बोलो!

रूपा : मेम साब मैं...

चंद्रहास : क्या हो गया है तुम दोनों को? ऐसे तो कभी करते नहीं थे!

अरुंधति : तुम बताओ रूपा, क्या कहना चाहती हो?

रूपा-किशन : (*एक साथ*) मेम साब... साब...

चंद्रहास : कह भी दो भाई, क्या पगार बढ़ानी है?

किशन : साब वो बाद में... अभी...

अरुंधति : अभी क्या?

किशन : (*सिर खुजलाते हुए, कुछ शर्मीले अंदाज़ के साथ*) साब, हम दोनों शादी करना चाहते हैं। (*रूपा भी गर्दन हिलाती है। चंदर और अरु उनको हैरानी से देखते रह जाते हैं।*)

अरुंधति : एक मिनट, यह कोई बच्चों के गुड्डे-गुड्डी का खेल नहीं है। तुम दोनों ने अपने भावी जीवन के विषय में पूरी तरह सोच-विचार कर लिया है न!...(*उनको चुप देखकर कुछ नरम होते हुए*)रूपा, तुम बताओ, तुम्हें किशन पसंद है? (*रूपा शरमा जाती है।*) और किशन, क्या इस ज़िम्मेदारी को उठाने की तुम्हारी तैयारी है? (*किशन हाथ जोड़कर सिर हिलाकर हाँ कहता है।*) तब फिर ठीक है!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चंद्रहास : लेकिन यह तो तय करो कि तुम दोनों रहोगे कहाँ?

किशन : आप नये मकान के पिछवाड़े सरवेंट कार्टर बनाएँगे, वहीं!

चंद्रहास : उसके लिए काफ़ी समय है। अभी तुम कहाँ रहते हो?

किशन : एक खोली है साब, पास की झोंपड़पट्टी में, हम वहीं गुज़ारा कर लेंगे।

रूपा : (*हिम्मत करके*) हाँ साब!

अरुंधति : अब ये बताओ कि तुम्हारे विवाह की तारीख़ कब निकाली जाए... ?

किशन : हम अभी तैयार हैं।

चंद्रहास : ऐसे नहीं, रविवार को पंडित को बुला लेंगे। उसके बाद छोटी-सी पार्टी। तुम लोग अपनी जान-पहचान वालों, रिश्तेदारों को बोल दो।

अरुंधति : सारा ख़र्च हम उठायेंगे। हमारे लिए इससे ज़्यादा ख़ुशी का त्योहार हो ही नहीं सकता कि तुम दोनों विवाह-बंधन में बँध जाओ।

(धीरे-धीरे बत्ती बुझती हुई। थोड़ी देर बाद उजाला। बैठक में अरु न्यूज़ सुन रही है। रूपा और किशन आते-जाते रहते हैं, उनकी अदाओं से प्रसन्नता फूटी पड़ रही है। रूपा के गले में मंगलसूत्र लटक रहा है। किशन बीच-बीच में अरु की नज़र बचाकर उससे हल्की-सी छेड़छाड़ भी करता रहता है। घंटी बजने पर रूपा दरवाज़ा खोलती है।)

रूपा : कौन चाहिए? आप कौन हैं?

अरुंधति : *(रिमोट से टीवी बंद कर दरवाज़े की ओर बढ़ते हुए)* कौन है... रूपा? कहिए, किससे मिलना है?

आगंतुक : मैं आपसे ही मिलने आई हूँ, आप अरुंधति जी है न?

अरुंधति : हाँ, मैं ही अरुंधति हूँ, आप कौन?

आगंतुक : मैं वसुंधरा, अक्षत की पत्नी, आपसे कुछ...

अरुंधति : आइए, आइए, वसुंधरा जी! आपके नाम से मैं परिचित हूँ।

वसुंधरा : *(अंदर आकर अरु के इशारा करने पर सिमटी-सी कुर्सी पर बैठ जाती है।)* मैं... मैं... अकेले में...

अरुंधति : ठीक है! रूपा, चाय बनाकर ले आओ! *(रूपा के जाने के बाद)* कहिए, क्या कह रही थीं आप...

वसुंधरा : मैं आज ही बुलंदशहर से आई हूँ, अक्षत मुझे लेने आए थे। उन्होंने बार-बार आपका नाम लिया और कहा कि आपके समझाने पर ही वे ऐसा करने को राजी हुए। मेरे ख़याल से उन्होंने आपको मन-मुटाव के बारे में सब बताया ही होगा। लेकिन शायद एकतरफ़ा...

अरुंधति : ऐसा कैसे कह सकती हैं आप...

वसुंधरा : क्षमा चाहती हूँ पर आप मुझे 'आप' नहीं, 'तुम' ही संबोधित करें।

अरुंधति : चलो, वैसे भी आप... तुम मुझसे छोटी हो। हाँ, तो मैं क्या कह रही थी... हाँ, अक्षत के अनुसार छोटे-मोटे झगड़े से तुम रूठकर मायके चली गई थी। पूरा मामला उन्होंने खोलकर बताया था हमें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वसुंधरा : नहीं। जो प्रसंग वह आपसे छिपा गए होंगे, मुझे पूरा यक़ीन है, वही मैं आपको बताने आई हूँ... उस रात वे कुछ अधिक ही जोश में थे। मेरी तबीयत ख़राब थी। भोजन करते वक़्त उन्हें बताया भी। मैंने कोशिश की, पर मुझसे कौर निगले ही नहीं जा रहे थे। जाकर लेटी तो इनका फ़र्ज़ था, मेरी सेहत को लेकर चिंता प्रकट करते, पर उलटे वे तो किसी प्रकार...

अरुंधति : मैं समझ गई। ये सारे मर्द बस अपनी मर्दानगी लादने की फ़िराक़ में रहते हैं। पत्नी के हाँ—ना से उन्हें कोई मतलब नहीं होता!

वसुंधरा : ऐसा ही था। मैं उस मनोदशा में नहीं थी। विरोध किया तो क्रोध में आकर मुझे थप्पड़ मार दिया। भला बताइए, मैं क्यों इनकी मार खाकर भी चुप्पी साधे रहूँ! तब तो ख़ामोश ही रही, इनकी ज़बरदस्ती सहती रही। पर अगली सुबह मैं मायके चली गई।

अरुंधति : अच्छा किया।

वसुंधरा : और करती भी क्या? मुझे इन्होंने पहली बार थप्पड़ मारा था। इनका हौसला इससे बढ़ जाता और मैं एक बाँदी इनका घर-संसार सँभालते हुए, इनके अत्याचार सहते हुए जीवन भर रोती-कलपती रहती...

अरुंधति : देखो वसुंधरा, जो हुआ, उसे भूल जाओ! हर व्यक्ति से चूक होती है। मेरा विचार है, अक्षत ने अपनी ग़लती समझ ली है और हमारे कहने पर सही, तुमको लेने वहाँ तक आया। मुझे लगता है, तुमने उसको सबक़ सिखा दिया है। अब वह दोबारा ऐसी हिम्मत नहीं करेगा!
(रूपा ट्रे में चाय-बिस्किट लेकर आती है। अरुंधति वसुंधरा को चाय देती है।)

वसुंधरा : मैं तो आपको धन्यवाद देने आई थी। आप न टोकतीं तो हो सकता है अक्षत की आँखें कभी नहीं खुलतीं।

अरुंधति : मैंने अपना कर्तव्य निभाया वसुंधरा। और एक सलाह देना चाहती हूँ... मुझे पता है, शादी के सबब तुम्हारा कॉलेज बीच में ही छूट गया था, पर बारहवीं पास कर ली थी। अब इग्नू से तुम सीधे ग्रैजुएशन कर सकती हो। इतना समय गुज़र गया है। पढ़-लिख लोगी तो सारा नज़रिया बदल जाएगा। ये पुरुष बराबर की पढ़ी-लिखी या नौकरी करनेवाली पत्नी से ज़रा सोच-समझकर ही सलूक करते हैं... तुम बिस्किट लो न!

वसुंधरा : (*बिस्किट कुतरते हुए*)आप एकदम सही राय दे रही हैं। अक्षत ने भी अपने किए की क्षमा माँग ली है। आप उन्हें मेरी आगे की पढ़ाई के लिए थोड़ा हौसला बढ़ाइए। वे समझदार हैं, आपकी सलाह मान लेंगे। परिवार में हम दोनों ही हैं। मेरे पास फ़ुरसत ही फ़ुरसत है। मैं मन लगाकर पढ़ूँगी। ...और उसके बाद आप-जैसी कामकाज़ी महिला भी बनकर दिखाऊँगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अरुंधति : बेफ़िक्र रहो! अक्षत को समझाने की ज़िम्मेदारी मेरी है। यह तो संयोग ही है कि आज मेरा ऑफ़ है वरना...

वसुंधरा : मुझे मालूम था कि आप घर पर ही हैं। मैं उनसे पूछकर आई हूँ। आपका फिर से शुक्रिया, चलती हूँ। (*जाती है।*)

दृश्य-3

(बैठक में चंद्रहास अकेला बैठा है। दोपहर ढल रही है। उठता है। यहाँ से वहाँ चक्कर लगाता है। बेकल है। किशन एक तरफ़ हाथ बाँधे चुपचाप खड़ा है।)

चंद्रहास : कैसे क्या होगा... सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था! ऐसा किसी के साथ होता है क्या... अब क्या करेंगे... दुनिया भर के लोन ले रखे हैं! क़िस्तें बाक़ायदा समय से भर रहे थे... लेकिन... अरु को बताऊँगा तो निश्चित ही उसे शॉक लगेगा... बच्चों के एडमिशन बड़े-बड़े पब्लिक स्कूलों में कर रखे हैं। उनका भविष्य है। वह हमको ही बनाना है। कैसे होगा, कैसे पूरा पड़ेगा सारा ख़र्च! (*सिर पकड़कर बैठ जाता है।*)

किशन : साब, आज आप कुछ बेचैन लग रहे हैं—क्या हुआ ?

चंद्रहास : किसनवा, तुमको क्या बताऊँ यार! मैं तो बरबाद हो गया! आगे ज़िंदगी का रेगिस्तान साँय-साँय करता डरा रहा है! मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा... इतना अधिक ख़र्चा बढ़ा लिया, मनमाने ऋण ले लिए—कार के लिए, स्कूटी के लिए, मकान के लिए... और भी न जाने क्या-क्या ईएमआई के भरोसे मैंने पागल-जैसा ख़रीद डाला! इन सबका भुगतान कैसे हो पाएगा... मैं तो गया काम से!

किशन : साब, ये तो बताओ, क्या हुआ ? ये सारे करज़े तो आप दोनों सुभीता से भर रहे थे! अब क्या हुआ ?

चंद्रहास : होना क्या है किशन, मेरे फलते-फूलते आशियाने पर यकायक बिजली गिर गई है... मैं पूरी तरह ख़लास हो गया... (*चंद्रहास की आँखों में आँसू तैरने लगते हैं। आगे बढ़कर किशन की दोनों बाँहों को थाम लेता है। फिर किशन के कंधे पर सिर रखकर फफकते हुए*) मेरी नौकरी चली गई किशन! मेरी नौकरी चली गई...

किशन : आँ... क्या बोलते हो साब, नौकरी चली गई... ! (*चंद्रहास सिर हिलाकर रोती हुई आवाज़ में 'हाँ' कहता है, फिर ज़ोर से रोने लगता है। किशन उसकी पीठ सहलाते और दिलासा देते हुए सोफ़े पर बिठाता है। टेबल से पानी लेकर पीने के लिए देता है।*)

(*चंद्रहास के सामान्य होने पर*) ऐसे कैसे नौकरी चली गई... ये क्या बच्चों का खेल है! आपकी नौकरी क्या हमारी तरह है कि कभी भी कह दिया, कल से मत आना, अपना हिसाब कर लो...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चंद्रहास : (*बुझा-बुझा-सा*) हमारी एमएनसी... बड़ी कंपनियाँ उससे भी घटिया होती हैं, किशन! चाहे जब किसी को घर बिठा दे...

किशन : ऐसा कैसे! साब, आप बड़े अफ़सर थे। आपको कैसे यूँ निकाल सकते हैं...

चंद्रहास : ऐसा ही है किशन, ऐसा ही है! दुनिया भर में मंदी की आँधी चल रही है। अमेरिका, इंग्लैंड में हज़ारों की नौकरी छिन गई। बेरोज़गारी का राक्षस सब तरफ़ घूम रहा है, हालाँकि अपने देश में हालात बनिस्बत बेहतर हैं लेकिन मेरी कंपनी घाटे में आ गई...

किशन : फिर साब ?

चंद्रहास : हमारी कंपनी में भी छँटनी की तलवार चल गई। नये-नयों को तो पहले ही बाहर का रास्ता दिखा दिया गया था। अब मुझ-जैसे सीनियर को भी निकाल बाहर करने की उन्होंने ठान ली है। कंपनी अपना नुक़सान क्यों सहेगी... स्टाफ़ कम करने से उसका बोझ हल्का होगा। वह यही कर रही है...

किशन : पर साब, बिना किसी वजह के...

चंद्रहास : हाँ भाई, एक तरह से तुम्हारी और हमारी नौकरी एक-जैसी है! जैसे मैं तुमको कल कह दूँ कि भइया, हमको तुम्हारी ज़रूरत नहीं है, वैसे ही ये एमएनसी वाले हमको भी बर्ख़ास्त करने में नहीं हिचकते। कहीं कोई सुनवाई नहीं है। सब मिलकर कोर्ट गए भी तो अरसे बाद कुछ हुआ तो हुआ...

किशन : साब, ये तो बहुत बुरा हुआ!

रूपा : (*देर से पर्दे के पीछे से सारी बातचीत सुन रही थी, एकाएक सामने आकर*) हाँ साब, बहुत ही बुरा!

चंद्रहास : देखो, अब तुम दोनों एक गाँठ बाँध लो! यह बात किसी को बताना नहीं है! ना अरु को, न बच्चों को।

किशन : लेकिन साब, एक दिन तो पता चल ही जाएगा।

रूपा : किशन, साब बराबर कह रहे हैं। अभी छिपाना बहुत ज़रूरी है! पता चलेगा, तब की तब...

किशन : बात तो तुम ठीक कह रही हो! एकदम से बताना सही नहीं होगा।

चंद्रहास : मेरा भी यही ख़याल है। आज नहीं तो कल मालूम होगा ही, लेकिन धीरे-धीरे। अचानक बताने से अरु को, बच्चों को भयंकर धक्का लगेगा और मैं इतनी बड़ी पोज़िशन पर था, मुझे कहीं और जॉब मिल ही जाएगी, तभी बताने का मज़ा भी अलग होगा।

किशन : हाँ साब, आपका फ़ैसला ठीक है। आप कोशिश करते रहना! हम दोनों चुप रहेंगे। (*घंटी बजती है। दरवाज़ा खोलने पर अरुंधति का प्रवेश।*)

अरुंधति : (*चकित-सी*) चंद्रहास, तुम घर पर! मैंने बाहर कार खड़ी देखी लेकिन यक़ीन नहीं हुआ कि...

चंद्रहास : (*अटकते हुए*) नहीं... हाँ... वो क्या है कि आज जल्दी काम ख़त्म हो गया तो आ गया। पर तुम भी तो...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अरुंधति : मेरा भी, बॉस भाग गया तो... मेरे विचार से यह संयोग ही है। ऐसा करते हैं, अभी कार से लाँग ड्राइव पर निकल जाते हैं। बच्चों को भी रास्ते में स्कूल से ले लेंगे।

चंद्रहास : नहीं, नहीं... ऐसा कुछ नहीं करेंगे। (*ख़ुद को क़ाबू में करते हुए*) वो क्या है कि... आज मेरे सिर में हद से ज़्यादा दर्द हो रहा है। तुम ऐसा करो, कार लेकर चली जाओ, बच्चों को घुमाकर ले आना!

अरुंधति : ना! बच्चे रोज़ की तरह कैब से आ जाएँगे। मैं कहीं नहीं जाऊँगी, अब बताओ, कहाँ दर्द हो रहा है... (*टी.वी. के पास रखी मेडिकल किट ले आती है।*) तुम्हें सिर दर्द की गोली दे रही हूँ, थोड़ी देर आराम कर लो! रूपा, पानी दो! (*गोली निकालकर देती है। चंद्रहास पानी के साथ मुँह बनाकर निगल लेता है।*) अब चलो, बेडरूम में मैं विक्स लगाकर तुम्हारा सिर दबा देती हूँ, किशन, साब को लेकर चलो! (*किशन सहारा देकर चंद्रहास को भीतर ले जाता है।*) रूपा, तुम साब के लिए एक कड़क चाय बना दो!

रूपा : (*उनके जाने के बाद*) क्या-क्या नाटक करने पड़ते हैं, आदमी को! सिर दर्द नहीं है फिर भी मन मारके गोली खानी पड़ती है! बेचारे साब, पता नहीं अब कैसे होगा...

किशन : (*अंदर से आते हुए*) सब बरोबर होगा। तुम चुप रहो बस। किसी को कानोंकान ख़बर न हो इस राज़ की, समझी!

रूपा : हाँ, पर ऐसा कितने दिन चलेगा...

किशन : साब बड़े आदमी हैं। झट से दूसरी नौकरी मिल जाएगी, इससे भी अच्छी। तुम देखती रहो।

(प्रकाश कम होता हुआ, उजाला होने पर बैठक में चंद्रहास बैठा शराब पी रहा है। अरुंधति का बाहर से आगमन)

अरुंधति : (*फनफनाते हुए*) मुझे तुमसे यह उम्मीद नहीं थी! चंद्रहास, मैं क्या तुम्हारे लिए अब इतनी पराई हो गई हूँ कि तुम मुझसे इतना बड़ा हादसा छिपा गए!

चंद्रहास : (*सहमा-सहमा*) क... क... क्या छिपाया... म... म... मैंने तुमसे...

अरुंधति : अब और बनो मत! मुझे कई दिनों से सुबहा था ही, तुम्हें कार की धूल साफ़ करवाने तक का होश नहीं रहता था। कार दिन भर अकसर वैसी-की-वैसी क्यों खड़ी रही, मैं सोचती थी। तुमसे नहीं पूछा—जानबूझकर, तुम्हारे कपड़े जो दो दिन में गंदे होने पर धुलते, प्रेस होते रहते थे, कई-कई दिनों तक चकाचक दीखते थे। तुम पूरा वक़्त घर पर ही बने रहते थे, सच है न?

चंद्रहास : (*निगाहें न मिलाते हुए*) नहीं, नहीं, बाहर तो जाता था मैं।

अरुंधति : पैदल, पेट्रोल बचाने, मुझे अब मालूम हो गया है, पंद्रह-बीस दिन तक मैं इस पहेली में उलझी रही। फिर मैंने तुम्हारे कलीग वर्मा जी की पत्नी सरला को फ़ोन लगाया। उसका नंबर मेरे पास था। उसने वह दर्दनाक सूचना मुझे दी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वर्मा जी भी तुम्हारी तरह परेशान हैं लेकिन उन्होंने सरला से जिस घड़ी निकाले गए, फ़ौरन बता दिया था और एक तुम हो कि...

चंद्रहास : आई एम सॉरी अरु! मगर वैसा फ़ैसला लेना तब मुझे उचित लगा। मैं तुम्हें और बच्चों को अगर इस फ़ैसले से वाक़िफ़ कराता तो सोचो तुम सबको कितना बड़ा धक्का लगता!

अरुंधति : जैसे अब नहीं लगा! जो भी सच्चाई है, उसे क़ुबूल कर उसका उपाय ढूँढ़ने में क्या मैं तुम्हारी सहायता नहीं करती या फ़िलहाल नहीं करूँगी? क्यों मुझे इतना ग़ैर समझ लिया तुमने... हम दोनों ने साथ जीवन निभाने की शपथ ली है। महज़ सुख में नहीं, दु:ख में भी।

चंद्रहास : मैं अपना टेंशन तुम्हें नहीं देना चाहता था।

अरुंधति : अब सफ़ाई देना बंद करो! ये सोचो कि आगे कैसे करेंगे। मैं मना करती रही पर तुम पर तो जोश सवार था, जग भर की चीज़ें जुटाने का, वह भी ज़्यादातर क़र्ज़ पर।

चंद्रहास : मुझे क्या पता था कि नौकरी यूँ एकाएक चली जाएगी और हम क़िस्तें चुकाने में भी असमर्थ हो जाएँगे। मैं कंप्यूटर पर मेरे स्तर की—कुछ-कुछ उससे भी कम—जॉब तलाश रहा हूँ, दोस्तों से फ़ोन पर संपर्क में हूँ। एक जगह इंटरव्यू भी दे आया हूँ, हो जाएगा...

अरुंधति : होगा तब की तब, आज की हालत के मुताबिक़ हमें प्लानिंग करनी बेहद ज़रूरी है।

चंद्रहास : मैं वह भी कर रहा हूँ, शर्मा जी से मेरी बात हो गई है, वे अपनी कार लेने को तैयार हैं।

अरुंधति : स्कूटी का भी ग्राहक देखो। मैं बस से चली जाया करूँगी, कार और स्कूटी के क़र्ज़ की काफ़ी भरपाई हो जाएगी। अभी नई ही तो हैं।

चंद्रहास : (*अगला पैग बनाते हुए*) इसके अलावा और तो कुछ बेच नहीं सकते! क्या फ्रिज़, ए.सी. टी.वी., सोफ़ा सेट-जैसा सामान कोई ख़रीदेगा भी... और लेगा भी तो बहुत कम दाम पर... और सोचो, हम कहाँ ख़र्च घटा सकते हैं?

अरुंधति : (*ग़ुस्से में उसकी ओर बढ़ते हुए*) और ये जो दारू तुम पैग पर पैग मार रहे हो, क्या यह बेहद ज़रूरी है... नहीं न! (*उसके हाथ से गिलास छीनकर शेष शराब फेंक देती है और बोतल उठाकर डस्टबिन में डाल देती है। चंद्रहास उसे रोकता रह जाता है।*) आज से तुम्हारी शराब बंद! एक बूँद नहीं पियोगे तुम...

चंद्रहास : वह तो... मैं... वह तो... तनाव हल्का करने...

अरुंधति : तनाव हल्का करके आर्थिक भार बढ़ाकर फिर तनाव... वाह रे तुम्हारा शौक़ और तुम्हारी सोच!

चंद्रहास : मैं उसके बग़ैर कैसे...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अरुंधति : (*उसकी तरफ़ ध्यान न देते हुए*) खाने-पीने पर भी संयम करना होगा। पिज़्ज़ा, बर्गर, आइसक्रीम, कोल्ड ड्रिंक—सब बंद। दूध कम कर देंगे, एक ही सब्ज़ी बनेगी। मीठे को भूलना होगा। बच्चों के मोबाइल रिचार्ज नहीं कराएँगे। और हाँ, एक नौकर तो कम किया ही जा सकता है... किशन काका...

किशन : (*अंदर से आता है।*) जी मेम साब! (*रूपा भी पीछे-पीछे आती है।*)

अरुंधति : देखो, साब की नौकरी चली गई है। अब हम तुम्हारा ख़र्च बर्दाश्त नहीं कर सकते। बुरा लग रहा है लेकिन हमारी मजबूरी है, कल से...

रूपा : मेम साब, हम भी आपकी फ़ैमली ही हैं। हमको साब ने पहले ही बता दिया था। हमने इसका उपाय भी सोच रखा है।

अरुंधति : उपाय!

किशन : हाँ मेम साब! हमने आपकी इतने बरस मन से सेवा की है। आपने भी हमें कभी कोई तकलीफ़ नहीं दी। हमारा भी फ़रज़ बनता है कि संकट में आपका साथ दें। आप फ़िकर मत करो! हम दोनों आधे-आधे पगार में हमारी गिरस्ती चला लेंगे। अपनी इस मुसीबत में हमें भी शामिल कर लो...

चंद्रहास : किशन-रूपा, तुमने हमें ज़बरदस्त ढाढ़स दे दिया है! अरु, हम भी इनको किसी भी तरह रखे रहेंगे। जितना अधिक दे सकेंगे, देते रहेंगे।

अरुंधति : चंदर, मैंने भी निश्चय कर लिया है, मैं ओवर-टाइम करूँगी।

चंद्रहास : और अरु, तुम्हारी सहेलियों से भी तुम कह सकती हो। सॉफ़्टवेयर इंजीनियर के लायक़ कहीं तो सर्विस मिलेगी।

अरुंधति : मैं आज बच्चों को भी अकेले में समझाऊँगी। दोनों अब बड़े हो गए हैं, सारे मॉड लड़के-लड़कियों जैसे नख़रे और जेब-ख़र्च कम करने पर ज़ोर दूँगी। मुझे भरोसा है, वे हमारी त्रासदी अवश्य समझेंगे।

चंद्रहास : अब लगता है, मैंने तुम्हें पहले न बताकर ग़लती कर ली! तुम्हारा सहारा मिला तो मुझमें भी हिम्मत आ गई।

अरुंधति : बैंकों में कितना बैलेंस है, मैं आज ही चेक करती हूँ...

(*धीरे-धीरे अँधेरा, फिर उजाला, बैठक में चंद्रहास और अरुंधति उदास बैठे हैं। ख़ामोश। भीतर से किशन-रूपा आते हैं।*)

किशन : (*साहस करके*) साब... मेम साब...

अरुंधति : क्या है ?

(*किशन और अधिक डरते हुए एक पोस्टकार्ड अरु की ओर बढ़ा देता है। अरु उसे उलटा-पुलटा करके निरखती है।*)

(*असमंजस में*) तो... तुम्हारे गाँव से चिट्ठी आई है!

किशन : हाँ मेम साब, हमने यहीं ब्याह रचा लिया। माँ-बाप हमसे नाराज़ हैं। हम दोनों को बुलाया है। बहू को देखना चाहते हैं, अब आप ही फ़ैसला करो!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चंद्रहास : लिखा उन्होंने बिलकुल वाजिब है। बुढ़ापे में भला अपनी बहू से वे मिलना नहीं चाहेंगे...

अरुंधति : (*विचार करते हुए*) तुम लोग कितने दिन में लौटोगे ?

किशन : यही साब कोई दस दिनों में। मेरा घर खापरी में है। जाने-आने में ही चार दिन लग जाते हैं। हम जल्दी से वापिस आ जाएँगे।

अरुंधति : ठीक है, तुम जाओ! चंदर है न घर में, सँभाल लेगा। मैं सवेरे खाना बनाकर चली जाया करूँगी। बच्चों की कैब छुड़वा दी है। तुम्हारी जगह साब कुछ दिन उन्हें लाते-ले जाते रहेंगे। चंदर, तुम्हें कोई प्रॉब्लेम तो नहीं होगी...

चंद्रहास : (*ज्यों विवशता में*) मैं... मैं... कर लूँगा।

अरुंधति : चलो, यह सब तय हो गया। तुम लोग कब जाओगे ?

किशन : कल सुबहा पैसेंजर है। बदलते हुए नागपुर पहुँच जाएँगे। वहाँ से अगला स्टेशन खापरी है...

(अँधेरे के बाद उजाला होने पर— चंद्रहास बच्चों को तैयार होने में मदद कर रहा है, अरुंधति टिफ़िन लाकर देती है। चंद्रहास उन्हें साथ लेकर बाहर जाता है। अरुंधति हड़बड़ाहट में अपना बैग लेकर आती है। इधर-उधर देखती है। फिर ताला उठाकर बाहर जाती है। क्षण भर के लिए अँधेरा। चंद्रहास वापिस आता है। जेब से क्वार्टर निकालकर अंदर से गिलास, नमकीन लाता है और पीने बैठ जाता है।)

चंद्रहास : (*स्वगत*) मैंने किचन में झाँककर देखा... आज अरु ने रोटियाँ नहीं बनाईं, कह भी रही थी कि नींद देर से खुली, सब्ज़ी बना दी है। बच्चों को टिफ़िन में देनी थी न... अब चंद्रहास बाबू, आपको रोटियाँ बनानी हैं... बच्चों को ब्रेड दे दी... मुझे तो भोजन करना ही है। बिना रोटी के कैसे होगा... (*शराब के घूँट पर घूँट लेने के बाद*) मरी, यह शराब भी छूटती नहीं! यह तो अच्छा हुआ कि मेरे अकाउंट में अभी कुछ बकाया है वरना... मैं कहाँ से ये जुगाड़ कर पाता! अरु बैंकों से रुपये निकाल-निकालकर ईएमआई भरने का अभियान चलाए हुए है। मेरे पास फूटी कौड़ी भी नहीं है... (*और दो-तीन घूँट लेकर*) यह क्या हो गया... अब तो किशन-रूपा की ग़ैर-मौजूदगी में मैं ही घर का नौकर बन गया। अरुंधति साढ़े आठ-नौ बजे जाती है। शाम क्या रात में वापिस आती है। दिन भर मैं अकेला, बच्चों को लेने-छोड़ने जाता हूँ। वह भी पैदल। यह अच्छा है कि उनका स्कूल डेढ़-दो किलोमीटर पर ही है, रोचू की समस्या नहीं है। वह ख़ुद आ सकता है। पर आजकल के हालात देखते हुए रिद्म का ख़याल रखना ज़रूरी है। लेकिन... अब मैं पैदल सवार हो गया हूँ। गाड़ी-घोड़ा सब बिक गया... (*नया पैग बनाता है और एक झटके में आधा गिलास ख़ाली कर देता है।*) मैं पैदल हो गया... और ये दारू मुझसे चिपक गई है। क्योंकर होगा... अरे! मैं भूल ही गया, वॉशिंग मशीन में कपड़े डालने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं... जूठे बर्तन भी धोने पड़ेंगे... और घर की साफ़-सफ़ाई कौन करेगा... चल भाई चंदर, काम से लग जा...

(थोड़ी देर अँधेरा। दोबारा उजाला होने पर बैठक में अरु और अक्षत गपशप कर रहे हैं। चंद्रहास का प्रवेश—लड़खड़ाते हुए।)

अरुंधति : (*चिढ़कर*) चंदर, मैंने तुम्हें मना किया था कि एक बूँद भी दारू नहीं पीनी है, तुम फिर पीकर आ गए! मैं जानती हूँ, तुम तनाव में हो लेकिन उसकी यह रेमेडी नहीं है!

चंद्रहास : सॉरी डार्लिंग, दोस्तों के साथ बैठना पड़ा!

अरुंधति : और तुमने आज वॉशिंग मशीन में कपड़े भी नहीं डाले... *(चंद्रहास के चेहरे पर 'कैसे भूल गया' का भाव, आक्रोश में अपने बाल नोचता है।)* मैं कह गई थी कि ज़रा सब्ज़ी काटकर रखना, मैं आते ही रात के लिए बघार दूँगी। ...और बिजली का, पानी का बिल भर आए... ?

चंद्रहास : वो कल भर दूँगा, आज लंबी लाइन थी।

अरुंधति : तुम अब झूठ भी बोलने लगे! सच बताओ, बिल के पैसों से शराब पी ली न?

अक्षत : (*आश्चर्य से उनको टुकुर-टुकुर ताकता रहता है, उसे यह सब अनचाहा और अटपटा लगता है।*) अच्छा मैम, मैं चलूँगा, वसुंधरा राह देखती होगी! (*नमस्ते कर झट निकल जाता है।*)

चंद्रहास : चला गया...

अरुंधति : बच्चों ने पता नहीं कुछ खाया या वैसे ही सो गए। चंदर, तुम अपनी ज़िम्मेदारी दिल से निभा नहीं रहे हो। देखो, टी.वी. पर, सोफ़े पर कितनी गर्द जम गई है... मैं तक़रीबन बारह घंटे बाहर रहती हूँ। यह तुम नहीं करोगे तो कौन करेगा... किशन-रूपा को गए पंद्रह दिन हो गए... वैसे भी अब तुम्हें घर सँभालने की थोड़ी-बहुत आदत पड़ गई है। उनका वेतन भी भारी पड़ रहा है। तुम कहो तो उनके आने के बाद उनकी छुट्टी ही क्यों न कर दें... हाँ, यही ठीक रहेगा—मेरी तनख़्वाह में नौकर की कोई गुंजाइश नहीं है...

चंद्रहास : *(लगभग बेहोशी की स्थिति में)* तुम जैसा चाहो...

(चंद्रहास आँखें मूँद लेता है। धीरे-धीरे अँधेरा और फिर उजाला होने पर बैठक में चंद्रहास अकेला, दारू पीता हुआ। दिन का समय)

मैं आख़िरकार किशन बन गया... पर ये किशन-रूपा गाँव से अभी तक आए क्यों नहीं... कल गया था इंटरव्यू देने... उससे पहले भी... स्साले सब रिजेक्ट कर देते हैं... क्या हो गया है कॉर्पोरेट जगत को... इतना रिसेशन तो नहीं है कि मेरे-जैसे क्वालिफ़ाइड को एक नौकरी ना मिले... क्या मेरा अनुभव भी कोई मायने नहीं रखता... या मेरा व्यक्तित्व, मेरी योग्यता, मेरा थोबड़ा ही फिसड्डी हो गया है... कल जाना है एक और कंपनी में... वहाँ मेरा दोस्त है एएमडी। इस युग में सिफ़ारिश चलती है। उम्मीद है कि... पर नहीं हुआ तब... अरु

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रूपा-किशन की छुट्टी करने पर आमादा है... यानी चंदर जी, आप फ़ुल टाइम सर्वेंट अपने ही घर के... (*.फ़ोन की घंटी बजती है, उसे घूरकर देखते हुए*) इसे भी कटवाना पड़ेगा... पर यह तो इंटरनेट के साथ एमटीएनएल ने... और नेट पर जॉब साइट... (*घंटी लगातार बज रही है, अंतत: चिढ़कर उठा लेता है।*) हैलो... कौन?... अच्छा, अक्षत बोल रहे हो... अरुंधति ऑफ़िस में है। तुम्हें नहीं पता... ओहो! तो तुम बुलंदशहर से बोल रहे हो। अरु को मोबाइल पर... अच्छा, अच्छा, स्विच ऑफ़ है। बिज़ी होगी। कुछ कहना है... ठीक है, बता दूँगा, (*.फ़ोन रखकर पैग बनाता है।*) ये भी स्साला अक्षत... बार-बार आ जाता है... औरत से पट नहीं रही... और मेरी बीवी पर लाइन मार रहा है... कहीं... उस रात कैसा तो अरु के आगे बिछा जा रहा था... और अरु भी कैसे पकौड़े खिला रही थी... बेटा चंदू... तुम बेवक़ूफ़ के बेवक़ूफ़ ही रहे, और अक्षत ने बाज़ी मार ली... और क्या तुम जैसे बेकार के भरोसे ही बैठी रहेगी श्रीमती अरुंधति शुक्ला, ह्विस्की ने तुमको वैसे भी निचोड़ लिया है। अक्षत की बीवी भाग-भाग जाती है और दोनों—अरुंधति और वो... चंदर जी, आप गए काम से अब... नौकर थे ही दलाल भी बन जाएँगे!

(डाइनिंग टेबल पर रखा आईना उठा लेता है। अपना चेहरा देखता है। दाढ़ी पर हाथ फेरता है, जिसके खूँटे निकल आए हैं, अलग-अलग कोण से निहारता है। अपनी ही सूरत देखकर उदासीन हो जाता है।)

(*आईना तकते हुए*) देखो, कैसा तो हो गया है मेरा हाल! चेहरे पर रौनक ही नहीं रही, क्यों भई चंदर (*आईने में अपनी परछाईं से*), एक बात बताओ! तुमने बीर-बहूटी देखी है?... अरे वही, जिसको बचपन में खेत या आँगन की हरियाली पर से धीरे-से पकड़ माचिस की डिबिया में घास रखकर बंद कर देते थे। हाँ, हाँ, वही लाल गाय या गोगल गाय—लाल सुर्ख़, मख़मल जैसी। पता है वह क्या करती थी? उसकी मुलायम पीठ को छू भर दो तो वह अपने पैर छोटी-सी देह के नीचे सिमटाकर बिलकुल ऋषि-मुनियों की तरह निश्चल हो जाती थी। चलना रोक देती थी। फिर हम उसे हौले-से सँभालकर अपनी हथेली पर रख लेते थे। कुछ देर बाद वह पैर बाहर निकालकर चलने लगती थी। फिर स्पर्श करो तो फिर अचल। यही हाल मेरा हो गया है। मैंने भी अपने हाथ-पाँव समेट लिए हैं, दिलो-दिमाग़ भी। बदनसीबी ने अरु की सजग उँगलियों के द्वारा मुझे छू लिया है... मैं ज़िंदा होकर भी मुरदे-जैसा बेहरक़त हो गया हूँ... क्या कहा... हाँ, हाँ, तुम सही कह रहे हो, मेरी हालत कछुए-सी हो गई है, भय के मारे मैंने अपने मुँह, हाथ, पैर—सब छिपा लिए हैं...

(मंच पर प्रकाश कम होता हुआ बुझ जाता है, देर तक अँधेरे के बाद उजाला क्योंकि पहले अंक का शुरुआती दृश्य जारी...)

(किशन-रूपा लौट आए हैं। चंद्रहास अव्यवस्थित-सा टेबल पर सिर टिकाए कुर्सी में। बाहर की आवाज़ सुनकर किशन चुपके-से दरवाज़ा खोलता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होठों पर उँगली रखकर रिद्म और रोचक को सीधे अंदर जाने का इशारा करता है। दोनों आहट किए बिना चुप भीतरी कमरे में दाख़िल हो जाते हैं।) (*चंद्रहास सिर उठाकर*) क्या करूँ... अब अरु का भी आसरा नहीं रहा...

किशन : (*दोनों हाथ जोड़कर*) साब, बहुत-बहुत सुक्रिया! आप नहीं अड़ जाते तो मेम साब ने तो हमारी छुट्टी कर ही दी थी!

चंद्रहास : (*नशीली ज़बान से*) इसमें शुक्रिया काहे का! दुखिया ही जाने दुखिया का हाल... अरुंधति ने तो मुझे नौकर बना ही दिया... आँ... अरे किसनवा, एक बीड़ी देना ज़रा...

किशन : साब रुको, मैं आपके लिए सिगरेट ले आता हूँ, रूपा... ओ रूपा... (*रूपा आती है।*) मैं अभी आ रहा हूँ। साब का ध्यान रखना... (*जाता है।*)

रूपा : साब, मेरी रोटी जल जाएगी। मैं अभी आई... (*चंद्रहास उठने की कोशिश में सोफ़े पर बेतरतीब-सा गिर जाता है। क्षणांश के लिए अँधेरा, लाइट लगातार बंद-चालू होती रहती है। रूपा सोफ़े के नज़दीक खड़ी है। चंद्रहास उठकर बैठता है। ग़ौर से रूपा को देखता है।*)

चंद्रहास : (*रूपा को ऊपर से नीचे तक घूरते हुए*) अक्षत स्साला हरामी निकला! मेरी ही बीवी मिली थी उसको ...अरु भी बेवफ़ा निकली... उससे तुम कितनी अच्छी हो रूपा... इधर आओ, मेरे पास...

रूपा : क्या कह रहे हैं साब...

चंद्रहास : यहाँ आओ, मेरी बाँहों में... मेम साब ज्यों उसकी बाँहों में...

रूपा : साब... साब... (*चंद्रहास उठकर उसे बाँहों में दबोच लेता है। वह छटपटाती है लेकिन चंद्रहास उसे छोड़ता नहीं।*)

चंद्रहास : रूपा, मेरी जान! मैं तुम्हें सब कुछ दूँगा... तुम मेरा कहना मान जाओ, एक बार... बस एक बार... (*रूपा उसकी बाँहों से फिसलकर भागती हुई भीतर चली जाती है। मंच पर अँधेरा। उजाला होने पर चंद्रहास पूर्ववत् सोफ़े पर बेतरतीब-सा पड़ा है। करवट बदलने की कोशिश में नीचे आ गिरता है।*)

किशन : (*तभी बाहर से आते हुए*) साब, साब... अरे! नीचे गिर गए... (*बोतल से पानी के छींटे चंद्रहास के चेहरे पर छिड़कता है।*)

चंद्रहास : (*सुध में आकर*) रूपा कहाँ गई... (*सिर झटकता है। बात को बनाते हुए*) अरे किशन, तुम उसे मेरी देखभाल का कह गए थे न?... जाने दो, तुम मेरे लिए पैग बनाओ!

किशन : साब बहोत पी ली आपने, अब ख़तम हो गई है। आप लेट जाओ यहाँ सोफ़े पर। (*चंद्रहास को लिटाता है।*) मैं ज़रा रूपा की मदद कर देता हूँ... (*किशन के जाने पर उठकर बैठता है। सिगरेट जलाता है। पैंट की जेब से क्वार्टर निकाल ढक्कन खोलकर सीधे मुँह से लगा लेता है।*)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चंद्रहास : (*पीते-पीते*) अब यही मेरी दवाई है, यही मेरा इलाज करेगी... (*गाता है*) जब दिल ही टूट गया, तो जीकर क्या करेंगे... इतनी शीशी उँड़ेल लूँ और सदा के लिए... (*पूरी बोतल समाप्त करके लड़खड़ाता है और लहराकर नीचे फ़र्श पर गिर जाता है। अँधेरा। उजाला होने पर—*)

किशन : (*अंदर से आते हुए चंद्रहास को गिरा देख उठाकर ऊपर सुलाते हुए*) रूपा... रोचक... जल्दी आओ...

रूपा : (*तेज़ी से आते हुए*) क्या हुआ?

दोनों बच्चे : (*दौड़कर आते हुए*) क्या हुआ काका?

किशन : जैसे बिलकुल जान ही नहीं रही... मैं मेम साब को फ़ोन लगाता हूँ... (*लैंड लाइन से*) हैलो... मेम साब, आप तुरंत आओ! साब की तबीयत बहुत ख़राब है... क्या... अच्छा, आप घर के पास ही हैं... तो अपने पड़ोस के डागदर बाबू को साथ ले आना... (*हाँफता है।*)

रूपा : (*पानी का गिलास लाती है।*) किशन, पानी के छींटे मारो साब के मुँह पर, थोड़ा पानी भी पिलाओ।

(किशन अँगुली में पानी लेकर चंद्रहास के चेहरे पर छितराता है। सब घबराए हुए हैं। रोचक चम्मच लेकर आता है। उससे किशन चंद्रहास को पानी पिलाने का जतन करता है। रिद्‌म 'पापा, पापा' कहती हुई चंद्रहास को हिलाती है। घंटी बजने पर रूपा दौड़कर दरवाज़ा खोलती है। अरुंधति मोबाइल पर बात भी कर रही है और डॉक्टर को संकेत से भीतर आने के लिए भी कह रही है।)

अरुंधति : हाँ, अक्षत, तुम फ़ौरन आ जाओ! चंद्रहास की हालत बहुत ख़राब है! डॉक्टर साब, आप देखिए, क्या हो गया है मेरे चंद्रहास को...

(किशन डॉक्टर का बैग लेकर उनके लिए चंद्रहास के निकट कुर्सी लगा देता है। सभी चुपचाप सहमे हुए देख रहे हैं। डॉक्टर चेक-अप करता है। बैग से सीरिंज निकालकर उसमें दवाई भरता है और चंद्रहास की बाँह पर इंजेक्शन लगा देता है। किशन, अरुंधति, रूपा डॉक्टर को सहायता करते हैं।)

डॉक्टर : डरने की कोई बात नहीं है! शराब बहुत ज़्यादा पीने से यह हालत हो गई है।

अरुंधति : डॉक्टर साब, चंदर ठीक तो हो जाएगा न?

डॉक्टर : हाँ, हाँ, थोड़ी देर में होश आ जाएगा। *(प्रिस्क्रिप्शन लिखते हुए)* मैं गोलियाँ लिख देता हूँ। मेडिकल से मँगवा लेना। खाने के बाद या दूध के साथ ये तीन तरह की गोलियाँ एक-एक देना। अभी से दिन में तीन बार और हाँ, शराब एकदम बंद!

(दरवाज़ा खुला ही है, अक्षत और वसुंधरा हड़बड़ाते हुए दाख़िल होते हैं, अक्षत के हाथ में एक लिफ़ाफ़ा है।)

अरुंधति : अच्छा हुआ तुम आ गए अक्षत, ये दवाई लेकर आनी है।

अक्षत : ले आऊँगा पर तबीयत कैसी है...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉक्टर : सब ठीक हो जाएगा, आप लोग डरिए मत। मैं चलता हूँ...
(सब चैन की साँस लेते हैं। अरु अपना पर्स लेकर डॉक्टर के साथ बाहर जाती है। किशन भी बैग लेकर, जल्द ही वापिस आ जाते हैं।)

अरुंधति : *(चंद्रहास के सिरहाने बैठकर सिर अपनी गोद में रखते हुए)* चंदर... चंदर... *(चंद्रहास आँखें खोलता है। सबके चेहरे पर मुस्कान।)* चंद्रहास, कैसा लग रहा है ?

चंद्रहास : *(उठकर बैठते हुए)* मुझे क्या हुआ... तुम सारे मुझे ऐसे घेरकर क्यों खड़े हो ?

अरुंधति : कुछ नहीं, तुम बिलकुल ठीक हो... तुम लेट जाओ ! *(लिटाती है, अक्षत की ओर देखकर—)* अरे अक्षत, ये तुम्हारे हाथ में क्या है ?

अक्षत : यह लिफ़ाफ़ा आपके लेटरबॉक्स में था। *(अरुंधति को देता है। अरु उसे खोलकर अंदर की चिट्ठी पढ़ते हुए मुस्कुराती है।)*

अरुंधति : *(चिट्ठी चंद्रहास को देते हुए)* कॉन्ग्रैट्स चंदर, तुम्हें 'सॉफ़्टीक्यूअर' में नौकरी मिल गई है ! ऑफ़र लेटर है। पैकेज है छह लाख का। वाह ! क्या जादू हो गया... अब फिर हमारे पुराने दिन लौट आएँगे...
(सब ख़ुश होते हैं। चंद्रहास के लेटर पढ़ लेने के बाद अक्षत उसे बधाई देता है। वसुंधरा, रोचक, रिद्म कुर्सियों पर बैठ जाते हैं। किशन-रूपा खड़े हैं। चंद्रहास का चेहरा भी खिल उठा है।)

अक्षत : दीदी... हाँ, आपको कोई एतराज़ न हो तो मैं आज से आपको दीदी ही संबोधित करूँगा। *(चंद्रहास चौंककर देखता है।)* दीदी, मेरे घर में भी जादू हो गया है... वसु पूरी तरह बदल गई है। इग्नू से परीक्षा दे रही है। मेरे में भी बदलाव आ गया है। यह सब आपकी वजह से... *(वसु भी गर्दन हिलाती है।)* हम आपको ख़ुशख़बरी देने आ ही रहे थे कि आपका फ़ोन आ गया...

अरुंधति : ख़ुशख़बरी ! वह क्या ?

अक्षत : दीदी, आप बुआ बनने जा रही हैं। *(वसु लजाती है।)* वसु इज़ प्रेग्नेंट...

अरुंधति : वाह ! वाह ! *(ताली बजाती है।)* मिठाई खिलाओ भई !

किशन : मैं लेने जाता हूँ। मेरे को भी आप सबको मिठाई खिलानी है...
(घुप्प अँधेरा, प्रकाश होने पर—चंद्रहास यथावत् फ़र्श पर अस्त-व्यस्त गिरा पड़ा है। निकट ही ख़ाली शीशी पड़ी है।)
(अंदर से आते हुए किशन चंद्रहास की हालत देख दौड़कर उसे उठाता है, लेकिन चंद्रहास उसके हाथ से छूटकर नीचे गिर जाता है—एकदम निर्जीव-सा।) रूपा... रोचक... जल्दी आओ ! *(सब दौड़कर आते हैं। किशन वहीं नीचे चंद्रहास के पास बैठकर उसे हिलाते हुए—)* बाबा, मम्मी को फ़ोन लगाओ ! रूपा, डागदर को पड़ोस से बुला लाओ... जल्दी !

[पर्दा गिरता है]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निबंध

इंद्रनाथ चौधुरी

भारत का स्वर : *रामायण*

भारतीय साहित्य परंपरा के प्रकांड विद्वान ए. के. रामानुजन ने एक बार कहा था कि इस देश में दो ही भाषाएँ हैं : *रामायण* और *महाभारत* ।

यह पूरा देश इन दो भाषाओं में बोलता है। *रामायण* भारत की भाषा है, भारत का दर्शन है, भारत का अस्तित्व है। वह हमारी जातीय चेतना का भंडार है। वह एक तरफ़ इतिहास है, परंतु भारत में इतिहास की व्याख्या कुछ दूसरे ढंग की है। यहाँ जो घटनाएँ घट चुकी हैं, इसके समाहार को इतिहास नहीं कहा जाता वरन् जो घटनाएँ लगातार घटती रहती हैं, जिनका पाठ होता रहता है, जो लगातार दोहराई जाती हैं, उसे यह देश इतिहास कहता है। जो चिरंतन वर्तमान है, जिससे जीवन का नवीकरण (self renewal) होता है। पुनरुज्जीवन (regeneration) प्राप्त होता है, वह इतिहास है। *रामायण* इसी चिरंतन वर्तमान (eternal present) का इतिहास है। यह एक तरफ़ इतिहास है सूर्यवंश का, प्रकाश का। *महाभारत* में भी प्रकाश है परंतु सूर्य का नहीं, चंद्रमा का प्रकाश है, क्योंकि वहाँ अंधकार में प्रकाश फैलाने का प्रयत्न किया गया है। दूसरी तरफ़ यह मिथक है। मिथक का आधार कोई सत्यधर्म (archetype) होता है, कोई एक विचार है, जिसके इर्द-गिर्द कोई कहानी बुनी जाती है, उसे ही मिथक कहते हैं।

भारत का स्वर राम है। *रामायण* का विग्रह है — 'रामाया : अयनम्', केवल 'रामस्य अयनम्' नहीं, राम और सीता का अयन है यह *रामायण*। यह देश अकेला, एक को स्वीकार नहीं करता — वह विविधता में विश्वास करता है क्योंकि वहीं हमें एकता दिखाई पड़ती है। रवींद्रनाथ ठाकुर ने कहा था, अकेला मनुष्य बड़ा निरर्थक है, वहाँ एकता (unity) दिखाई नहीं पड़ती है। जब अकेले मनुष्य का प्रकृति, ईश्वर या मानवता से मिलन होता है, तभी उसमें एकता

जन्म : 1936। हिंदी, बाङ्ला एवं अंग्रेज़ी में कई पुस्तकें प्रकाशित। तुलनात्मक भारतीय साहित्य के विषय के विशेषज्ञ। *निराला काव्य पर बाङ्ला का प्रभाव, तुलनात्मक साहित्य की भूमिका* चर्चित। साहित्य अकादेमी के पूर्व-सचिव एवं कई संस्थाओं से संबद्ध। संपर्क : 183, टैगोर पार्क, दिल्ली 110009

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिखाई पड़ती है। राम का चरित्र राम और सीता के मिलन या जोड़ से बना है। राम पुरुष तो सीता स्त्री है—वैपरीत्य के समन्वय में भारत विश्वास करता है; उदाहरणतया, इतिहास और पुराण, जिजीविषा और मोक्ष, धर्म और त्याग, शौर्य और प्रेम। *रामायण* मिथकीय इतिहास है, यह चिरकाल का इतिहास है। इसीलिए तो *रामायण* का पाठ किया जाता है, जिससे सबका लगातार नवीकरण और पुनरुज्जीवन संभव हो सके। यहाँ जिजीविषा अर्थात् कर्मठता एवं मोक्ष अर्थात् त्याग एक-दूसरे के अनुपूरक हैं। इसीलिए तो तुलसीदास राम को 'तपस्वी राजा' कहते हैं। यहाँ धर्म अर्थात् नैतिकता के आश्रय से कर्तव्यों का त्यागपूर्ण निर्वाह पर बल है। लोकमंगल के लिए शौर्य और लोकरंजन के लिए प्रेम और रमणीयता का अनुपूरक मणि-कांचन योग है। यहाँ यह युग्म, जोड़ एक-दूसरे के विपरीत नहीं है, द्वंद्वात्मक नहीं, वरन् एक-दूसरे के अनुपूरक (complementary) है। वैपरीत्य की अनुपूरकता भारत की एक महत्त्वपूर्ण दार्शनिक एवं वैचारिक अवधारणा है।

रामायण में सत्य और धर्म के समन्वित रूप की अभिव्यक्ति है। *महाभारत* में न्याय और धर्म की आँख-मिचौली है। ये दोनों जोड़ सत्य और धर्म एवं न्याय और धर्म द्वंद्वात्मक जोड़ के रूप में नहीं—अनुपूरक जोड़ के रूप में रहते हैं।

आदिकांड के प्रारंभ से वाल्मीकि ने अपने काव्य के लिए उपयुक्त नायक का संधान करते हुए नारद को पूछा था कि उन्हें नायक के रूप में ऐसे व्यक्ति की खोज है जो गुणवान, पराक्रमी, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, जो सत्य वाक्य बोलता है, दृढ़व्रत है — अपनी बात का पक्का है, सच्चरित्र, दयालु, विद्वान, सब काम करने में समर्थ, देखने में सुंदर, आत्मवान — जो अपने को पहचानता है, अनावश्यक क्रोध नहीं करता, किसी से ईर्ष्या या द्वेष नहीं करता, अपने तेज से आप चमकता है, ऐसा आदमी जिसको देखकर देवता भी काँप उठते हैं।

नारद ने उत्तर में कहा था कि देवताओं में भी ऐसा गुणगान व्यक्ति मैंने नहीं देखा है। मगर जिस नरचंद्रमा में ये सब गुण हैं, उसकी बात सुनो। *रामायण* में नरचंद्रमा की बात है, देवता की बात नहीं। रामायण में देवता ने अपने को छोटा बना के मनुष्य रूप नहीं लिया है। मनुष्य ही अपने गुणों से देवता बन गया है। इसीलिए रामचरित इतना महिमान्वित है। राम की संक्षिप्त कथा सुनने के बाद तमसा नदी के किनारे घूमते हुए प्रेमक्रीड़ा में संलग्न क्रौंच पक्षियों के एक जोड़े में से पुरुष क्रौंच का एक व्याध के द्वारा मार गिराए जाने पर स्त्री क्रौंच का आर्तक्रंदन वाल्मीकि को शोकाकुल कर देता है। और उस शोक से प्रभावित अनायास ही उनके मुखारविंद से : *मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम: शाश्वती समा:* श्लोक निकल पड़ता है। यह श्लोक प्रतीकात्मक है। यहाँ तमसा नदी — कवि का गहन अंतर्मन है, जहाँ से शोक का स्वर फूटता है। क्रौंच स्त्री और पुरुष के बीच एक की मृत्यु से जो विच्छेद और फलस्वरूप जो चिरविरह की स्थिति पैदा हुई — वाल्मीकि राम की कथा में उसे स्थान देते हैं। सीता की वेदना युगांत पार करके चिरकाल की वेदना बन गई है। यह *रामायण* का आधार भाव है। यहाँ सुख कहाँ?

मंथरा एवं कैकेयी का षड्यंत्र, दशरथ की मृत्यु, राम का वनवास, सीता का अपहरण, अग्नि परीक्षा, पतिविरहनी उर्मिला का शोक, राम पर लोकापवाद, सीता का त्याग और उसका आश्रमवास और अंत में पाताल प्रवेश। यहाँ कहीं भी सुख नहीं है। शोक ही *रामायण* को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धारण किए हुए है। वाल्मीकि ने दु:ख के द्वारा राम, सीता, लक्ष्मण, भरत को महिमान्वित किया है। रवींद्रनाथ ठाकुर कहते हैं कि वस्तुत: दु:ख का तत्त्व और सृष्टि का तत्त्व एक है क्योंकि अपूर्णता ही दु:ख है और सृष्टि भी अपूर्ण है। अपूर्ण के भीतर से ही तो पूर्ण का प्रकाश होता है। शून्यता पूर्णता का विपरीत है, अपूर्णता पूर्णता का विपरीत नहीं है, विरुद्ध नहीं है, वह पूर्णता का ही विकास है। दु:ख की परिपूर्णता और सार्थकता दु:ख नहीं है, वह आनंद है जैसे अमावस्या के अंधकार में अनंत ज्योतिष्क-लोक प्रकाशित हो उठता है, उसी तरह दु:ख के निविड़तम तमस में अवतीर्ण होने पर आत्मा आनंद लोक की ध्रुवदीप्ति देख पाता है। *रामायण* दु:ख के द्वारा जीवन के आनंद, मंगल और सत्य को हमारे सामने प्रकाशित कर देता है।

रामायण अयन है, कथा नहीं। अयन का अर्थ है गति, मार्ग, घर। जैसे कहा जा चुका है, दो प्रकार से इसका विग्रह होता है—1) *रामस्य अयनम्* परंतु यह केवल राम का अयन नहीं है। यह 2) *रामाया: अयनम् है,* राम और सीता का अयन है। ब्रह्मा ने वाल्मीकि को कहा था — *रामस्य चरितम् कृत्स्नं कुरू* —रामचंद्र के समग्र चरित्र को तुम प्रकाशित करो।

मगर वाल्मीकि के लिए *रामायण* रूप जो महाकाव्य की समग्र वर्णना सीता के महत् चरित्र का प्रतिपादक है :

काव्यं रामायणं कृत्स्नं।
सीतायाश्चरितं महत्॥

राम और सीता जीवन की गति है, मार्ग है, निवास है। उस गति का आधार दु:ख है— दु:ख की परिपूर्णता और सार्थकता दु:ख नहीं, वह आनंद है।

रामायण मात्र काव्य नहीं, इतिहास है — घटनावली का इतिहास नहीं। भारतवर्ष के चिरकाल का इतिहास है। भारतवर्ष की साधना है, उसकी आराधना है, उसके संकल्प का इतिहास *रामायण* में वर्णित है। श्रद्धा के साथ और स्तब्ध होकर समस्त भारतवर्ष हज़ारों वर्षों से इसको किस रूप में ग्रहण करता रहा है — यह समझना होगा। *रामायण* को लेकर भारतवर्ष क्या कर रहा है, यह समझना होगा। *रामायण* में भारतवर्ष ने किस आदर्श को महत् मानकर स्वीकार किया है, उस पर विचार करना होगा। आख़िरकार व्यास, वाल्मीकि एक ऐसी श्रेणी के कवि हैं, जिनकी रचनाओं के भीतर से एक समग्र देश, एक समग्र युग अपने हृदय को, अपनी अभिज्ञता को व्यक्त करके उसको मानव की चिरंतन सामग्री बना डालते हैं।

रामायण नरचंद्रमा की कथा है, देवता की नहीं। कभी-कभी उनका भागवत् रूप प्रकट होता है —जटायु को मोक्षदान करते हुए राम कहते हैं :

मया त्वं समनुज्ञातो
गच्छ लोकाननुत्तमान्

यह मात्र गुरु सम्मिता (scripture) नहीं, धर्म ग्रंथ नहीं। यह सखी सम्मिता है, काव्य है, जिससे शिक्षा और मनोरंजन—दोनों होता है। यह जनता का काव्य है, एक कवि ने नहीं— लंबे समय के भीतर से गुज़रते हुए पता नहीं कितने कवियों ने इसकी कहानी की रचना की है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस काव्य को पढ़ते हुए एक समग्र देश, युग, दर्शन, मिथकीय सत्य से गुज़रने का अवसर मिलता है।

यह कहानी पहले लोकगीतों, कथाओं में मौखिक रूप से फैली हुई थी। फिर बाद में एक कवि का नाम जुड़ गया — नहीं तो, नाम मात्र उपलक्ष्य (excuse))है। गंगा हिमालय की तरह यह काव्य भारत है। *रामायण* का मिथकीय सत्य राम रावण का युद्ध नहीं, वीर रस प्रधान युद्ध नहीं, राम के बाहुबल का प्रदर्शन नहीं। यह ब्रह्मांडीय स्तर पर (cosmic level) प्रकाश और अंधकार का द्वंद्व है। आसक्ति और निरासक्ति का द्वंद्व है।

रामायण के द्वारा पहली बार नायक की अवधारणा की प्रतिष्ठा होती है। नायक जो निरासक्त है, जो त्याग की प्रतिमूर्ति है, जो शरणागत का रक्षक है, जो ऋषिगण की रक्षा के लिए स्वयं का विसर्जन तथा सीता और लक्ष्मण तक का परित्याग कर सकते हैं :

अप्यहं जीवितं जह्यां त्वां
वा सीतां स लक्ष्मणाम्।
नतु प्रतिज्ञां सं श्रुत्य ब्राह्मणेभ्यो विशेषत: ॥

यह असाधारण असंसक्तता यानी नि:स्वार्थभाव है। किसी चीज़ में कोई आसक्ति नहीं। वेदों में इसे ही सबसे बड़ी तपस्या कहा गया है : *स्वं ददाति इति तप:*

–जो अपने को अर्पित कर देता है, वही सबसे बड़ी तपस्या है, इसीलिए राम तपस्वी राजा हैं। अपने को अर्पित करने का अर्थ है, लोक के लिए, समाज के लिए, मानवता के लिए अपने को अर्पित कर देना। राम ने आजीवन प्रजा के हितकल्प में जीवन बिताया :

इदं शरीरं कृत्स्नस्य
लोकस्य चरता हितम्॥ (02.02.07)

पितृ आज्ञा पालन हेतु रातोंरात राजतिलक को वनवास में परिणत होते हुए देखकर जो विचलित हुए बिना कैकेयी के निर्देश को ध्यान में रखते हुए कि 'राम को आज ही वन गमन करना होगा' तत्क्षण कहते हैं :

एवमस्तु गमिष्यामि।

और तत्काल वन के लिए प्रस्थान हेतु तैयार हो जाते हैं। यह मात्र स्थितप्रज्ञता का ही लक्षण नहीं, चरम निरासक्ति का परिचायक है। राम की दृष्टि सत्य और धर्म के समन्वित अयन पर है। धर्म और सत्य एक-दूसरे से बदले जा सकते हैं :

धर्मे सत्यं प्रतिष्ठितम्।

इसलिए जब दशरथ वह शेष रात राजपुरी में बिताने को कहते हैं तो राम का कहना था, —महाराज अपने सत्य की रक्षा कीजिए :

सत्यस्त्वं भव पार्थिव।

मनुष्य के चरम आदर्श स्थापना के लिए, नायक की अवधारणा की प्रतिष्ठा के लिए कवि ने इस महाकाव्य और रामचरित की रचना की है। ऐसे नायक की अवधारणा की प्रतिष्ठा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारत के इतिहास में कई बार दिखाई पड़ती है : पांडवगण, भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, सम्राट अशोक। इन सब महापुरुषों के जीवन में एक ऐसा समय आता है, जब ये सब कुछ त्यागकर स्व की खोज में निकल पड़ते हैं और उन्हें ही समाज नायक कहता है। आधुनिक काल में भी एक ऐसा व्यक्ति था—महात्मा गाँधी, जिसने समाज, मानवता के निमित्त सब कुछ त्याग दिया था। जब हम 14 अगस्त, 1947 की रात को स्वाधीनता का उत्सव मना रहे थे, यह व्यक्ति कोलकाता की गलियों में घूम-घूमकर सांप्रदायिक दंगों से पीड़ित लोगों की सेवा कर रहा था। इसके पास कुछ नहीं था, घुटनों के ऊपर पहनी हुई एक धोती, बदन नंगा, आँखों पर हल्के फ्रेम का एक चश्मा और धोती के साथ टँगी हुई चेन से लटकी हुई एक घड़ी—यह हमारा आधुनिक नायक था, भारत का चिरकालिक नायक।

रामायण में घर की बात को अत्यंत बृहदाकार में प्रस्तुत किया गया है :

पिता पुत्र में, भ्राता भ्राता में, पति पत्नी में जो धर्म का बंधन है, प्रीति भक्ति का संबंध है, रामायण ने उसे इतना महत् बना दिया है कि वह अति सहज ही महाकाव्य का उपयुक्त बन पड़ा है :

—पिता के प्रति पुत्र का आज्ञाकारी होना,

—भ्राता के लिए भ्राता का आत्मत्याग,

—पति पत्नी के बीच परस्पर के प्रति प्रेम निष्ठा,

—प्रजा के प्रति राजा का कर्तव्य कितनी दूर तक फैला हुआ है, *रामायण* यही प्रदर्शित करता है।

इस तरह व्यक्ति विशेष को, विशेषत: पारिवारिक संपर्कों को किसी देश के महाकाव्य ने इस रूप में वर्णित नहीं किया है। गार्हस्थ आश्रम का कितना उच्च स्थान था—यह काव्य उसी का ही प्रमाण है। गृहस्थाश्रम हमारे सुख के लिए नहीं, सुविधा के लिए भी नहीं, भोग के लिए भी नहीं। गृहस्थाश्रम संपूर्ण समाज को धारण किए रखता था और मनुष्य को यथार्थ रूप से मनुष्य रूप प्रदान करता था। गृहस्थाश्रम में पाँच कर्तव्यों का अथवा पाँच महायज्ञों का पालन करना होता है—ऋषियज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ, नृयज्ञ।

महापुरुष, पितृगण, देवता, जीव-जंतु एवं ग़रीब लोगों के प्रति मनुष्य के कर्तव्यों का पालन ही मनुष्य का गृहस्थ जीवन है। रामायण उस प्रकार का गृहस्थाश्रम है, जहाँ बाहुबल नहीं, जिगीषा नहीं, यानी किसी पर जीत हासिल करने की इच्छा नहीं, राष्ट्र गौरव की भी बात नहीं। शांत रस संवेद गृहधर्म को ही *रामायण* ने करुणा के अश्रुजल से अभिषिक्त कर सुमहत वीरता से ऊपर प्रतिष्ठित किया है। मगर यहाँ सुमहत वीरता के साथ-साथ *रामायण* का और एक उद्देश्य भी है। राम और सीता की दांपत्य प्रीति को उज्ज्वल रूप में प्रस्तुत करना है। मगर कुछ आलोचक कहते हैं कि यह संभव नहीं हुआ है, जितना हुआ उतने से ही इसे पृथ्वी का एक श्रेष्ठ प्रेमकाव्य कहा जा सकता है। यह प्रेमकाव्य गृहस्थाश्रम के नियमों से आबद्ध है, यह उच्छृंखल, उन्मुक्त प्रेमकाव्य नहीं।

राम हमारे साथ हैं मगर फिर भी हमसे दूर हैं। वे लोक-मर्यादा के प्रतिष्ठापक एक ऐसे आदर्श समाज की स्थापना करना चाहते हैं जहाँ :

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

— पुत्र का माता-पिता-गृह-राज से वंचित होकर भटकना बंद हो सके,
— पत्नी का दीर्घ वियोग ख़त्म हो सके, तथा
— रावण जैसे खलनायक के कुकृत्य फिर से दोहराए न जा सकें।

राम लोक-मर्यादा के प्रतिष्ठापक हैं। तुलसीदास कहते हैं कि पुष्पवाटिका में सीताजी की सुंदरता को देखकर राम के मन में : *छवि गृहे दीपसिख जनु बरई*-जैसी उपमा कौंध जाती है और राम को लगता है :

जसु बिलोकि अलौकिक सोभा। सहज पुनीत मोर मनु छोभा॥

इतना कहने के बाद राम सावधान हो जाते हैं — दरअसल तुलसी सावधान हो जाते हैं। राम वंश के गौरव की बात करते हुए रघुवंशियों का परायी स्त्रियों पर मन और दृष्टि नहीं पड़ती है और इसका स्पष्टीकरण देते हुए कहते हैं : *नहिं पावहिं परतिय मनु डीठी।*

तुलसी की भक्ति प्रेमाभक्ति नहीं। शास्त्रसम्मत राम की ऐश्वर्य भक्ति है। वाल्मीकि की तरह चित्रकूट के अरण्य में तुलसी सीता के तृषित हृदय को प्रेमसुधा से नहीं भरते हैं।

वाल्मीकि की वर्णना में चित्रकूट के पुष्पभार समृद्ध अरण्य में सीता आनंदमुग्ध हैं। घन कुंचित वेणी पीठ पर फैली हुई है। स्मितमुख सीता महेंद्रध्वज सदृश राम का हाथ पकड़ वन छाया में घूम रही हैं।

राम की प्रीतिस्निग्ध दृष्टि सीता के मुखचंद्र पर स्थित है। चित्रकूट के कंठ पर निर्मल मुक्ताहार सदृश्य मंदाकिनी प्रवाहित है। सीता के साथ राम मंदाकिनी जल में स्नान कर प्रस्फुटित पद्मपुष्प चुनकर सीता को उपहार दे रहे हैं। कुसुमित लता, उन्नत वृक्ष से लिपटी हुई है—इसे देख राम सीता को कहते हैं :

तुम परिश्रांत होकर मुझे
जिस तरह आलिंगन करती हो
उसी तरह यह कुसुमित लता
वृक्ष का आलिंगन कर रही है।

वनपथ से राम-सीता चले जा रहे हैं — रास्ते के दोनों किनारों में अनगिनत वनफूल खिले हुए हैं। राम अपनी पसंद से सपल्लव लाल, नीले फूल चुनकर सीता को उपहार दे रहे हैं। उस शैलमाला वेष्टित वनपथ में कोयल की कूक सुनाई दे रही है। सीता राम का हाथ पकड़ आनंदित मन से मुग्ध होकर कोयल कुहरित गाना सुन रही है।

मन:शिला पर जलसिक्त उँगली घिसकर रामचंद्र सीता के सीमांत पर प्रेमतिलक की रचना कर रहे हैं और पीले केसर के फूलों को चुनकर सीता के बालों में पहना रहे हैं और स्निग्ध प्यारभरे शब्दों में कह रहे हैं : *नायोध्यायै राज्याय स्पृहये च त्वया सह*

—मैं तुम्हारे साथ रहकर अब अयोध्या के राजपद की इच्छा नहीं करता हूँ।

यह रूप लोक मंगलकारी लोक-रक्षक राम का नहीं है, प्रेम में डूबे हुए राम का है। राम एक ही समय हमारे लिए मनुष्य और देवता हैं। एक ही समय हमसे उन्हें भक्ति और प्यार मिला है। यह सब कभी संभव ही नहीं होता, यदि यह हमारे जीवन को आंदोलित करनेवाला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काव्य नहीं होता। धर्म के अनुरोध से और सत्य की प्रतिष्ठा के लिए राम ने वनवास स्वीकारा था। वन में राक्षसों के उपद्रव के अतिरिक्त और कोई दुःख नहीं था। अरण्य के साथ उनका एकात्म था।

पाश्चात्य में चरित्रों क़े महात्म्य को उज्ज्वल रूप में दिखाने के लिए वनवास के दुःख को कठोर रूप में चित्रित किया जाता है। किंतु वाल्मीकि ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने वन के आनंद को बार-बार पुनरुक्ति द्वारा उसका कीर्तन किया है।

राम की कथा यज्ञ से शुरू होती है :

— पुत्र कामेष्टि यज्ञ।
— बालकांड में ही विशिष्ट यज्ञ की रक्षा के लिए राम सिद्धाश्रम में जाते हैं।
— मिथिला के धनुर्यज्ञ में राम भाग लेते हैं।

एक यज्ञ से राम अवतरित होते हैं, दूसरे से राम असत् का निराकरण करते हैं और तीसरे से सीतापति बनते हैं। यह मिलन धरती और आकाश का मिलन है। सुगंध और माधुर्य का मिश्रण है। सौंदर्य और सत्य का समागम है। यज्ञ शब्द की निरुक्ति से अर्थ निकलता है कि यज्ञ एक सृजनात्मक कर्म है। यह त्याग का प्रतीक है और इष्ट सिद्धि है। राम की दृष्टि में जो कर्म ठीक है, सत्यसिद्ध है, जो धर्मानुकूल है तथा जो मंगलमय है, वही कर्म ठीक है। इस कर्म को त्याग भावना के साथ करना होता है तभी इष्ट-सिद्धि होती है, जो राम के लिए लोकमंगल है। इसीलिए राम की दृष्टि हमेशा :

1) सत्य और धर्म के समन्वित अयन पर रहती है। लोकमंगल उनके जीवन का ध्येय है। इसीलिए यह रामकथा शाश्वत रूप में लोक में विराजमान है : *इदं हिचरितं लोके, प्रतिष्ठास्यति शाश्वतम्॥*
2) सत्य और धर्म को जो घेरे हुए है, वह है जिजीविषा — जीने की इच्छा जो 'चरैवेति' (गतिशीलता) में चरितार्थ होती है।
3) गति, अयन का यही अर्थ है। इन तीनों को लेकर *रामायण* है। परंतु इन तीनों अयन यानी सत्य, धर्म, जिजीविषा और गति के मूल आधार सत्य-आधारित लोक है, लोकमंगल है।

इसीलिए वाल्मीकि धर्म को जीवन का लक्ष्य मानते हैं, धर्म पर सत्य प्रतिष्ठित रहता है और इस धर्म को आधार बनाकर चतुर्वर्ग की बात करते हुए धर्म, अर्थ, काल के साथ लोकाचार को स्वीकारते हैं :

धर्मं अर्थं च कामं च
समयम चापि लौकिकम्।

धर्म वाल्मीकि के लिए कोई स्थिर तत्त्व नहीं है जो चिरकाल से चिरकाल तक अपरिवर्तनीय है, इसीलिए कैकेयी के षड्यंत्र के फलस्वरूप राम के द्वारा धर्म और सत्य के नाम पर उसी क्षण वनवास के लिए तैयार हो जाने पर तप्त मस्तिष्क, गर्मी खाए हुए भक्तिभाजन अग्रज राम के विरुद्ध लक्ष्मण के विद्रोह प्रदर्शन में वाल्मीकि ने कोई संकोच भी नहीं किया :

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''राम आप बुद्धिमान हैं किंतु जिस धर्म के प्रभाव से आज बुद्धिभ्रष्ट हुए हैं, उस धर्म को मैं घृणा (विद्वेष) करता हूँ।''

राम भी यह जानते थे कि यह न्यायसंगत नहीं है, कैकेयी की ईर्ष्या, मात्सर्य, दशरथ की मोहाच्छन्नता के कारण यह सब हो रहा है। फिर भी उनका धर्म, स्नेह — द्वेष एवं न्याय-अन्याय के ऊपर प्रतिष्ठित है। उस धर्म के लिए अन्याय को यदि प्रश्रय देना पड़े तो देना होगा। प्रियजनों को मर्माघात करना हो तो करना होगा, मगर धर्म के रास्ते पीछे नहीं जाना है। जनक-जननी ने राम को बहुत रोका। दशरथ ने तो यहाँ तक कहा था कि मुझे हटाकर तुम अभी राजा बन जाओ! मगर राम ने उनकी आर्ति की उपेक्षा की।

राम जिसको कर्तव्य मानते हैं, उसको वे क्षिप्रता के साथ तेज वेग से नि:संकोच संपूर्ण रूप से पूरा करते हैं। अन्याय युद्ध में बाली का वध करने में उन्हें क्षणभर के लिए भी संकोच नहीं हुआ। तपस्यारत शंबूक के सिरच्छेदन में उनकी एक क्षण के लिए पलक नहीं झपकी। कहा जाता है कि शास्त्र के अनुसार दोनों का अपराध स्पष्ट था —परंतु कौन-सा शास्त्र ? शास्त्र में तो यह भी कहा जाता है कि जाति कर्मणा निर्धारित होती है तो फिर शंबूक कहाँ शूद्र बना रहा ? तपस्यारत शंबूक तो ऋषि मुनियों के स्तर पर पहुँच गया था। कुछ प्रश्नों का उत्तर मिलना कठिन होता है, फिर भी अरस्तू के काव्यशास्त्र के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नायक सर्वगुण संपन्न होते हुए भी उसमें मानवीय दुर्बलताएँ बनी रहती हैं और वह मानव है—का प्रमाण मिलता है और दोष-गुणयुक्त व्यक्ति व्यक्ति-वैचित्र्यवाद के कारण अधिक आकर्षक बन जाता है।

शंबूक को कुछ बोलने का अवसर नहीं मिला था, सिर्फ़ कहा था, मैं जाति से शूद्र हूँ—राम का खड्ग उठा और सिर धड़ से अलग हो गया। परंतु बाली को बोलने का अवसर मिला था। उसने कहा था :

> ''हे सद्वंशजात, प्रियदर्शन प्रथित यशा राजपुत्र राम, मैंने तो तुम्हारा कोई अहित नहीं किया है, मैं तो दूसरे के साथ युद्ध में व्यस्त था, मेरा मांस भी तो अभक्ष्य है, फिर भी बिना दोष तुमने मुझे मारा क्यों ?''

राम का सबसे बड़ा उत्तर था, ''तुमने लोकाचार विरुद्ध पापकर्म किया है।'' बाद में एक शांत और निदारुण घोषणा होती है :

> ''यह जान के रखना, यह विपुल रण परिश्रम मैंने तुम्हारे लिए नहीं किया, अपने प्रख्यात वंश के कलंक को धोने के लिए किया है।''

— विदितश्चास्तु भद्रं ते योऽऽम रण परिश्रमः ।
सुतीर्णः सुहदां वीर्यान्नित्वदर्थं मयाकृता ॥

सोचिए, जिस चारुहासिनी, चंपकवर्णा, हरिणलोचना, तन्वी स्त्री के खो जाने पर अरण्य पर्व के पाँच सर्गों में उनका विलाप है। यहाँ तक कि रावण वध के बाद जब हनुमान यह ख़बर लेकर आए कि देवी मैथिली आपसे मिलना चाहती हैं तो राम की आँखें सहसा आँसू से भर आती हैं : *आगच्छत्व सहसा ध्यानमीषद् बाष्प परिप्लुतः ।*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो फिर यह राम कौन है ? प्रख्यात वंश के कलंक धोनेवाले राम या फिर धार्मिक श्रेष्ठ (धर्ममृतां वर:) या फिर अपनी पत्नी के प्रेम में आकंठ डूबा हुआ व्यक्ति ?

एक तरफ़ सुर और असुर के बीच हुए युद्ध की विशाल पट भूमिका और दूसरी ओर दो व्यक्तियों के प्रेम को लेकर खींचातानी। आँसू से आँखें भर आने पर भी राम के मन में जनगण के अपवाद का भय आते ही उनका हृदय द्विधाग्रस्त हो उठता है :

पश्यतास्तांतु रामस्य समीपे हृदय प्रियाम्।
जनवाद भयाद् राज्ञो वभूव हृदयं द्विधा॥

राम में द्विधाग्रस्तता के जो लक्षण दिखाई देते हैं, वे हैं :

एक ओर आँखों में आँसू भर आना और सीता को सुस्नाता दिव्य वेशधारण करने को कहना। दूसरी ओर बिना पालकी के चलकर लाने को कहना एवं स्वयं नहीं जाकर विभीषण को कहना। एक ओर प्राणप्रिया को देखते रहना तो दूसरी ओर निभृत नहीं, सबके सामने मिलना। द्विधाग्रस्तता की सबसे बड़ी बात सीता को निदारुण कठोर वाक्य कहना :

''जनकनंदिनी, तुम्हारे प्रति मेरी और कोई इच्छा नहीं है, तुम दश दिशाओं में से किसी भी दिशा में जा सकती हो ! चली जाओ लक्ष्मण या भरत या शत्रुघ्न, जिसके पास भी जाने की इच्छा हो, या सुग्रीव अथवा विभीषण के पास भी सुख से रह सकती हो !''

इस पर सीता ने कहा था :

किं मामसदृश वाक्यमीदृशं श्रोत्र दारुणम्।
रुक्षं श्रावयसे वीर प्राकृत: प्राकृताभिव॥

सारार्थ है कि आप नीच लोगों की तरह बातें कर रहे हैं। फिर और भी कहती हैं :

> ''रावण के साथ मेरे शरीर का स्पर्श होना, वह तो मेरी इच्छा से नहीं हुआ। मेरा हृदय मेरे अधीन नहीं है, वह तो तुम्हारे पास है।'' *मदधीनन्तु यत् तन्मे हृदय त्वयि वर्तते।*

राम प्रशासक है। प्रशासक बड़ा अकेला होता है — लोकापवाद के डर से वह त्रस्त रहता है। प्रशासक की दृष्टि से निभृत के स्थान पर सबके सामने मिलना ही श्रेयस्कर था। फिर अग्नि परीक्षा भी आवश्यक थी। वाल्मीकि लिखते हैं : ''प्राणों से भी प्रिय वैदेही को राम ने संपूर्ण लोकसम्मत और प्रथासिद्ध ढंग से स्वीकार किया।''

राम का क्या दोष ? बताइए, सब कुछ के बाद अयोध्या के नागरिकों ने क्या यह कहना छोड़ा :

> ''रावण-स्पृष्ट सीता को लेकर यदि राम संभोग सुख में मस्त हैं तो फिर हमारी स्त्रियों द्वारा दोष करने पर हमारे लिए सहने के अतिरिक्त और चारा क्या !''

— कीदृशं हृदये तस्य सीतासंभोग जं सुखं।
अंकमारोप्य तु पुरा रावणेन बलाद्धृता॥

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राम ने सुनते ही लक्ष्मण को कहा — यह अपकीर्ति मेरे लिए असह्य है। लक्ष्मण तुम कल प्रात: ही सीता को गंगा के पार वाल्मीकि के आश्रम में छोड़ आओ — नहीं, कोई प्रतिवाद मत करो, दूसरा कोई परामर्श मैं नहीं सुनूँगा।

हमें याद आ जाता है वह पुष्पोद्यान, जहाँ कुछ दिन पहले राम ने सीता को पवित्र मैरेय मधु पिलाया था (उत्तर : 42)। और दोनों ने प्रकृति के सौंदर्य का उपभोग किया था। मगर उन सब स्नेह-स्मृति का अतिक्रमण कर राम को केवल यह याद आया कि सद्य:गर्भिणी सीता अंतत: एक रात्रि के लिए तपोवन वास करना चाहती थी और पत्नी की उस आकांक्षा को राम ने आशातीत ढंग से बहुत अधिक मात्रा में, सीता के लिए जो अकल्पनीय थी, पूरी करते हैं। हमें मालूम है कि उनके मन में सीता को लेकर कोई संदेह नहीं था :

''त्रिलोक विशुद्ध मैथिली मेरी कीर्ति की तरह अत्याज्या है।'' (युद्ध 8:20)

और भी कहा था :

''मेरी अंतरात्मा जानती है कि सीता शुद्धशीला और यशस्विनी है।'' (उत्तर 45:10)

यह बात सीता के पाताल प्रवेश से पहले एक बार हम फिर सुनते हैं :

'सीता निष्पापा है।' (उत्तर 97:5)

मगर राम ने अपने हृदय के ऊपर सत्य को स्थान दिया था। अंतरात्मा की उपलब्धि को अग्राह्य कर लोकमत को महत्त्व दिया था। धर्म और लोकाचार में वे कोई प्रभेद नहीं करते थे। भारतीय परंपरा में लोक और शास्त्र एक-दूसरे के अनुपूरक माने गए हैं। ये द्विआधारी विपरीतधर्मी (binary opposites) नहीं हैं, जैसे कि पश्चिम में लोक (little) और शास्त्र (great traditions) परंपराओं में करते हैं।

महाभाष्यकार पतंजलि — 'प्रयुक्तो लोकार्थ' कहते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि लोक शब्द और अर्थ और उनके बीच के संबंधों का नियामक —शास्त्रीय नियम नहीं। मानवीय व्यवहार का लोक संचालक है और नृपनय (polity) निगम सार (the essence of the Vedas) तथा शाब्द (the views of wise) के अनुरूप इसका महत्त्व है।

मर्त्यलीला के प्रारंभ से लेकर अंत तक — निष्कम्प, निष्करुण, निष्कलुष राम अपने कुलधर्म, रामधर्म एवं स्वधर्म का पालन करते रहे। यही उनके महामानवत्व का प्रमाण है, प्रतिष्ठा भूमि है। परंतु सीता के पाताल प्रवेश करते ही :

मनसा कर्मण्यवाचा यथा रायं समर्पये।
तथा में माधवी देवी विवरं दातुमर्हति॥ (उत्तर 97, 15)

''लंका से मैं सीता को वापिस ले आया था, वसुधातल से भी वापस ले आऊँगा; इसमें कोई संदेह नहीं, वसुधा सीता को मेरे सामने ले आओ, नहीं तो ऐसा क्रोध व्यक्त करूँगा कि उसका प्रभाव समझ पाओगे।''

परंतु आश्चर्य की बात है कि जिस क्रौंच के शोक से वाल्मीकि विह्वल हुए थे, उस कवि ने सीता का मुखपत्र होकर एक भी बात क्यों नहीं कही, सिर्फ़ कहा, 'सीता अपापा है' (49.14)। फिर राम के आचरण को निःशब्द बिना समालोचना के स्वीकार कर लिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लक्ष्मण ने भी केवल एक बार प्रतिवाद किया और राम की आँखें भर आईं —एक क्षण के लिए। (उत्तर 52:6)।

वस्तुत: वाल्मीकि ने एक अद्‌भुत उदासीनता के वशीभूत होकर घटना की तीव्रता को अव्यक्त रखा — शायद इसी कारण सीता की वेदना युगांत पार कर चिरकाल की वेदना बन पाई है।

राम की एक ओर प्रेममयी सत्ता है, तो दूसरी ओर कर्तव्य परायणता। एक ओर संशय तो दूसरी ओर संशयातीत प्रेम। एक ओर आवेगजनित विह्वलता तो दूसरी ओर शोक के महासमुद्र को नि:शब्द होकर जीवन में समाहित कर लेना। एक ओर मानव तो दूसरी ओर मानवीय वृत्त के ऊर्ध्व एक ईश्वर रूप।

राम के आकर्षण का यही कारण है। एक ओर वे लोकनायक हैं तो दूसरी ओर प्रेमी-महनीय एवं श्लाघनीय प्रेमी। एक ओर कर्मपरायण तो दूसरी ओर कांताविरहयुक्त रामचंद्र। धर्म आमजन के लिए दुर्गम हो सकता है, मगर प्रेम की अनुभूति सर्वजनीन है।

रामायण से हमें धर्म और सत्य के मार्ग में प्रतिष्ठित रहने की शिक्षा मिली है। काव्यानंद भी मिला है। यह हमारे लिए केवल धर्मशास्त्र नहीं, काव्य भी है। यह हमारे परिवार की सीमा के बीच फैली हुई है इसीलिए इसके प्रति हमारी भक्ति और प्रीति—दोनों ही मौजूद हैं।

रामायण में जो कुछ भी विशेष घटनाएँ घटती हैं, कवि उसे यदृच्छया कहता है; यानी संयोग से। राजतिलक की प्राक् संध्या के समय मंथरा यदृच्छया राजप्रासाद के ऊपर चढ़कर अभिषेक के आयोजन की तैयारियाँ देख लेती है। पंचवटी की प्रशांत पर्णशाला में सुखासीना राम के पास रावण की बहन शूर्पणखा यदृच्छया ही आती है। राम और लक्ष्मण को किष्किंधा की ओर यदृच्छया आते हुए देखकर हनुमान उनको देवलोक से समागत दिव्यात्मा ही समझते हैं। यह यदृच्छया वास्तव में भगवदिच्छा है।

राम और लक्ष्मण का अयन—यानी गति, उस स्व को खोजने की गति, जो स्व खो चुका है, वह स्व भी आपको भगवदिच्छा से ही मिलेगा।

राम मनुष्य रूप हैं तो देवता रूप भी हैं। भक्तों के लिए राम ने 'नर तनुधारी' रूप लिया है।

रामायण सत्य और धर्म, भक्ति और मुक्ति, भोग और त्याग, अनुराग और विराग, मिथक और इतिहास—इन सब युग्म मूल्यों को साथ लेकर यह चलनेवाला महाकाव्य है। भारत का स्वर कभी एक का स्वर नहीं होता। भारत विविधता में विश्वास करता है। इसीलिए भारत बहुधर्मीय, बहुजातीय बहुभाषिक, सामासिक संस्कृति आधारित देश है। रवींद्रनाथ ठाकुर ने कहा था, अकेला मनुष्य बड़ा निरर्थक होता है, दो के साथ मिलकर उसमें एकता आती है। भक्ति में ईश्वर और भक्त की एकता है। यह देश हमेशा वैविध्य या युग्म में विश्वास रखनेवाला देश है। यह भक्ति, प्रेम, आध्यात्मिक तथा गृहस्थजनों की नैतिकता का काव्य है। इसमें हमें कभी राम का मर्यादित कर्तव्यपरायण रूप दिखाई दे जाता है तो कभी धर्म की रक्षा करनेवाला पुरुषोत्तम राम। तो कभी विछोह के दु:ख से आँखों से आँसू बहानेवाला राम। नहीं तो परमब्रह्म ईश्वर रूप राम प्रकट होते हैं। इन सब रामों का स्वर अलग होने पर भी एक है — और उस स्वर की गूँज ही भारत के हृदय की गूँज है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निबंध

सरोज कौशल

कल्पना और लालित्य का चारु मिश्रण

अर्वाचीन संस्कृत साहित्य में कतिपय नूतन साहित्यिक विधाओं का प्रचलन दृष्टिगोचर होता है। स्थापित तथा प्रचलित विधाओं के समानांतर ही संस्कृत का रचनाकार नई विधाओं को समृद्ध कर रहा है। आधुनिक संस्कृत का प्रारंभ सुप्रथित रचनाकार तथा पत्रकार अप्पाशास्त्री-राशिवडेकर से स्वीकार किया जाता है और उनके नाम से राशिवडेकर युग को 1890-1930 ई. पर्यंत माना जाता है। इस युग में आधुनिक संस्कृत रचनाकारों ने विषय वैविध्य को अनेक प्रकार की विधाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। संस्कृत गद्य साहित्य में भी समृद्ध विस्तार पाया गया। वैचारिक धरातल पर संस्कृत के रचनाकारों ने गंभीर आत्माभिव्यक्ति की। गद्य की अन्यान्य विधाओं के साथ ही संस्कृत ललित निबंधों की समृद्ध परंपरा आधुनिक संस्कृत साहित्य की महती विशेषता प्रतीत होती है।

निबंध गद्य की अत्यंत संश्लिष्ट बौद्धिक और वैचारिक विधा है, परंतु ललित निबंध का जो प्रारूप संस्कृत साहित्य में लगभग एक शताब्दी से प्रचलित है, उससे गद्य साहित्य में निबंध विधा पठनीय, लोकप्रिय और रंजक बन गई है।

संस्कृत तथा हिंदी साहित्य में ललित निबंध लेखन परंपरा प्राय: समकालीन ही है। संस्कृत साहित्य के ललित निबंध लेखन के प्रवर्तक हृषीकेश भट्टाचार्य (1850-1913 ई.) तथा हिंदी ललित निबंध के आदि लेखक बालकृष्ण भट्ट (1844-1914 ई.) दोनों समकालीन हैं तथा इनके निबंध भी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ही प्रकाशित हुए। कालांतर में बालकृष्ण भट्ट का प्रथम निबंध संग्रह *साहित्य सरोज* 1920 ई. में प्रकाशित हुआ। (संपादक—पंडित लक्ष्मीकांत भट्ट, कलकत्ता) जबकि हृषीकेश भट्टाचार्य की *प्रबंध-मंजरी* 1930 ई. में प्रकाशित हुई।

जन्म : 1964। तीन पुस्तकें तथा अनेक आलेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। संपर्क : 73-बी, अभयगढ़, के.बी. नं. 1 के सामने, जोधपुर (राज.); मो. 09928024824.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संस्कृत ललित निबंधों में बौद्धिकता, हास्य और व्यंग्य की त्रयी एकत्र प्राप्त होती है, जिससे कि ऐसी ललित पगडंडी बन गई है, जो गद्य को उत्कृष्ट पर्वत सानु पर स्थापित कर देती है।

निबंध में लेखक की मौलिक वैचारिक सरणि निबद्ध होती है, भावनाएँ ललित शैली में गुंफित हों तथा शोध, तथ्य अथवा स्थापनाएँ न हों। यह विधा मौलिक गद्यलेखन की एक उत्कृष्ट विधा के रूप में सर्वमान्य है। निबंध के अनेक समानार्थक नाम संस्कृत साहित्य में प्रचलित हैं। भट्ट मथुरानाथ शास्त्री ने निबंध के पर्याय रूप में प्रबंध, प्रस्ताव, रचना, संदर्भ इत्यादि का उल्लेख किया है।

आचार्य चारुदेव शास्त्री ने *प्रस्तावतरंगिणी* नामक ग्रंथ में निबंध एवं प्रस्ताव को समानार्थक स्वीकार करते हुए प्रस्ताव का लक्षण प्रस्तुत किया है :

''प्रायेण यत्किंचिद्विषयकोऽनुज्झितार्थसंबंधो गद्यबंध: प्रस्ताव इति समाख्यया प्रथते।''

—(*प्रस्तावतरंगिणी*, पृष्ठ 7)

किसी एक विषय पर एक वाक्य का आश्रय लेकर जो गद्यबंध-सर्जना की जाती है, वह प्रस्ताव कहलाती है। यह निबंध अथवा प्रस्ताव अर्वाचीन संस्कृत साहित्य में विशेष भूमिका-शिखर पर आरूढ़ होकर रचनाकारों की पीढ़ियों द्वारा प्रभूत मात्रा में निबद्ध किया गया है। निबंध अथवा प्रस्ताव में विषयैक्य, क्रम, शैली तथा प्रातिस्विकता का विशेष अवधान अपेक्षित है। निबंध रचनाकारों का स्वकीय वैशिष्ट्य निबंध में प्रतिबिंबित होना चाहिए अन्यथा वह परदर्शनोपन्यासमात्र रह जाएगा। अत: संश्लिष्ट एवं सुंदर—ये दो विशेषण निबंध के प्राणदायक तत्त्व हैं।

आधुनिक संस्कृत साहित्य में हृषीकेश भट्टाचार्य (1850-1913 ई.) को संस्कृत निबंध का प्रवर्तक कहा जाता है। बीसवीं शताब्दी के तृतीय दशक में *प्रबंध मंजरी* (1929 ई. में बिजनौर से पद्मसिंह शर्मा द्वारा) प्रकाशित हुई। हृषीकेश भट्टाचार्य के 'उद्भिज्जपरिषद्' तथा 'महारण्य-पर्यवेक्षणम्' नामक निबंधों में वनस्पतियों और पशु-पक्षियों के माध्यम से मनुष्य की स्वार्थपरता तथा संकुचित प्रवृत्तियों पर व्यंग्य किया गया है। 'महारण्य-पर्यवेक्षणम्' नामक निबंध में सिंह की अध्यक्षता में, भयभीत एवं तनावग्रस्त मानव-जाति पर विचार किया गया है। महत्त्वाकांक्षा रूपी अश्व पर आरूढ़ मनुष्य जितना प्राप्त करता है, उसकी लालसा उतनी ही अधिक बढ़ती जाती है। इसमें पाश्चात्य सभ्यता समीक्षा भी प्रभावपूर्ण व्यंग्य के द्वारा प्रस्तुत की गई है। जबकि उद्भिज्ज-परिषद् में अश्वत्थदेव की अध्यक्षता वाली वृक्षों की सभा में यह प्रतिपादित किया गया कि जीवसृष्टिप्रवाह में मनुष्य के समान परप्रतारक, मायावी, कपट, व्यवहारकुशल और कोई नहीं है।

इसके पश्चात् संस्कृत निबंध परंपरा के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं—भट्ट मथुरानाथ शास्त्री। इनके ललित निबंध अद्वितीय हैं। कल्पना की उर्वरता तथा शैली की रोचकता ने इनके निबंधों में लालित्य-मधु का संचार किया है। 'किंतो: कुटिलता' इनका सुप्रसिद्ध निबंध है। जिसमें इन्होंने 'किन्तु' की कुटिलता को सुरुचिपूर्ण कथ्य से समन्वित किया है। जैसे ही व्यक्ति किसी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कार्य में सफलता के समीप पहुँचने को उद्यत होता है, वैसे ही यह 'किन्तु' अपना कुठार चला देता और सफलता हाथ से फिसल जाती। इस निबंध में भट्ट जी ने अनेक वृत्तांतों को प्रस्तुत करते हुए 'किन्तु' महोदय के प्रायोगिक स्वरूप का वर्णन किया है :

चिरकाल से राज्य से प्राप्त भूमि का अभियोग न्यायालय में चल रहा था। मेरे पक्ष से सभी आवश्यक प्रमाण यथोचित रीति से प्रस्तुत कर दिए गए। सब ओर से यह सुनिश्चित था कि भाग्यलक्ष्मी मेरी ही कंदरा में विजयमाला समर्पित करेगी, उसी समय वकील महोदय ने कहा कि निर्णय तो आपके ही पक्ष में हुआ है, 'किन्तु' राजस्व विभाग के द्वारा इस पर एक लाख रुपये का कर लगाया गया है। इस 'किन्तु' ने मेरे अंतःकरण को चारों ओर से काट ही दिया।

यह 'किन्तु' दूर-दूर तक आक्रमण करता है। महर्षि व्यास ने गणेश के माध्यम से *महाभारत* लेखन करवाया। उन्होंने लिखवाया : *सत्यं मनोरमा रामाः सत्यं रम्या विभूतयः।*

मनोरम रमणियाँ भी सत्य हैं और रम्य विभूतियाँ भी सत्य हैं। इसी अंतराल में 'किन्तु' महाशय उपस्थित हो गए—

'किन्तु' मत्तांगनापांगभंगिलोलं हि जीवितम्।

इस किन्तु ने कनक तथा कामिनी की समस्त कमनीयता निर्मूल कर दी। किन्तु जीवन तो चंचल कामिनियों के अपांगभंग के समान चंचल अर्थात् क्षणभंगुर है। साहित्य में भी 'किन्तु' ने रंग में भंग ही किया है।

अनेक वर्षों के तप और परिश्रम से लेखक ने एक संस्कृत-पुस्तक का प्रणयन किया। वे एक साहित्य मर्मज्ञ नेता को जब पुस्तक दिखाने के लिए गए तो नेता जी ने सम्यक् परीक्षण कर कहा, ''पुस्तक तो वस्तुतः अद्भुत है। 'किन्तु' मेरी सम्मति यह है कि यदि यह पुस्तक हिंदी में लिखी गई होती तो अधिक श्रेष्ठ होता।'' इस निबंध में सत्रह लघु, रोचक तथा यथार्थ घटनाओं के माध्यम से 'किन्तु' के अनेक कुटिल रूपों को रूपायित किया गया है।

इस निबंध की एक अन्यतम विशेषता यह है कि प्रत्येक वृत्तांत के पश्चात् 'किन्तु' के प्रसंग में संस्कृत के मुहावरे के प्रयोग से नूतन भाषिक उद्भावना की है। यथा—

1. एषः कुटिलः 'किन्तु' दूरदूरपर्यन्तमप्याक्रमणं करोति। — (*मंजुनाथग्रंथावलि*, द्वितीय भाग पृ. 154)
   यह कुटिल 'किन्तु' दूर-दूर पर्यंत भी आक्रमण करता है।
2. कुत्रचित् सोऽयं 'किन्तुर्नितांतमनुतापं जनयति। (वही, पृ. 154)
   कहीं यह 'किन्तु' अत्यंत संताप को उत्पन्न करता है।
3. कदाचित्त्वयं क्रूरः किन्तुः मुखस्य कवलमप्याच्छिनत्ति। (वही, पृ. 155)
   कदाचित् तो यह क्रूर 'किन्तु' मुख के कवल (ग्रास) को भी छीन लेता है।
4. अयं 'किन्तु' रंगेऽपि भंगसंपादकमेकव्यर्थं शस्त्रम्। (वही, पृ. 155)
   यह 'किन्तु' रंग में भंग का संपादन करनेवाला शस्त्र है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. परमयं 'किन्तु' सिंहस्य रूपं धृत्वा प्रतिसमयं मां मिलितुमिवाग्रेसरोऽभवत्। (वही, पृ. 156)
परंतु यह 'किन्तु' सिंह का रूप धारण करके प्रतिक्षण मुझसे मिलने के लिए अग्रसर रहता है।
6. अनेन 'किन्तुना' मह्यं सा शिक्षा दत्ताऽस्ति यद्यहं सत्पुरुषं स्यां तर्हि पुनरस्मिन् मार्गे पदनिक्षेपस्य नामापि न गृहणीयम्। (*मंजुनाथग्रंथावलि,* द्वितीय भाग, पृ. 155)
इस 'किन्तु' के द्वारा मुझे यह शिक्षा दी गई कि यदि मैं सत्पुरुष हूँ तो कभी उस मार्ग पर पदनिक्षेप करने का नाम भी न लूँ।
7. परं अस्मिन्नेव समये 'किन्तु' क्रकचः सहसैव निपपात। (वही, पृ. 158)
परंतु इसी समय 'किन्तु' का क्रकच अकस्मात् ही मुझ पर पड़ गया।
8. मयानुभूतमस्ति यदयं कुटिलः 'किन्तु' नानादेशेषु नानारूपं संधार्य गुप्तं विचरति। (वही, पृ. 158)
मुझे यह अनुभव हुआ कि यह कुटिल किन्तु अनेक स्थानों में नाना प्रकार के रूप धारण कर गुप्त रूप से विचरण करता है।
9. परं 'किन्तु' ना बट (But) रूपं धारयित्वा सर्वं विनाशितम् अधुना 'बट' जटासु निरुद्धा वयं ... (वहीं, पृ. 159)
परंतु 'किन्तु' के द्वारा But रूप धारण कर सब कुछ नष्ट कर दिया है। संप्रति 'बट' रूपी जटाओं में निरुद्ध हम...
10. किन्तु कराघातात् कदाचित् रक्षितोऽप्यभूवम्, परस्मिन् वारे एतस्य 'मगरस्य' मुखात् पुस्तकानां रक्षा सुतरां कठिनेति (वही, पृ. 160)
'किन्तु' के हस्त प्रहार से तो कदाचित् हम बच सकते थे, परंतु इस मगर (किन्तु रूप मगरमच्छ) के मुख से पुस्तकों की रक्षा करना वस्तुतः अत्यंत कठिन हो गया।
11. एवंविधे प्रखरप्रवाहेऽपि 'किन्तु' महोदयो वज्रकीलायितोऽभवत्। (वही, पृ. 154)

इस प्रकार यह भट्ट जी का भाव तथा शब्दचयन सामर्थ्य है कि उन्होंने एक ही प्रकार की परिस्थिति के लिए अनेक प्रयोग किए। सभी प्रयोग नितांत विशिष्ट तथा परस्पर भिन्न-भिन्न हैं।

इस निबंध के माध्यम से लेखक ने यह संकेत भी किया है कि जीवन का कोई भी पक्ष 'किन्तु' की कुटिलता से अस्पृश्य नहीं है। धनाढ्य अथवा महापुरुष से लेकर सामान्य मनुष्य तक सभी का जीवन इसी प्रकार के 'किन्तु' की कुटिलताओं का साक्षी होता है। ये समस्त वृत्तांत नितांत स्वाभाविक तथा जीवन के जीवंत प्रसंग हैं। किन्तु, परंतु, मगर, 'बट' आदि से संघर्ष करते हुए जीवन को अग्रसारित करना ही वस्तुतः कला है। यह जीवन का अर्थांतरन्यास है। जहाँ किन्तु आदि सामान्य से तत्तत् विशेष वृत्तांत का समर्थन कराया गया है। अर्थात् सामान्य में निगूढ़तम वैशिष्ट्य की खोज। आचार्य विद्यानिवास मिश्र ने *स्तबक* नामक निबंध संकलन की भूमिका में भी इस अर्थांतरन्यास की व्याख्या करते हुए कहा, "...विशेष के अभिव्यंजन के द्वारा ही सामान्य आता है और इस प्रकार विशेष की प्रतीति अत्यंत विशिष्ट ढंग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से की जाती है कि वह विशेष सबका विशेष हो, लिखनेवाले का नहीं, जिसके लिए लिखा गया है, उसका भी।'' — (*स्तबक,* भूमिका, पृ. 14, साहित्य अकादेमी, 1993)

'बालकभृत्य:' नामक निबंध में भृत्य अर्थात् सेवक के द्वारा की गई सेवा-चाकरी तथा उसके अनेक अवांतर हास्य-प्रसंगों को रचकर भट्ट जी ने रोचकता का आद्यंत निर्वाह किया है। यद्यपि बालक भृत्य अपने स्वामी को प्रत्येक प्रकार से प्रसन्न करना चाहता है, परंतु बालक होने के कारण अथवा शीघ्रता के कारण उससे कोई-न-कोई ग़लती हो जाती है। यथा कभी चाय बहुत अधिक गर्म होती है, कभी लुढ़क जाती है। कभी दीया गिरकर टूट जाता है। अनायास हो जानेवाली त्रुटियाँ क्षम्य हैं। यह बतलाने के लिए निबंध के उत्तरार्द्ध में लेखक ने उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा, ''हम संसारी जीव भी ईश्वर के समक्ष अनजाने में अनेक अपराध करते हैं, अत: वह ईश्वर हम सभी को जिस प्रकार क्षमा करते हैं, उसी प्रकार हम भी अन्यान्य को क्षमा प्रदान करने योग्य हैं।''

इस निबंध को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। द्वितीय अंश में प्रकारांतर से शरणागति का निरूपण किया गया है। लेखक का निवेदन है कि ''हे प्रभो! मैं भी आपको प्रसन्न करने के लिए अनेक प्रकार की चेष्टाएँ करता हूँ। परंतु पदे-पदे अनायास प्रमाद हो जाते हैं। हे प्रभु! मुझ पर प्रसन्न हों तथा मार्ग का निर्देश करें!'' इस प्रकार यह अंश विषयांतर-सा प्रतीत होता है। बालक भृत्य के साथ इसका कोई साक्षात् संबंध स्थापित नहीं होता है।

भट्ट मथुरानाथ शास्त्री ने 'मकारमहामेलकम्' शीर्षक से एक अद्भुत निबंध लेखन किया। इस निबंध का मूल-उद्देश्य संस्कृत भाषा का चमत्कार-प्रदर्शन ही माना जा सकता है। इस निबंध का प्रत्येक वर्ण मकार से प्रारंभ होता है। यह निबंध केवल संस्कृत भाषा में ही संभव है। इसमें प्रसाद गुण तथा कल्पना का अद्भुत समन्वय दृष्टिगोचर होता है। इसमें भारतीय लिपियों और भाषाओं में 'मकार' के महत्त्व को निरूपित किया गया है। लेखक ने मकारों के सम्मेलन का मनोरंजक तथा शोधपरक निरूपण कर इस निबंध को चमत्कारात्मक ललित निबंध की कोटि में स्थापित किया है।

माधुर्य, मांजुल्य, मार्दव आदि की महिमा से मनस्वियों के मानस को मोहित करनेवाले मंगलमनोज्ञ शरीर वाले, मनीषी माने जानेवाले महात्मा, मकार के ही अधीन हैं। मान, मेधा, मंत्र, मति, महिमा, मैत्री और महैश्वर्य संपन्न व्यक्तियों का मूल यही मकार है। मारुति, मघव, मनोज-मधु, महावीर-मनु, मरीचि-मांधातृ आदि सब मकार के ही आश्रित हैं। मकार की महिमा से ही मनुज, मनुज है। इस प्रकार यह निबंध रोचक शैली तथा लालित्य के कारण एक विशिष्ट ललित निबंध के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

मकारों के इस मेले में आए हुए एक निरीक्षक ने मंद हास्य के पश्चात् मंद स्वर से कहा—मर्कट, मकर, मूर्खता, मिथ्या, मद्य तथा मांस आदि में भी तो मकार महोदय की छवि आविष्कृत होती है। इस टिप्पणी से मकारमहाशय का मुखमंडल क्षुब्ध हो गया। प्रतिक्रिया स्वरूप मनस्वी-मकार ने मंद-मंद गति से अधरों को चबाया। मल्लमकार ने मुद्गर का स्पर्श किया। मुसली मकार ने मूसल को देखा। मुखर मकार ने मुट्ठियाँ बाँध लीं और महारुद्र मकार ने सिर हिलाकर क्रोध प्रदर्शित किया। ऐसी अद्भुत कल्पना से प्रसूत निबंध केवल संस्कृत-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषा में ही संभव है। संधि तथा समास की समृद्ध परंपरा ने ही 'मकारमहामेलकम्'-जैसे निबंध का चमत्कार साहित्य को प्रदान किया।

संस्कृत की विशिष्ट भाषिकी के कारण यह निबंध एक अपूर्व सर्जना है। उनके इस निबंध में एकाक्षर प्राधान्य के कारण चमत्काराधान अभीष्ट है। यद्यपि यह चमत्कारात्मक निबंध है तथापि चित्रकाव्य के समान दुरूह और निरर्थक नहीं है अपितु सुललित भाषा में निबद्ध एक मनोरंजक वृत्तांत संप्रेषित करता है।

इसी प्रकार विषय-विशेष के विवेचन के लिए मनोरंजक सूत्र से अपने मंतव्य को प्रारंभ करना भी भट्ट मथुरानाथ जी की एक प्रातिस्विक विशेषता है। 'गंधर्वसेनस्य स्वर्गयात्रा' निबंध में उन्होंने यह शोध किया कि संस्कृत को 'मृतभाषा' कहने का प्रवाद (फ़ैशन) कैसे चल पड़ा। इसकी खोज करते हुए उन्होंने बताया कि किसी भाषाशास्त्री ने कभी इसे मृतभाषा नहीं कहा। इस निबंध का प्रारंभ एक काल्पनिक कथा से किया गया :

एक धोबी प्रात:काल रोते हुए कहने लगा—'हाय, गंधर्वसेन मर गए।' सारा गाँव यह सुनकर रोने लगा कि किसी महापुरुष की मृत्यु हो गई। तत्पश्चात् यह ज्ञात हुआ कि धोबी ने अपने गर्दभ (गधे) का नाम गंधर्वसेन रखा था। इस कथा का आश्रय लेकर निरर्थक प्रवाद के रूप में फैले संस्कृत के मृतभाषात्व का उन्होंने खंडन किया है। विशेष ध्यातव्य यह है कि इस निबंध का शीर्षक भी 'गंधर्वसेनस्य स्वर्गयात्रा' रखा गया। 'संस्कृतभाषाया अमरत्वम्' अथवा 'संस्कृतमृषात्वखंडनम्' नहीं रखा गया। इससे ज्ञात होता है कि मात्र निबंध ही ललित निबंध नहीं है, अपितु निबंध का शीर्षक भी ललित-शीर्षक है। शीर्षक में भी लालित्य श्लिष्ट है।

हीरे को प्राय: अगुणग्राही लोगों से संघर्ष करना पड़ता है। वह किस प्रकार से भाँति-भाँति के लोगों के हाथों में पड़ता रहा—इस रूपक के माध्यम से लेखक ने गुणी की व्यथा का निरूपण किया है। लेखक ने प्रारंभ में ही एक सूत्र प्रस्तुत करते हुए कहा —

''लोकातिशायिगुणशालिभिरप्यकस्मादासाद्यते न कुहचिद् गुणतत्त्ववेदी।''

अर्थात् लोकोत्तरगुणशालियों के द्वारा भी अकस्मात् गुणज्ञ व्यक्ति प्राप्त नहीं किया जाता है। यह लोकोत्तरगुणशाली विद्वान, अपने असाधारण गुणों के ज्ञाता को प्राप्त न कर, वैराग्य के कारण हीरे की कथा के व्याज से आत्मकथा कहता है :

''जो मेरी महिमा को जानते हैं, उनके लिए तो मैं हीरा हूँ। जो मेरी मूल्यवत्ता से अपरिचित हैं, उनके लिए मैं मात्र पाषाणखंड हूँ।'' हीरे के माध्यम से भट्ट मथुरानाथ शास्त्री ने अनेक जीवन सूत्र भी प्रदान किए।

1. कीदृशं घोरं तप: समनुष्ठाय मया सेयमुज्ज्वलता समधिगतेति में हृदयमेव वेद।
   — (*मंजुनाथग्रंथावलि,* द्वितीय भाग, पृ. 171)
   किस प्रकार का घोर तप करके मेरे द्वारा यह उज्ज्वलता पाई गई, यह तो मेरा हृदय ही जानता है।
2. रत्नानां परीक्षकेणाप्यनेन मम मूल्यमेतावन्नयूनीकृतमिति दु:खं मे सुतरामसह्यमभवत्।
   — (वही, पृ. 172)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रत्नों के परीक्षक के द्वारा ही मेरा मूल्य इतना न्यून कर दिया गया, यह दुःख मेरे लिए नितांत असह्य था।

भट्ट मथुरानाथ ने हीरे की आत्मकथा लिखी और रुपये की भी आत्मकथा लिखी। 'रुप्यकरामस्यात्मकथा' के प्रारंभ में रुपये ने अपना परिचय भी अद्‌भुत शैली में प्रस्तुत किया।

— मेरा नाम रुप्यकशर्मा है। भारतवर्ष मेरा जन्मस्थान है। निवास स्थान अद्यावधिपर्यन्त अनिर्देश्य है, क्योंकि मैं विष्णु के समान सर्वत्र विचरण करता रहता हूँ। रुपया स्वयं को औरंगज़ेब से भी अधिक क्रूरतर घोषित करता है। इस निबंध में रुपये ने द्विज की अपेक्षा अपने द्विजत्व संस्कार की उत्कृष्टता प्रदर्शित कर व्यतिरेक अलंकार के माध्यम से सुंदर साहित्यिक छटा बिखेरी है।

''मम हि प्रत्यक्षं द्विवारं शरीरस्यैव जन्म भवति। ममेव ब्राह्मणादि द्विजातीनामपि यदि शरीरमग्नौ निक्षिप्येत तर्हि द्विजत्वसंस्कारस्य का कथा, और्ध्वदैहिकसंस्कारोऽपि तदैव भवेत्।''— (*मंजुनाथग्रंथावलि,* पृ. 177)

(मेरा तो प्रत्यक्षतः दो बार शरीर से ही जन्म होता है। यदि मेरे समान ब्राह्मण आदि का शरीर अग्नि में डाल दिया जाए तो द्विजत्व संस्कार की अपेक्षा अंतिम संस्कार ही संपन्न हो जाए। इस निबंध में अनेक सूत्रों का ग्रंथन किया गया है।)

1. *नाऽतप्ततनूर्भद्रमश्नुते*—जो शरीर को संघर्ष में संतप्त नहीं करता, वह कल्याण को प्राप्त नहीं हो सकता है। — (वही, पृ. 176)
2. *बलिनो जना मल्लाभलोभेन दस्युवृत्तिमधारयन्* (बलशाली लोग मेरी (रुपये की) प्राप्ति के लोभ से दस्युवृत्ति को धारण कर लेते हैं।) — (वही, पृ. 178)
3. *भूमौ निखातस्यापि में जीवनशक्तिर्नापजगाम।* (भूमि में खोदकर रख दिए जाने पर भी मेरी जीवनशक्ति समाप्त नहीं होती।) — (वही, पृ. 179)
4. *सुखांतरं दुःखं दुःखोत्तरं च सुखमिति सर्वदैव सर्वैरेवानुभूयते।* (सुख के पश्चात् दुःख और दुःख के पश्चात् सुख सर्वदा सभी के द्वारा अनुभव किया जाता है।)— (वही, पृ. 176)

रुपये की रोचक आत्मकथा में अनेक जीवनदर्शन-विषयक सूत्रों को अन्वित कर भट्ट मथुरानाथशास्त्री ने निबंध को कल्पना तथा यथार्थ के मिश्रण से अद्‌भुत उत्कर्ष पर स्थापित किया है।

'मृत्यो! त्वमागतोऽसि' यह ललितनिबंध दार्शनिकता से ओत-प्रोत है। मृत्यु को संबोधित कर लेखक कहता है कि हे मृत्यु! पूर्व में कोई सूचना नहीं, बिना आह्वान, बिना अपेक्षा के ही तुम उपस्थित हो गई? मैं संप्रति मरना नहीं चाहता हूँ। वर्तमान काल की संपूर्ण विडंबना कतिपय वाक्यों से उपस्थापित करते हुए भट्ट मथुरानाथ जी कहते हैं :

''न मयाऽनृतमवलोकितं न चापि सत्यं समालोचितम्। न पापमवधारितं तर्हि न पुण्येऽपि दृष्टिर्दत्ता। केवलं सिद्धेराराधना विहिता।'' — (वही, पृ. 212)

—मैंने न असत्य को देखा। न सत्य की आलोचना की। न पाप का अवधारण किया और न ही पुण्य में भी रुचि प्रदर्शित की। केवल सफलता की ही आराधना की।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह वर्तमान का मूलमंत्र है, जो स्थापित हो चुका है। सफलता प्राप्ति के प्रति जो उत्तेजना है, वह नेत्र तथा बुद्धि की शक्ति को कुंठित कर देती है। व्यक्ति सत्य-असत्य, उचित-अनुचित के विवेक से शून्य हो जाता है।

मनुष्य जीवन में जिन-जिन अनैतिक तथा अत्याचारपूर्ण अमानवीय कार्यों को करता है। मन की तुच्छता के कारण जिन प्रतिभाशालियों को सहन नहीं करता, उन सबके प्रति उसके मन में मृत्युकाल उपस्थित होने पर अपराधबोध उद्‌भूत होता है। मनुष्य को समस्त पश्चात्ताप पीड़ित करते हैं कि इन प्रासादों के पीछे कितने दीनों का रक्त अंतर्हित है? इन प्रस्तरों के नीचे कितने लोगों का भोजन दबा हुआ है। इस सुख-शय्या के मूल में कितने लोगों का सर्वस्व खंड-खंड हो गया था। यदि पूर्व में यह ज्ञात होता तो क्या मैं यह सब करता?

यह निबंध विरोधाभास का उत्तम निदर्शन है। इसमें मृत्यु के व्याज से जीवन-यापन विधि का निर्देश किया गया है। भाषा का लालित्य और निबंध का दार्शनिक कथ्य—इन दोनों की जुगलबंदी निबंध को श्रेष्ठता प्रदान करती है। मृत्यु के शीर्षक से जीवन को व्याख्यायित करना भट्टजी की क़लम से ही संभव हो सकता है।

सफलता कितनी दुर्लक्ष्य तथा दुष्प्राप्य होती है, इस संदर्भ में लेखक की भाषा का चमत्कार द्रष्टव्य है—''सिद्धेः स्थाने सर्वदाऽर्धचंद्रो मया लब्धः।'' (सफलता के स्थान पर मुझे सदा अर्धचंद्र ही प्राप्त हुआ)। लेखक ने यह नया मुहावरा गढ़ा है। भाषा के स्तर पर भी भट्ट मथुरानाथजी ने संस्कृत को पुनर्नवा किया है। सामान्य शब्दों के द्वारा विशिष्ट भाव-बोध कराने में जो सक्षम होता है, वही महाकवि अथवा महान् आचार्य कहलाने योग्य है।

संपूर्ण जीवन संघर्ष अथवा साधना में ही व्यतीत हो गया। सिद्ध भोजन भी विलंब से प्राप्त हुआ। यह जीवन की व्यथा रही। इस भाव को अभिव्यक्त करते हुए लेखक ने कहा है, ''जठराग्नि अर्थात् क्षुधा जठर में ही नष्ट होकर निर्वाण को प्राप्त हो गई। मन परिश्रांत होकर स्वयं ही सो गया।'' ऐसी अनेक भाषाधारित छवियाँ इन निबंधों को साहित्यिक प्रतिमानों पर स्थापित करती हैं। ये निबंध वैचारिक उत्कर्ष तथा साहित्यिक शिखर के विशुद्ध निदर्शन हैं।

''हंसवाहना सरस्वती मयूरवाहना कैसे हो गई?'' यह निबंध पुरातन से लेकर नूतन शोध अथवा गवेषणा को रेखांकित करता है। सरस्वती की प्राचीन समस्त स्तुतियाँ उसे हंसारूढ़ा, हंसवाहना घोषित करती हैं। भट्ट जी ने इस लेख में यह रेखांकित किया है कि वर्तमान काल में सरस्वती के पूजा-उत्सवों में तथा सरस्वती के चित्रों में हंस को उड़ाकर मयूर के द्वारा अधिकार कर लिया गया है।

सुप्रसिद्ध चित्रकार राजा रवि वर्मा द्वारा चित्रित भगवती सरस्वती के चित्र में वीणा को झंकारती हुई सरस्वती तथा समीप में लंबे पंखों वाला मयूर चित्रित देखकर लेखक को आश्चर्य हुआ। इसी प्रकार मुद्रणालयों में भी जितने ब्लॉक-चित्र हैं, उनमें भी भगवती सरस्वती के वाहन रूप में मयूर ही दृष्टिगोचर होता है, मानो हंस तो पुराना है, यह मानकर विश्राम के लिए दूर से ही विसर्जित कर दिया गया। मुद्रणालयों में यह सरस्वती सर्वत्र मयूरवाहना ही हो गई है।

इस प्रकार की वस्तुस्थिति का आकलन कर लेखक ने सूक्ष्म अंतर को स्थापित करते हुए कहा, ''हमारा तात्पर्य यह नहीं है कि मयूर सरस्वती का वाहन नहीं हो सकता। वह सरस्वती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का नहीं अपितु कौमारी शक्ति का वाहन है।'' *कौमारी शिखिवाहना,* यह शास्त्रवचन भी इसका समर्थन करता है।

लेखक ने इस ललित निबंध को शोधमूलक बना दिया है। पूना के भंडारकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट के पी.के. गोडे, हरिदास भट्टाचार्य, नेमिदत्त जैन, प्रो. ब्राउन आदि अनेक प्राच्यविदों के उदाहरण तथा उद्धरण प्रस्तुत कर यह निष्कर्ष दिया गया कि मयूरवाहना सरस्वती जैनकालिक मूर्तिकला का ही परिणाम है।

शनैः शनैः इक्कीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में ललित निबंध नए प्रयोगों के साथ अवतरित हो रहा है। इस प्रकार के नए प्रयोग का उत्कृष्ट निदर्शन हमें देवर्षि कलानाथ शास्त्री के ललित गद्यात्मक सर्जन-प्रयोगों में परिलक्षित होता है। विनोद तथा सर्जनात्मकता का सम्मिश्रण ही इस प्रकार की नई विधा का अवतार कराता है। यथा 'अहमपि लेखको भविष्यामि' निबंध में लिखने की कला न होने पर भी लेखक बनकर पत्रिकाओं में लेख प्रेषित करने वालों पर व्यंग्य किया गया है। इसी प्रकार अँधेर नगरी जैसी वर्तमान विडंबना का चित्रण किया गया और हिंदी मुहावरे के आधार पर 'कूपे भंगा कथं पतिता' कुएँ में भाँग पड़ी है, शीर्षक भी ललित ही रखा गया। 'मा च याचिष्म कंचन' एक भिन्न प्रकार का ललित निबंध है अथवा ललित गल्प है। जिसमें याचना की सुदीर्घ भारतीय वामन और बलि के प्रसंग से लेकर आजकल के चंदा माँगनेवालों तक वर्णित है। परिवारजन चंदा माँगने आए व्यक्तियों के बहाने से अथवा पड़ोसी के द्वारा उधार माँगने के बहाने से याचना परंपरा पर विनोदमय वार्तालाप करते हैं। श्रमरहित हम भारतीयों ने भिक्षाटन के नित्य नूतन उपायों का आविष्कार करने में अत्यंत परिश्रम किया है। हमने याचना के जो अनेक उपाय खोजे, वे इस प्रकार हैं — जिन्हें अन्यत्र आजीविका प्राप्त नहीं होती, वे तीर्थों पर तीर्थगुरु अर्थात् पंडा बनकर याचना करते हैं। मंदिरों में पूजक बनकर, शनिग्रह के उपासक बनकर, शनिवार के दिन लोगों को शनि की मूर्ति के दर्शन कराकर तथा मार्गों में भिक्षुक होकर याचना करते हैं। इन्होंने हिंदी के प्रचलित मुहावरों का सुंदर संस्कृत अनुवाद भी किया है : 'नैष्कर्म्यं खलु पातकम्' (आराम हराम है)। — (*ललित कथाकल्पवल्ली,* पृ. 41)

'छंदसश्छटा:' जैसा ललित निबंध भी भाव-सौंदर्य के कारण विशेष रूप से उद्धरणीय है। वे इस निबंध में छंद निर्मिति के निमित्त तथा संस्कृत की प्राचीन छंद परंपरा को अग्रसर करते हैं। वर्तमान में कवियों की अपेक्षा गायकों की अधिक महत्ता प्रतीत होती है। लेखक कहते हैं कि इन दिनों कोई भी शिखरिणी, स्रग्धरा आदि छंदों को सुनना नहीं चाहता है। जो कवि सरिगमपधनि जानते हैं, वे ही कवि सम्मेलन के मंचों पर तालियों से अभिनंदित किए जाते हैं। प्रौढ़ कवियों को तो कोई तिनके के समान भी नहीं मानता है। — (*ललित कथाकल्पवल्ली* : कलानाथ शास्त्री, पृ. 46)

व्यसन तथा चाटुकारिता पर भी कलानाथ शास्त्री जी ने इसी प्रकार की विनोदपूर्ण वार्ता की रचना की है। उनके निबंधों में विनोद तथा विनोदात्मक उद्धरण, विषयवस्तु और चमत्कार, सभी संस्कृत के विशिष्ट परिवेश की उपज हैं। शास्त्री जी ने आधुनिक संस्कृत साहित्य को नूतन शब्द निर्माण द्वारा समृद्ध किया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कॉल बेल	—	आकारणघंटिका, (वही, पृ. 37)
टिकिट	—	त्रिकट (तीन स्थानों पर काटा जाता है।)
जेब	—	पटपुटकम्
रिजल्ट ऑरियेंटेड वर्क	—	फलोन्मुखं कार्यनिष्पादनम् (वही, पृ. 64)
कॉलेज	—	कलाशाला

इस प्रकार के अनेक आधुनिक एवं प्रचलित शब्दों के संस्कृत भाषा में निर्माण का श्रेय कलानाथ जी को जाता है।

गणेशराम शर्मा ने विनोद तथा व्यंग्यगर्भित शैली में ललित निबंधों की रचना की। विनोद और व्यंग्य संस्कृत ललित-निबंध के प्राणभूत तत्त्व हैं।'जाने त्वां संस्कृतपंडितम्' (संस्कृतपंडित रूप तुमको मैं जानता हूँ), 'मिथ्याकीर्तिलेखकमहाराज:' (लेखक-महाराज की मिथ्या कीर्ति) आदि विषयों में संस्कृत के दंभी विद्वानों का विनोदमय चित्रण किया गया है।

परमानंद शास्त्री (अलीगढ़) ने ललित निबंधों में संस्कृत की प्रचलित सूक्तियों को आधार बनाकर वैचारिक प्रवाह को एकवाक्यतापूर्वक गुंफित किया है। यथा—'सौवर्णी वाचालता' नामक निबंध में 'कालिदासकविता नवं वय:, माहिषं दधि सशर्करं पय:।' उन्होंने कालिदास कविता का साहित्य, दधि और शर्करायुक्त दुग्ध से संबंध स्थापित करते हुए, वर्तमान संदर्भों से संस्कृत की प्राचीन उक्तियों को अन्वित कर निबंध-सर्जना की है।

पं. विष्णुकांत शुक्ल का *पूर्णकुंभ:* (1983) संकलन भी ललित-निबंध का सुंदर निदर्शन प्रस्तुत करता है। नवीन उद्भावनाएँ और सहज लालित्य इनके निबंधों को उत्कृष्ट स्तर पर स्थापित करता है। 'अहमपि भारतीय:' में वे आधुनिक भारतीय परिवारों में छुरी-काँटे से खाना, केक काटकर जन्मदिन मनाना आदि पाश्चात्यानुकरण की पद्धतियों पर करारा व्यंग्य करते हैं। 'अहमपि भारतीय: ?' यह निबंध हम सबके मन को आंदोलित करता है। लेखक ने व्यंग्य के माध्यम से वर्तमान के पाश्चात्यानुकरण पर चिंता प्रकट की है।

मैं भारतीय हूँ। मेरी वेशभूषा यद्यपि पूर्णरूप से विदेशी है। चलचित्रों में मेरा चित्त रमण करता है। परनारी के प्रति दृष्टि दौड़ती है। धर्म से मुझे जुगुप्सा होती है। तस्करकर्म के प्रति मेरी प्रवृत्ति सहज है। गुरुजन के प्रति क्रोध है। उत्सवों में सुरा ही मेरी सखी है। व्यसन मित्र है, भूतद्रोह मेरा स्वभाव है। परपीड़ा ही मेरा व्रत है। कुटिलता ही कुशलता है। चौर्य चरित्र है। अत: कह रहा हूँ — अहमपि भारतीय: ? मैं भी भारतीय हूँ? लेखकवर्य ने तथाकथित आधुनिकता पर प्रश्नचिह्न लगाकर स्वकीय सजगता को रेखांकित किया है। वस्तुत: यह निबंध भारतीय संस्कारों के प्रति जागरुकता का संचार करता है।

'कालमहिमा' में वे 'बंधो, काल!' को संबोधित कर वर्तमान विडंबनाओं का सार्थक चित्रण करते हैं। एक ओर भट्ट मथुरानाथ जी ने मृत्यु के व्याज से जीवन का गीत गाया तो दूसरी ओर पं. विष्णुकांत ने काल-महिमा के माध्यम से जीवन के अनेक-प्रसंगों को स्मृति-पटल पर अवतरित करवाकर काल की अनिर्वचनीयता स्थापित की। दोनों ने ललित-निबंध विधा का चयन किया, जबकि विषय पूर्णत: दार्शनिक अथवा रुक्ष ही है। ऐसे विषय को लालित्य के स्पर्श से रोचक बनाने की चुनौती का सामना लेखकद्वय ने अत्यंत कुशलता से किया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंडित विष्णुकांत जी ने काल को संबोधन रूप में अनेक विशेषताओं से मुक्त बताया :

"अहह कराल काल! तावकीनं कौटिल्यम्, तव-कला-कलाप-प्रभुत्वम्; तव परपीडनपांडित्यम्।"

—हे दुष्टकाल, तुम्हारी कुटिलता! समस्त कलासमूह के स्वामी, तुम्हारा परपीडनपांडित्य! कतिपय वृत्तांतों को उद्धृत कर उन्होंने प्रतिपादित किया कि अत्यंत कुशल एवं मुदित जीवन भी पल मात्र में काल की कुटिलता से कैसा दुष्कर हो जाता है।

(i) प्रेम की परिणति। न्यायालय में विवाह। कन्या के पिता वज्रपात सहन करने को बाधित। जो अभीष्ट नहीं था, उसको भी अभीष्ट माना। पाँच-छह दिवस व्यतीत हुए। ज्ञात हुआ कि कन्या ने विषपान कर जीवन लीला समाप्त कर ली। हे काल! यह तुम्हारी ही महिमा है।

(ii) नायिका के साथ नायक जलकेलि में मग्न है। समुद्र की लहरों में उन दोनों का प्रेमप्रवाह विस्तार को प्राप्त कर रहा था। सहसा प्रबल तरंगों के आघात से विचलित होकर युवा अपार सागर में निमग्न हो गया। होश में आई युवती स्फारितनेत्रा शून्य में ताक रही है। हे कृपणकाल! क्या यह तुम्हारा चातुर्य है?

इस प्रकार के संक्षिप्त वृत्तांत प्रस्तुत कर काल की महिमा रेखांकित की गई है। काल को संबोधन माला के रूप में जिन शब्दों में संबोधित किया गया है, वह कवि के शब्द चयन चातुर्य का परिणाम है :

— हिंसामूर्ते! कुटिल परीक्षक! जघन्य! कालहतक! जनतापहारिन्! प्रलयरूप! त्वं कालः! त्वमेव कालमृत्युः! त्वमेवाकालमृत्यु! बंधो! काल! महाकाल! विकराल! निष्कृप! नेत्रापहारिन्! दुष्टांजनरूप! तीक्ष्णार्कदुग्धसहोदर! भोः कृतघ्न! करालजिह्व!

लेखक ने प्रस्तुत लेख को विशुद्ध दार्शनिक निबंध होने से बचा लिया है। काल महिमा का गान करते हुए पं. विष्णुकांत शुक्ल ने हिरोशिमा, नागासाकी तथा बांग्लादेश आदि के उदाहरण भी प्रस्तुत किए और काल के विरोधाभास को प्रकट करते हुए कहा, "देशोद्धारकस्त्वमेव, देशघातकोऽपि त्वमेव।" देश के उद्धारक भी तुम ही हो। बांग्लादेश का उदाहरण दिया गया और देशघातक के प्रसंग में हिरोशिमा तथा नागासाकी का वृत्तांत दिया गया। (*पूर्णकुंभः*, पृ. 12)

विरोधाभास के उदाहरण—"त्वमेव कालमृत्युः। त्वमेवाकालमृत्युः देशोद्धारकस्त्वमेव, देशघातकोऽपि त्वमेव। अदीनस्त्वं सर्वदैव दीनान् दूषयसि। लोकमरणं तव विलासः। जन्त तव कुटिला लीला। विनाश : प्रकृतिः। पीड़ा तव हासः।" रोगास्त्वद्बांधवाः। (वही, पृ. 12)

— तुम ही काल मृत्यु हो, तुम ही अकाल मृत्यु हो। तुम ही देशोद्धारक हो, तुम ही देशघातक हो। अदीन तुम सर्वदा दीनों को दूषित करते हो। लोकमरण तुम्हारा विलास है। जन्म तुम्हारी कुटिल लीला है। विनाश तुम्हारा स्वभाव है। पीड़ा ही तुम्हारा हास है। रोग तुम्हारे बांधव हैं।

कालमहिमा निबंध में लोक तथा शास्त्र का सुंदर समन्वय है। लोकव्यवहार में काल किस प्रकार अकस्मात् अमलिन को मलिन कर देता है। यह काल किसी भी अश्वत्थामा को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं छोड़ता। ''न जहासि कमपि अश्वत्थामानम्।'' यहाँ अश्वत्थामा को मुहावरे के रूप में प्रयुक्त कर लेखक ने नूतन सरणि का सर्जन किया है। सज्जनों को पीड़ित करनेवाला काल दुष्टों को संवर्धित करता है। निरक्षरों को उच्चासनस्थ करता है। 1983 ई. में लिखित इस निबंध से यह प्रतीत होता है कि भविष्यद्रष्टा लेखक को देश की वर्तमान स्थिति का पूर्वाभास हो गया था। ''त्वत्प्रणोदित एव नेतारः स्वच्छंदाचरण लंपटा गच्छंति कारामंदिरम्।'' —(*पूर्णकुंभः*, पृ. 11-12)—काल से प्रेरित होकर ही नेता स्वच्छंदाचरण से लंपट होकर कारागार का सेवन करते हैं।

पं. अंबिकादत्त व्यास (अभिनव बाणभट्ट) ने भी *शिवराजविजय* में काल की महिमा को प्रायः इसी प्रकार चित्रित किया है।

ललित-निबंधों के प्रसंग में यह कहा जा सकता है कि संस्कृत का सर्जक पौराणिक समृद्ध परंपरा का सार्थक प्रयोग कर रहा है। संस्कृत ललित निबंध में विषय-वैविध्य ने व्यापक स्तर पर लोक-जीवन को प्रभावित किया है। यह विधा जीवन का अर्थान्तरन्यास प्रस्तुत करती है। हीरे के माध्यम से अथवा 'किन्तु' की कुटिलता के माध्यम से अथवा काल के माध्यम से यह विधा लोक-जीवन में गहनता से प्रविष्ट होकर जीवनयापन का मार्गदर्शन करती है। यह विधा यदि आधुनिक है तो विषय चयन भी समकालीन युगबोध को अभिव्यंजित करता है और भाषा में भी समकालीन युगधर्म का सफल निर्वाह इन निबंधों में आकर्षण का आधान करता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निबंध

कृष्णदत्त पालीवाल

देशभक्ति का सिद्धगायक : सुब्रह्मण्य भारती

आधुनिक भारतीय साहित्य के निर्माताओं में सुब्रह्मण्य भारती (11.12.1882–12.7.1921) का नाम अग्रगण्य है। बीसवीं शताब्दी के भारतीय सांस्कृतिक नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन की लय का प्रकाश उनके सृजन में पूरी शक्ति से अभिव्यक्त हुआ है। वे द्रष्टा कवि, भारतीय नवजागरण के अग्रदूत तथा नई वैचारिक संवेदना के संदेशवाहक हैं। उनकी युग मानसिकता का निर्माण—दादाभाई नौरोजी, तिलक, अरबिंद, विवेकानंद तथा गाँधी ने किया था। तब भारत ब्रिटिश साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद से मुक्ति के लिए संघर्ष कर रहा था। कहीं वंदे मातरम् फूट रहा था—कहीं सविनय अवज्ञा आंदोलन। जागरण सुधार युग की यह चेतना बेहद उर्वर थी, जिसका विस्फोट 'भारती' की सर्जनात्मकता में हुआ है। भारती ने तमिल जाति के इतिहास को नए विचारों से नया पाठ दिया। इस पाठ से तमिल गद्य-पद्य में परिवर्तनवाद की गति तीव्र होती गई।

तमिल भारत की प्राचीन भाषाओं में स्वयं को संस्कृत के समकक्ष रखती है। तमिल के पास दो हज़ार वर्षों की सृजन-चिंतन परंपरा का ख़ज़ाना है। विद्वान मानते हैं कि तमिल का लिखित इतिहास ईसा की दूसरी शताब्दी से प्राप्त होता है। अद्भुत अपूर्व तथ्य यह भी है कि तमिल-परंपरा में चार सौ तिहत्तर कवियों—(जिनमें एक सौ दो अज्ञात कवि) की पुष्प माला है—जिसे *एट्टु नोगै* तथा *पात्रु पाट्टु* में संकलित किया गया है। इस सम्मिलित रूप को ही 'संगम काव्य' कहा जाता है। संगम काव्य के बाद महाकाव्य युग आया। पाँच महाकाव्य अपनी गरिमा में मिलते हैं। हलंगों का *शिल्पप्पदिकारम्* सित्तलै सासनाट का *मणिमेखलै* तिरुवक्क देवत का *जीवक चिंतामणि*—इन तीन महाकाव्यों में काव्य-कला का उत्कर्ष मिलता है तथा परंपरा का नया संदर्भ। पता नहीं क्यों सुब्रह्मण्य

जन्म : 1943। सुपरिचित लेखक एवं आलोचक। *महादेवी की रचना-प्रक्रिया, स्मृति-बिंब* चर्चित पुस्तकें। हिंदी अकादमी से पुरस्कृत। संपर्क : ए-102/3, एस. एफ. एस. फ़्लैट्स, साकेत, नई दिल्ली 110017; मो. 9910978680.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारती के काव्य क्षेत्र में उदित होने के बाद महाकाव्यों की परंपरा दुर्बल होती चली गई। हाँ, महाकाव्य को इस क्षीण परंपरा के बाद आलवार एवं नायम्मार भक्तों की परंपरा ने भक्ति आंदोलन में चिंतन का बहुमुखी विकास किया। मध्यकाल में तमिल ने जनभाषा की सर्जनात्मक शक्ति को पहचानकर उसमें सृजन प्रयोग किए। संत कवियों ने तमिल काव्य की पुन: प्राण-प्रतिष्ठा की और कंबन के प्रख्यात महाकाव्य *रामावतारम्* की रचना से नई पौ ही फट पड़ी। आलवार भक्त राम के पद रचते-गाते थे और तमिल में रामकथा का प्रचार-प्रसार करते थे। यह तो कंबन का ही प्रदेय था कि उन्होंने अनेक गाथाओं, आख्यानकों, काव्यों को संयोजित किया और कंबन *रामायण* ने पूरे देश को अपने प्रभाव में बाँध लिया। विद्वान मानते हैं कि तुलसीदास के *रामचरितमानस* तक पर कंबन का गहरा असर दिखाई देता है। कंबन के बाद तमिल तथा भारतीय साहित्य में अन्य लोकप्रिय कवि हुए। किंतु कंबन की ऊँचाई तक लोकप्रियता में कोई नहीं पहुँच सका। इसी परंपरा में नए स्वर फूटे और परंपरा का विपरीत दिशा में विकास हुआ। वेदनायकम् पिल्लै, राजम् अय्यर, उ.व. स्वामिनाथ अय्यर-जैसे कवि-कथाकार हुए लेकिन कविता तथा गद्य का ढाँचा नहीं बदला। तमिल-भाषा तथा काव्य को सुब्रह्मण्य भारती की प्रतीक्षा थी और उन्होंने आकर परंपरा को आधुनिक रूप दिया। नया बोध दिया। नतीजा यह हुआ कि तमिल साहित्य में नए भाव-बोध की देश-भक्ति-प्रधान कविता का क्रांतिकारी स्वर प्रबल हो गया। यह स्वर ही भारती के सृजन-कर्म का पर्याय बना है।

सुब्रह्मण्य भारती ने 1882 ई. में एट्टयपुरम ग्राम, ज़िला तिरुनेलवेली में जन्म लिया। उनके पिता चिन्नास्वामी अय्यर एक ज़मींदार की सेवा में थे। जन्म के बाद भारती ने माँ को खो दिया और एक मातृविहीन बालक के रूप में बड़े हुए। उनका आकर्षण अपने नाना के प्रति रहा। नाना ने ही उन्हें तमिल की प्राचीन साहित्य परंपरा से परिचित कराया। कविता भारती को जन्मजात विधाता ने दी थी। वे दस वर्ष की उम्र से ही कविता लिखने लगे। लेकिन पढ़ने में उनका मन नहीं लगता था—परिणाम यह हुआ कि दसवीं की परीक्षा में असफल रहे। पंद्रह वर्ष की उम्र में चेल्लमाल नाम की बालिका से उनका विवाह हुआ लेकिन कवि के रूप में विवाहोपरांत उनका काव्य-यश रुका नहीं। जनता में वे इतने लोकप्रिय हुए कि उन्हें 'भारती' की उपाधि दी गई। यह उनके जीवन की अविस्मरणीय घटना रही, जब वे 'कवि भारती' के नाम से प्रसिद्ध हो गए। स्थिति-परिस्थिति ने इस प्रसिद्ध कवि को बाबा विश्वनाथ की नगरी बनारस ने बुला लिया। वहीं बुआ के पास रहकर संस्कृत-हिंदी-अंग्रेज़ी का ज्ञान प्राप्त किया और प्रयाग की विश्वविद्यालयी प्रवेश परीक्षा में पास हो गए। बनारस के दिनों में ही उन्होंने पगड़ी बाँधनी शुरू की और मूँछें बढ़ा लीं। एनी बेसेंट के भाषणों को सुनने के कारण उनका 'विज़न' व्यापक हो गया। नतीजा यह हुआ कि भारती का कवि, परंपरा काव्य की अभ्यास जड़ रूढ़ियों को तोड़कर क्रांतिकारी कवि हो गया। शेली के अध्ययन का प्रभाव कवि-मानसिकता पर पड़ना ही था, क्योंकि शेली पर वे मुग्ध थे। फ़ुर्सत के क्षणों में शेली, कंबन और इलंगो का मनोयोगपूर्वक अध्ययन करते। एक दिन ऐसा भी आया, जब वह व्यंग्य कविता लिखने के कारण ज़मींदार की सेवा से अलग कर दिए गए। अचानक उनका परिचय तमिल के प्रमुख पत्र से हुआ। इस पत्र का नाम था 'स्वदेश मिलन'। पता नहीं कौन-सी आंतरिक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगन के कारण स्वामी विवेकानंद, अरबिन्द तथा तिलक-जैसे महान नेताओं के भाषणों के अनुवाद किए। इस कवि की एक अलग ही दुनिया थी। उनकी राजनीतिक चेतना पर भी इस दौर में धाक दिखाई दी और कांग्रेस के राष्ट्रवादी ग्रुप के हो गए। इसी बीच कवि भारती ने तीन संकलन किए— *राजनीतिक चेतना, जाति भेद का अंत* तथा *भारतीय नारियों का उत्थान*। भारती ने सिस्टर निवेदिता को अपना गुरु माना था। विवेकानंद की दृष्टि में भारत महान देश है और कोई बहकता देश नहीं है। सिस्टर निवेदिता से उनकी जान-पहचान इतनी गहरी हो गई कि अपने देशभक्तिपूर्ण काव्य-संग्रह *स्वदेश गीतंगल* (1908 ई.) तथा *जन्मभूमि* (1909 ई.) उन्हीं को समर्पित किए हैं।

उनके लेख 'स्वदेश मित्रन' में छपते थे और उन्होंने मित्रों के सहयोग से साप्ताहिक 'इंडिया' (1906 ई.) के प्रकाशन की योजना बनाई। इन योजनाओं में प्रेम प्रगति का कोई ताज नहीं है। कृष्ण स्वामी इन कलाकृतियों के भीतर से गुज़रे तो तेज प्रकाश का अनुभव किया। फिरंगी शासन ने भारती की कविताओं पर कड़ा रुख़ अपनाया तथा अरबिन्द घोष, व. उ. चिदंबरम् पिल्लै-जैसे नेता जेल में बंद कर दिए। तिलक को जेल में डालकर 'वंदे मातरम्' पर रोक लगा दी। उन्होंने वेद तथा गीता का अध्ययन-मनन किया और देशभक्ति के विचार के प्रति संकल्पबद्ध हो गए। संकल्प ऐसा कि 'स्वेदश मित्रन' में उनके उग्र लेख कम प्रकाशित हो पाए तो उन्होंने इसको क़ैद-कपट की स्थिति माना। इस स्थिति को बदलने के लिए ही मित्रों के साथ 'इंडिया' पत्र के प्रकाशन की योजना बनाई। वह अपने स्वभाव के कारण लाला लाजपतराय, अरबिन्द तथा तिलक से प्रभावित हुए। इनके विचारों से भारती की कविता को स्वतंत्रता-स्वाधीनता का नया मंत्र मिला। उन तटस्थ भारतीयों की करतूतों से उन्हें पीड़ा हुई, जो स्वाधीनता आंदोलन से अलग रहे। भारती ने अपने कवि-कर्म से देशभक्ति की ज्वाला को प्रज्वलित किया और उसके प्रकाश में भारत निंदकों को खरी-खरी सुनाई। पूरी निष्ठा के साथ वी. कृष्णास्वामी ने भारती की पहली पुस्तक *गीतंगल* के प्रकाशन-वितरण में सहयोग दिया। 'भारती के कठोर स्वरों से फिरंगी सरकार का माथा ठनका और उसने इस कवि-कर्म के प्रति कठोरता का रुख़ अपनाया। भारती जी इस कोप से बचने के लिए पांडुचेरी (तत्कालीन फ्रेंच उपनिवेश) चले गए और वहाँ से 'इंडिया' का प्रकाशन जारी रखा। कुछ दिन 'विजया', 'कर्मयोगी' तथा 'बाल भारत'-जैसी पत्रिकाओं को भी प्रकाशित किया। मए भारत के निर्माण का अरमान दिन-रात बढ़ता ही रहा। भारती ने पूरे समर्पण भाव के साथ यहाँ लिखना शुरू किया। लेकिन कुपित ब्रिटिश सरकार ने 'इंडिया' तथा उसके सहयोगी पत्रों पर प्रतिबंध लगा दिया। इस घटना से भारती के देशभक्त को बड़ा धक्का लगा। वे लगातार कष्टों में घिरते गए। किंतु पांडुचेरी छोड़ना उचित नहीं समझा। भारती के मन में हिंदू देवी-देवताओं का निवास था और वे उन्हीं की शरण में जाकर कष्ट-निवारण की प्रार्थना करते। नई सर्जनात्मक शक्ति से उन्होंने आत्मचरितात्मक सृजन कर्म किया, जैसे *कण्णन पाट्टु*, *पांचाली शपथम्* तथा *कुइल पाट्टु*।

20 नवंबर, 1918 को भारती-फ्रेंच और ब्रिटिश इंडिया की सीमा में क़ैद कर लिए गए। एनी बेसेंट तथा रामस्वामी अय्यर के कारण जेल से छूटे। उनका तिरुनेलवेली में भव्य स्वागत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किया गया। दो वर्ष तक वे अपनी पत्नी के जन्मस्थान 'कडायम' में रहे। आर्थिक संकट के कारण पांडुलिपियाँ प्रकाशन की प्रतीक्षा में पड़ी रहीं। इसी समय गाँधी पर भाषण दिए। गाँधी विचार-दर्शन में तथा गाँधी दर्शन से गाँधी के प्रति उनकी निष्ठा और प्रगाढ़ हो गई। वे गाँधीमय हो गए। इन्हीं दिनों 'स्वदेश मित्रन' का निमंत्रण पत्र मिला। भारती इस समय तक प्रौढ़ कवि हो गए थे और डबडबाई आँखों की विवशता से दूर रहने का प्रयत्न करने लगे। लेकिन मृत्यु उन्हें घेर रही थी। वे त्रिपलिकेन मंदिर गए और हाथी को नारियल खिलाते समय हाथी ने उन्हें पटक दिया। वे 12 दिसंबर, 1921 को संसार छोड़ गए। उनकी उम्र अभी चालीस वर्ष की भी नहीं थी।

भारती के छोटे भाई सी. विश्वनाथ अय्यर ने 'भारती प्रसुरालयम्' की स्थापना की, ताकि वह कवि की समस्त कृतियों को कई भागों में प्रकाशित कर सकें। लेकिन इसे सरकार विरोधी साहित्य घोषित कर मद्रास सरकार ने दो हज़ार प्रतियाँ ज़ब्त कर लीं। 1928 में मद्रास विधान परिषद् में देशभक्तिपूर्ण गीतों 'लय का साधक' कहकर याद किया और माना कि उनका कृतित्व तमिल जाति की अमूल्य निधि है। आज़ादी के आंदोलन के तूफ़ानी वर्ष जीकर भारत आज़ाद हो गया तो भारती के सृजन को याद किया गया। तमिल सरकार ने उनके गीतों के संस्करण प्रकाशित किए। भारती के संपूर्ण काव्य-साहित्य की विविधता की दृष्टि से उन्हें चार भागों में विभक्त किया गया—(1) देशभक्तिपरक गीत, (2) भक्तिपरक गीत, (3) विविध गीत, (4) तीन महान गीत—कण्णन पाट्टु (कृष्णगीत), पांचाली शपथम् (3) कोइल पाट्टु (कोयल गीत)। दिलचस्प बात यह है कि उनके गीतों का कथा प्रवाह विचारों की लय को तीव्र बनाता चलता है और प्रत्येक कविता अपने में स्वतंत्र है। उनके छोटे गीत दूर तक मार करते हैं—अनंत शक्ति के साथ। जैसे 'चिंगारी' कविता देखिए : *संयोग से मैंने एक चिंगारी उठाई और उसे एक जंगली पेड़ की खोखल में रख दिया / और वह जंगल राख हो गया / हा, हा, हा, / आग की इस विनाश शक्ति के समक्ष / क्या कोई बड़ा या छोटा है / या फिर जवान या बूढ़ा है भला!* यहाँ कविता में आग का प्रतीक बहुलार्थक है और उसे अनेक संदर्भों से जोड़कर एक पाठ उठाया जा सकता है और उस पाठ के अनेक निहितार्थ सामने आ सकते हैं। ध्वन्यर्थ व्यंजनाओं की शक्ति का प्रतीक है। भारती की कविता हिंदी कवि जयशंकर प्रसाद तथा सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, माखनलाल चतुर्वेदी तथा भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं की तरह अर्थ की एकलता को तोड़ती है और एक साथ कई नए अर्थों की निष्पत्ति करती है।

सुब्रह्मण्य भारती का कवि देशभक्ति का पर्याय रहा है। उन्होंने भारत के प्राचीन गौरव को मुक्त-हृदय से गाकर अभिव्यक्त किया और जनता के जन-जागरण को दीप्त। भारत में अंग्रेज़ी साम्राज्यवाद उनके राजनीतिक स्वरों से इतना डर गया कि उनके प्राणों का दुश्मन हो गया। इस घिराव में ही वे पांडुचेरी में शरीर छोड़ गए। आज के स्वतंत्र भारत में उनकी कविताएँ स्वाधीनता आंदोलन का स्मृति-दस्तावेज़ हैं। इसलिए उनकी कविताओं की प्रासंगिकता की बात करना बौड़म यज्ञ है—समय उन्हें पुराना नहीं बना पाएगा क्योंकि उनके भीतर हमारी ग़ुलामी के दिनों का दर्द मौजूद है। आज उनकी कविताओं को छिछली भावुकता कहना देशभक्ति के भावों का अपमान है। इन गीतों में आत्म-मुक्ति की प्रेरणा का बड़ा अर्थ है—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज हम अनेक प्रकार की ग़ुलामी में जकड़े हैं, हम पश्चिम के उपनिवेश बन रहे हैं और भूमंडलीकरण का उपभोक्तावादी बाज़ारवाद हमें अमेरिकावाद की ओर ले जा रहा है।

भारती को इन गीतों की प्रेरणा बंकिम के उपन्यास *आनंदमठ* के गीत 'वंदे मातरम्' से चाहे मिली हो या न मिली हो। बंगभंग (1905 ई.) ने देशभक्तों को भीतर से झकझोर दिया था और स्वयं अरबिन्द राष्ट्र-धर्म राष्ट्रवाद का संदर्भ स्पष्ट कर रहे थे। भारती ने तमिल भाषियों को 'वंदेमातरम्' का मंत्र दिया : *हम एक हैं / और एक होकर उच्चारेंगे / वंदेमातरम्!*

एक गीत भारती ने बंकिम के गीत की प्रशंसा में लिखा : *आर्य साम्राज्ञी भारती के / इस मंत्र की जय हो। वंदे मातरम्!* स्वतंत्रता-संग्राम की कई स्थितियों-घटनाओं को भारती ने गाया। भारती ने पीड़ा के साथ ऐसी भी कविताएँ लिखी हैं, जिनमें देशभक्ति की निंदा करनेवाले भारतीय चमगादड़ों को धिक्कारा गया है। ऐसे बहुत-से औपनिवेशिक मानसिकता के ग़ुलाम भारतवासी थे, जो 'देशभक्ति' शब्द से घृणा करते थे। मातृभूमि के पुजारी ने तेज स्वर में धिक्कारते हुए कहा : *संकुचित हृदय वालों तुम दूर हटो।* भारत के गौरव-गान के पूजा के थाल की आरती की बाती को भारती ने कभी मंद नहीं होने दिया और तमिल भाषा से प्यार किया। तमिल को प्यार करते हुए भी उन्होंने भारत को 'संपूर्ण', 'अखंड' तथा 'अपूर्व महानता' के साथ देखा। वे गाते हैं : *यह महान हिमवाल हमारा है / इसकी कोई उपमा संसार में नहीं है / यह स्नेहमयी गंगा हमारी है।* भारत की विविधता को भारती ने भारत की 'आंतरिक अखंडता' में पाया— *वह अठारह भाषाएँ बोलती हैं / पर उसकी प्रज्ञा एक है।* चाहे गुरु गोविंद सिंह हो या शिवाजी, दादा भाई नौरोजी हों या तिलक—सबकी आत्मा देशभक्ति में एक है। भारत के लिए 'स्वाधीनता' से बड़ा कोई दूसरा मूल्य नहीं है। इस विचार को भारती की देशभक्तिपरक कविताएँ बार-बार केंद्र में लाती हैं। भारती ने अपनी परंपराओं से 'स्वाधीनता' को समझा और उसे प्राप्त करने के लिए प्राणों की बाज़ी लगा दी। अंग्रेज़ी की वह व्यवस्था जो धूर्तता से 'स्वाधीनता' छीनती है, वह भारती के शब्दों में अधिक दिनों तक चल नहीं सकती। उन्होंने गाया यह गीत : *मुझे क्षत-विक्षत ही क्यों न कर डालें / पर हे माँ, स्वतंत्रते, मैं तुम्हें पूजना नहीं भूलूँगा।* भारती की इस ईमानदार स्वतंत्रता पूजा में अपार ताक़त है और भारत माँ के चरणों में चढ़ाए जाने का माखनलाल चतुर्वेदी वाला 'एक पुष्प की अभिलाषा' वाला भाव।

भारती के देशभक्तिपूर्ण स्वर में भारतीय परंपराओं का प्रेम-प्रवाह (आध्यात्मिक प्रवाह)— भक्ति प्रवाह का कावेरी-गंगा जल पूरी तरह प्रवाहित है। उनके मुक्त कंठ से उदात्त-स्वर उठा : *भारत नाम का जाप करो। जो आलोक में रत है, वह आलोक (ज्ञान) का आकांक्षी देश भारत है।* भारती के भक्ति गीत आज़ाद भारत में लोकप्रिय रहे हैं। गणेश और विष्णु की आराधना के वे गीत गाते हैं। कृष्ण, लक्ष्मी, सरस्वती, सूर्य की महिमा के भारती गायक हैं क्योंकि ये देवी-देवता हमारे रक्षक हैं। महाशक्ति-दुर्गा की आराधना में अहं का विसर्जन ही भाव-विरेचन का द्वार है। भारती के शक्ति गीत *स्वदेश गीतंगल* में भयमुक्त पूजा है। उन्होंने उस कृति के समर्पण की 'भूमिका' में लिखा : ''मैं यह कृति उस गुरु के चरणों में समर्पित करता हूँ, जिसने मुझे भारत माता का सच्चा स्वरूप दिखाया।'' माँ के प्रति ऐसी ही कृतज्ञता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विवेकानंद में है। कहते हैं कि जीवन के अंतिम दिनों में भारती की विवेक वयस्कता प्रज्ञा का शिखर छू रही थी। वे मौज में चले जाते थे — वाणी विराम पा जाती थी।

पांडुचेरी-प्रवास के दिनों में भारती ने पूर्णावतार देवता कृष्ण के गीत गाए। आलवार वैष्णव भक्तों का कृष्ण रस बाल लीला चित्रण में छलक उठा। 'कृष्ण गीत' की संगीतात्मकता में लोक लय की झूम हैं। 'कृष्ण-गीत' में तेईस गीत हैं, जिसमें 'अनंत' को सेवक, मित्र, प्रेमी के संबंधों से पाने का भाव है। *गीत-गोविंद* का यह नया कृष्ण स्वर है, जिसमें सूरदास के पदों की लयात्मक तन्मयता है एवं मीरा-भाव की समग्र-चरम समाधि। वस्तुत: कृष्ण का दिव्य-स्वरूप भारती की आँखों में घूमता रहता है। पहले भारती की हृदय-पूजा-देवी माँ कणम्मा भी है और कवि उनकी शरण में जाकर ही शान्ति और शक्ति पाता है।

भारती ने *महाभारत* तथा *रामायण* का हाथ पकड़कर चलना सीखा है। वे निरंतर-पौराणिक प्रसंगों की आधुनिकता को सामने लाते रहे। 'द्रौपदी का गीत' नारी-शक्ति का स्मरण है। यह कविता है तो राजनीतिक, लेकिन इसका सांस्कृतिक स्रोत कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। भारती के लिए कविता कर्म एक सांस्कृतिक प्रक्रिया है और पूरी संस्कृति की पुनर्रचना ही उनकी सर्जनात्मकता में व्याप्त है। द्रौपदी को कुरु दरबार में परतंत्र मातृभूमि के रूप में पाना एक सशक्त प्रतीक है। यह सच है कि 'पांचाली शपथम्' राजनीतिक-कविता है, जिसमें द्रौपदी का क्रोध सामने आता है और यह आधुनिक नारी का विद्रोह है—साथ ही, कविता के कई-संसार। *पराशक्ति के नाम पर / मैं यह शपथ लेती हूँ/जब तक दुष्ट दु:शासन के रक्त में/नरपिशाच दुर्योधन के रक्त को मिलाकर/उसमें मैं अपने केशों को धो नहीं लेती तब तक मैं इन्हें बाँधूँगी नहीं।* तप और यातना का द्रौपदी-जैसा कोई भी दूसरा चरित्र भारत में नहीं मिलेगा।

कुछ समय बाद भारती ने 'कुइल पाट्टु' (कोयल गीत) की रचना की। यह कथात्मक कविता सात सौ पचास पंक्तियों की है जिसके पात्र पशु हैं और नायिका एक भारतीय कोयल। यह कविता कॉलरिज के 'कुबला खाँ' जैसी फ़ंतासी हैं— *कवि दिवास्वप्न देखता है / मैंने भी देखा।* इस कविता पर आलोचकों ने अनेक तरह के भाष्य किए हैं। जन्मजात कवि भारती ने तमिल गीतों को एक उदात्त स्वर दिया, जिसमें भारतीय समाज का एक मुकम्मल चेहरा बिंबायित है। वे अछूतों को देखकर उदास थे और रघुनाथ राव की पत्रिका 'रेडिकल सोशल रिफ़ॉर्म' में उन्होंने लेख लिखे। जातिवाद का खंडन किया तथा नारी सुधार आंदोलन की ओर क़दम उठाए। प्रश्नाकुल भारती पूछते रहे कि धर्म-धर्म के बीच यह कैसा भेदभाव ? बाल-विवाह, विधवा-विवाह-जैसे समाज-सुधार आंदोलनों में वे अगुवाई करते रहे। भारती की 'नूतन नारी' कविता एक नई हवा की लहर है। उनकी 'गद्य-कविताओं' का आज विशेष महत्त्व है। रवींद्रनाथ को 'नोबेल प्राइज़' मिलने पर भारती उन्हें तमिल में अनूदित करने में प्रवृत्त हुए। भारती ही क्यों, पूरे भारतीय साहित्य को रवींद्रनाथ ने प्रभावित किया।

यह कम लोग जानते हैं कि आधुनिक तमिल गद्य के निर्माताओं में भारती का नाम अविस्मरणीय है। भाषा को उन्होंने धुनकर-कातकर स्वच्छ पारदर्शी बनाया और उसमें उत्साह-उमंगभरा ओजस्वी गद्य लिखा। यह तो उनकी पत्रकारिता का ही सफल पहलू है कि राजनीति,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धर्म, संस्कृति, पुराण-मिथक—सभी पर उनकी क़लम चलती रही। अनुवाद, कहानी, निबंध, रिपोर्ताज—सभी विधाओं पर वे बेधड़क आगे बढ़े। आज उनका अधिकांश अप्राप्य गद्य पेरियार स्वामी, ए. पद्मनाभन तथा सी. विश्वनाथ अय्यर-जैसे धुनी परिश्रमी लोगों के प्रयास से प्रकाश में आ चुका है। इस गद्य की अंतर्वस्तु काव्य की ही भाँति सुधार भावना तथा देशभक्ति है। नारी-यातना तथा अछूतों के शोषण पर वे जमकर लिखते रहे। पुरुषों से आग्रह किया कि वे नारी को बराबरी का दर्जा दें तथा उनकी महिमा महत्ता को स्पष्ट करें। भारतीय संस्कृति को नारियाँ ही सुरक्षित रख रही हैं और वे ही भविष्य में संस्कृति के संस्कार से आधुनिकता के नए बीज बोएँगी। इन विषयों पर लेख लिखनेवाले भारती ने एक उपन्यास *चांद्रकैबिल केद्रे* लिखा। उथल-पुथल उनके संघर्षपूर्ण ग़रीबी के जीवन में ऐसी रही कि 'चंद्रिकै' की कहानी अधूरी ही रह गई। यह उपन्यास भूकंप की एक घटना से 1901 में शुरू हुआ था। भूकंप में एक बाल-विधवा अपनी भतीजी 'चंद्रिकै' के साथ बच जाती है। संघर्ष के बाद उसका विवाह हो जाता है, लेकिन पति विश्वनाथ शर्मा पागल हो जाते हैं—यहीं पर कहानी ठहर जाती है।

भारती ने कभी-कभार 'स्वर्णकुमारी'-जैसी कहानियाँ लिखीं और ब्राह्म समाज की उनमें चर्चा की। एक आदमी से स्वर्णकुमारी का प्रेम हो जाता है लेकिन तिलक महाराज सिद्धांतों का विरोधी होने के कारण वह उसे छोड़ देती है। उसे पति रूप में सच्चा देशभक्त चाहिए। भारती ने एक नंबूदरी ब्राह्मण के साथ का संवाद भी लिखा है और 'चंद्रतीवु'-जैसी फ़ंतासी। 'छठा भाग' कहानी का व्यंग्य अपनी धार रखता है और यहाँ अछूत जनता का हवाला है। दरअसल, समाज-सुधार की भावना भारती के लेखन के भाव-विभाव—दोनों से जुड़े रहे हैं। जैसे, 'क्रिवलकवस क़िला' कहानी। समय-समय पर उन्होंने पशु-कथाओं को भी लिखा, जैसे वनस्पति संवेदना से युक्त 'कुइल पाट्टू' गीत-कविता। इन पशु-कथाओं की प्रेरणा उन्हें *पंचतंत्र* की कहानियों से मिली। 'नवरत्न कहानियाँ' मानव-मन की जिज्ञासाओं को लेकर लिखी हैं। इस तरह भारती ने गद्य के वैचारिक-प्रयोग निखार दिए।

भारती ने 'ज्ञानरथम्' में आलोचना के सामान्य सिद्धांतों की चर्चा की है। कवि अपनी प्रेमिका के साथ ज्ञानरथ पर सवार होकर यात्रा के लिए निकला है—इस फ़ंतासी में चाँद समुद्र है—जहाज जैसे फूलों की घाटियाँ हैं—छोटी नौकाएँ-जैसे तैरते हंस हैं। लेकिन कुछ समय बाद ही सुंदरता का लोकध्वस्त हो जाता है—एक निर्दयी संसार सामने आता है, जिसे देखकर वह लौट आता है।

उनकी श्रद्धा राजनीति में बालगंगाधर तिलक के रूप में असीम थी। वे तिलक को धरती पर ईश्वर और धर्म का अवतार मानते थे। ऋषि कण्व भारती को राष्ट्रभक्तों के कर्तव्यों की शिक्षा देते मिलते हैं। इसी तर्ज के भारती ने 'तराजू' तथा 'सुम्या' जैसे निबंध लिखे। उन्होंने सुलझे गद्य में *भगवद्गीता* (तमिल में अनुवाद) तथा वैदिक ऋचाओं की व्याख्या तथा पतंजलि की समाधि पर चिंतनपरक गद्य का सृजन किया। अध्यात्मवादी-भौतिकवादी पाटों से निकल वे 'कर्म योग' की ओर बढ़े हैं। कर्म की पवित्रता से ही हम जीवन-सौंदर्य का साक्षात्कार कर सकते हैं—कुकर्म से नहीं। यही उपदेश तिलक और गाँधी—दोनों देते रहे हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक विशेष विचार यह है कि भारती पर अंग्रेज़ी गद्य-पद्य का जादू सिर चढ़कर बोला है। शेली पर वे मुग्ध थे और पूरा स्वच्छंदतावादी आंदोलन उनके विचारों को तृप्ति देता था। पांडुचेरी में यह रंग अरबिन्द के प्रभाव से भी गहरा हुआ। भारती के कुछ लेख और अनुवाद 'आर्गन एंड अदर पोएम्स एंड ट्रांसलेशंस' तथा 'एसेज़ एंड अदर प्रोज़ फ्रैगमेंटस्' में संकलित हैं। इन पर पश्चिमी आधुनिकता की ज़ोरदार धमक है। भारती ने 'सुनहरी पूँछवाली लोमड़ी' जैसा व्यंग्य लिखा, जिसकी प्रशंसा अरबिन्द तक ने की थी। लेकिन भारती बहुत देर तक पश्चिमी आधुनिकता से भरे अंग्रेज़ी के संसार में टिके नहीं। अपनी तमिल भाषा में ही स्थायी निवास बनाकर आत्माभिव्यक्ति करने को आत्ममुक्ति एवं आत्मदान माना। माँ का यह आँचल उनकी सर्जनात्मक शक्ति बना और उसने उनकी सर्जनात्मक कल्पना को विस्तार दिया। इस विस्तार ने उनके सृजन को क्लासिकल संवेदना से भरकर कालजयी बना दिया।

गद्य-पद्य दोनों की भाषा में भारती ने क्रांति की है, उनका यह प्रदेश भूलने की वस्तु नहीं है। भारती ने 'शत्रु से प्रेम करो' का गाँधी विचार तो अपनाया ही...'महात्मा गाँधी पंचकम्' की रचना भी की। वे सत्याग्रह-युग की काव्यानुभूतियों के गायक हैं। उनकी मूलभूत चिंता 'महाशक्ति वंदना' से धरती के मानव के उत्थान की रही है। यह मंत्र उन्होंने सिस्टर निवेदिता से पाया था।

आज भी इस देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जो देशभक्ति, भारतीयता, भारतीय संस्कृति, भारतीय देवी-देवता जैसे शब्दों को गाली समझते हैं—अपशब्द मानते हैं। मेरा निवेदन है कि सुब्रह्मण्य भारती के सृजन-चिंतन संसार की उन्हें अंतर्यात्रा अवश्य करनी चाहिए ताकि उनके हृदय की बंद आँखें खुल सकें। तुलसीदास के शब्दों में 'उघरहि विमल विलोचन हिय के।'

संदर्भ-ग्रंथ

— (सं.) शिशिर कुमार दास : *इंटीग्रेटिड हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लिटरेचर*; भाग 1-2, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली; प्र. सं. 1996

— (सं.) डॉ. नगेंद्र : *भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास*; हिंदी माध्यम कार्यान्वयन, निदेशालय, दिल्ली; प्र.सं. 1994

— प्रेमानंद कुमार : *भारती* (भारतीय साहित्य के निर्माता); साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली; प्र. सं. 1979

— अकूट अनंताचारी : *कवि चक्रवर्ती सुब्रह्मण्य भारती चरित्रम्; किट्टप्पा मलर*, प्रसुरालयम्, शेंकोटा; प्रं. सं. 1936

— सी. विश्वनाथन् : *भारती एंड हिज़ वर्क्स*; भारती प्रसुरालयम्, मद्रास; प्र. सं. 1929

— के. एस. रामस्वामी शास्त्री : *सुब्रह्मण्य भारती; हिज़ माइंड एंड आर्ट;* वेल्थ एंड वेलफ़ेयर ऑफ़िस, मद्रास; प्र. सं. 1951

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समीक्षा

प्रीति प्रकाश प्रजापति

गुरु राग का तन्मय आख्यान

व्योमकेश दरवेश के लेखक डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने प्रस्तुत कृति में न केवल जीवन और व्यक्तित्व की निर्माण प्रक्रिया के नियामक सोपानों और पड़ावों को हमारे समक्ष उद्‌घाटित किया, वरन् अत्यंत सूक्ष्मता और गहराई के साथ तत्कालीन शिक्षा जगत की उथल-पुथल, ऊहापोह, सत्ता एवं पद प्राप्ति के लिए अपनाए गए हथकंडों और कुटिल राजनीतिक दाँवपेंचों का अत्यंत साफ़गोई और शालीनता के साथ चित्रण किया है।

आचार्य द्विवेदी त्रिपाठी जी के श्रद्धेय गुरुवर थे। उनके योग्य और प्रिय शिष्य होने के नाते दोनों में परस्पर गहरी निकटता, आत्मीयता और अंतरंगता रही। गुरु-शिष्य का एक ऐसा निश्छल और अटूट संबंध; जो आज के समय में दुर्लभ होता जा रहा है, लेकिन उल्लेखनीय बात यह है कि संबंध की इस दृढ़ता से त्रिपाठी जी की लेखनी भावातिरेक की रौ में बहकर अतिशय तरल नहीं हुई है। प्रसंग चाहे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में आचार्य द्विवेदी के हिंदी विभागाध्यक्ष पद पर नियुक्ति का हो, वहाँ उनके विरोध का अथवा निष्कासन का हो या उसी विश्वविद्यालय में ही पुनः रेक्टर पद पर नियुक्ति और कार्यकाल का हो; या उत्तर प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी के उपाध्यक्ष के रूप में कार्यकाल का, त्रिपाठी जी ने यथासंभव अधिकाधिक स्रोतों से प्रामाणिक तथ्य सामग्री जुटाकर तत्कालीन स्थितियों का तर्कपूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत किया है। इस विश्लेषण में संवेदनशीलता और सहृदयता है, पर अतिरिक्त सहानुभूति और भावुकता नहीं। वे द्विवेदी जी के व्यक्तित्व की कमज़ोरियों को भी यथास्थान लक्षित करते चलते हैं। उनमें अतिशय संकोचशीलता, त्वरित निर्णय क्षमता का अभाव, प्रशासनिक कौशल की कमी तथा नियम पालन में शिथिलता इत्यादि के कई उदाहरण पुस्तक में मौजूद हैं यथा,

> ''पं. हजारी प्रसाद कृतज्ञता की डोर में बँधे, बहुत दूर तक जा सकते थे। उन पर दबाव डालकर अनुचित-उचित भी कराया जा सकता था। लेकिन वे छात्रों का अहित करने के लिए किसी के भी सामने झूठ नहीं बोल सकते थे। छात्रों का अहित होनेवाला हो तो ऐसा सच भी बोलने, लिखने से इंकार कर देते।...''

समीक्षात्मक आलेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। संगीत शास्त्र में भी पारंगत। संपर्क : हिंदी विभाग, लेडी श्रीराम कॉलेज, दिल्ली 110024; मो. 9013594104.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेखक ने काशी नगरी के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक गौरव का मात्र गुणगान करने के स्थान पर उसके जटिल, अंतर्विरोधी सांस्कृतिक स्वभाव का यथार्थपरक सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत किया है। ऐसा करते समय उनकी वाणी में व्यंग्यात्मकता का तेवर उभरने लगता है। एक ऐसा व्यंग्य, जिसमें सत्य की आँच तो है, पर तल्खी और कड़वाहट देनेवाला क्षुद्र मन का मलिन धुआँ नहीं।

''काशी के लोग किसी को सम्मानित करना कम जानते हैं, सम्मानित होने में उनकी रुचि अधिक होती है। काशी में ही तुलसीदास ने लिखा था : *बहुत प्रीति पुजाइबे की पूजिबे की थोर।*...काशी में विद्वत्ता और कुटिल दबंगई का अद्भुत मेल दिखलाई पड़ता है। कुटिलता, कूटनीति, ओछापन, स्वार्थ आदि का समावेश विद्वत्ता में हो जाता है। काशी में प्रतिभा के साथ परदु:खकातरता, स्वाभिमान और अनंत तेजस्विता का भी मेल है, जो कबीर, तुलसी, प्रसाद, भारतेंदु और प्रेमचंद आदि में दिखलाई पड़ता है।'' (वही, पृष्ठ 136)

आज हम जिन विभूतियों के प्रति आदर, श्रद्धा और सम्मान से नतमस्तक होते हैं, उनका व्यक्तिगत जीवन, स्वभाव, आचरण—सबका अत्यंत रोचक यथावत निष्पक्ष चित्रण पढ़कर पाठक कभी आह्लाद, कभी अवसाद, कभी विस्मय तो कभी विनोद के भवसागर में डूबता-उतराता है। प्रसिद्ध व्यक्तियों की बड़ी-बड़ी उपलब्धियों, उनके जीवन से जुड़ी महत्त्वपूर्ण घटनाओं का प्रचार-प्रसार तो प्राय: हो जाता है, किंतु उनके जीवन और व्यक्तित्व से संबंधित छोटी-छोटी घटनाएँ, उनके रहन-सहन, पहनावे, खान-पान, बातचीत, मनोवृत्तियों आदि के सूक्ष्म निरीक्षण पर आधारित प्रामाणिक जानकारी प्राप्त होना दुर्लभ है। इस दुर्लभ सामग्री को अत्यंत श्रम और साधना के बल पर सुलभ कराने का महत कार्य किया है, डॉ. त्रिपाठी ने। एक उदाहरण दृष्टव्य है :

> ''रवींद्र भ्रमर मस्तमौला थे। कवि सम्मेलनों में ख़ूब जमते थे। पंडित जी को 'बाबू जी' कहते। माता जी को गाँव का गीत — हिरनी वाला लोकगीत सुनाते। माता जी नामवर जी को 'नामौर' कहती तो भ्रमर जी 'भँवर जी'। भ्रमर जी परिमल गुट के थे। नामवर, केदार का त्रिलोचनी गुट उन्हें महत्त्व न देता, शिवप्रसाद जी भी नहीं सेंटते। भ्रमर जी ऐसा भाव दिखाते — हम भी किसी को कुछ नहीं समझते। वे शंभूनाथ सिंह और परिमलियों से राब्ता बढ़ाते।'' (पृष्ठ 158)

प्रस्तुत कृति में भारतीय संदर्भों में गुरु-शिष्य संबंध की स्वस्थ परंपरा की झाँकी मिलती है। त्रिपाठी जी जब अपने और द्विवेदी जी से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में संबंधित घटनाओं, प्रसंगों का उल्लेख करते हैं, तब इस परंपरा का महत्त्व सहज ही मन को भावविभोर कर देता है। गुरु किस प्रकार अपने व्यक्तित्व, चिंतन और आचरण से शिष्य के मनो-मस्तिष्क पर अमिट प्रभाव डालता है। किस प्रकार उसके व्यक्तित्व निर्माण और विकास की रूपरेखा गढ़ता है। शिष्य अगर योग्य हो, परिश्रमी हो, विनम्र हो तो वह गुरु के सान्निध्य ज्ञान और प्रेरणा से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी प्रतिभा को पहचान और माँजकर किस प्रकार अध्ययन प्रक्रिया को सार्थक दिशा दे सकता है, इन सबका एक सघन और संश्लिष्ट अनुभव कृति में प्राप्त होता है।

औरों के विषय में लिखते हुए त्रिपाठी जी स्वयं अपने व्यक्तित्व की पर्तों को भी उकेरते चलते हैं। यह उद्घाटन आत्म-प्रकाश के लिए नहीं होता, न ही आत्मश्लाघा के लिए। चाहे अपनी हीन आर्थिक स्थिति हो या व्यक्तित्व की कोई और कमज़ोरी, वे उस पर पर्दा नहीं डालते। विनम्रता की पराकाष्ठा यह कि ऐसे अवसरों का उल्लेख करते समय और लोगों के सहयोग, भलमनसाहत और उदारता का ज़िक्र करना भी नहीं भूलते। चाहे प्रसंग आर्थिक तंगी का हो या किसी मित्र से पढ़ने के लिए उधार ली गई पुस्तक को बेचकर प्राप्त पैसों से फ़िल्म देखने और रेस्तराँ में डोसा खाने का हो अथवा अपने गुरुवर द्विवेदी जी से झूठ बोलकर छुट्टी पर जाने का—त्रिपाठी जी कुछ नहीं छुपाते। वे लिखते हैं—

> ''लघु शोध-प्रबंध लिखकर जमा करने के बाद मैं बहुत थक गया। पैसे पास थे नहीं। टंकण करनेवाले उपाध्याय तक का पैसा बाक़ी था। कुछ अच्छा खाने यानी मसाला डोसा लंका के अय्यर कॉफ़ी हाउस का और राजकपूर-नरगिस की कोई फ़िल्म देखने की हुड़क उठ रही थी। विवशत: मैंने बंधुवर जमादार सिंह द्वारा प्रदत्त संदेशवाहक स्टूडेंट्स फ़ोर शॉप में बेचा — राजकुमार नरगिस की फ़िल्म 'जान पहचान' देखी, ... अय्यर कॉफ़ी हाउस में मसाला डोसा खाया। जमादार सिंह किताब वापस माँगते रहे, मैं टरकाता रहा।'' (पृष्ठ 162)

द्विवेदी जी की प्रतिभा, विद्वता और वक्तव्य कला से जुड़ी विभिन्न घटनाओं और प्रसंगों के संदर्भ में अनेक स्थानों पर आए वर्णन से जहाँ एक ओर हम चमत्कृत और अभिभूत हो जाते हैं, वहीं दूसरी ओर द्विवेदी जी को अपनी जीवन यात्रा में ईर्ष्या, विरोध, षड्यंत्रों के कारण जो विडंबना, अपयश, निराशा झेलनी पड़ी, वह यह बताती है कि महान से महान प्रतिभावान, उद्यमी, उदार और सहृदय व्यक्ति को भी जीवन में प्रबल विरोध सहना पड़ता है, कठिन संघर्ष करना पड़ता है। बल्कि कहें तो संघर्ष की आँच पर तप कर ही व्यक्तित्व का सोना खरा होता है। सतत् संघर्षों में भी महान व्यक्तियों की निश्छलता और सक्रिय रचनात्मक ऊर्जा उनमें अपराजेय जीवनी शक्ति का संचार करती रहती है। द्विवेदी जी का जीवन और व्यक्तित्व इसका प्रमाण है। वे कबीर और निराला के समान विद्रोही और फक्कड़ भले ही न रहे हों, गृहस्थ जीवन के दायित्वों के चलते उन्होंने कुछ समझौते भी किए हों, किंतु उन्होंने कभी किसी का अहित न चाहा न किया, किसी के ख़िलाफ़ षड्यंत्र नहीं रचा, न उनकी ऐसी मनोवृत्ति थी।

व्योमकेश दरवेश एक ऐसी रचना है, जिसमें चिंतन और सृजन के विविध रूपों का आस्वाद एक साथ प्राप्त होता है। इस कृति में अपेक्षित यथार्थता, प्रामाणिकता, ईमानदारी और निष्पक्षता, जीवन और साहित्य के विविध विषयों से संबंधित गहन चिंतन-मनन और विश्लेषण से परिपूर्ण अंश संवेदनशीलता और रागात्मक संस्पर्श से युक्त कथा-रस-जैसे समस्त तत्त्व संश्लिष्ट रूप में विद्यमान है।

कुछ घटनाओं और प्रसंगों की पुनरावृत्ति हो जाने से वर्णन क्रम में शिथिलता आ गई है और आस्वाद में कहीं-कहीं बाधा भी उपस्थित हुई है। किंतु अधिकांशत: द्विवेदी जी के जीवन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और व्यक्तित्व के संबंध में जो मूल्यवान तथ्य और सामग्री एक सहज, सरस प्रवाह रूप में उपलब्ध हुई है, वह साहित्य जगत के लिए अत्यंत उपादेय एवं प्रेरणादायक है।

किसी भी रचनाकार के रचनाकर्म को गहराई से समझने के लिए उसके जीवन और व्यक्तित्व के विषय में जानना आवश्यक है। इससे मूल्यांकन दृष्टि में समग्रता आ जाती है। जीवनी एक ऐसी विधा है, जिसके ढाँचे में अंतर्जगत और बाह्य परिवेश के मध्य सक्रिय भिन्न स्तरीय द्वंद्वों को उनकी जटिलताओं के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है। इस दृष्टि से जीवनी रचनाकार के बाह्य और आंतरिक संघर्ष को समग्र रूप से समझने में सहायक होने के साथ ही उसकी रचना प्रक्रिया से साक्षात्कार कराने में मूल्यवान साक्ष्य सिद्ध होती है। आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी अपने चिंतन और साहित्य में मनुष्य की दुर्दम्य जिजीविषा और उसकी जययात्रा की चर्चा बार-बार करते हैं, सहज और उदात्त मनुष्यत्व की प्रतिष्ठा करते हैं। वह जीवन और जगत की परिवर्तनशीलता में अटूट आस्था व्यक्त करते हुए रूढ़िवादी दृष्टिकोण के स्थान पर प्रगतिशील जीवन मूल्यों की स्थापना करते हैं। उसकी मूल प्रेरणा और आधार भूमि को आत्मसात् करने के लिए त्रिपाठी जी द्वारा प्रस्तुत यह जीवनी एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है। साहित्य के सामान्य पाठक ही नहीं, द्विवेदी जी पर शोध करनेवाले अनुसंधित्सुओं के लिए भी यह पुस्तक प्रामाणिक स्रोत सामग्री प्रदान करती है।

समीक्षित पुस्तक :
व्योमकेश दरवेश (जीवनी) : **विश्वनाथ त्रिपाठी**; राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002; दूसरा संशोधित संस्करण 2012 ई.; 600 ₹

प्रियदर्शन

एक उजली मनुष्यता की कविता

इन ढलानों पर वसंत
आएगा हमारी स्मृति में
ठंड से मरी हुई इच्छाओं को फिर से जीवित करता।
धीमे-धीमे धुंधुवाता ख़ाली कोटरों में
घाटी की घास फैलती रहेगी रात को

समीक्षात्मक आलेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। संपर्क : ई-4, जनसत्ता सोसाइटी, सेक्टर-9, वसुंधरा, ग़ाज़ियाबाद 201012

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- *ढलानों में मुसाफ़िर की तरह*
गुज़रता रहेगा अंधकार।

('वसंत'— *पहाड़ पर लालटेन*)

1980 में *पहाड़ पर लालटेन* जैसे कविता-संग्रह के साथ हिंदी कविता के समकालीन स्वर को बहुत दूर तक प्रभावित करने वाले मंगलेश डबराल की काव्य यात्रा पहाड़ों और मैदानों से होती हुई अब महानगरों तक चली आई है। उनका नया कविता संग्रह *नये युग में शत्रु* उन्हें एक बार फिर समकालीन हिंदी कविता की सबसे प्रतिनिधि और प्रभावशाली आवाज़ की तरह स्थापित करता है। इक्कीसवीं सदी के संकट और सवाल शायद ही किसी दूसरे कवि की आवाज़ में इस सूक्ष्मता और संवेदनशीलता के साथ व्यक्त हुए हों, जो इस संग्रह में दिखती है। नई सदी के दरवाज़े खटखटाता, चमचमाते जूते, कपड़े और मोबाइल गाँठे यह नए ज़माने का शत्रु वह भूमंडलीय बाज़ारवाद है, जिसने अपनी एक मायावी दुनिया बसा रखी है। इस दुनिया में कुछ भी सपाट और इकहरा नहीं है। वह हर तरफ़ है लेकिन दिखाई नहीं पड़ता : *वह अपने को कंप्यूटरों, टेलीविज़नों, मोबाइलों/ और आइपैडों की जटिल आँतों के भीतर फैला देता है/ अचानक किसी महँगी गाड़ी के भीतर उसकी छाया नज़र आती है/लेकिन वहाँ पहुँचने पर दिखता है कि वह वहाँ नहीं है। बल्कि किसी नई और ज़्यादा महँगी गाड़ी में बैठकर चल दिया है। कभी लगता है वह किसी फ़ैशन परेड में शिरकत कर रहा है, /लेकिन वहाँ सिर्फ़ बनियानों, जाँघियों, प्रसाधनों का ढेर दिखाई देता है/हम सोचते हैं शायद वह किसी ग़रीब के घर हमला करने चला गया है/लेकिन वह वहाँ से भी जा चुका है...।* ('नए युग में शत्रु')

यह शत्रु ढेर सारे मोबाइल नंबर रखता है, लाखों का इनाम जीतने की सूचना देता है, किसी अकल्पनीय उपहार का इंतज़ार कराता है और भरोसा दिलाता है कि कहीं शत्रु नहीं बचे हैं—सब एक-दूसरे के मित्र हैं। एक नफ़ासत भरी क्रूरता के साथ वह बहुत सारी दुनियाएँ उजाड़ रहा है, एक मैत्रीपूर्ण सौहार्द के साथ वह हमें बता रहा है कि हमारा उजाड़ा जाना ही आनेवाली सदियों के हक़ में है।

यह जो बहुत चमकती हुई दुनिया है—अपने कौंधते हुए ऐश्वर्य के साथ हमारे चारों तरफ़ फैली हुई—मंगलेश डबराल की कविता-जैसे आहिस्ते-से उसकी पन्नियाँ हटा देती है, उसका जादू बुझा देती है। वह उस ढँकी-छुपी असलियत को बिलकुल तार-तार करती हुई जैसे हमारे सामने प्रगट कर देती है, जो भयावह और कुरूप—दोनों है।

ऐसा नहीं कि यह भूमंडलीय यथार्थ पहली बार हमारे सामने खुल रहा है। बाज़ार और उपभोग के रौनक वाले टापुओं के पीछे एक बहुत विशाल दुनिया भूख, अभाव और तकलीफ़ की भी बसती है, यह बतानेवाली रिपोर्ट्स अब हमारे पास बहुत सारी हैं। लेकिन मंगलेश की कविता जब इस संसार में दाख़िल होती है तो आँकड़ों के आईने में दिखनेवाली एक सच्चाई जैसे अपने विराट दैत्याकार रूप में प्रगट होती है और हम ख़ुद को मनुष्यता और सभ्यता के उस संकट के सामने खड़ा पाते हैं, जिनसे परिचित तो हैं, लेकिन आँख मिलाने को तैयार नहीं होते। 'आदिवासी' नाम की कविता में वे लिखते हैं : *इंद्रावती, गोदावरी, राबरी, स्वर्णरेखा,*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तीस्ता, बराक, कोयल, सिर्फ़ नदियाँ नहीं उनके वाद्ययंत्र हैं। मुरिया बैगा संताल मुंडा उरांव, डोंगरिया कोंध पहाड़िया/महज़ नाम नहीं वे राग हैं, जिन्हें वह प्राचीन समय से गाता आया है/ और यह गहरा अरण्य उसका अध्यात्म नहीं, उसका घर है और फिर बताते हैं किस तरह उन्हें उजाड़ने का एक सिलसिला जारी है।

दरअसल मंगलेश डबराल की कविता उजाड़े जा रहे लोगों की, विस्थापित आवाज़ों की, छीज रही स्मृतियों की, पीछे छूटते घरों की इतनी सारी स्मृतियों से बनती है कि वह निजी वृत्तांत-सी लगती हुई भी एक सभ्यतागत विमर्श में बदल जाती है। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध के बाद की दुनिया को देखें तो यह विस्थापितों की दुनिया है। यह पूरी सदी बेदख़ल लोगों से बनी, उनकी स्मृतियों में बसी सदी है। इस पूरे दौर में घर टूटे हैं, मुहल्ले टूटे हैं, गाँव टूटे हैं, शहर बसे और बदले हैं, लोग तमाम कारणों से अपनी जगहें छोड़ने, कहीं और जाने को मजबूर हैं। जड़ों से इस कटाव ने और भी कई तरह के कटाव पैदा किए हैं। ऐसे कटे हुए लोगों की दुनिया में सर्वशक्तिमान हुई व्यवस्था जैसे उन्हें कम मनुष्य होकर जीने को विवश कर रही है। भूमंडलीकरण नाम का राक्षस कई तरह के सुंदर मुखौटे ओढ़े दुनिया को लगातार विपन्न बनाता हुआ, उसे भरमा रहा है।

मंगलेश डबराल की कविता में इस पूरी त्रासदी के तमाम स्वर मिलते हैं। बल्कि ध्यान से देखें तो उनकी पूरी काव्य यात्रा-जैसे विस्थापन के इन्हीं पड़ावों से बनी है। 'पहाड़ पर लालटेन' में विस्थापन और उजाड़े गए लोगों की त्रासदी के बिलकुल ताज़ा और हरे, टभकते हुए ज़ख़्म मिलते हैं तो 'घर का रास्ता' में वापस न लौटने की कचोट नज़र आती है। 'हम जो देखते हैं' और 'आवाज़ भी एक जगह है' में उनकी कविता अपने पुराने विश्वासों को जीती हुई नए इलाक़ों में दाख़िल होती है और सभ्यता के कहीं ज़्यादा सूक्ष्म संकटों के सुराग देती हैं। हालाँकि इस पूरे दौर में पुराने मिज़ाज और लहजे की आवाजाही भी तमाम जगहों पर है, लेकिन कवि का आगे बढ़ना अलक्षित नहीं रह पाता। 'नए युग में शत्रु' इस पूरी प्रक्रिया को जैसे उसकी संपूर्णता में पकड़ता है। इस संग्रह में बहुत निजी दुःख की थपकियाँ भी हैं, सार्वजनिक संकटों की शिनाख़्त भी है, ज़रूरी होने पर ठेठ राजनीतिक बयान भी हैं और बहुत गहरे छूनेवाली तरह-तरह की स्मृतियाँ, आवाज़ें और तस्वीरें भी हैं। 2002 की गुजरात हिंसा के बाद लिखी गई कुछ बेहतरीन कविताएँ इस संग्रह में हैं। 'गुजरात के मृतक का बयान' अब एक मशहूर कविता है, लेकिन उसका ज़िक्र यह समझने के लिए ज़रूरी लगता है कि किस तरह मंगलेश एक नितांत राजनीतिक कविता बहुत गहरे मानवीय आशयों के साथ लिख सकते हैं : *और जब मुझसे पूछा गया तुम कौन हो / क्या छिपाए हो अपने भीतर एक दुश्मन का नाम / कोई मज़हब कोई ताबीज / मैं कुछ नहीं कह पाया मेरे भीतर कुछ नहीं था / सिर्फ़ एक रंगरेज़ एक मिस्त्री एक कारीगर एक कलाकार / जब मैं अपने भीतर मरम्मत कर रहा था किसी टूटी हुई चीज़ की / जब मेरे भीतर दौड़ रहे थे / अल्यूमिनियम के तारों की साइकिल के नन्हे पहिए / तभी मुझ पर गिरी एक आग बरसे पत्थर / और जब मैंने आख़िरी इबादत में अपने हाथ फैलाये / तब तक मुझे पता नहीं था बंदगी का कोई जवाब नहीं आता।*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दरअसल कविता में यह उजली और मार्मिक मनुष्यता ही वह चीज़ है, जो मंगलेश डबराल को अपने समकालीनों के बीच अलग और विशिष्ट बनाती है। समकालीन हिंदी कविता में कई आवाज़ें मंगलेश डबराल से मिलती-जुलती हैं, उन सबकी अपनी-अपनी ख़ूबियाँ और ख़ासियतें भी हैं, लेकिन मंगलेश की कविता में जो सूक्ष्म संवेदना लगातार प्रवाहमान रहती है—तमाम पाठों के बीच एक अंतर्पाठ जिस तरह सतत् सक्रिय रहता है, वह हिंदी कविता में विरल है। उनके यहाँ विषयों की बहुतायत है। वे अपनी कविताओं में जीवन का पाठ, प्रेम का पाठ, खुशी का पाठ, अच्छाई का पाठ ले आते हैं; शरीर, चेहरा, त्वचा, आँखें, और बाल तक उनकी कविताओं में चले आते हैं; राग शुद्ध कल्याण और राग मारवा को वे विषय बनाते हैं, करुणानिधान और मोहन थपलियाल-जैसे छूटे हुए दिवंगत मित्रों को फिर से बसाते हैं और यह सब करते हुए अंततः वे अपनी मनुष्यता को ही परिभाषित कर रहे होते हैं, जो बहुत सारी चोटों के बीच, बहुत सारे छलावों और भटकावों के बीच अंततः क़ायम है और लगातार ख़ुद को उलट-पुलटकर देखती है : *प्यार में तुम किसी करिश्मे का इंतज़ार करते रहे / सितमगरों का साथ नहीं दिया / पैसे की ख़ातिर ख़याल बदले नहीं / कभी ताक़त की दहलीज़ तक गए तो अपने को बद्दुआ दी। आदमख़ोरों को भी तुम हैरत से देखा किये / सोचा किये कि आख़िर हमीं से कुछ हुआ है कि वे इस तरह हो गए / अकसर अपने भीतर झाँका किये कि कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं / तुम्हारा अदना ज़मीर कहता रहा ग़लत ग़लत सही सही।* ('अच्छाई का पाठ')

यह साफ़ नज़र आता है कि कविता लिखते हुए मंगलेश अपने सर्वोत्तम रूप में होते हैं—और यही चीज़ उनकी कविता को बड़ा बनाती है। नितांत संवेदनशील मगर उतनी ही चौकस उनकी कविता अपनी पारदर्शी निगाह से यथार्थ को जैसे तार-तार कर देती है। इस चौकस और मर्मभेदी दृष्टि के बूते ही वे लिख पाते हैं : *मैं जब भी यथार्थ का पीछा करता हूँ / देखता हूँ वह भी मेरा पीछा कर रहा है, मुझसे तेज़ भाग रहा है, / घर हो या बाज़ार हर जगह उसके दाँत चमकते हुए दिखते हैं / अँधेरे में रोशनी में / घबराया हुआ मैं नींद में जाता हूँ तो वह वहाँ मौजूद होता है / एक स्वप्न से निकलकर बाहर आता हूँ / तो वहाँ भी वह पहले से घात लगाए हुए रहता है / ...यथार्थ, इन दिनों बहुत ज़्यादा यथार्थ है / उसके शरीर से ज़्यादा दिखाई दे रहा है उसका रक्त।* ('यथार्थ इन दिनों')

कितने हैं हमारे समय में ऐसे कवि, जो अपनी कविता में यथार्थ की इतनी गहरी पड़ताल के साथ मनुष्यता का यह पाठ संभव कर रहे हैं? 'नये युग में शत्रु' के साथ मंगलेश डबराल फिर से याद दिलाते हैं कि वे क्यों समकालीन कविता की सबसे गहरी, भरोसेमंद और प्रतिनिधि आवाज़ हैं।

समीक्षित पुस्तक :

नये युग में शत्रु (कविता-संग्रह) : **मंगलेश डबराल**; राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली; 195 ₹

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जितेंद्र श्रीवास्तव

विवेक उद्वेलन की पक्षधरता

हिंदी आलोचना के लिए यह निश्चय ही सुखद सूचना है कि डॉ. मैनेजर पांडेय की पाँच पुस्तकें एक साथ प्रकाशित होकर आई हैं। ये पुस्तकें हैं : *हिंदी कविता का अतीत और वर्तमान, उपन्यास और लोकतंत्र, भारतीय समाज में प्रतिरोध की परंपरा, आलोचना में सहमति असहमति, संवाद परिसंवाद।* कहने की आवश्यकता नहीं कि ये सभी पुस्तकें व्यावहारिक और सैद्धांतिक आलोचना के मणिकांचन योग से सृजित हुई हैं। नहीं भूलना चाहिए कि बिना सैद्धांतिक सोच के व्यावहारिक आलोचना निरर्थक होती है।

मैनेजर पांडेय ने अब तक जो लिखा-कहा है, पूरी ज़िम्मेदारी से लिखा-कहा है। कोई उनके लेखन, उनकी स्थापनाओं और उनके विश्लेषण से असहमत हो सकता है, लेकिन अनदेखी नहीं कर सकता। उनकी कोई भी पुस्तक उठाकर पढ़ जाइए, ज्ञान-विज्ञान की जैसी आवाजाही उनकी आलोचना में है, उनके समकालीन किसी दूसरे आलोचक की आलोचना में नहीं है। वे साहित्य के सीमित परिसर के आग्रही न होकर, उसे दूसरे अनुशासनों से जोड़ने के प्रबल पक्षधर हैं। वे भाष्य अथवा टीका को आलोचना मानने से इंकार करते हैं। 'आलोचना' के विषय में उनकी सोच दुविधा और सुविधा की नहीं है। वे लिखते हैं : ''आलोचना में चाहे सहमति हो या असहमति, उसका साधार और सप्रमाण होना ज़रूरी है, तभी सहमति या असहमति विश्वसनीय होती है।''

पांडेय जी किसी पाठ की व्याख्या को अंतिम और निरापद नहीं मानते। वे व्याख्या के पीछे की राजनीति को रेखांकित करते हैं और एडवर्ड सईद की इस बात के साथ अपनी सहमति व्यक्त करते हैं कि आलोचनात्मक चेतना मूलतः विकल्पों की खोज की दुर्निवार प्रवृत्ति है। इस पुस्तक के निबंधों के शीर्षक बहुत कुछ कहते हैं। यथा 'हिंदी आलोचना और मुक्ति का सवाल', 'रचना की राजनीति', 'साहित्य और जनतंत्र', 'उत्तर आधुनिक समय में मध्ययुगीनता की वापसी', आत्मा का आईना', 'क्या आलोचना केवल प्रतिवाद की संस्कृति है?'। कहना न होगा, शीर्षक आलोचना के विस्तार और दृष्टिकोण की गवाही देते हैं।

हिंदी नवजागरण पर बात करते हुए मैनेजर पांडेय कहते हैं, ''हिंदी में नवजागरण की चेतना का जो विकास हुआ, उसका एक स्रोत बंगाल का नवजागरण था तो दूसरा महाराष्ट्र का। हिंदी नवजागरण के निर्माता केवल साहित्यकार नहीं थे। वे सभी साहित्यकार के साथ-साथ जागरूक पत्रकार भी थे, इसलिए वे अपने समय और समाज के सामने खड़ी चुनौतियों और समस्याओं के बारे में गंभीरता से सोचने और लिखनेवाले आधुनिक बुद्धिजीवी थे।'' हिंदी

जन्म : 1974। कविता और आलोचना की पुस्तकें प्रकाशित। संपर्क : हिंदी संकाय, मानविकी विद्यापीठ, ब्लॉक एफ़, मैदानगढ़ी, नई दिल्ली 110068; मो. 9818913798.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के मार्क्सवादी आलोचकों में शिवदान सिंह चौहान शीर्षस्थानीय हैं, लेकिन उनकी और उनके अवदान की चर्चा अब नहीं के बराबर होती है। मैनेजर पांडेय ने शिवदान सिंह चौहान को हिंदी की मार्क्सवादी आलोचना का भगीरथ कहते हुए उनके योगदान को विवेकसम्मत ढंग से रेखांकित किया है। इस पुस्तक में यशपाल, उग्र, राजेंद्र यादव, मृदुला गर्ग, सुरेंद्र चौधरी आदि के साथ अडोर्नो पर भी एक आलेख है। ये सभी आलेख पांडेय जी की आलोचना की गत्यात्मकता और जनतांत्रिकता के उदाहरण हैं।

'उपन्यास-चिंतन' पांडेय जी के चिंतन का एक प्रमुख क्षेत्र है। वे पिछले लगभग पैंतीस वर्षों से उपन्यासों और महत्त्वपूर्ण उपन्यासकारों के योगदान और महत्त्व पर विचार कर रहे हैं। वे इस बात से चिंतित रहते हैं कि हिंदी में उपन्यास की आलोचना का ठीक ढंग से विकास नहीं हो पाया। *उपन्यास और लोकतंत्र* नामक पुस्तक उनकी इसी चिंता का प्रतिफल है। यह पूरी तरह उपन्यास की आलोचना पर केंद्रित पुस्तक है। पांडेय जी ने इसे तीन खंडों में विभाजित किया है। पहले खंड में सैद्धांतिक चर्चा है, दूसरे में प्रेमचंद का मूल्यांकन और तीसरे खंड में कुछ महत्त्वपूर्ण उपन्यासकारों के कृतित्व का मूल्यांकन है।

'जनतंत्र/लोकतंत्र' पांडेय जी का प्रिय पद है। वे जीवन, समाज और साहित्य में इसकी भूमिका और उपस्थिति को लेकर सदैव सचेत रहे हैं। उपन्यास और लोकतंत्र के रिश्तों पर विचार करते हुए उन्होंने उचित ही लिखा है : ''उपन्यास और लोकतंत्र के संबंध पर विचार करते समय यह ध्यान में रखना ज़रूरी है कि आधुनिक काल में दोनों का जन्म लगभग एक साथ हुआ है।'' वे यह भी कहते हैं कि इतिहास से कविता का संबंध वैसा नहीं होता, जैसा उपन्यास का होता है। अपने विश्लेषण में बेहद वस्तुनिष्ठ पांडेय जी का यह अर्थ कदापि नहीं है कि वे कविता और इतिहास के संबंधों को पूरी तरह नकार रहे हैं।

उपन्यास केंद्रित इस पुस्तक को पढ़ते हुए मैनेजर पांडेय के अध्ययन के विस्तृत फलक का पता चलता है। वे सही अर्थों में एक बहुपठित आलोचक हैं। वे बौद्धिक आतंक के प्रसार के लिए विदेशी विद्वानों को कभी उद्धृत नहीं करते। उनके समग्र लेखन में बौद्धिक और वैचारिक संतुलन है। वे उन आलोचकों से भिन्न हैं जो अपने मत को ही सर्वोपरि और अंतिम मानते हैं। उनमें गहरी बौद्धिक और अकादमिक ईमानदारी है। भारत में लिखे गए या लिखे जा रहे उपन्यास कितने 'भारतीय' हैं, इस विषय पर बात करते हुए एक निबंध में उन्होंने कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदुओं की ओर इशारा किया है। वे 'भारतीयता' के साथ 'इतिहास बोध की कला' पर विचार करते हुए मुक्ति के संदर्भ में उपन्यास की सामाजिक भूमिका का रेखांकन भी करते हैं।

यह एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि मैनेजर पांडेय के लिए उपन्यास ही आलोचना का अर्थ, कथानक का विश्लेषण मात्र नहीं है। वे उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक और राजनीतिक निहितार्थों की पड़ताल करते हैं। नदी का जल वही और उतना ही नहीं होता, जितना पहली नज़र में या सामान्य दृष्टि से दिखता है। जल के ऊपरी आवरण के नीचे जल की जो अनेक परतें हैं, जल का जो अजस्र स्रोत है, उसे देखना सही अर्थों में नदी को देखना है। बड़ा आलोचक 'कृति' को भी इसी प्रकार देखता है। पांडेय जी इस बात पर बल देते हैं कि तीसरी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दुनिया के उपन्यासों को यूरोप के उपन्यासों से अलगाया जाना चाहिए। लेकिन इसका यह आशय नहीं है कि उपन्यासों के शिल्प विधान के संबंध में यूरोप के महान उपन्यासकारों की कला से तीसरी दुनिया के उपन्यासकारों ने जो सीखा है, वे उसको अस्वीकार कर रहे हैं।

प्रेमचंद, मैनेजर पांडेय ही आत्मा और विवेक के घनिष्ठ सहचर हैं। इस पुस्तक में भी उन पर छह निबंध हैं। 'भारतीय उपन्यास और प्रेमचंद' पर बात करते हुए वे आरंभ में ही कह देते हैं, ''उन्होंने भारतीय उपन्यास और यथार्थवादी कला को अधिक उन्नत बनाया। उनके रचनात्मक प्रयत्न से भारतीय उपन्यास और स्वाधीनता आंदोलन के बीच अधिक आत्मीय और गहरा संबंध स्थापित हुआ।'' ज़ाहिर है, एक आलोचक के रूप में मैनेजर पांडेय के लिए प्रेमचंद के इस अवदान का विशेष महत्त्व है। प्रेमचंद एक समतामूलक समाज के आग्रही थे। उसी का स्वप्न देखते थे। पांडेय जी 'राष्ट्रवाद, उपन्यास और प्रेमचंद' शीर्षक निबंध में प्रेमचंद के इस स्वप्न का विस्तृत और विश्वसनीय विश्लेषण किया है।

जैनेंद्र कुमार की *सुनीता* को प्रकाशित हुए पचहत्तर वर्ष से अधिक हो गए। इसका प्रकाशन हिंदी साहित्य में एक बड़ी घटना थी। इसने साहित्य और नैतिकता के कई मानदंडों को निर्णायक चुनौती दी थी। मैनेजर पांडेय इसे आख्यानपरक नहीं, वैचारिक उपन्यास मानते हैं। वे जैनेंद्र की कथा-भाषा की विशिष्टता को रेखांकित करते हुए महत्त्वपूर्ण बातों की ओर संकेत करते हैं। *सुनीता* के क्रम में ही वे स्त्री पराधीनता के संदर्भ में नागार्जुन के उपन्यास *रतिनाथ की चाची* का विश्लेषण सामने रखते हैं। सन् 1947 के इस उपन्यास पर बात करते हुए वे मुक्ति के प्रसंग में इसकी अग्रगामिता को रेखांकित करते हैं। इसके अतिरिक्त इस पुस्तक में मैनेजर पांडेय के संजीव, मदन मोहन, शाद अज़ीमाबादी और रणेंद्र के उपन्यासों पर लिखे गए आलेख भी शामिल हैं। ये आलेख पांडेय जी के उपन्यास-चिंतन की निरंतरता और गंभीरता के प्रमाण हैं।

एक काव्यालोचक के रूप में मैनेजर पांडेय के आस्वाद और अध्ययन का विस्तार नई पीढ़ी के लिए आश्चर्य का विषय हो सकता है। उन्होंने जिस उत्कंठा, विवेकशीलता और गहराई के साथ सूरदास, रहीम, कबीरदास और मीरा पर लिखा है, उसी उत्कंठा, विवेकशीलता और गहराई के साथ मैथिलीशरण गुप्त, दिनकर, नागार्जुन, त्रिलोचन, अज्ञेय, रघुवीर सहाय, धूमिल, कुमार विकल, केदारनाथ सिंह और कई नए कवियों पर भी लिखा है। कबीर की भाषा के बारे में उनका स्पष्ट मानना है कि वह मूल रूप से भोजपुरी है। दादू दयाल, मीरा और रहीम पर पांडेय जी ने जो लिखा है, उसमें बहुत नयापन है। ये आलेख इन कवियों को समझने की नई दृष्टि देते हैं। इन कवियों की कविता और दृष्टि के विषय में उन्होंने जो निष्कर्ष निकाले हैं, वे तर्कशीलता, सामाजिक प्रतिबद्धता, कविता के प्रति अकुंठ प्रेम, भाषिक पारदर्शिता और सहजता का स्वाभाविक रेखांकन करते हैं। उनके कई आलेखों ने 'आँख खोलने' का काम किया है। 'हिंदी की पहली आधुनिक कविता' एक ऐसा ही आलेख है, जिसमें 13 अक्टूबर, 1881 को पटना की 'बिहार बंधु' पत्रिका में प्रकाशित महेश नारायण की कविता 'स्वप्न' का विस्तृत विश्लेषण है। 'स्वप्न' कविता से अलग नवजागरण काल में 'स्वप्न' केंद्रित रचनाओं की बहुलता के विषय में पांडेय जी ने मानीख़ेज़ इशारा किया है। उन्होंने वॉल्टर बेंजामिन के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हवाले से स्पष्ट किया है कि प्रत्येक युग आने वाले युग का केवल स्वप्न ही नहीं देखता, बल्कि स्वप्न देखने की प्रक्रिया में ही जागरण की दिशा में आगे बढ़ता है।

नाथूराम शर्मा 'शंकर' पर बहुत कम लिखा गया है। नई पीढ़ी के बहुत सारे लोग उन्हें जानते तक नहीं हैं। पांडेय जी ने उनकी कविता के महत्त्व पर एक लंबा आलेख लिखा है। यह हिंदी आलोचना को समृद्ध करनेवाला आलेख है। नहीं भूलना चाहिए कि आलोचना का एक महत्त्वपूर्ण कार्य विस्मरण के विरुद्ध खड़ा होना भी है। मैथिलीशरण गुप्त और दिनकर पर लिखे गए लेख इन कवियों की वर्तमान प्रासंगिकता को प्रभावी ढंग से स्पष्ट करते हैं।

प्रेमचंद के बाद, मैनेजर पांडेय के चित्त और विवेक के सर्वाधिक क़रीब नागार्जुन ही हैं। हालाँकि मुक्तिबोध और रघुवीर सहाय भी उन्हें बेहद प्रिय हैं। *हिंदी कविता का अतीत और वर्तमान* नामक पुस्तक में नागार्जुन की कविता पर दो आलेख हैं—'नागार्जुन का विक्षोभ रस' और 'नागार्जुन की कविता की दुनिया'। नागार्जुन की कविता की ठीक-ठीक समझ बनाने के लिए ये दोनों आलेख बेहद उपयोगी सिद्ध होंगे। वामपंथी विचारों के आग्रही आलोचकों ने अज्ञेय की कविता पर बहुत कम विचार किया है। अज्ञेय की मृत्यु के वर्षों बाद भी कई आलोचक अज्ञेय के रचना-कर्म के प्रति पूर्वाग्रहग्रस्त रहे हैं। अब भी कइयों के लिए 'अज्ञेय बनाम मुक्तिबोध' एक रोचक खेल है। लेकिन इन लोगों से अलग, मैनेजर पांडेय अज्ञेय के काव्य संसार में सहृदयता, तर्कशीलता और वस्तुनिष्ठता के साथ प्रवेश करते हैं। विभाजन की त्रासदी को अभिव्यक्त करनेवाली अज्ञेय की मार्मिक कविताओं के बहाने उन्होंने उनका एक ज़रूरी मूल्यांकन किया है। आज आलोचना के क्षेत्र में ऐसी ही तर्कशीलता, प्रतिबद्धता और गहरी सहृदयता की आवश्यकता है।

मैनेजर पांडेय भक्तिकाल के कवियों से होते हुए जब समकालीन कविता तक पहुँचते हैं, तब वे इस यात्रा से प्राप्त अनुभवों को भी सामने रखते हैं। वे सिर्फ़ 'वाह वाह' के सम्मोहन में नहीं रहते। नकारात्मक प्रवृत्तियाँ उनमें गहरा क्षोभ उत्पन्न करती हैं और वे कविता के वर्तमान तथा भविष्य के प्रति चिंतित भी होते हैं। रघुवीर सहाय पर लिखे लेख में उनकी कई चिंताएँ उजागर हुई हैं। 'आज का समय और कविता का संकट' शीर्षक निबंध कविता संबंधी चिंताओं से ही उपजा है। यह अकारण नहीं है कि उन्होंने एक ओर सिने गीतकार के रूप में लोकप्रिय जनपक्षधर कवि शंकर शैलेंद्र पर लिखा है तो समाज-विज्ञानी के रूप में प्रसिद्ध पी.सी. जोशी की कविताओं पर भी। वे 'कविता' के प्रेमी आलोचक हैं और उन्हें जहाँ कहीं भी सच्ची कविता मिलती है, उसे अवश्य रेखांकित करते हैं।

मैनेजर पांडेय हिंदी के आलोचकों में उन दो-तीन लोगों में एक हैं, जो साहित्य के समानांतर समाज और संस्कृति के प्रश्नों से भी निरंतर टकराते रहते हैं। *भारतीय समाज में प्रतिरोध की परंपरा* में ऐसे निबंध संकलित हैं, जिनमें साहित्य के साथ समाज और संस्कृति के बड़े प्रश्नों पर गंभीरता से विचार किया गया है। साहित्य के समाजशास्त्र की तरह वे संस्कृति के समाजशास्त्र की गहरी आवश्यकता महसूस करते हैं। उनका प्रस्ताव है कि इसके विकास में ग्राम्शी के विचारों से बहुत मदद मिल सकती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संस्कृति पर विचार करते हुए उन्होंने 'लोक संस्कृति' और 'जन-संस्कृति' में अंतर किया है। सामान्यतः इन्हें एक ही माना जाता है। उनके पूरे लेखन में चिंतन की ऐसी बारीकी और स्पष्टता भरी हुई है। वे उलझानेवाले नहीं, सुलझानेवाले विद्वान हैं। वे संस्कृति के जटिल प्रश्नों के हल के संदर्भ में एक ओर वाल्टर बेंजामिन, ग्राम्शी, अडोर्नो, बोर्दिए, उमा चक्रवर्ती तक जाते हैं तो दूसरी ओर ई.पू. छठी शताब्दी की सुमंगला माता की कविता तक भी जाते हैं। उनके लेखन में कहीं कोई छोटा रास्ता नहीं है।

इस पुस्तक में सखाराम गणेश देउस्कर की पुस्तक *देशेर कथा,* महावीर प्रसाद द्विवेदी की पुस्तक *संपत्ति शास्त्र* और अश्वघोष की रचना *वज्र सूची* पर जो आलेख संकलित हैं, वे हिंदी आलोचना और चिंतन का आयतन बढ़ाने के साथ ही पांडेय जी के अध्ययन और चिंतन के विस्तार के भी द्योतक हैं। ये आलेख 'ताली बजाऊ लोकप्रियता' के समानांतर 'विवेक उद्वेलन' की पक्षधरता स्वीकार करनेवाले आलोचक हैं। 'विवेक उद्वेलन' का यह मार्ग समकालीन समय में साहित्य का राजमार्ग नहीं, जनमार्ग है।

हिंदी आलोचना का एक श्याम पक्ष यह भी है कि वामपंथी चिंतक-आलोचक महात्मा गाँधी की ओर कम हो जाते हैं। कइयों को यह प्रगतिशीलता के विरुद्ध जान पड़ता है। लेकिन मैनेजर पांडेय गाँधी के साथ अकुंठ भाव से जाते हैं और बिना हिचक कहते हैं कि ''उनका विचारों से वैसा ही संबंध था, जैसा कबीर का था या एक कवि का होता है।'' कभी गाँधी जी ने कहा था, ''मैं ऐसी कला चाहता हूँ, जो करोड़ों लोगों से बोल सके।'' पांडेय जी इसे याद करते हुए लोक कलाकार भिखारी ठाकुर और उन पर लिखी केदारनाथ सिंह की कविता को याद करते हैं और इस प्रकार कला, विचार और जीवन के अंतस्संबंध की व्याख्या करते हैं। इस पुस्तक में गाँधी को समझते-बूझते चार आलेख हैं। इसमें से दो 'हिंद स्वराज' पर केंद्रित हैं।

मैनेजर पांडेय 'प्रतिबद्ध मार्क्सवादी' हैं, 'अंध मार्क्सवादी' नहीं। वे 'मार्क्सवाद' की प्रैक्टिस को बहस और प्रश्नांकन से बाहर नहीं मानते। वे 'उत्तर आधुनिकता' के 'सुविधा समय' में मार्क्सवाद से पल्ला झाड़ चुके या झाड़ रहे बुद्धिजीवियों पर सिर्फ़ प्रहार नहीं करते, उनके वैचारिक विचलन के पूरे तर्कशास्त्र का विश्वसनीय विश्लेषण भी प्रस्तुत करते हैं। वे अपने लेखन को किस प्रकार तार्किक ऊँचाई देते हैं, यह देखने के लिए इस निबंध में 'कल्पना' की ज़रूरत के विषय में कही गई उनकी बातों को देखना चाहिए।

समाज में जब कोई विचारक की भूमिका में आ जाता है, तब उससे अपेक्षाएँ बढ़ जाती हैं। लोग सिर्फ़ उसके लिखे का इंतज़ार नहीं करते, अलग-अलग विषयों, प्रसंगों पर उससे संवाद भी करते हैं। इस संवाद की प्रक्रिया में उस विचारक की बौद्धिकता, प्रतिबद्धता, अध्ययनशीलता, तार्किकता और ईमानदारी आदि गुणों का सहज ही पता लग जाता है। कह सकते हैं कि अपने लेखन में भले कोई व्यक्ति एक पर्दा खींच ले, लेकिन संवाद में उसे यह सुविधा हासिल नहीं होती। संवाद एक पारदर्शी प्रक्रिया है, जिसमें अनौपचारिकता अल्ट्रासाउंड मशीन की तरह होती है। यदि संवादकर्ता कुशल हो तो वह सामने वाले के हृदय और बुद्धि के कोने-अँतरे में चुपचाप बैठी बातों को भी बाहर निकाल लेता है। चूँकि मैनेजर पांडेय की उपस्थिति हिंदी जगत में एक सक्रिय चिंतक की भी है, इसलिए यह स्वाभाविक है कि लोग उनसे भी संवाद करें। और लोगों ने ख़ूब किया भी है। उनसे किए गए ऐसे संवाद *मेरे*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साक्षात्कार और *मैं भी मुँह में ज़बान रखता हूँ* शीर्षक से पहले ही पुस्तकाकार प्रकाशित हो चुके हैं। इन पुस्तकों के बाद प्रकाशित *संवाद परिसंवाद* उनकी इस विधा की नवीनतम कृति है। इस कृति में संकलित संवाद-परिसंवाद अलग-अलग विषयों पर केंद्रित हैं।

इसमें एक प्रश्न के उत्तर में वे डॉ. अंबेडकर और प्रेमचंद पर सटीक टिप्पणी करते हैं, जो दलित साहित्य के संदर्भ में है और सोचने-विचारने का मौक़ा देती है। वे कहते हैं, ''दलितों को प्रेमचंद से असहमत होने का अधिकार तो है लेकिन उनको ख़ारिज करना एक तरह से अपने ही आधार को नष्ट करने जैसा है।'' उक्त पुस्तक के संवादों की दुनिया हिंदी साहित्य तक ही सीमित नहीं है। इसमें 'प्रेम', *रामचरितमानस*, 'आपातकाल', 'प्राथमिक शिक्षा', 'समकालीन कविता' आदि विषयों पर संवाद हैं। 'आदिवासी समाज और साहित्य' तथा हृदयेश की कहानियों पर परिसंवाद हैं तो एक संवाद सरवांतीस के विश्वप्रसिद्ध उपन्यास *दोन किखोते* पर भी है। इन संवादों में अभिव्यक्त मंतव्य एक आलोचक-विचारक के रूप में पांडेय जी की भूमिका को स्पष्ट करते हैं।

मैनेजर पांडेय ने जो लेखन किया है, उसमें इतनी गहराई और संश्लिष्टता है कि उस पर पूरी पुस्तक लिखी जा सकती है। यहाँ इतना अवश्य कहा जा सकता है कि ये सभी पुस्तकें हिंदी के विवेक का शुक्ल पक्ष हैं। आने वाले समय में इनकी प्रासंगिकता और बढ़ेगी।

समीक्षित पुस्तकें :
आलोचना में सहमति असहमति; उपन्यास और लोकतंत्र; हिंदी कविता का अतीत और वर्तमान; भारतीय समाज में प्रतिरोध की परंपरा; संवाद-परिसंवाद (निबंध-संग्रह) : **मैनेजर पांडेय**; वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली; 2013 ई.; प्रत्येक 395 ₹

उमेश प्रसाद

हिंदी साहित्य के इतिहास का पहला बुनियादी ढाँचा

काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने बीसवीं शताब्दी के आरंभ में *शब्दसागर* की योजना बनाई और एतदर्थ यह कार्यक्रम अनेक वर्षों तक निष्ठापूर्वक चलता रहा। संपूर्ण भारतीय भाषाओं के इतिहास में *शब्दसागर* के निर्माण के लिए इतना बड़ा आयोजन इससे पूर्व नहीं हुआ था। इसके निर्माण के उत्तरार्द्ध में यह निश्चय हुआ कि संपूर्ण *शब्दसागर* की भूमिका के रूप में हिंदी भाषा और साहित्य का संक्षिप्त इतिहास भी लिखा जाए, जिसमें किसी भी लेखक के नाम का

समीक्षात्मक आलेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। संपर्क : शिवमंदिर, पटवाटोली, मानपुर, पो. बुनियादगंज 823003, जिला गया (बिहार); मो. 09135209381

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उल्लेख नहीं किया जाए। *हिंदी भाषा का संक्षिप्त इतिहास* बाबू श्यामसुंदर दास ने लिखा और *हिंदी साहित्य का इतिहास हिंदी साहित्य का विकास* शीर्षक के अंतर्गत आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा। इस इतिहास का प्रकाशन पहली बार जनवरी 1929 ई. में हिंदी *शब्दसागर* के रूप में हुआ। यह *हिंदी साहित्य का विकास* की शुक्ल कृत *हिंदी साहित्य का इतिहास* का बुनियादी ढाँचा है। इसी बुनियादी ढाँचा को शुक्ल जी आजीवन संशोधित, परिवर्द्धित और परिमार्जित करते रहे। 1929 ई. के पश्चात् शुक्ल कृत *हिंदी साहित्य का विकास* अपने मूल रूप में दुर्लभ हो गया। इस दुर्लभ *हिंदी साहित्य का इतिहास* को पहली बार रामनिरंजन परिमलेंदु ने आचार्य रामचंद्र शुक्ल का पहला इतिहास के रूप में संपादित किया। शुक्ल जी के इतिहास का यह बुनियादी ढाँचा वस्तुतः ऐतिहासिक महत्त्व का है। *हिंदी साहित्य का विकास* के बाद शुक्ल जी के इतिहास अनेक संस्करणों में संशोधन, परिवर्द्धन और परिमार्जन होता रहा, जिससे शुक्ल जी की चिंतन-प्रक्रिया पर प्रकाश पड़ता है।

हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन इतिहास में समाविष्ट होने के पूर्व 1920 ई. की नागरीप्रचारिणी पत्रिका में श्यामसुंदर दास और रामचंद्र शुक्ल के संयुक्त नाम से प्रकाशित हुआ था। किंतु इतिहास में केवल शुक्ल जी का नाम है और काल विभाजन में श्यामसुंदर दास को न्यायोचित मान्यता नहीं दी गई और उनका नाम विलोपित कर दिया गया। हिंदी के छात्रगण विगत् 85 वर्षों से काल विभाजन का संपूर्ण श्रेय रामचंद्र शुक्ल जी को देते रहे हैं, जो ग़लत है, ऐतिहासिक भूल है। इस भूल का परिमार्जन करते हुए, रामनिरंजन परिमलेंदु ने 1928 ई. में नागरीप्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित रामचंद्र शुक्ल जी और श्यामसुंदर दास के संयुक्त नाम से प्रकाशित काल विभाजन विषयक निबंध को पुस्तक के परिशिष्ट में पुनर्प्रकाशित कर दिया है।

रामचंद्र शुक्ल का पहला *हिंदी साहित्य का इतिहास* की भूमिका में संपादक डॉ. परिमलेंदु ने शुक्ल जी के पूर्व लिखित संपूर्ण हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथों का विवेचन किया है। यह सामग्री हिंदी जगत में पहली बार उपस्थापित की गई है। उन्होंने यह प्रमाणित किया है कि हिंदी साहित्य का पहला इतिहास हिंदी में नहीं, बल्कि फ्रांसीसी भाषा में एक फ्रांसीसी विद्वान ने लिखा है, जिसने कभी भारतवर्ष का दर्शन ही नहीं किया। उसका नाम गार्सां द तासी था और पुस्तक का नाम *इस्तबार-द ल लितरेत्यूर ए हिंदुस्तानी* । तासी द्वारा लिखित इतिहास का प्रकाशन दो भागों में हुआ था। इसका प्रथम भाग 1839 ई. में और दूसरा 1847 ई. में हुआ। यह हिंदी और उर्दू का संबंधित इतिहास था। इसके प्रथम भाग में संपूर्ण रूप से 739 कवि और लेखक थे। जिसके मात्र 72 ही हिंदी से संबंधित थे। द्वितीय संस्करण तीन खंडों में प्रकाशित हुआ। इसके प्रथम और द्वितीय खंड 1870 ई. एवं द्वितीय खंड 1871 ई. में प्रकाशित किया गया। इन तीन भागों में संपूर्ण रूप में 3224 कवि और लेखक थे, जो 1918 बड़े पृष्ठों में फैले हुए थे। तत्पश्चात् शिवसिंह सेंगर कृत *शिवसिंह सरोज* का प्रकाशन अप्रैल 1878 ई. में हुआ। किंतु इसके प्रथम संस्करण के संबंध में डॉ. ग्रियर्सन, डॉ. धीरेंद्र वर्मा, डॉ. रामकुमार वर्मा आदि विद्वानों में मतभेद रहा है और इसके 1883 ई. में प्रकाशित तृतीय संस्करण को प्रथम संस्करण मानने की भूल कर दी। रामनिरंजन परिमलेंदु ने यह प्रमाणित किया है कि *शिवसिंह*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरोज का प्रथम संस्करण 1878 ई. में प्रकाशित हुआ था। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के पूर्व इतिहासविद् गार्सां द तासी का इतिहास, *शिवसिंह सरोज* (1878), *मिश्रबंधु विनोद* (1813 ई. और 1934 ई.), एडविन ग्रीव्ज द्वारा रचित *ए स्केच ऑफ़ हिंदी लिटरेचर* (1929 ई.), पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी द्वारा रचित *हिंदी साहित्य विमर्श* (1932 ई.) आदि विभिन्न इतिहास ग्रंथों का विवेचन एवं अनुशीलन करते हुए विद्वान लेखक ने शुक्ल जी कृत *हिंदी साहित्य का विकास* अर्थात् *हिंदी साहित्य का इतिहास* की रचना प्रक्रिया का अनुसंधान किया है। परिमलेंदु ने उनके इतिहास के बुनियादी ढाँचे पर नई दृष्टि से विचार किया है, जो अनुसंधाताओं के लिए बहुमूल्य है।

हिंदी साहित्य का इतिहास (प्रथम संस्करण 1929 ई.) प्रकाशन के बाद ही दुर्लभ हो गया था और विद्वानों ने इसके बारे में सुना था, पढ़ा नहीं था। डॉ. परिमलेंदु ने इसका उद्धार कर हिंदी साहित्य के इतिहास की बहुमूल्य सेवा की है, जो प्रशंसनीय है। *रामचंद्र शुक्ल ग्रंथावली* में भी *हिंदी साहित्य का विकास* अर्थात् रामचंद्र शुक्ल का *हिंदी साहित्य का पहला इतिहास* सम्मिलित नहीं किया जा सका, क्योंकि यह विलुप्तप्राय ही था। डॉ. परिमलेंदु का मत है कि *हिंदी शब्दसागर* की सुदीर्घ प्रस्तावना में *हिंदी साहित्य का विकास* का बुनियादी ढाँचा ही है, जिसका संशोधन और परिवर्द्धन वे आजीवन करते रहे हैं। इस तथ्य का विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है कि *शब्दसागर* की भूमिका में उन्होंने अपभ्रंश काव्य की चर्चा नहीं की है। यद्यपि इसके लेखक के अनेक वर्ष पूर्व ही इस विषय पर पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने पुरानी हिंदी के नाम पर यथेष्ट सामग्री प्रस्तुत कर दी थी। आदिकाल में शुक्ल जी ने विद्यापति को *हिंदी साहित्य का विकास* में स्थान नहीं दिया था, परंतु पुस्तकाकार प्रकाशित अपने इतिहास में इस त्रुटि का निराकरण कर दिया गया। *हिंदी साहित्य का विकास* में उन्होंने सर्वाधिक स्थान रीतिकाल को दिया। तत्पश्चात् द्वितीय स्थान आदिकाल को दिया गया, जिसमें गद्य और पद्य दोनों हैं। विस्तार की दृष्टि से भक्ति काल तृतीय स्थान पर है और आधुनिक काल अंतिम स्थान पर।

हिंदी साहित्य का विकास और शुक्ल जी की इतिहास में यत्र-तत्र अनेक स्थलों पर भिन्नता है। उदाहरणार्थ, *पृथ्वीराज रासो* के संबंध में कहा जा सकता है, इतिहास के प्रथम संस्करण में उन्होंने *पृथ्वीराज रासो* को पहली बार जाली घोषित कर दिया। किंतु शब्दसागर की भूमिका में इस ग्रंथ के संबंध में इतनी कठोर टिप्पणी नहीं थी। *शब्दसागर* की प्रस्तावना में देव एक प्रगल्भ और प्रतिभा संपन्न कवि भी थे।

डॉ. परिमलेंदु के शब्दों में यह सत्य है कि "अपने इतिहास ग्रंथों में शुक्ल जी ने *हिंदी साहित्य के इतिहास* को एक मानक व्यवस्थित इतिहास की दशा और दिशा देने के सत्प्रयास किए। यह हिंदी साहित्य के इतिहास की संरचना की दिशा में एक बहुत बड़ा क़दम था।"

अपने इतिहास के पुस्तकाकार संस्करण में शुक्ल जी ने अनेक विवरणों में अभिवृद्धि की है, विशेषत: आदि और अंत में। आदिकाल के अंतर्गत अपभ्रंश को उन्होंने अपने पुस्तकाकार इतिहास में सम्मिलित कर गहन दृष्टि का परिचय दिया, क्योंकि वह सदैव भाषा काव्य के अंतर्गत सम्मिलित रहा है। 1940 ई. के संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण में शुक्ल जी ने पहली बार आदिकाल के अंतर्गत वज्रयानी सिद्ध एवं नाथपंथी योगियों की परंपराओं का वर्णन विस्तार से किया है। शुक्ल जी के जीवन में प्रकाशित इस इतिहास के अंतिम संस्करण में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भक्तिकाल के अंतर्गत स्वामी रामानंद और नामदेव पर विशेष रूप से विमर्श किया गया है और रीतिकाल के सामान्य परिचय में हिंदी के अलंकार ग्रंथों की परंपरा के उद्‌भव और विकास को विशेष स्थान दिया गया। इसी प्रकार आधुनिक काल में खड़ी बोली के गद्य के इतिहास विषयक कुछ नई सामग्री समाविष्ट कर दी गई है, जो *हिंदी साहित्य का विकास* में नहीं था।

हिंदी साहित्य का विकास और शुक्ल जी के इतिहास के विभिन्न संस्करणों में जो यत्र-तत्र भिन्नता है, वह शोध का विषय है। इस भिन्नता से शुक्ल जी के चिंतन की क्रमिक प्रक्रिया का अनुशीलन किया जा सकता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का पहला *हिंदी साहित्य का इतिहास* अर्थात् *हिंदी साहित्य का विकास* वस्तुतः हिंदी साहित्य का इतिहास का एक दुर्लभ अज्ञात और विलुप्तप्राय दस्तावेज़ ही था, जिसका उद्धार डॉ. परिमलेंदु ने किया है। यह हिंदी साहित्य के इतिहास की धरोहर है, इसका निश्चय ही एक ऐतिहासिक महत्त्व है। इस धरोहर के बारे में आधुनिक काल के प्रबुद्ध पाठकों को जानकारी तो थी, किंतु इसके दुर्लभ होने के कारण किसी ने इसको पढ़ा नहीं था। इस ग्रंथ की लंबी शोधपूर्ण भूमिका में विद्वान संपादक ने शुक्ल जी के पूर्व लिखित हिंदी साहित्य के संपूर्ण इतिहास ग्रंथों का अनुसंधानात्मक अनुशीलन एवं विवेचन करते हुए शुक्ल जी के इतिहास की नब्ज़ पर अपनी अँगुली रखी है और ऐतिहासिक तथ्यों को इसमें समाहित कर महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

समीक्षित पुस्तक :
हिंदी साहित्य का इतिहास (हिंदी साहित्य का विकास) : **रामनिरंजन परिमलेंदु**; साहित्य भंडार, 50, चाहचंद, इलाहाबाद 211003; 2013 ई.; 750 ₹

सुरेश धींगड़ा

रचना-समय का यथार्थ

बीसवीं शताब्दी दुनिया के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाएँ लेकर उपस्थित हुई थी। दो बड़ी लड़ाइयाँ, फ़ासीवाद/नात्सीवाद, साम्यवाद का उदय और अस्त, परमाणु विस्फोट, तीसरी दुनिया के मुक्ति प्रसंग, राजनीतिक-आर्थिक धरातल पर नए मनुष्यों की तलाश, अमेरिकी महाशक्ति की वियतनाम-जैसे छोटे-से देश के हाथों पराजय, अंतरिक्ष की दौड़, चाँद पर क़दम, संचार क्रांति, यूरोपीय पुनर्गठन जैसी घटनाओं ने विश्व के बुद्धिजीवी वर्ग पर तो प्रभाव

जन्म : 1946। कविता-संग्रह एवं आलोचना पुस्तकें प्रकाशित। संपर्क : 99, कादंबरी 19/IX रोहिणी, दिल्ली 110085; मो. 9811920884.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डाला ही, सामान्य जन के जीवन को भी बहुत सीमा तक मोड़ दिया, जिसके सूत्र हमें नारीवादी आंदोलनों में दिखाई देते हैं, कहीं समाजों के परस्पर निकट आने में और कहीं धार्मिक संघर्षों में। इस शताब्दी में भारतीय घटनाक्रम भी कम नाटकीय नहीं रहा। पूर्वार्द्ध का स्वतंत्रता आंदोलन और विभाजन, उत्तरार्द्ध का भारत-चीन युद्ध और भारत-पाक झड़पें, राष्ट्रीयकरण और उसके बीस से भी कम वर्षों के भीतर वैश्विक अर्थव्यवस्था, उदारीकरण, मुक्त बाज़ार की नीतियाँ, आपातकाल, ब्लूस्टार, इंदिरा और राजीव गाँधी की हत्याएँ, उग्रवाद और आतंकवाद तथा राजनीतिक भ्रष्टाचार की व्यापकता आदि ने भारत मानस को अतिरिक्त रूप से प्रभावित किया है। इस दौर के भारतीय लेखक ने विभिन्न स्तरों पर इनके प्रभावों को रचनात्मक अभिव्यक्ति दी है।

शताब्दी से शेष कहानियों के लेखक पंकज बिष्ट भी उसी धारा के लेखक हैं, जिन्होंने अपने समय की विविधता को अपनी रचनाओं का आधार बनाया है। पंकज अपने लेखन-जीवन के प्रारंभ से ही समाजवादी सोच के अंतर्गत यथार्थवादी कहानियाँ लिखते रहे हैं। इन कहानियों में कहीं गाँवों की बदहाली और गुरबत के चित्रण हैं, तो कहीं शहर की गंदगी, भटकाव और पागलपन की सीमा तक पहुँचे सपनों को पूरा करने की लालसा। 'हिमदंश' और 'फ़र्क़' जैसी कहानियाँ इन्हीं दोनों छोरों का भयावह यथार्थ प्रस्तुत करती हैं। 'हिमदंश' के गोविन्द की मौत और 'फ़र्क़' के आनंद का पागलपन जिस भयावह यथार्थ का चित्रण है, वह पचास-साठ वर्षों के बाद भी यथावत् है, भले ही देश वैश्वीकरण की दौड़ में शामिल हो, विश्वशक्ति बनने का सपना देखने लगा हो!

आपातकाल में जिस डर को कई बुद्धिजीवी महसूस कर रहे थे, 'खोखल'-जैसी कहानी उसे व्यक्ति के निजी भय के रूप में प्रस्तुत करती है। बुद्धिजीवी के हाथ में तो मात्र क़लम होती है, जिससे वह समाज का चेहरा चित्रित कर सकता है, लेकिन 'खोखल' के 'मैं' के सामने केवल एक ही विकल्प शेष है; उस क़लम को पीठ पीछे फेंक देना। क़लम का पीछे लुढ़काना उस डर से मुक्ति पाने का प्रतीकात्मक प्रयास भी है और डर के पीछे के कारण का संकेत भी। हिप्पी के खोखल के भय की तरह उसका एहसास बने रहना दूसरे क़िस्म का रचनात्मक प्रमाण है। ये दोनों प्रतीक समानांतर परिस्थिति का चित्रण करते हैं, जिसके एक स्तर पर घोर भौतिकवादी समाज अवस्थित है, तो दूसरे छोर पर आक्रामक सत्ता। 'कवायद' और 'लाजवाब' भी ऐसी ही कहानियाँ हैं, जो राजनीति जन्य नंगई और असत्य को सामने लाती हैं।

ऐसी कहानियों में चित्रित राजनीति का भयावह खेल ऊपर से देखने में भले ही अविश्वसनीय लगे, उसके पीछे जो यथार्थ छिपा है, वह अविश्वसनीय नहीं। 'शबरी शर्मा बीमार है'-जैसी कहानियों में निहित यथार्थ से लगता है कि बीमार कोई शबरी या कोई एक व्यक्ति नहीं है बल्कि पूरी राजनीतिक व्यवस्था ही बीमार है और यह बीमारी हर उस व्यक्ति को ग्रस्त कर लेती है, जो उसके संपर्क में आता है, लेकिन उस बीमारी का जनक सुरक्षा का कवच पहने रहने में सफल हो जाता है। क्या यह कवच उसे वास्तविकता से सुरक्षित रख सकता है, यह प्रश्न बना रह जाता है।

शताब्दी से शेष संग्रह की लगभग सभी कहानियाँ किसी-न-किसी रूप में ज़िंदगी की तल्खियों को उजागर करती हैं—कहीं पत्नी से वेश्यावृत्ति कराने की विवशता है, तो कहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नौकरी न मिलने की कसक, कहीं गुरबत में जीते आदमी की अभावग्रस्त ज़िंदगी और ज़िम्मेवारी का एहसास, कहीं सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों से उपजी वितृष्णा। 'पंद्रह जमा पच्चीस' विभाजन के बाद की परिस्थितियों के कारण अपने घिनौने वर्तमान से जूझते मनुष्य को एक-दूसरे धरातल पर सामने लानेवाली कहानी है, जिसमें एक ओर तथाकथित संस्कारी होने का भ्रम टूटता है, तो दूसरी ओर उस यथार्थ से साक्षात्कार होता है, जिसे उस पीढ़ी ने महसूस किया था, जिसने विभाजन की विभीषिका को सीधे-सीधे झेला था।

पंकज बिष्ट ने पहाड़ी गाँवों के माहौल और जीवन को निकट से देखा-परखा है। कुमाऊँ क्षेत्र की भाषा, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, विकास का ग़लत रूप, कृषि, कृषकों और मज़दूरों की हीन स्थिति, शिक्षा, चिकित्सा और यातायात सेवाओं का अभाव, राजनीतिज्ञों के खोखले दावे, पहाड़ियों की पहाड़ से उतर शहर-जाकर कमाने की विवशता—जैसे अनेक पक्ष हैं, जो उन्होंने अपनी कहानियों में शिद्दत से उभारे हैं और पाठक को उन वास्तविकताओं से रू-ब-रू करवाया है, जो पर्वतीय सौंदर्य को रोमांस की दृष्टि से देखनेवाले पर्यटक की दृष्टि से ओझल रहता है। दरअसल, भारत के पहाड़ी जीवन को जिन लोगों ने निकट से देखा है, वे 'हिमदंश', 'लाजवाब', 'हल'-जैसी कहानियों में व्यक्त पीड़ा को संवेदना के उस धरातल पर समझ सकते हैं, संवेदना के जिस धरातल पर कहानीकार ने उनकी रचना की है। ये अनेक आयामी कहानियाँ ऐसे समय की गवाह हैं, जिसमें एक बच्चे के जूतों की क़ीमत एक हज़ार पिच्चानवे रुपये है, तो दूसरे बच्चे की चार महीनों की पगार, एक ओर आलीशान बँगले हैं, तो दूसरी ओर अधढकी बदबूदार बूटनुमा झोंपड़ियों में रहने की विवशता, एक ओर डॉक्टरों को ख़रीदनेवाले मरीज़ हैं, तो दूसरी ओर परिवार को पालने की मजबूरी में खाँस-खाँसकर बिना दवा के मरते मरीज़, एक ओर अय्याश राजनीतिज्ञों को समर्पित नारी है, तो दूसरी ओर जिस्म बेचकर रोटी कमाने को विवश नारी।

शताब्दी से शेष की अनेक कहानियाँ प्रयोगधर्मी कही जा सकती हैं। ऐसी कहानियों में 'खोखल', 'कवायद', 'आवेदन करो', 'बच्चे गवाह नहीं हो सकते?', 'मुहेंजोदड़ो', 'मोहन राम (दास) क्या हुआ?', 'कुंजरो वा!', 'बेल' शामिल की जा सकती हैं। स्वयं कहानीकार ने इन्हें 'अभिव्यक्ति के नए तरीक़े खोजने की कोशिश' कहा है। अभिव्यक्ति के ये नए तरीक़े अनेक फ़ंतासियों को भी जन्म देते हैं, जो कहीं-कहीं नई कहानी के दौर के अस्तित्ववादी प्रभावों की झलक दिखाती हैं। लेकिन इन कहानियों में भी लेखक यथार्थ से मुँह नहीं मोड़ता। उदाहरण के लिए, 'बच्चे गवाह नहीं हो सकते?'-जैसी कहानी पिछली शताब्दी के नवे दशक के प्रारंभ में भारतीय मानस की जीवन पद्धति में बदलावों और सांस्कृतिक परिवर्तन की भी कहानी है, जिसमें टेलीविज़न एक प्रतीक के रूप में उभरा है। यह वह समय था, जब भारत में रंगीन टेलीविज़न के पदार्पण के साथ ही तेज़ रफ़्तार मोटर कारों की शुरुआत हुई थी, जिसे 'मारुति संस्कृति' का नाम दे दिया गया था और जो आज औड़ी, बीएमडब्ल्यू, मर्सिडीज़, फ़ेरारी, जगुआर तक का सफ़र तय कर चुकी है। 'मुहेंजोदड़ो' कहानी के तो प्रारंभ में ही लेखक कहानी के महज कहानी होने पर टिप्पणी करता हुआ भ्रम तोड़ता है : "मैं कुछ कहना चाहता हूँ। नहीं, कहानी कहने का मुझे शौक़ नहीं है। ऐसा भी विश्वास नहीं है कि कहानी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई उदाहरण बन सकती है। कहानियों से आज तक न कोई सुधरा है और न ही सुधरनेवाला है। अन्यथा *महाभारत, रामायण, इलियड* और *वॉर एंड पीस* इतने व्यर्थ न साबित होते। सारा साहित्य एक तरह से पाप-मुक्ति का अनुष्ठान है, इसलिए होता रहेगा।''

इस संग्रह की कहानियाँ रचना-समय के यथार्थ को भारतीय मानस में बढ़ती असहिष्णुता और सांप्रदायिकता को भी कई रूपों में दर्ज करती हैं। कहीं ये प्रवृत्तियाँ अप्रत्यक्ष हैं (मुहेंजोदड़ो), कहीं प्रत्यक्ष ('कुंजरो वा!'), तो कहीं नग्न यथार्थ की सीमा तक पहुँची हुई ('क्या कहना है, जटायु?')। अभिव्यक्ति के अनेक रूपों को तलाशने की जो बात पंकज बिष्ट ने अपनी भूमिका में उठाई है, उसे देखते हुए 'जटायु' पर यह प्रश्न तो किया ही जा सकता है कि कहानीकार ने यथार्थ को इतना लोमहर्षक और जुगुप्सा-भरा क्यों चित्रित किया है, अन्य कहानियों-जैसी रचनात्मकता कहाँ खो गई? अगर हम मंटो की 'खोल दो' कहानी से इसकी तुलना करें तो दो रचना-धरातलों का अंतर स्पष्टत: समझा जा सकता है।

पंकज बिष्ट को भाषा पर अतिशय अधिकार प्राप्त है। विशेष रूप से पहाड़ी जीवन पर लिखी कहानियों में जिस प्रकार उन्होंने कुमाऊँनी शब्दों का प्रयोग किया है, उससे वे वहाँ के जन-जीवन का अंतरंग हिस्सा बनकर उभरे हैं तथा ग्रामीण वातावरण और संवेदनाओं को समझने में सहायक बने हैं। ऐसे शब्दों में बखई (नीचे का मोहल्ला), चेला (बेटा), तहा (घाटी), गूल (सिंचाई के लिए खोदी गई छोटी नहर), कौतिक (मेला), झोड़े (एक कुमाऊँनी सामूहिक नृत्य), रौ (नदी का गहरा स्थल) इत्यादि को देखा जा सकता है।

'कीचड़' और 'बच्चे गवाह नहीं हो सकते?'-जैसी कहानियों में पंकज बिष्ट व्यंग्य का सहारा लेते दिखाई देते हैं। 'पंद्रह जमा पच्चीस' से एक उदाहरण इसके प्रमाणस्वरूप लिया जा सकता है : ''वहाँ ऊँची-ऊँची बिल्डिंगें हैं, लिफ़्टोंवाली। उन पर रात को रंग-बिरंगी रोशनियाँ जलती हैं। ये हद है। यहाँ से भारत की राजधानी शुरू होती है और इन बिल्डिंगों की ऊँचाई एक परदा है, जिसके पीछे छिप जाता है हिंदुस्तान। हिंदुस्तान की शर्म और बेबसी।'' ऐसा ही एक स्थल 'बच्चे गवाह नहीं हो सकते?' से लिया जा सकता है : ''रुपया घटता गया। सात से छह हुआ, छह से पाँच, पाँच से चार, फिर तीन, दो, एक और वह मुक्त हो गया। पूर्णत: मुक्त—संविधान में मिले सारे अधिकारों से लैस देश के किसी भी स्वतंत्रता-संपन्न नागरिक की तरह।''

वस्तुत: ये कहानियाँ अपने रचना-समय की प्रत्यक्षदर्शी हैं। स्वयं लेखक ने अपनी कहानियों को अपने समय का दस्तावेज़ या इतिहास भले न माना हो, लेकिन यह तय है कि साहित्य—यदि वह सरोकार के साथ रचा गया है—अपने समय का प्रत्यक्षदर्शी होता है, वह समकाल में हो रहे बाहरी और भीतरी परिवर्तनों को लक्ष्य करता है, उन्हें रचनात्मक और वांछनीय रूप में प्रस्तुत करता है। इसीलिए वह भविष्य के इतिहासकारों के लिए विश्वसनीय समाजशास्त्रीय आधारभूत सामग्री का काम करने में सक्षम होता है। इस आधार पर *शताब्दी से शेष* में संकलित कहानियाँ भविष्य में भी सार्थक भूमिका का निर्वहन कर सकती हैं।

समीक्षित पुस्तक :

शताब्दी से शेष (कहानी-संग्रह) : **पंकज बिष्ट;** राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली; 2013 ई.; 550 ₹

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वाती ठाकुर

...अब तक लड़े क्यों नहीं

मैत्रेयी पुष्पा हिंदी की प्रतिष्ठित कथाकार हैं। उनकी इस रचना यात्रा में उनका सजग चिंतक सदैव क्रियाशील रहा है। उनके सर्जक के भीतर उनका चिंतक रूप सदा समाविष्ट रहा है। उनके चिंतक का साथ उनके रचनाकार ने कभी नहीं छोड़ा है। *आवाज़* विशुद्ध रचनात्मक कृति क़तई नहीं है। यह एक ऐसी कृति है, जिसमें कृतिकार मैत्रेयी पुष्पा का सजग चिंतक रूप प्रबलता से सामने आया है और जिसे पूरी तरह सर्जनात्मकता से रहित भी नहीं कहा जा सकता।

व्यवस्था हो या समाज, परिवार हो या संस्थाएँ, मैत्रेयी जी का कहीं भी किसी भी रूप में स्त्री विरोधी वातावरण, स्वर और तंत्र से असहमति और विरोध रहा है।

एक ऐसे समाज में जहाँ औरतों के प्रति हमेशा 'अन्या' के रूप में व्यवहार किया जाता रहा है, जहाँ उन्हें शुचिता एवं पवित्रता का पाठ पढ़ाते उनके भीतर से उनके होने का बोध ख़त्म किया जाता रहा है, जहाँ उनकी इच्छाओं, उनके सपनों को दूसरों की कई इच्छाओं, सपनों के आवरणों से ढक और दबा दिया जाता रहा है, वहाँ मैत्रेयी पुष्पा लगातार इस पूरी प्रक्रिया और इसके पीछे की साज़िशों पर गंभीरतापूर्वक विचार करती हैं और उसे अपने लेखन में व्यक्त करती हैं।

आवाज़ एक ऐसी विमर्शमूलक कृति है, जो आधी आबादी, अनन्या होते हुए भी अन्या की ज़िंदगी जीनेवाली स्त्री-समूह की इच्छाओं को, उनके विरोध को एक मुकम्मल आवाज़ देती है। यह उस वर्ग की आवाज़ है, जिसे न जाने किन-किन तरीक़ों से दबाया जाता रहा है; यह उस वर्ग की आवाज़ है, जो आज हर तरह की असमानता के विरुद्ध अपनी आवाज़ बुलंद करती है।

इस कृति की रचनाकार ने धर्म, समाज, परिवार, संबंध—इन सबके आवरण में छिपे विषमतापूर्वक नज़रिए की पड़ताल की है और अपना प्रखर विरोध दर्ज किया है। साथ ही, एक सकारात्मक दृष्टि भी दी है जो सहज रूप में स्वीकार्य व्यवहारों में छिपी घोर विषमता को समझने में हमारी मदद करती है।

स्त्री विमर्श की आकांक्षा इससे अधिक कुछ भी नहीं होती कि स्त्रियों को इंसान समझा जाए, एक पूरा इंसान, उतना ही पूरा जितना कि एक पुरुष है। स्त्रियों का महिमामंडन इस विमर्श की माँग क़तई नहीं है क्योंकि इस दिशा में सोचनेवाली स्त्रियाँ यह बख़ूबी जानती हैं कि

आलेख एवं फुटकर अनुवाद पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। संपर्क : शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 110007

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस महिमामंडन के पीछे की मंशा क्या है। हमारे समाज में स्त्री या तो देवी होगी या दानवी, यह सामान्य इंसान कभी नहीं हो पाती :

अभिशाप होती हैं लड़कियाँ
वरदान होती हैं लड़कियाँ
होती हैं पुतलियाँ
सामान होती हैं लड़कियाँ
कोई भी तो नहीं कहता
मनुष्य होती हैं लड़कियाँ

अब जब से औरतें स्वयं को अभिव्यक्त करने लगीं तो समाज की भौंहें तन गईं। उन्हें जीने के अधिकार से भी वंचित कर देने का प्रयास किया जाने लगा। जब औरत रज़िया बनी तो सरदारों द्वारा मार दी गई; तसलीमा बनी तो देश छोड़ भागने को मजबूर कर दी गई, प्रेम किया तो अनारकली की तरह ज़िंदा दीवार में चिनवा दी गई; तर्क या सवाल किया तो द्रौपदी की तरह भरी सभा में नंगी कर दी गई या श्राप की धमकी देकर गार्गी-सी चुप करा दी गई।

हमारे समाज की व्यवस्था ही कुछ ऐसी बना दी गई है कि इसमें संबंध और घर को बचाने की सारी ज़िम्मेदारी सिर्फ़ स्त्री की मानी जाती है, पुरुष कुछ भी नहीं बनाता, वह अपने स्वाभाविक रूप में ही जीवन जीता है किंतु स्त्री :

घर बचाने के लिए ज़रूरी है
कि वह, नारी अपनी बुद्धि
बाहर पायदान पर उतारकर
घर में प्रवेश करे

आवाज़ पुस्तक की भूमिका में ही कृतिकार स्वयं अपना विचार पूरी स्पष्टता और मज़बूती से व्यक्त कर देती हैं : ''पुरुष व्यवस्था पर सवाल उठाना उतना ही ज़रूरी है जितना कि मुक्ति की आकांक्षा करना।''

मुक्ति की यह आकांक्षा समानता की आकांक्षा ही है जो सिर्फ़ तभी पूरी हो सकती है, जब बंधन में डालनेवाली व्यवस्था, असमानता का व्यवहार करनेवाली व्यवस्था पर निडर होकर सवाल उठाया जाए।

शास्त्र-परंपरा, परिवार... आदि शब्दों के घेरे में, उसके चमचमाते महलों में स्त्रियों का अस्तित्व नहीं है, वहाँ जड़ परंपराएँ हैं, जिसके माध्यम से बड़ी बारीकी से शोषण की व्यवस्था पनपती आ रही है, जिसे तोड़ना इतना आसान नहीं पर इन्हें तोड़े बग़ैर रास्ते भी नहीं बनेंगे।

''यह चुनाव भी हमें ही करना होगा कि इन्हीं ऐतिहासिक इमारतों में क़ैद होकर रह जाना है या आगे का सफ़र'' क्योंकि अब इतिहास पलटने की बारी है, अब संस्कारों की कठोर बेड़ियों को तोड़ने का समय आ गया है।'' हमारे समाज और यहाँ तक कि हमारे परिवारों को भी बख़ूबी आता रहा है, हमें संचालित करना। 'अच्छी लड़की' का तमगा इस दिशा में एक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

औज़ार ही है : ''अच्छेपन का ज़हर उसके ख़ून में ऐसे घुलता गया जैसे दर्दरहित इंजेक्शन दिए जाते हैं, जो नस-नाड़ियों से होते हुए रक्तधारा में समा जाते हैं।'' इसी के आगे लेखिका सवाल करती है : क्या इस सराहना और सम्मान के ख़िलाफ़ आवाज़ उठानी चाहिए ?

और अध्याय के अंत तक आते-आते उनकी ओर से एक घोषणा की जाती है : ''आज हम उस आचार संहिता के उल्लंघन की मुद्रा में हैं, जिसको ढोते-ढोते हमारे कंधे दर्द से बेहाल और झुके हुए हैं।''

एक बहुत ही परेशान कर देनेवाला सवाल यह भी है कि स्त्रियों को अपने सपने या घर में से किसी एक को क्यों चुनना पड़ता है ? पुरुष तो अपने सभी सपनों के साथ घर में मालिकाना रुतबे के साथ सदा रहता आया है। पुरुष तो घर में बड़ी बेफ़िक्री के साथ सपने देखता है एवं बाहर पूरे जोश के साथ उसे सच करने में जुट जाता है तो फिर स्त्रियों के लिए उनका सपना एवं घर विरोधी क्यों बन जाते हैं, यदि वे अपने घर को ही अपना सपना न बना लें। प्रख्यात लेखिका तसलीमा नसरीन ने लिखा है : ''If country means freedom, if country means security then obviously women do not have any country.''

यह समाज, जिसमें हम रह रहे हैं, क्या वह किसी ख़ास वर्ग की संपत्ति है ? किसका देश है यह, हमारा तो बिलकुल भी नहीं। तसलीमा नसरीन अपने उपन्यास *फ्रेंच लवर* में कहती हैं, ''Do I have a land of my own? If your land spells shelter, security, peace and joy, India is not my own land.''

स्त्रियों को यहाँ पूरा इंसान कभी माना ही नहीं गया। उसे पुरुषों की ज़रूरतों को पूरा करनेवाला, 'रिप्रोडक्शन' का माध्यम समझा गया है। निपुणिका (*बाणभट्ट की आत्मकथा*) की तरह यह तो नहीं माना जा सकता कि स्त्री होना ही उनके सारे अनर्थों का मूल है। निपुणिका की इस तकलीफ़ का कारण भी हमारी यह सड़ी व्यवस्था है। आख़िर दुनिया ऐसी क्यों है ? 'प्रोवोक्ड' फ़िल्म का एक दृश्य याद आ रहा है, जिसमें नंदिता दास डॉक्टर से कहती हैं, ''यह कैसी दुनिया है जहाँ औरत को न्याय पाने के लिए पागल होना पड़ता है और पुरुष का सिर्फ़ ग़ुस्सा होना काफ़ी है।''

इस 'मेल इगो' को इतना बड़ा किसने बनाया ? क्या हमारी पितृसत्तात्मक व्यवस्था और परिवार ने नहीं ? कैसे बचपन से ही हावी होना लड़कों की आदत हो जाती है ? हम स्त्रियाँ व्यवस्था या फिर इस पितृसत्तात्मक समाज की 'प्रायरिटी लिस्ट' में कहाँ आती हैं ? ऐसे बहुत से प्रश्न हैं, जो मिलकर एक बड़ा-सा प्रश्न चिह्न बनाते हैं...।

लेखिका पद्मिनी वाला प्रसंग उठाते हुए बिलकुल ठीक लिखती हैं : ''कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि रानी पद्मिनी की ज़ौहर कथा वीरकथा के रूप में हमारे पाठ्यक्रम का विषय रही है। यह कथा लड़कों को जहाँ अपनी मर्दानगी के गौरव से भर देती है, वहीं लड़कियों को यौन-शुचिता के लिए चौकन्नी कर देती है कि वे इसके भंग होने के डर से ही अपनी ज़मीन छोड़ती जाती हैं।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऊपर जिस 'अच्छी स्त्री' की बात की गई, उस अच्छी स्त्री बनने/बनाने की प्रक्रिया में स्त्री से उसकी स्वाभाविकता छीन ली जाती है, उसके स्वाभाविक व्यवहार पर पाबंदियाँ लगा दी जाती हैं। दो परिवारों की इज़्ज़त का जुआ उसके कंधे पर है, यह पाठ सुन-सुनकर वह सध-सध कर चलने लगती है। सावधानी औरत के जीवन में अपने को सिकोड़ते जाने का नाम है। अपने पाँव पीछे खींच लेना स्वाभाविकता मान ली जाती है, जबकि सच्चाई यह है कि इस तरह अपनी गतिशीलता को रोकना चेतना को सुन्न कर डालना, उसके सपनों की पारिवारिक और सामाजिक हत्या है।

स्त्रियों के व्यवहार में जिन विशेषणों की आकांक्षा समाज करता है, वह उसकी कंडिशनिंग से ही जुड़ी है। स्त्रियों की न जाति होती है, न परिवार और न समाज। वे एक ऐसा 'प्रोडक्ट' हैं, जो मनुष्य माने जाने वाले पुरुष की जाति और परिवार से जानी जाती हैं। स्त्री का अपना कोई परिचय नहीं होता। वे अपने पिता, पति की जाति, उनके धर्म से ही जानी जाती हैं और उनकी कंडिशनिंग इतने अव्वल दर्जे से की जाती है कि उन्हें ये सब स्वाभाविक लगता है, वे यह नहीं जान पाती : ''स्त्री जीवन में युवा हिम्मत को धराशायी करने के लिए ही बनाया गया है बदचलनी का कोड़ा।''

स्त्रियों को मिलनेवाले आशीर्वचनों पर यदि हम ठहरकर सोचें तो पाएँगे कि वे आशीर्वचन भी उनके लिए नहीं होते हैं, उनके जीवन में स्थित पुरुष या आनेवाले पुरुषों के लिए होते हैं।

औरत के जिस 'माँ' रूप का महिमामंडन समाज करता रहा है। उसकी भी शर्तें तय करता रहा है यह समाज। 'माँ' न बनकर और 'सिंगल मदर' बनकर स्त्रियों को सिर्फ़ अपमान और भर्त्सना ही मिलती है समाज से। मुझे एक हिंदी फ़िल्म का वह दृश्य आज भी याद है जिसमें नायिका कहती है, ''मेरे इस जीवन का अब कोई मोल नहीं कि मैं इस परिवार को वंश नहीं दे सकी।''

क्या यह या इस तरह की सोच औरत को 'रिप्रोडक्शन' का साधन नहीं बना देती? आलोच्य पुस्तक *आवाज़* में इस समस्या के साथ फ़िल्म में चित्रित स्त्री की छवि, इसमें बाज़ार की भूमिका और 'सरोगेसी' की समस्या पर भी विचार किया गया है।

''ग़ुलामी के इससे नायाब नमूने क्या होंगे जहाँ लड़की अपनी ज़िंदगी के लिए नहीं दूसरों की पसंद के वर के लिए जिंदा रहने की मोहलत पाती है। वह आत्मनिर्भरता के लिए बाहर निकलने और रुकावटों से लड़ने के लिए नहीं, लक्ष्मण रेखाओं से बँधकर मनुष्य होने की इजाज़त पाती है।''

आवाज़ संस्कृति, धर्म, समाज के साँचे में स्त्रियों के गढ़ाव की साज़िशों पर तो विचार करती ही है, बाज़ार और फ़िल्मों में स्त्रियों को पेश करने के तरीक़ों पर भी विचार करती है और विचार करने को कहती है, ''अब यह सोचने का समय तो आ ही गया है कि गालियों की भाषा स्त्री की देह से क्यों जोड़ी गई? इसलिए ही न कि मर्द की निगाह में हर समय औरत की देह रहती है। देह में भी योनि ही उसके निशाने पर है। गालियों में वे एक-दूसरे की माँ-बहन को ही अपने संभोग का विषय बनाते हैं और इस पर औरत लज्जित होती रहती है।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैत्रेयी जी पूरी प्रखरता से आगे कहती हैं, ''इस भाषायी आतंकवाद से निपटना अब हमारा संकल्प है।''

आज जब हम कंडिशनिंग की इस पूरी प्रक्रिया को समझने लगे हैं, उसके विरुद्ध आवाज़ उठाना अनिवार्य हो चला है। यह दूसरों द्वारा किए गए फ़ैसलों को अस्वीकृत करने का समय है।

''लाज, शर्म और शील—ये शब्द कहने में बड़े शालीन लगते हैं, मगर इनका निर्वाह औरत को निर्बल और पुरुष को शेर बना देता है। नाइंसाफ़ी यह है कि स्त्री निर्भीक होते हुए ग़लत आचरण वाली मानी जाती है और पुरुष के लिए लाज, शर्म और शील धिक्कार की निशानी हैं।''

इस विमर्शमूलक कृति के अंतिम अध्याय 'एक स्त्री का घोषणापत्र' में मैत्रेयी जी लिखती हैं : ''अतीत की जड़ताएँ बड़ी शांत और सुंदर लगती हैं, एकसार व चिकनी। बदलाव के चलते जब वे टूटती हैं तो हाहाकार मचने लगता है कि यह अशिव, असुंदर वर्तमान कहाँ से आ गया...लेकिन क्या करें समय की यही परिभाषा हमारे पास है, जिसके हिसाब से मर्यादाओं, मानकों और सीमाओं को टूटना ही होगा।''

कई अध्यायों में विभाजित *आवाज़* कथा के दायरे से बाहर विमर्श एवं चिंतन के दायरे में आनेवाली कृति है। हर अध्याय स्त्री-स्वातंत्र्य की राह के अवरोधों पर खुलकर बात करता है। इस दिशा की विसंगतियों पर आवाज़ उठाता है, सवाल करता है क्योंकि सवाल उठाए बिना जवाब नहीं मिलनेवाला... स्त्री को उत्पाद माननेवाले हर मुद्दों पर, हर क्षेत्र पर लेखिका ने विचार किया है और जगमगाती इमारतों के पीछे छिपे घुप्प अँधेरे, सहजता के आवरण में लिपटी भयावह असहजता को उजागर किया है और वह भी बिलकुल सहज भाषा में। हमारे आस-पास के समाज और परिस्थितियों से उदाहरण लेते हुए, ताकि इस कृति में व्यक्त विमर्श सिर्फ़ 'बहस के लिए बहस' बनकर न रह जाए, बल्कि आम स्त्रियाँ भी इस चिंतन को समझ सकें और अपने विरुद्ध लड़ी जा रही लड़ाई में अपना पक्ष रखते हुए सहभागी बन सकें।

समीक्षित पुस्तक :
आवाज़ (स्त्री-विमर्श) : **मैत्रेयी पुष्पा**; सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली; 2012 ई.; 300 ₹

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेनका श्रीवास्तव

बंद सीपियों में उलझी गुत्थियाँ

जयश्री राय के कहानी-संग्रह *तुम्हें छू लूँ ज़रा* में कुल सत्रह कहानियाँ हैं, जिनका मिज़ाज अलग-अलग है। कुछ कहानियों की पृष्ठभूमि गोवा की धरती पर रची-बुनी गई है तो कुछ स्त्री-पुरुष संबंधों की तलाश करती है। कुछ कहानियों में उपेक्षितों-शोषितों की पीड़ा को उभारा गया है।

पहली कहानी है 'एक रात', जिसमें सदियों से चली आ रही परंपरा एक सवाल बनकर उभरी है। शादी, प्रेम और सुहागरात के मायने से परे एक मानसिक-आत्मिक प्रेम की तलाश में भटकती स्त्री की मनोदशा को बड़े सुंदर ढंग से पेश किया गया है। ''एक पुरुष के अहंकार की जय और स्त्री की पराजय का उत्सव उस दिन सनातन ग़ुलामों ने ख़ूब मनाया था।'' ऐसे संक्षिप्त वाक्यों से घटना के आदि-अंत को संकेतित करते हुए उजागर किया गया है। स्त्री मन मांसल प्रेम से ऊपर उठकर क्या सोचता है, यह द्रष्टव्य है : ''हम औरतों के लिए यह जिस्म ही अधिकतर पिंजरा बन जाता है, चाहती हूँ इस देह से आगे भी कोई आए वहाँ, जहाँ पशुता की सीमा समाप्त करके इंसान—इंसान बनता है। अपनी रूहों के बीच से यह तन की माटी हटाना चाहती हूँ, यह हमें एक-दूसरे तक पहुँचने नहीं देती।''

इसी कहानी में एक और आंशिक प्रश्न को बहुत ही सतर्कता से उठाया गया है—रचनाकार की विडंबना पर प्रश्न उठाया गया है। कहानी की नायिका मंदिरा का यह प्रश्न आगे ख़त्म नहीं होता बल्कि नायक, जो कहानी में एक कहानीकार की भूमिका निभाता है—से रू-ब-रू होते हुए एक कठोर प्रश्न करती है। ज़िंदगी के सारे कड़वेपन को समेटते हुए बेरुख़ी से पेश आती हुई पूछ बैठती है, ''किस-किस के मृत सपनों पर तुम लोगों के काग़ज़ी राजप्रासाद खड़े होते हैं, जीवन की विडंबनाओं को नक़द करके तुम लोग अपनी आजीविका चलाते हो, काग़ज़ की ज़मीन पर लफ़्ज़ों के व्यापारी हो, नपुंसक बुद्धिजीवी! कभी यह अहसास तुम्हें रात के किसी पहर जगाता है, सच कहो?''

दूसरी ओर 'सुख के दिन'-जैसी कहानी भी है, जिसकी ज़मीन खुरदुरे यथार्थ पर पसरी है जो बिम्ब और भाषाई स्तर पर, अपनी बुनावट के स्तर पर एक सफल कहानी है। राजनीति की कड़वी सच्चाई से सामना कराती इस कहानी में आम जनता कैसे राजनीतिक दाँव-पेंच का शिकार बनती है, यह दिखाया गया है। चाहे ग़रीबों की अपनी कही जानेवाली पार्टी ही क्यों न हो, आम जनता नेताओं के शिकंजे में पिसती ही रहती है। छली जाती है। 'अब और नहीं' कहानी में तीन पुरुषों को तीन रूपों में चित्रित किया गया है। नायक के पिता को हवसी, रुकमा

आलोचनात्मक आलेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। संपर्क : एफ़-62ए, फ़्लैट नं. 2, सिद्धि विनायक अपार्टमेंट, हुमायूँपुर, सफदरजंग एनक्लेव, नई दिल्ली 110003; मो. 9210662718.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के बाप को लालची दिखाया गया है, जो बेटी से धंधा करवाता है तथा नायक को समझदार, इंसानियत का प्रतीक—एक सचेत व्यक्ति के रूप में दिखाया गया है। अपने रूप में छोटी मगर पाठक को बाँधे रखने में यह कहानी भी सफल कही जाएगी।

'तेरहवाँ चाँद' कहानी अपने अलग मिज़ाज में पाठक के सामने आती है। एक बहुत ही मार्मिक प्रेमपरक कहानी है, जिसे पाठक एक ही साँस में पढ़ सकता है। यूँ कहें कि यह कहानी अपने घेरे में पाठक को कुछ समय के लिए रख सकती है। महानगरीय पृष्ठभूमि में रची-बुनी और जीवन में स्त्री-पुरुष संबंधों का बयान करती अगली कहानी है 'माँ'। यथार्थता, भावुकता, सजगता, विवशता, बेतरतीब जीवन के अजनबीपन, निर्ममता आदि त्रासद स्थितियों और बिन्दुओं के बीच रची-बुनी गई है यह कहानी। जिसमें गाँव से आई माँ का महानगरीय जीवन-शैली से सामना, बहू के शान-ओ-शौक़त और बेटे की दयनीय स्थिति के बाद संबंधों से सजगता के साथ ही इन सभी से मोहभंग भी दिखाया गया है।

'हमज़मीन' कहानी की पृष्ठभूमि गोवा की धरती है। यहाँ पर बसे मछुआरों और समुद्र की लहरों के साथ लय-ताल मिलाता उनका जीवन है। इस कहानी के केंद्र में अप्रवासियों और गोवा के मछुआरों के बीच का संघर्ष है। ''दया कुढ़ती है, हमारी आधी संस्कृति तो पुर्तगाली नष्ट कर गए और अब बची हुई आधी ये सैलानी ख़त्म कर देंगे। फिर वह रूप से पूछती है, ''क्यों, जो रूप टी.वी. में दिखता है, कैलेंडर में छपता है, वह हमारा गोवा है क्या? पूरब का रोम, चल हट! हम दूसरों से ज़्यादा हिंदुस्तानी हैं। नाच, अंग्रेज़ी बोली, रहन-सहन गिने-चुनों का ऊपरी दिखावा होगा, गोवा की आत्मा नहीं'।''

जयश्री राय की भाषा-शैली कहानियों में जान डाल देती है। इनके बिंब अपने ही तरह के हैं। कुछ शब्दावलियाँ पहली बार पाठक के सामने आती हैं, जो ज़ाहिर है लेखिका की सूझ-बूझ को दर्शाती हैं। कहानी की रोचक और रसीली भाषा दस्तक दे रही जान पड़ती है, जिसका पाठक वर्ग निःसंदेह स्वागत करना चाहेगा। यहाँ कुछ बानगी देना आवश्यक है :

— ''अप्रैल की हवा में सितारे घुले थे, क्षितिज के साँवले उजास में हल्का-सा मोतिया आब था, चाँद से अबरक झरकर रात गोरी हो आई थी।''
— ''पूरब में रात की साँवली कोर हल्के-से रसमयायी थी, क्षितिज पर उजाले की नर्म दस्तक-सी थी।''
— ''राख होते क्षितिज के आगे खेजरे की साँवली पाँत की छाँह गहराने लगी थी।''
— ''उसने अपने पसीने से चिपचिप हो रहे फटे बनियान को पेट से ऊपर उठाया था। सिर पर लहराते पीपल की हथेलियों ने जैसे चँवर-सा डुलाया था। ठंडी हवा में देह के रोएँ थियरा उठे थे।''

—ये इनके अपने ही ढंग के नए बिंब हैं, अपनी भाषा-शैली है, और कुछ रची गई शब्दावलियाँ हैं—'सँझाते आकाश,' 'साँवली पाँत की छाँह', 'रोएँ थियरा', 'रसमयायी', 'साँवले उजास', 'रात गोरी', 'तंद्रिल हवा', 'तुर्श गंध' आदि।

'सूअर का छौना' कहानी की भाषा बिलकुल अलग हो जाती है, यथार्थ धरातल है तो भाषा कुछ यूँ है : ''दुखी जनम का दुखी है। पैदा होते ही अपनी महतारी को खा गया। साथ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ही, अपने बाप को भी गँवा बैठा। इधर वह सूअर के बाड़े में पड़ा भूख से कोकिया रहा था, और उधर टिटनस से मुड़कर एकदम धनुष बनी उसकी महतारी के खुले दहाने में मक्खियाँ भिनक रही थीं।'' इसी तरह आम बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल 'बेटी बेचवा' कहानी में भी हुआ है : ''बेटियाँ कितनी जल्दी बड़ी हो जाती हैं! बबुनी के टटके फूल-जैसे चेहरे की ओर देखते हुए करेज में जैसे कुछ काँटे-सा बिंधा था, पीर का अबूझ स्वाद पूरी देह में रसमसा आया था।''

जयश्री राय की इन कहानियों को पढ़ते हुए जीवंतता का ऐसा सुखद एहसास होता है मानो पाठक उसी पृष्ठभूमि का हिस्सा हो! उसी पृष्ठभूमि में घुला-मिला हो! एक कोने में बैठा हो सारी घटनाओं का लेखा-जोखा लेता हुआ। पाठक महसूस करने लगेगा कि वह उन तमाम रंगों को देखता, तमाम गंध को आत्मसात् करता और उन तमाम प्राकृतिक तथा चारित्रिक ध्वनियों-बानियों को सुनता हुआ, वहीं बैठा है। एक कहानीकार अपनी इन्हीं कुशलता के सहारे सृजन में ख़ास जीवंतता ला देता है और पाठक के मन पर अपनी यादगार अमिट छाप छोड़ जाता है। इस लिहाज से जयश्री राय की शैली पाठक के मन में अपनी जगह बना पाने में भी सक्षम है। पाठक के लिए इस कहानी संग्रह की कहानियों को पढ़ना एक सहज कटु-मधु सच से गुज़रने की प्रक्रिया और सुखद एहसास होगा, इसमें संदेह नहीं।

समीक्षित पुस्तक :

तुम्हें छू लूँ ज़रा (कहानी-संग्रह) **: जयश्री राय**; सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली; 2012 ई.; 300 ₹

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रेष्ठतमायकर्मणे

Excellence in Deed

फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्स

THE FEDERATION OF INDIAN PUBLISHERS

The Representative Body of Publishers in Hindi, English & Other Indian Languages / Regional Office for South Asia of International Publishers Association

In Th... ...zines-

Printed and Published in India in 2013-2014.

पिछले दिनों साहित्य अकादेमी और आपकी पत्रिका समकालीन भारतीय साहित्य को इसकी प्रकाशन गुणवत्ता के लिए फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्स द्वारा वर्ष 2014 के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

(प्रथम पुरस्कार किसी को नहीं दिया गया।)

(ASHOK GUPTA)
PRESIDENT

18/1C, Institutional Area, Aruna Asaf Ali Marg (Near JNU), New Delhi - 110067

e-mail : fip1@sify.com, Website : www.fipindia.org

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समकालीन भारतीय साहित्य

साहित्य अकादेमी की द्वैमासिक पत्रिका

1980 ई. से नियमित प्रकाशित

यह मात्र एक पत्रिका ही नहीं साहित्यिक प्रतिश्रुति है।

मूल्य प्रति अंक 25/- रुपये

भारतीय भाषाओं में लिखित रचनात्मक साहित्य—

कहानी, कविता, नाटक, आलेख, आत्मकथा, ललित निबंध,
साक्षात्कार, संवाद, साहित्य-विमर्श, यात्रा-वृत्त,
संस्मरण, रिपोर्ताज, लोककथा एवं
पुस्तक समीक्षा का विशिष्ट मंच

प्रस्तुत अंक 175

रचना-भूमि : केशुभाई देसाई

भारतीय भाषाओं के नौ कहानीकारों
और बारह कवियों की रचनाएँ

नाटक : अशोक गुजराती

साथ ही निबंध, पुस्तक समीक्षा
एवं अन्य नियमित स्तंभ

SAMAKALIN BHARATIYA SAHITYA ISSN 0970-8367/Regd. No. DELHIN/1980/1009

के. श्रीनिवास राव, सचिव द्वारा साहित्य अकादेमी के लिए प्रकाशित तथा विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, 1/10753, सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032 से मुद्रित

अतिथि संपादक : रणजीत साहा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant